

आचाराङ्ग सूत्र.

(मूळ सहित भाषान्तर)

प्रयोजक अने प्रवर्तक.

प्रोफेसर खजीभाइ देवराज.

कच्छ—कोडाय.

तथा

जैन स्कॉलर्स.

मोरवी—काठियावाड.

द्वितीयावृत्ति—प्रत १०००.

राजकोट

धी राजकोट प्रिन्टिंग प्रेसर्मां

भेहेता मोहनलाल दामोदरे छाप्पुं.

संवत् १९६२.

सने १९०६.



अर्पण.

आचार शास्त्रं सुविनिश्चितं यथा जगाद् वीरो जगते हिताय यः
तथैव किञ्चिद् गदतःसएव मे पुनातु धीमान् विनयार्पिता गिरः

[टीकाकार.]

जे वीर जे रीते आ चौकसाइ भरेलुं आचार शास्त्र जगत्-जनोना
खबरु तेमना कल्याण माटे बोल्या छे, तेज महा बुद्धिमान वीर
तेज रीते कंडक बोलवा चहाता सेवकनी विनयपूर्वक तेमनी
प्रत्ये अर्पण करवामां आवती वाणीने पवित्र करो.

आ प्रमाणे.

आचारांग सूत्रना टीकाकार शीळाचार्य घणा

सादा पण हृदय भेदक शब्दोमां पोतानी तमाम कृतिने

श्रीमान् वीर प्रभु प्रत्ये अर्पण करीने तेमनो साह्यता माग्गी छे,

अने ते व्याजवीज छे, कारण के जे उत्तम चीज आपणने जेना

पासेयी मळेळी होय ते उत्तम चीज पाळी तेनेअ अर्पण करवामां आवे तो

तेथी आपणे जाणे ऋण मुक्त यता होइए तेम आपणुं अंतःकरण कंडक अपूर्व

शांति मेळवीने प्रफुल्लित थाय छे.

माटे

अमे पण एज उत्तम पद्धति स्वीकारीने

तेमनीज वाणीने गुर्जर भाषामां अनुवादित करवानो अमारो आ

अल्प प्रयास विनय नम्र थइने तेज महात्मा श्रमण भगवान् श्री महावीर प्रभु

प्रत्ये अर्पण करीये छीये.

(तथास्तु)

भावना.

—:~:—

जगत्सुमां रहेला तमाम जीवो सुख पावो, तेमना तमाम दुःख दरद दूर थाओ,
अने तेओसां सत्य ज्ञाननो प्रकाश थाओ, ए अमारी पेहेली भावना छे. १
धर्म शास्त्र अने सायन्स [सिद्ध पदार्थ विज्ञान शास्त्र] नो ज्यां परस्पर विरोध
पढतो होय, तेवा स्थळे धर्म शास्त्रोसां वपरायली गुप्त [सांकेतिक] भाषा
लक्षमां लइ तेना शम्यक् अर्थ करवा माटे खरेखरा बुद्धिमान् महा
पुरुषो ओं भूमंडळपर अवतरो, तेओ धांधळी श्रद्धाए न दोरातां
खरं सत्य शोधीने सत्यनेज कायम राखवा दरेक धर्मशास्त्रनी
गुप्त वाणीना ते ते देशकाळने अनुसरता घटित अर्थ बता-
वीने जनयंडळमां व्यापी रहेला मिथ्यात्व [जुठ अने
व्हेम] नुं सच्छेदन करो,—ए अमारी बीजी भावनाछे. २

धर्म विरोध दूर थाओ. सघळा धर्मोमां दयानो महिमा द्रढ मूळ थाओ, सघळा
धर्मोमां सत्यनां मूळ शोधाओ, अने ए रीते सघळा धर्मो दया अने सत्यना
मजबूत पायापर स्थापित थइ धर्मैक्यता कायम थाओ—ए अमारी त्रीजी
भावना छे. ३

जूदा जूदा धर्मानुयायिओमां अरसपरस देखातो धर्म द्वेष दूर थाओ, भ्रातृ भाव
स्थापित थाओ, सलाह संप कायम रहो, अने दुर्गुणो दूर थइ सद्गुणो
संचार थाओ—ए अमारी चौथी भावना छे. ४

दुनियाभरमां आलस्यनो नाश थाओ, उद्यमनी वृद्धि थाओ, विद्यानो विकाश
थाओ, सत्यनो प्रकाश थाओ, अने ए रीते धर्मनो जय थाओ—ए अमारी
पांचमी भावना छे. ५

भविष्यनी प्रजा आपणा करतां आगळ वधो, आपणा करतां वहु ज्ञान मेळवो,
आपणा करतां वहु शोधन करो, किं बहुना, आपणा करतां वळ-बुद्धि,
विद्या-कळा, विज्ञान-वैभव, सुख संपत्ति, रंग-रूप, होंस-हिम्मत वगरे
तमाम रूडी वावतोमां आगळ आगळ वर्धीने आपणां करतां वहु
आयुष्य भोगवो, अने आपणां मूकेलां अधुरां कामो परिपूर्प करो

तथा औपणे स्वप्ने षण नहि जोयेली अज्वं शोधो करीने
जिगेद-विल्यात थाओ ए अमारी छट्टी अयवा छेली
भावना छे.

६

वीर! वीर! वीर!



प्रस्तावना.

(द्वितीयावृत्ति.)

कौड़ किमती पुस्तकनी नवी आवृत्ति प्रसिद्ध याय ए एम वतावी श्रोपेले के ते पुस्तक लोकोमां प्रिय थइ पढयुंछे, चोतरफ ते उत्साहथी वंचायछे अने चोतरफथी तेनी सारी मांगणी थायछे. आज काल संख्या बंध नानां घोटानां पुस्तको प्रसिद्ध थयां करेछे अने लागवगधी के अर्पण पत्रिकाना मानथी लोको तेनी नकलो खरीद पण करेछे. आवा जमानामां आवा अमूल्य पुस्तको प्रचार करवामां ओछी मुश्किली नडती नथी.

आ सूत्रनी प्रथमावृत्ति प्रसिद्ध थया पछी तुरतमांज तेनी नकलोनो छठान थइ गयो हतो अने चोतरफथी उपरों उपरी मांगणी चालु रही हती प्रथमावृत्तिना टाइप नाना होवाथी तेमज भाषान्तर गुंजराती अक्षरमां छपायेल होवाथी, घणा लोको तेनो लाभ लइ शकता नही. माळवा, मेवाड, मारवाड, दक्षिण, मध्य हिंदुस्तान, पंजाब अने सर्व देशोना लोको तेनो लाभ लइ शके माटे मूल पाठ मोटा अक्षर अने भाषान्तर पण मोटा नागरी अक्षरमां प्रसिद्ध करेलेछे.

जैन धर्मनुं खरुं जीवन सर्वज्ञ प्रणीत सूत्रोछे. जैन धर्मनुं मंडाण पवित्र सूत्रो परजछे. जैन धर्मनी इमारत सूत्रोरुपी पाया उपरज रचायेली छे. जैन धर्मनां नीतिभय फरयानो उंडा रहस्यो अने सुक्ष्म तत्वज्ञानो जाणवानां मुख्य साधन पवित्र सूत्रो परजछे. जैन तरीकेनुं जीवन गाळवा माटे सूत्रोए किमती कायदाओछे, जे महाप्रभुना एक अक्षर मात्रथी अनेक अमूल्य शिक्षाओना प्रवाह छूटेछे, तेवी शीलामणोना भंडाररूप अने संग्रहरूप सूत्रोजछे. तेना दरेके दरेके वाक्य, दरेके दरेके शब्द, अने दरेके दरेके अक्षर ज्ञानामृतथी भरपूरछे.

विस्मरण शक्तिनुं साम्राज्य स्थपाता, भिन्न भिन्न मगजवाळा समर्थ विद्वानोए एकत्र मळी जे पवित्र वाणीनुं गुंथन करेलेछे, ते आपणी प्रजामां छूटे हाथे वंचावानी जररछे. सूत्रोनी भाषा आपणामांनां घणाने अप्रचलीत

होवाथी, तेनो जोइये तेवो लाभ लेवातो नथी अने अमूल्य शीखामणोना भंडारथी अज्ञान रहेवुं पढेछे. आ माटे आ पवित्र सूत्रोनां शुद्ध भाषान्तर आपणीज भाषामां करवाना जरूरीयात विषे श्री श्वेतांबर कोन्फरन्स अने विद्वान् श्रावको ठराव करीनेज वेसी न रहेतां, तेनो अमल तुरतमां थयेलो जोवा इच्छेछे. पण सूत्रोना भाषान्तरथी श्रावक वर्ग माहितगार थाय ए केटलाकने भयरूप लागेलुं होवाथी; तेवां भाषान्तरों प्रसिद्ध थतां भटकाववा कोशेश थयेलीछे, छतां हालनो जमानो आधी आविचारी अदचणो तरफ अलक्ष करवानी जरूरीयात स्वीकारेछे. आ पुरतक तेदा प्रयासनुं एक प्रतिफलछे. महा महेनवे अने मोटा खर्चे आवा भाषान्तरों प्रसिद्ध करवानुं साहस, सुज्ञ श्रावकोनी साह्यतानी आशाएज भमे उठान्युं छे अने लोको तेनी कदर करशेज.

प्रथमावृत्तिमां रही गयेली भूलो आ आवृत्तिमां सुधारवामां आवीछे. शंकीत सूत्रोना अर्थ विद्वान् मुनीराजनी सलाह मुजव विस्तारथी समजाववामां आन्याछे अने वाळाववोधकारना आशय मुजवनी टीकाओ तेमज स्पष्टिकरण माटे फूटनोट वीगेरे दाखल करवा खास काळजी राखी पुस्तकने बनी शके एटलुं उपयोगी अने आकर्षणीय बनाववा विद्वानानी सलाह मुनव वनतो प्रयास कर्योछे.

जोके आ पुस्तकने शुद्ध बनाववा वनतो श्रम कर्योछे. तोपण ज्ञाना वर्णीय कर्मना प्राबल्यथी ते निर्दोष होवुं असंभवीतछे. आशाछे के सुदा बांचको तेमां रहेली भूलो माटे दरगुजर करी करवा योग्य सुधारा वधारा अमने सुचवशे तो उपकृत थइशुं.

प्रसिद्ध कर्ता.

प्रस्तावना.

काळनी गहन गति छे, पूर्वे एक समय एवो पण हतो के जे वखते पुस्तक-पानानी जरा पण जरूर न पढती, स्मरण शक्तिनुंज साम्राज्य हतुं, एक वखत श्रवण करेलुं “ पुनः पुनः ” याद लावनारां मनुष्यो विशेष हतां. आवा सुवर्ण-युगेने विषे ज्ञानी पुरुषो विद्यमान हता, जे उच्च स्थिति संपादन करवायी सर्वत्र दिग्विजय मेळवता इतिहासनी तवारीख उपरथी जणाय छे के एवा समयमां जैन मार्ग सर्वोत्तमताने शिखरे बिराजतो हतो. जेम दिवसने विषे सूर्यना, अने रात्रिने विषे चंद्रना तेजथी, सर्वत्र प्रकाश थइ रहेछे तेम चरम-छेछा तीर्थंकर श्री महावीर प्रभुनी हैयाती वखते अज्ञानरुपी अंधकार दूर थइ सर्वत्र ज्ञानरुपी प्रकाश छवराइ गयो हतो. ते भगवंतना निर्वाण पछी धीमे धीमे मनुष्यांनी स्मरण शक्ति घटती गइ, ते पटले सुधी के पूर्वतुं ज्ञान जाळवी राखवा माटे पुस्तको लखाववानी जरूर पढी. आतुं परिणाम ए थयुं के पुस्तको लखावायी मनुष्यो वेदरकार बनता गया अने तेओए स्मरण शक्तिने ते बावतमां श्रम आपवो बंध कर्यो जे वखते पुरतको लखायां ते वखत श्रमण भगवंत श्रीमहावीर प्रभुना निर्वाण पछीना केटला एक सैका पछीनो हतो.

आ प्रमाणे स्मरण शक्तिनी न्यूनता-अने दिनप्रतिदिन हानी यती जोइ ते वखतना पुरुषो, जेना आपणे घणाज आभारी छीए, तेओए जे कांइ जोयेलुं, सांभलेलुं, अनुभवेलुं हतुं ते बधुं पोतानी ज्ञान शक्ति अने स्मरण शक्ति अनुसार लखाववुं शरु कर्युं. (ते पुरुषोतुं ज्ञान आजना जमाना करतां घणुंज चढीआतुं हतुं). हालनी पेठे कागळो बीगेरे ऊपर नाहे, पण ताढपत्रोपर ते सूत्रो लखायां हतां. ते उपकारी पुरुषोने एवी भीति लागी के जो आ प्रमाणे स्मरण शक्ति घटती जशे तो ज्ञाननो लय यवानो समय नजदीक आवश. श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना निर्वाण पछी २८०-२९३ वर्ष पटले इस्वीसन ४५४-४६७ नी सालचा अरसामां आवे अणीने समये श्रीवल्हधीपुर नगरने विषे श्रमण भगवंत श्री देवदि-

गणिनी देखरेख नीचे जैन संप्रदायना विद्वान् आचार्योए एकठा मळी जैन आगमो लखी लेवानो निश्चय कर्यो. मोटा मोटा श्रीमंतो ते समये जैन धर्मानुरागी होवाथी जैन आचार्यो पोतानी धारणायां फतेह पास्या अने पुष्कळ श्रम लइ पुस्तको लखी तेनी जुदी जुदी प्रतो जुदा जुदा शेहेरोना जैन भंडारोमां दाखल करावी.

आ सूत्रो निष्पक्षपाती विद्वानोनी कसायेली कलमथी लखायेलांछे एम पुरवार करवाने एटलुंज बस थशे के आ सूत्रो विद्वान् पुरुषोना मंडळे एकठां मळीने एकत्र अभिप्रायथी लखावेलांछे जेथी कोइ पण मतमतांतर के कदाग्रहनो पक्ष तेमां होय ते धारवुं भूल भरेलुंछे. वळी आ सूत्रो लखवा-मां कोइ पण जातनी विषमता यातो (पाछळनी प्रजामां देखाती) स्वार्थ-परायण द्रष्टि होवानुं कशुं पण कारण नहोतुं. जेथी आ सूत्रो निष्पक्षपात शैलीथी लखायांछे एम कबुल कर्या विना चालतुं नथी कारण के ते सर्व विद्वान आचार्योना मगजमां जे हकीकत खरेखरी याद आवी अने सर्व मान्य थइ तेज सूत्रोमां गुंथाइ हती.

झानीना वाक्यो संक्षिप्त होय छे-तेनां टुंक शब्दोमां घणो भावार्थ समायेलो होय छे. आपणां आगमो वांचतां आवां वाक्यो स्थळे स्थळे नजरे पडेछे. जेथी वांचक वर्ग पोतानी स्थूल बुद्धिने लइने रहस्य समजी न सके तो तेमां मूळ लेखकोने कशो दोष देवानो नथी. आ वातनी सत्यताने खात्री एटला उपरथीज थशे के जैन आगमो लखाया पछी केटला एक विद्वानोए ते उपर निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, दीका वीगेरे करेलांछे ते एवा हेतुथी के आजना दुर्लभ बोधी जीवने ते वाक्यो समजवां सुगम पडे.

मूळ जैन आगमो ८४ हता तेमांथी भयंकर दुष्कालो तथा राज्य विप्लवोना समयमां, केटलांक, गाम, नगर, शेहेरां वीगेरे उज्जड थइ नाश पाम्यां ते साथे आपणां घणां सूत्रो पण लय पाम्यां, तो पण सुभाग्ये हालमां तेमांना ३२ थी ४५ आगमो विद्यमान रखांछे.

अर्वाचीन समयमां मागधी-प्राकृत अने संस्कृतनो अभ्यास घटतो गयो अने तेथी सूत्रोनी शैली समजनाराओनी खोट पडवा लागी. जो के मुद्रणकळानी सादताथी सगवदता वधती गइछे परंतु दुर्भाग्ये ते वांची

समजवानो लाभ लेनाराओनी खामीछे, सूत्रोनी शैली अने तेमां रहेला दिव्य रहस्य समजवा माटे प्राकृत अने संस्कृत ज्ञाननी मुख्य जरूरछे परंतु तेदलुं ज्ञान धरावनाग सुभाग्ये हाल एक हजार जैनमाथी एकाद मात्र मळे. आवी दयामणी स्थितिने लइने जैन फिलोसोफीनुं उत्तम ज्ञान घटतुं गयुं अने हजु पण घटतुं जाय तेमां आश्चर्य थवा जेवुं नथी. आवा बारीक समये सुभाग्ये माजी प्रॉफेसर मॅक्समुलरना शिष्यो मि. हरमन जेकोवी, डॉक्टर हॉर्नेल, मि. ओल्डनबर्ग, मि. वेवर डॉ. ल्युमॅन विगेरे पाश्चिमात्य विद्वानो—जर्मन ओरीएन्टल स्कॉलरोए जैन फिलोसोफीनुं महत्व समजवा माटे मथन करी केटलाक आगमोना भाषान्तर अंग्रेजी भाषामां प्रसिद्ध कर्यां, जे जोतां तेओनी विद्वता एक अवाजे कबुल राख्या बिना चालतुं नथी. अर्वाचीन जमानाने जैन फिलोसोफी समजवानो मुख्य आधार आ विदेशी विद्वानोना भाषान्तर उपरज छे, कारण के संस्कृत तेमज प्राकृत भाषामां निपुणता धरावनाराओनी संख्या जुज मात्र—नजीवी सरखीछे. प्रचलित—देशी भाषानां सारां भाषान्तरना तेमज संस्कृत ज्ञानना अभावे पुर्वोक्त पुस्तको वांचवा, हालना केळवाएलो वर्ग दोराय अने ते उरथी जैन फिलोसोफी माटे मत वांधवा प्रेराय ए कोइ पण रीते अनुचित नथी. हवे प्रश्न ए थायछे के ए जर्मन विद्वानोए जे पुस्तको प्रसिद्ध कर्यांछे अने तेमां जे विचारो दर्शाव्याछे ते जैन आगमो अनुसार यथातथ्यछे के नहि ? आ हवे तपासवानुछे.

इस्वीसन १८८४ नी सालमां ज्यारे मि. जेकोवीए आचारांग तथा कल्पसूत्रना भाषांतरो प्रसिद्ध कर्यां, ते वखत जैन फिलोसोफी माटे तेमज जैन धर्मनी प्राचीनता माटेना तेना तथा बीजा विद्वानोना जे विचारो हता ते विचारो दश वर्ष पछी एटले इस्वीसन १८९५ नी सालमां ज्यारे श्री सूत्रकृतांग तथा उत्तराध्ययन सूत्रोना इंग्रेजी भाषांतर प्रसिद्ध करवामां आव्या ते वखते घणाज बदलाएला जोवासां आवेछे प्रथम ओरीयेन्टल स्कॉलरो-ने विद्वानोना एरो अभिप्रायहतो के जैन ए बौद्धनी एक शाखाछे, अने बौद्धना मूळतत्त्वोनुं अनुकरण जैनोए करेळुं छे. हालना केळवणी खातामां जे इतिहासो चालेछे तेमां आज भावार्थनुं शिक्षण अपातुं होवाथी आपणा जैन वाळकोने पण तेवी भ्रदा याय ए.

संभवितछे. ते वाचत मि. जेकोवीए आचारांग सूत्रनी प्रस्तावनामां प्रथम लंवाणथी विवेचन करेलुं छे. आ विवेचन तेना पोताना बीजा पुस्तकनी प्रस्तावनाना प्रथम वाक्यथीज बदलायेलुं आपणी नजरे पडेछे के—

Ten years have elapsed since the first part of my translation of Jaina Sutras appeared. During that decennium many and very important additions to our knowledge of Jainisum and its history have been made by a small number of excellent scholars

जैन सूत्रोनां मारां भाषान्तरना प्रथम भाग बहार पडयाने आजे दस वर्ष ययाछे. जे अरसामां जैन फिलोसोफी तेमज इतिहास संबंधी थोडाएक विद्वान् स्कोळरोनी सहायताथी अमारा ज्ञानमां धणो अगत्यनो बधारो थयो छे.

अने जैननी प्राचीनता संबंधे पण तेज विद्वान तेज प्रस्तावनामां छरे छे के,—

It is now admitted by all that Nataputta (Gnatriputra), who is commonly called Mahavira or Vardhmana, was a contemporary of Budha; and that the Niganthas (Nir-granthas) now better known under the name of Jains or Arhatas, already existed as an important sect at the time when the Buddhist church was being founded

श्रमण भगवंत श्रीमहावीर प्रभुने नामे ओळखाता ज्ञातपुत्र-वर्धमान स्वामी जे वखने बुद्ध विचरता ते वखनेज तेना (contemporary) प्रति-स्पर्धी तरीके विद्यमान हता अने जे वखते बौद्धधर्म इजी स्थापातो हतो ते वखते अर्हन्ना नामे ओळखाता निर्ग्रंथो एक अगत्यना प्रसिद्ध-पंथ तरीके क्यारनाए स्थापित थयेल मार्गमां विचरता हता एम हवे सर्व कोइ कबुल करेछे.

जैन धर्मनी प्राचीनता जैन पुस्तको उपरथीज तेमने सात्रीत थइ नथी परंतु बौद्ध विगेरे बीजा धर्मना पुस्तको उपरथी पण जैन धर्मनी प्राचीन-तानी सावीती माटे ते विद्वान् कहंछे के—

I therefore look on this blunder of the Budhists as a proof for the correctness of the Jain tradition, that fol-

lowers of Parsva actually existed at the time of Mahavira. Before following up this line of inquiry I have to call attention to another significant blunder of the Buddhists: they call Nataputta an Aggivesana i e Agnivaisyayana; according to the Jainas. However he was a Kasyapa, and we may credit them in such particulars about their own Tirthankara.

But Sudharman his chief disciple, who in the Sutras is made the expounder of his creed, was an Agnivaisyayana, and as he played a prominent part in the propagations of the Jain religion, the disciple may often have been confounded by outsiders with the master, so that the Gotra of the former was erroneously assigned to the latter. Thus by a double blunder the Buddhists attach the existence of Mahavira's predecessor Parsva and of his chief disciple Sudharman.

श्रमण भगवंत श्रीमहावीरना वखतमां श्री पार्श्वनाथजीना अनुयायी संतानिया चोक्रसपणे विचरता, ए जैनना इतिहासनी खरी साधीती होवार्थी बुद्धिष्टलोकोनी आ-गंभीर-भूल (जैन ए बुद्धनी शाखाछे) नी मने खात्री थाय छे. आ वादतनी तपासनो निर्णय करतां पहेळां बुद्धीष्ट लोकोनी धीजी देखीती-गंभीर मोटी भूल माटे वांचनारनुं ध्यान खेंचवानी जरूर पडे छे के, तेओ-वौद्ध लोको ज्ञातपुत्र श्रीमहावीरने आग्नि वैश्यायन गोत्री कहे छे ज्यारे जैनो तेने काश्यप गोली कहेछे अने पोताना तीर्थकेरा प्रत्ये जैनोना आ मतने माटे अमे तेने व्याजवी-खरा मानीये छीए. परन्तु श्रीमहावीरना मुख्य शिष्य श्री सुधर्मास्वामी जे आग्नि वैश्यायन गोत्री हता अने जेणे सूत्रोनां तत्वनो प्रकाश करेलो छे अंन जैन मार्गना प्रचार प्रयत्नमां जेणे मुख्य भाग लीधोले, तेथी गुरु शिष्यनां गोलना अरसपरस वीजाओए गुंचवाढा करेलोछे तेथी करी श्री महावीर जे काश्यप गोत्री हता तेने आग्नि वैश्यायन गोत्री ठराव्या. बुद्धीष्ट लोकोनी आ वेवढी मोटी भूल छे के:-

१ श्रमण भगवंत महावीरस्वामी विचरता ते वखत त्रेवीशमा प्रभु श्री पार्श्वनाथजीना अनुयायी-संतानीआं न हता ते अने.

२ श्रीमहावीरस्वामी काश्यप गोत्री हता तेमने अग्निवैश्यायन गोत्री ठराव्या. (एटले के पार्श्वनाथ प्रभुना संतानीआ विचरता (जे जैननुं प्राचीनपणुं सावीत करेछे) अने श्रीमहावीरस्वामी अग्निवैश्यायन गोत्री नहि पण काश्यप गोत्री हता अग्निवैश्यायन गोत्री तो तेमना शिष्य सुधर्मास्वामी हता.

आ सिवाय जैननी प्राचीनता संबंधे खास एक जुहुज पुस्तक नामे (Mahavira and his predecessors) “ महावीर अने तेना अग्रगामि ” ए नामतुं मि. जेकोवीए प्रसिद्ध करेलुंछे; जेमां जैन मार्गनी प्राचीनता संबंधे पुरावा सहीत आवेहुव वर्णन करेलुंछे ते सिवाय मि. लुइराइस, डॉक्टर फयुर, मि. क्लोट, अने डॉक्टर घुलर जेवा विद्वानोए पण जैन-फिलोसोफीने मांटे बहुज उत्तम अभिप्राय दर्शावेलुं छे मात्र तेओ आवी वाणीधीज अटक्या नथी परंतु कर्तव्यमां आगळ वधी जैन-पुस्तको ना भाषान्तर प्रसिद्ध करता जायछे सूत्रोनी भाषा तेओने विदेशी होया छतां अथाग थम लइ तेनुं रहस्य समजवा मांटे तेओ जे मधन करे छे ते आ देशना जैनोने शरममां नाखेछे अने जागृत यवाने आढकतरी रीते फटको मारे छे.

डॉक्टर होरनले उपासकदशांग सूत्रनुं जे भाषांतर प्रसिद्ध कर्तुंछे अने तेमां जे धोरण अंगिकार कर्तुंछे तेने दरेक भाषांतरकर्ताए आजना जमाना मांटे अहुसरवुं ए उचमछे. जैन सूत्रोना भाषांतर करतां पाश्चिमात्य विद्वानो व्याकरणना दोषो उपर खास ध्यान आपता जणायछे. आम थवाथी मूळ आशय छुटमां समजावामां कोइ प्रसंगे कदाच तेओ पछात रहेला जोवामां आवेतो तेथी तेमनी विद्वता संबंधे कशी न्युनता मानवानी नथी कारण के अर्वाचीन समयमां जैनना सूत्रोनी जे हस्तलिखित प्रतोछे तेमां लेखकना हस्त दोषथी अथवा तो परंपराथी कांइक न्युनाधिक लखा बाथी, शब्दोनी विभक्ति आधीपाछी यइ जंवाना दोषोलागवा संभवछे अने तेथी भाषांतरमां चखते फेर पढी जवा संभवछे. द्रष्टांत तरीके डॉक्टर होर्नल पोताना उपासकदशांग सूत्रना भाषांतरमां छत्रीसमे पाने तेमज जे जगोए ते वाक्य आवेछे ते जगोए “अहासुहं देवाणुप्पिया मा पढीं यथं करेह” ए, वाच्येनुं भाषांतर एवी रीते करेछे के May it so please

O! beloved of the Devas do not deny me, आ भाषांतरसाध-
रण जैन वांचक वर्गने पण अमान्य थइ पडे; जो के डॉक्टर हॉर्नल
पोताना पुस्तकनी पाळळनी Criticle notes—पूरवणीमां, आ वाक्यना
खरा अर्थ संबंधे संशयमां पडी जुदा जुदा जर्मन विद्वानोना अभिप्रायो
तथा व्याकरणना पुरावाओ टांकेछे. डॉक्टर ल्युमेन एज वाक्यनो अर्थ
आ प्रमाणे करेछे के:— Well then beloved of the Devas do
not cause any obstruction आ वाक्यनो शुं खरो अर्थ होवो घटेछे
तेना निर्णयपर आववा माटे नीचेनी हकीकत प्रासंगिक गणासे “ जे
वखते श्री गौतमस्वामी वाणिज्य गाम नामना नगरमां उच्च नीच ने
मध्यम कुळने विषे गोचरी करवा माटे उत्सुक थया ते वखते तेणे उपला
शब्दोमां श्रमण भगवंत श्रीमहावीर पासे अरज करीछे. एम अंग्रेजी भा-
षांतरनो भावार्थेछे पण खरी रीते तो ते शब्दो श्रमण भगवंत श्री महावीर
प्रभुना उतररुपेछे के:—‘ जेम तमने सुख उपजे तेम करो विलंब करता ना ’
वळी डॉक्टर हॉर्नल ते पळीना ७८ माज वाक्यमां कबुल करेछे के श्री
गौतम गणधर उपरना शब्दो सांभळीने वाणिज्य गाम नगरमां गौचरी
विगेरे कार्यने माटे प्रवर्त्याछे. आ उपरथी वांचक वर्ग कबुल करशे के,
डॉक्टर हॉर्नलनी ते वाक्यने प्रश्नरुपे गणवामां (जे वाजवी रीते उत्तररुपज
छे) विभक्तिना दोषने लीधे भूल थइ जणायछे, आजीज रीते मी. जेकोचीने
पण पोताना आचारांग सूत्रमां आपणी भाषा तेने विदेशी होवाथी विप-
रीत अर्थ थअेलो छे. आपणा सूत्रामां वनस्पति विगेरेना जे जे जुदा
जुदा खास नामो आवेछे ते खास नामो विपेनी तेओनी ओळी माहेतीथी
भाषांतरमां देखीता विपरीत अर्थ थवा पामे ए स्वाभाविकेछे, जो के अमे
आ तेनी विद्वत्तानी खापी वतावता नथी पण आपणी भाषाना शब्दोना
तेओनो ओळो अनुभवज आनुं कारणभूतछे.

आ रीते आ आचारांग सूत्रना इंग्रेजी भाषांतरमां केटलीक जगोए
तेवा विपरीत अर्थ थवा पाम्या होय तो ते पण उपरनाज कारणोने लइनेज
गणाय. आपणो जैन संप्रदाय आवा खास शब्दोना अर्थ अंग्रेज विद्वानो-
नोने जणाववा कोशीश करे तो तेओ पोताना भाषांतरोमां सुधारो करे
अने जैन फिलॉसॉफिने तेओ वधारे देदीप्यमान करे. जैन धर्मनी नवळी

સ્થિતિ આવવાનું યાસ કારણ મતભિન્નતા છે. જૈન વર્ગના જુદા જુદા સંપ્રદાયવાળાઓ પોતાની સત્યતા સાબીત કરવાના પ્રવાહમાં તળાઈ જઈ જુદા જુદા શબ્દોના અર્થ પોતાની મરજી મુજબ કરે છે, જેથી તેની સ્વસ્વી અદ્રશ્ય થાય છે. જૈન ધર્મને ઉચ્ચ સ્થિતિએ લાવવા એકત્ર થઈ જ્ઞાનની વૃદ્ધિ કરવાની વાત તો એક વાજુએ રહી, પણ આમ શબ્દાર્થ ફેરવી માંહે માંહે ફલેશ કરી વિવાદ ઉપજાવી જૈનના કાનુનોથી વિપરીત વર્તી જૈન નામને કલંકિત કરે છે. અર્વાચીન સમયમાં આવી સ્થિતિમાં કેલ્હાયલો વર્ગ કયા પાંડાના પુસ્તકો વાંચવા તેના ગુંચવાડામાં પહે છે અને છેલ્લે સ્વધર્મ નો ત્યાગ કરી પરધર્મ અંગીકાર કરે છે. આવી કઠંગી સ્થિતિ મત ભિન્નતાથી દિન પરદિન વૃદ્ધિ પામે છે અને પરિણામે દુનિયા પર દિગ્વિજય મેલ્લવેલ જૈન ધર્મની પડતીમાં વૃદ્ધિ કરે છે. પરંતુ તેમાં સુભાગ્યે હાલના વિદેશી વિદ્વાનોએ—ઓરિએન્ટલ સ્કોલરોએ—જૈન ફિલોસોફી પ્રકાશમાં લાવવાને જે સ્તુત્ય પ્રયાસ માંડયો છે તે જૈન ધર્મની પુનઃપ્રતિષ્ઠા પ્રાપ્ત કરવાની આશા ના કિરણરૂપ છે. કારણ કે તેઓનાં ભાષાંતર કોઈપણ રીતે પક્ષપાતી તેમજ મતભિન્નતાના પોષણરૂપ નથી. પરંતુ જો સ્વદેશી વિદ્વાનોએ આવી રીતે ભાષાંતર કર્યાં હોત તો નક્કી તેઓ શબ્દાર્થ કરવામાં પોતાના યાસ સંપ્રદાય તરફ દોરાયા હોત.

જ્ઞાનીનો માર્ગ સ્યાદ્વાદ છે તેથી તેમાં મતભિન્નતા હોવી અસંભવિત છે તેમજ તે માર્ગને આચરનારા સ્વરા વિદ્વાનોએ પણ તેવા કદાગ્રહથી કંટાળી જંગલમાં જઈ આત્મ સાધન કરેલું છે એવું જૈન તવારીખ ઉપરથી સાબીત થઈ શકે છે. આનંદવનજી જેવા મહાત્માએ “ષટ્દરિશણ જિન અંગ મળીજે.” ધિગેરે શબ્દોમાં શ્રી નમીશ્વર મહાવાનની સ્તુતિ કરતાં જ્ઞાનીના સ્યાદ્વાદ માર્ગનેજ અક્ષરશઃ કમ્બુલ કરેલ છે.

શ્વેતાંવરી (દેરાવાસી—સ્યાનકવાસી) અને દિગંવરી સર્વ મતવાળાએ એકત્ર થવું જોઈએ. જ્ઞાનીના વાક્યોના વિપરીત અર્થ કરવાથી જ્ઞાનાવરણીય કર્મ વંધાય છે, તેથી મતભિન્નતા દૂર કરી સર્વ એકત્ર મનો અને સ્વધર્મની ધતી પાયમાલીનો ઉદ્ધાર કરો અને પુર્વે જેમ તે સર્વોત્તમ ગણાતો તેવામ રીતે પુનઃ સર્વોત્તમ ગણાય તેવો એકત્ર થઈને પ્રયાસ કરો. એકજ માલાપ ના જુદા જુદા પુત્રો કુસંપી થાય તો તે કુલનો ક્ષય નહીંકરે એમ સમજીને

आपणा स्याद्वाद मार्गमां भविष्यना श्रेय माटे सर्वेए एकत्र थवुं आव-
श्यकछे.

‘बेनी लडाइमां त्रीजो फावी जाय’ ए न्याये आपणा जुदा जुदा सं-
प्रदायवाळाओ लडेछे तेथी त्रीजा फावी जायछे. वस्तीपत्रकना आंकडा
ओ उपरथी जणायछे के ख्रिस्ती धर्ममां भळेलाओनी संख्या जेटली दश
वर्ष पहेलां हती ते करतां हाल बद्दज वर्धी गइछे. आवी रीते छेला मै-
कामां नीकळेला नवा संप्रदायोनी संख्यामां घणा माणसो भळता जायछे
अने जैनधर्मिओ घटता जायछे.

देशनी प्रचलील भाषामां आपणां सूत्रोना भाषांतर हजु सुधी प्रसिद्ध
न थवानां घणां कारणोछे. आपणां लोकोमां पूरतुं उत्तेजन नथी. भं-
डारवाळाओ पुस्तको पढतर राखी तेमां सडावेछे ने उधरने खवरावेछे,
पण उपयोग माटे कोइने आपता नथी, तेमज आम करवाथी ज्ञानावरणीय
कर्म बंधायछे तेनुं लेश पण भान तेमने रहेतुं नथी. ने सबळ कारण तो
एछे के तेवा विद्वानोनी आपणागां बहु खाटेछ. ज्ञाननुं कोइ पण रीते
घहु मानपणुं नथी. पुस्तक सडी जाय-बगडी जाय ते भळे पण ज्ञाननो
प्रचार करवो ते आंभळी श्रद्धावाळा Orthodox जैन जेनुं संप्रदायमां
विशेष प्रावृष्टछे तेमने पसंद नथी, आवा रुढ विचारो स्थळे स्थळे मफत
लाभ आपतां पुस्तकालयो स्वपाय तोज दूर थइ शके तेवो संभवछे ने तेथी
केळवायला धर्मेने घहुण लाभ थवा संभवछे. आवा उच्च आशयवाळुं
मफत लाभ आपणु एक पुस्तकालय मोरवीमां बे वर्ष थयां स्थापवामां आ-
व्युंछे, जेनो लाभ घणा लोको छूटवी लेछे, आवां पुस्तकालयो जुदे जुदे
स्थळे स्वपाय अने तेथी युवानवर्गने पांचवाना साधनो मळे तो जैन मार्ग
नी उन्नतिनी आशा राखी शकाय.

जे धोरण अंग्रेज विद्वानोए अंगीकार के लुंछे ते निष्पक्षपात धोरण
अनुसार आ भाषांतर करेलुंछे. अने तेमां कोइ पण जातनां मन मतांतरमां
न तणातां स्याद्वाद आशय अंगीकार करेलोछे. जो के आवा भाषां-
तरो समर्थ विद्वानोनी कसाएली कलमथी भूपित थयां होय तो ते चवारे
सारं थाय परंतु अमोए अमारी अल्प शक्ति अने अल्पानुभव वडे जेम्
बने तेम निष्पक्षपात अने शुद्ध भाषांतर करवा प्रयास करेलो छे.

आ भाषांतर तैयार करतां जो के पूर्ण काळजी राखवामां आवी छे, छतां पण-पूर्व वांधेलौ ज्ञानावरणीय कर्मना उदयथी, कोइ पण दोष रहेलो द्रष्टिगोचर थाय तो ते माटे बीजी आवृत्तिमां सुधारो थवा सूचना करवा सुज्ञ वांचकवर्गने सचिनय सप्रेम विज्ञप्ति छे. आवां भाषांतरोथी आचार विचारमां नीची गति लेतां जैनो पोतानी भूलो समजता थशे एम अमने खात्री छे.

कोइ पण पुस्तकनुं भाषान्तर करती वखते तेने लगती ऐतिहासिक विनानो विचार करवो जोइए. आपणां सूत्रोने ज्ञानीओए रचेलां छे. तेओ आस पुरुषो होवाथी, कार्यपरत्वे अधिकारी हता, तेथी हालना भाषान्तरना वांचकोने तेओनां ऐतिहासिक वृत्तांतो जाणवानी आवश्यक्ता छे. पण जेओ जैन कहेवाय छे तेओ मांहेना भाग्येज कोइ आ महात्माओनां वृत्तांतथी अज्ञान हशे. तेमज आ भाषान्तरना छेवटना भागमां पण श्रमण भगवंत श्रीमहावीर तीर्थकरनुं ऐतिहासिक वृत्तांत आवी जनुं होवाथी अत्रे जुहुं आपवा प्रयास करेलो नथी. ते ज्ञानी पुरुषोनां ज्ञान, दर्शन, चारित्रनुं आवेहुव वर्णन करनुं ते पोतानी अकलनी कसोटी कराववानी साथ मूर्ख बनवा जेवुं छे. आवा ज्ञानसंपन्न महात्माओनां रचेलां सूत्रो उपर पूर्व थयेला विद्वान आचार्योए निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णो, टीका वीगेरे करीने तेनो संपूर्ण आशय समजाववा मथन करेलुं छे तेमां पण ठेकाणे ठेकाणे “ तत्त्वं केवलिगम्यं ” एवा शब्दो द्रष्टि गोचर थाय छे; जे शब्दो कांइ ओछा अर्थसूचक नथी.

आपणे आपणी परंपराए सांभळेलुं छे के ज्ञानीना ज्ञाननो अनंतमो भाग गणधर महाराज समजी शके तेनो पण बहु थडो भाग आचार्यजी समजी शके वीगेरे. आ उपरथी वांचकवर्गने खात्री थंश के सूत्रोनां भाषान्तर करी तेनुं रहस्य समजाववुं ए ओहुं मुश्केल काम नथी सूत्रोमां टाम टाम केटलाएक एवा शब्दो आवे छे के तेना शब्दार्थ अने भावार्थ तरफ विचार करतां दंय वेसतो आशय मळी शकतो नथी. तेमां वनस्पति वीगेरेनां केटलाएक एवा नामो आवेछे के आजना जमाना ना विद्वानो-डॉक्टरो, रसायणीओ अने वॉटेनिस्टो पण भाग्येज जाणता होय; केटलाएक एवा शब्दो आवेछे के अमाने जे मुश्केली पढ़ीछे तेनो ख्याल मात्र विद्वान् वर्गज करी सकशे.

जैनोमां जे जुदा जुदा संप्रदाय पढेले छे तेनुं कारण पण पूर्वोक्त शब्दो ना मनगमता जुदा जुदा अर्थ करवानुंछे आवे प्रसंगे तमाम संप्रदायने; अनुकूल, तेमज सूत्र शैली अनुसार अर्थ गोठववो तेमां द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव अने विद्वान् वर्गना अभिप्रायो नो आश्रय लेवो पडयो छे.

जे वखते सूत्रो लखायां अने हाल जे वखते आपणे ते वांचीए छीए तेमां संख्याबंध वर्षो नो आंतरो छे, जे दरम्यान जमानो विद्या, कला, कौशल्य, अने हुन्नरमां बहु आगळ वधेलो छे अने वर्तमान विदेशी विद्वानो नी दर्शनीक शक्ति आगळ सूत्रज्ञानने विषे पण पूर्ण माहीती धरावनार पुरुषोनी पुरती खोटे छे, तेनुं कारण आपणा रुढ विचारोने वळगी रहेवानी आपणी टेव छे. एक कहेवत छे के. "Be a Roman in Rome" एटले के देश काळने मान आपीने वर्तवाधी स्वधर्म तेमज व्यवहार पक्षमां सुगमता रहे छे.

आ सूत्रना भाषांतर संबन्धे "मुंबई समाचार" मां जे कडवी टीकाओ चर्चापत्र तरीके प्रसिद्ध थयेली छे अने जेमां मात्र आंधळी श्रद्धापर दौराई निष्पक्षपात द्रष्टिधी दूर रही, लखाण करवामां आवुंछे, ते अमारी समज वहार हतु एम कोइए धारवानुं नथी, अमे पोते पण कबुल करीए छीए के पवित्र सूत्रनां भाषान्तर करवां अने तेमनुं रहस्य वहार लाववुं ए बहुज गुडकेल अने महाभारत काम छे. परन्तु हालना द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावने अनुसरी, केळवाएलो वर्ग जेना पर भविष्यनी प्रजा अने स्वधर्मना उदयनो आधार छे तेओ, आवां मूल सूत्रो भंडारोमां सदतां पढेलां होवाधी, समजवाने, भाषाना अजाणपणाने लीधे, प्रयत्न करता नथी, ते अटकाववानी खातर "Something is better than nothing" ए न्यायने अनुसार अमोए आ भाषान्तर एक विद्वान साधु मुनिराजनी काळजी भगी देखरेख नीचे तैयार करलुं छे. जो के ज्ञाना धरणीय कर्मनी वाहुल्यताने लड़ने अमो निर्दोष होवानो दावो करी शकता नथी छतां अमोए सर्व संप्रदायवाळाओने अनुकूल पढे तेम सादी अने सरळ भाषामां भाषान्तर करवा यथाशक्ति प्रयत्न करलो छे—ज्यारे सघळी कोमो धर्म ज्ञानमां उंही उतरती जइ पोत पोतानी भाषामां पोतानां धर्म पुस्तको प्रसिद्ध कर छे त्यारे जैन सूत्रो के जे मागधी भाषामां लखायेलां

छे, ते भाषा देशना कोइ पण भागभां प्रचलित नहीं होवाथी, ते बांचवा अने समजवा हालने केटलो जैन वर्ग श्रम छे छे तेना आंकडा अमो बहार लावीए तो पोताना पग परज कुहाडो मारवा जेवुं थाय.

आ सूत्रनुं भाषान्तर बडुज संभाळथी करवामां आव्युं छे अने वळी बधारे खुशी यवा जेवुं एछे के जैन संप्रदाय मांहेनां एक करतां बधारे पक्षनाळाओए साथे मळीने आ भाषान्तर तैयार करेलुं होवाथी ते निष्पक्षपात थाय तेमां नवाइ जेवुं नहीं अने तेथी सर्वेने ते रुचीकर यवा संभव छे.

आ भाषान्तर अमोए ढांको बखत ययां तैयार करेलुं परंतु द्रव्य, क्षेत्र, काल अनेभावनां सारा संजोग बचे आ महान् पवित्र पुस्तक प्रसिद्ध थाय एवी अमारी इच्छा हती. छेळां प्रण चार वर्षथी आपणा आर्य देशने अनावृष्टि अने दुष्टकाळथी घहु पीढावुं पदे छे तेथी अमो सारा बखतनी राह जोता हता छतां केटकाक सुब्र मित्रोना आम्रइथी आवा संजोगो बचे पण आ पुस्तक प्रसिद्ध करवुं पड्युं छे आ पुस्तकनो ब्होळो फेळावो घइ सदुपयोग थाय एवुं अमे इच्छीए छीए.

आ भाषान्तर करवामां जे विद्वान साधु मुनिराजजीए अमोने निष्पक्षपात अने निःस्वार्थ साक्षता आपली छे अने जे पोतानुं नाम प्रसिद्धिमां लाववा खुशी नहीं तेनो अमो अमारा जीगरथी उपकार मानीए छीए.

आ भाषान्तर करतां भूलथी, द्रष्टिदोषथी, हस्तदोषथी के विचार दोषथी जे कांइ मूळ सूत्रकारना अभिप्रायथी विपरीत ययुं हाय तेने माटे श्री अरिहंत, सिद्ध, केशळी, तथा श्री षतुर्विध संघनी साक्षीए अमे अंतःकरण पूर्वक माफी मागीए छीए.

अशाद पूर्णिमा.

प्रो. रवजीभाइ देवराज.

अने

जैन स्कूलर्स—मोरवी.

विज्ञापना.

अथवा

(वांचनारने भलामण—)

वांचनार! हुं आजे तमारा हस्तकमळमां आर्वुं छुं, मने यत्न पूर्वक वांचजो, मारां कहेलां तत्त्वने हृदयमां धारण करजो, हुं जे जे वात कहुं छुं ते ते विवेक-थी विचारजो; एम करशो तो तमे ज्ञान, ध्यान, नीति, विवेक, सद्गुण, अने आत्मशान्ति पामी शकशो.

तमो जाणता हशो के केटलाक अज्ञान मनुष्यो नहि वांचवा योग्य पुस्तको वांचीने पोतानो वखत खोइ दे छे अने अवळे रस्ते चडी जाय छे, आ लोकमा अपकीर्ति पामे छे तेमज परलोकमां नीची गतीए जाय छे.

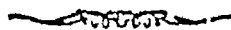
तमे जे पुस्तको भण्या छे अने हजु भणो छे ते पुस्तको मात्र संसारनां छे; परन्तु आ पुस्तक तो आ भद अने परभव वन्नेमां तयारं हित करशे. भगवाननां कहेलां वचनोनो एमां उपदेश करेलोछे.

तमे कोइ प्रकारे आ पुस्तकनी आशातना करशो नहि! तेने फाडशो नहि. डाघ पाडशो नहि, के वीजी कोइ पण रीते वगाडशो नहि. विवेकथी सवळुं काम लेजो, विचक्षण पुरुषोए कहेलुं छे के—विवेक त्यांज धर्म छे.

तमने एक ए पण भलामण छे के जेओने वांचता नहि आवडतुं होय अने तेनी इच्छा होय तो आ पुस्तक अतुक्रमे तेने वांची संभळावतुं.

तमे जे वातनी गम पामो नहि ते डाढ्या पुरुष पोसेथी समजी लेंजो, सम-जवामां आळस के मनमां शंका करशो नहि, तमारा आत्मानुं आथी हित थाय तमने ज्ञान, शान्ति, आनंद मळे, तमो परोपकारी, दयाळु, क्षमावान विवेकी अने बुद्धिशाली थाओ एवी शुभ याचना अर्हत भगवान् कने करी आ पाठ पूर्ण करं छुं.

“मोक्ष माळा.”





अनुक्रमणिका.

श्रुतस्कंध पहेलो.

पृष्ठ

अध्ययन पहेलुं. (शस्त्र परिज्ञा)

पहेलो उद्देशः—आत्मपदार्थ विचार तथा कर्मबंधहेतु विचार.	१
वीजो उद्देशः—पृथ्वीकायनी हिंसानो परिहार (दुःखना अनुभव माटे अंधवधिरनुं दृष्टांत कलम १५)	४
त्रीजो उद्देशः—अप्कायनी हिंसानो परिहार.	८
चोथो उद्देशः—अग्निकायनी हिंसानो परिहार.	११
पांचमो उद्देशः—वनस्पतिकायनी हिंसानो परिहार. (शरीरना साधर्म्यथी वनस्पतिमां जीव स्थापवानी युक्ति-कलम ४४)	१४
छट्टो उद्देशः—त्रस जीवोनी हिंसानो परिहार. (त्रस जीवोनी हिंसाना हेतुओ-कलम ४४)	
सातमो उद्देशः—वायु कायनी हिंसानो परिहार.	२१

अध्ययन वीजुं. (लोक विजय)

पहेलो उद्देशः—मात पिता वगेरे लोकने जीती संयम पाळवो.	२५
वीजो उ०—अरति टाळी संयममां द्रढ रहेवुं.	२८
त्रीजो उ०—मानने टाळवुं तथा भोगमां रक्त न थवुं.	३१
चोथो उ०—भोगोथी रोगो थाय छे.	३४
पांचमो उद्देशः—विषय भोग त्यागीने लोक निश्चाए आहारादिक ल- इने विचरवुं.	३७
छट्टो उद्देशः—संयमार्थे लोकने अनुसरतां छतां तेनी ममता न करवी.	४२

अध्ययन त्रीजुं. (शीतोष्णीय.)

पहेलो उद्देशः—परमार्थे सूतेलो कोण?	४७
वीजो उद्देशः—पापनां फळ तथा हितोपदेश.	५०
त्रीजो उद्देशः—पाप न करवां अने परीपह सढेवा एटलायी कंड सावु नर्थ थवावुं.	५३

चौथो उद्देशः—कषाय छाँडवा. ५६

अध्ययन चौथुं. (सम्यक्त्व)

पहेलो उद्देशः—सत्यवाद. ५९

वीजो उद्देशः—परमतनुं विचार पूर्वक खंडन. ६१

त्रीजो उद्देशः—तपोनुष्ठान. ६४

चौथो उद्देशः—संयममां संस्थित रहेवुं. ६६

अध्ययन पांचमुं. (लोकसार)

पहेलो उ०—प्राणिनी हिंसा करनार, विषयो मोटे आरंभमां प्रवर्त्त-
नार तथा विषयोमां जे आसक्त होय तेने मुनि न गणवो. ६९

वीजो उ०—जे हिंसादिक पापोथी निवर्त्यो होय तेज मुनि गणाय. ७२

त्रीचो उ० जे मुनि होय ते कशो परिग्रह न राखे तथा काम भोगनी
इच्छा पण न करे ७५

चौथो उ०—अजाण अगीतार्थ अने सूत्रार्थमां निश्चय विनात्ता मुनिने
एकला फरवामां घणा दोष थाय छे. ७९

पांचमो उ०—मुनिण सदाचारथी वर्त्तुं तथा तेना मोटे जळाशयनो
दृष्टांत. ८२

छठो उ०—उन्मार्गमां न जहुं तथा राग द्वेष तजवा. ८५

अध्ययन छटुं. (धृत)

पहेलो उ०—स्वजन संबधीओ छोडीने धर्ममां परायण धरुं. ८९

वीजो उ०—कर्पोने आत्माथी दूर करवा. ९४

त्रीजो उ०—मुनिण अन्य उपकरण राखवा अने शरीरने जेम वने
तेम कसता रहेवुं. ९७

चौथो उ०—मुनिण सुख लेपट नाई थरुं. ९९

पांचमो उ०—मुनिण संकटोथी नाई डरुं तथा कोइ प्रशंसा के सत्कार
करे तेथी खुशी न धरुं. १०२

(उपदेशवा योग्य आठ वाचनो कलम ३८५)

अध्ययन मातमुं. (महा परिज्ञा)

सात उ०—विन्दिन्न तथा छे. १०७

अध्ययन आठमुं. (विमोक्ष)

पहेलो उ०—कुशीळ परित्याग.	१०८
(लोक ध्रुव छे के अध्रुव ? कलम ३९६)	
वीजो उ०—अकल्पनाय परित्याग.	११२
त्रीजो उ०—खोटी शंकातुं निवारण-(परीपहोथी न डरवुं.)	११५
चोथो उ०—मुनिए कारण योगे वेहानसादि वाळ मरण पण करवा.	११७
पांचमो उ०—मुनिए मांदा थतां भक्त परिज्ञाए मरण करवुं.	१२०
छहो उ०—धैर्य युक्त मुनिए इंगित मरण करवुं.	१२३
सातमो उ०—पादपोपगमन मरण.	१२६
आठमो उ०—काळ पर्यायथी त्रणे मरणनी विधि.	१२९

अध्ययन नवमुं. (उपधान श्रुत.)

पहेलो उ०—महावीर स्वामिनो विहार.	१३५
वीजो उ०—महावीर स्वामिनी वसति.	१४१
त्रीजो उ०—वीर प्रभुए केवां परीपह सहां.	१४५
चोथो उ०—वीर प्रभुनी तपश्चर्या.	१४९

श्रुत स्कंध बीजो.

[पहेली चूलिका]

अध्ययन दशमुं. [पिंडैपगा.]

पहेलो उ०—मुनिए कयो आहार लेवो अने कयो नहि लेवो.	१५५
[ग्रहस्थना घरे प्रवेश करवानी विधि.]	१५८
वीजो उ०—मुनिए अशुद्ध आहार न लेवो तथा जमणवारमां न जवुं.	१६२
त्रीजो उ०—मुनिए जमणवारमां जवाथी थता गेर फायदा.	१६७
चोथो उ०—मुनिए जमणवारमां न जवुं.	१७२
पांचमो उ०—मुनिए कयो आहार लेवो अने कयो नहि लेवो.	१७५
छहो उ०—केवो आहार लेवो तथा केवो न लेवो तेना नियमो.	१८१

सातमो उ०—केम अने केवो आहार लेवो तथा केम अने केवो न लेवो.	१८६
[पाणीनो अधिकार.]	१९०
आठमो उ०—पाणी, फळ, फूल, तथा परचुरण आहार लेवा न लेवा-ना नियमो.	१९२
[कंद फळादिकनो अधिकार.]	१९३
नवमो उ०—क्यो आहार लेवो अने क्यो न लेवो.	१९९
दशमो उ०—मुनिए आहारपाणी लावतां शी रीते वर्तवुं.	२०४
अगीयारमो उ०—मळेला आहार माटेनी वे शिक्षाओ तथा सात पिंडैपणाओ अने सात पाणेपणाओ.	२०९
अध्ययन अग्यारमुं [शय्या]	
पहेलो उ०—वसतिना विचित्र दोषोनुं वर्णन	२१६
वीजो उ०—मुनिने गृहस्थ साथे वसतां थता दोषो तथा नव जातनी वसति.	२२५
त्रीजो उ०—मुनिए कया स्थळे रहेवुं—कया स्थळे न रहेवुं	२४३
[संस्तारकनी चार प्रतिज्ञाओ]	२४९
अध्ययन घारमुं [ईर्या]	
पहेलो उ०—विहारना नियमो.	२४९
[मुनिए ब्रह्मणपर क्यारे चडवुं]	
वीजो उ०—ब्रह्मणपर चडवा तथा पाणीमार्थी पसार थवा विगेरे विधि.	२५०
त्रीजो उ०—विहार करवानी विधि.	२६७
अध्ययन तेरमुं. [भाषा जात.]	
पहेलो उ०—भाषाना सोळ विभाग तथा चार प्रकारो.	२७५
वीजो उ०—मुनिए केवी रीते वोलवुं?	२८१
अध्ययन चांदमुं [वस्त्रैपणा.]	
पहेलो उ०—मुनिए वस्त्रो केवां अने केम लेवां?	२९०
वीजो उ०—वस्त्र संवंधी वधु आज्ञाओ.	३०२
अध्ययन पंढरमुं [पात्रैपणा.]	
पहेलो उ०—पात्र केवां अने शी रीते लेवां?	३०७

वीजो उ० -पात्र विषे वधु आज्ञाओ.	३१३
अध्ययन सोलमुं. [अवग्रह प्रतिमा.]	
पेहेलो उ०-रहेवानुं मकान केवुं पसंद करवुं?	३१७
वीजो उ०-रहेवानुं मकान पसंद करवानी रीत तथा ते वावतनी सात प्रतिज्ञाओ.	३२३

बीजी चूलिका.

अध्ययन सतरमुं [स्थान]	
पहेलो उ०-उभा रहेवानी जग्या केवी पसंद करवी.	३३२
अध्ययन अठारमुं [निषीधिका]	
पहेलो उ०-अभ्यास करवा माटे जगा केवी पसंद करवी.	३३५
अध्ययन ओगणीसमुं. उच्चार प्रश्रवण.	
पेहेलो उ०-स्थंडिल माटे केवी जग्या पसंद करवी?	३३७
अध्ययन वीशमुं. (शद्ध)	
पेहेलो उ०-मुनिए शद्धमां मोहित न थवुं.	३४६
अध्ययन एकवीशमुं. (रूप)	
पेहेलो उ०-रूप जोइ मोहित न थवुं.	३५३
अध्ययन वावीशमुं. (पराक्रिया)	
पेहेलो उ०-वीजानी क्रियामां मुनिए केम वर्त्तवुं?	३५५
अध्ययन त्रेवीशमुं. [अन्योन्य क्रिया.]	
पेहेलो उ०-मुनिओए अरसपरस थती क्रियामां केम वर्त्तवुं?	३६१

त्रीजी चूलिका.

अध्ययन चोवीशमुं. [भावना.]	
पेहेलो उ०-महावीर प्रभुतुं चरित्र तथा पांच महाव्रतोनी भावनाओ [भावनाओ.]	३६२
अध्ययन पचीशमुं. [त्रिभुक्ति.]	
पेहेलो उ०-द्वित शिक्षाना काव्यो.	३९८
(समाप्ति.)	



आचाराङ्ग सूत्रम्.

प्रथमः श्रुतस्कन्धः

शस्त्रपरिज्ञानात्मकं प्रथम मध्ययनम्

(प्रथम उद्देशः)

सुयं मे आउसं, तेणं भगवया एवमक्खायं । (१)

श्रुत स्कंध^१ पेहेलो

अध्ययन^२ पेहेलुं.

शस्त्र परिज्ञा.^३

अथवा

भाव शस्त्रांनी समज.

पेहेलो उद्देश.

(आत्मपदार्थ^४ विचार तथा कर्मबंध हेतु^५ विचार.)

(आत्मपदार्थ विचार.)

(सुधर्मस्वामी ६ जंतूने ७ कहेछे) हे दीर्घ आयुष्यवाळा जंतू, में (८ श्रमण भगवान महावीर ९ पासेथी) सांभळेलुं छे; ते भगवान् आ प्रमाणे वोल्या हता. (१)

१ श्रुतस्कंध एटले सूत्रनो भाग. २ अध्ययन एटले अध्याय. ३ शस्त्र वे जातना छे:-द्रव्य शस्त्र अने भाव शस्त्र. द्रव्य शस्त्र तरवार त्रिशूरे. भाव शस्त्र पापमां प्रवर्तना मन वचन अने शरीर. अहीं ए भाव शस्त्र लेवां, तेनी परिज्ञा एटले समज. परिज्ञा वे छे-ज्ञ परिज्ञा, अने प्रत्याख्यान परिज्ञा, ज्ञ परिज्ञा एटले ए क्रियाओ कर्म बंधनी हेतु छे एतुं बरोबर समजहुं. अने प्रत्याख्यान परिज्ञा एटले तेहुं समजाने ते ओनो त्याग करवां. ४ जीव. ५ कर्म बांधवानां कारणो. ६ श्री महावीर प्रभुना पांचमा गणधर. ७ सुधर्म स्वामीना त्रिपय. ८ परोपकारार्थ महाश्रम लेनार. ९ छेह्ला तीर्थदार.

इह मेगेसिं णो सण्णा भवइ, तंजहा, पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि? दाहिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि? पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि? उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि? उट्ठाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि? अहे दिसाओ वा आगओ अहमंसि? अण्णयरीओ वा दिसाओ अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि? । एवमेगेसिं णो णायं भवइ, अत्थि मे आया उववाइए? णत्थि मे आया उववाइए? के अहमंसि? के वा इओ चुओ इह पेच्चा भविस्सामि ? (२)

से जं पुण जाणेज्जा सहसम्मइयाए, परवागरणेणं, अण्णेसिं अंति-ए वा सोच्चा, तंजहा, पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, जाव अण्णयरीओ दिसाओ अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि । एवमेगेसिं णायं भवइ, अत्थि मे आया उववाइए, जो इमाओ दिसाओ अणुदिसाओ वा

आ जगतमां जेम केटलाक जीवोने (एवुं) ज्ञान नथी होतुं के हुं कइ दि-शाथी (अत्रे) आवेलो छुं? पूर्वथी के दक्षिणथी? पश्चिमथी के उत्तरथी? ऊपरथी के नीचेथी? अथवा कोइ पण दिशाथी के विदिशाथी? तेज प्रमाणे केटलाक जीवोने एवु ज्ञान (पण) नथी होतुं के मारो आत्मा^१ पुनर्जन्म पामनारो छे के नहि? हुं (अगाड) कोण हतो? अथवा अहिंथी चर्दीने^२ (जन्मांतरमां) हुं कोण थ-इय? (२)

हवे [जेथो “हुं कइ दिशाथी आव्यो छुं” एवुं नथी जाणता तेओमांने] कोइ जीव, जातिस्मरण^३ विगरे^४ ज्ञानथी, अथवा तीर्थकरना आपेला उत्तरथी अथवा बीजा कोइना पासेथी सांभळीने जाणी शके के हुं अमुक दिशाथी अथवा विदिशाथी आव्यो छुं; तेज प्रमाणे केटलाएकने एवुं ज्ञान होय छे के, मारो आ-त्मा पुनर्जन्म पामनारो छे, जे आत्मा अमुक दिशा अथवा विदिशाथी आवेलो छे. अने जे अमुक दिशा अथवा विदिशा अथवा सर्वदिशाथी आव्यो छे ते हुं छुं.

१ जीव, २ मरीने, ३ जेनाथी गया जन्मनी चात याद आवे एवुं ज्ञान, ४ विगरे शब्दथी अबाधि, मन पर्यव अने केवल ज्ञान.

अणुसंचरइ, सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ जो आगओ अणु-
संचरइ, सोहं । से आयावादी, लोगावादी, कम्मावादी, किरियावादी । (३)

अकारिस्सं च हं, काराविस्सं च हं, करओयावि समणुत्ते भविस्सा-
मि; एयावंति सव्वावंति लोगांसि कम्मसमारंभा परिजाणियव्वा भवंति । (४)

अपरिणायकम्मा खलु अयं पुरिसे, जो इमाओ दिसाओ अणु-
दिसाओ वा अणुसंचरइ, सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ साहेति,
अणेगरुव्वाओ जोणीओ संघेइ, विस्वस्ववे फासे पडिसंवेदेइ । (५)

तत्थ खलु भगवता परिण्णा पवेइया । (६)

आवा ज्ञानवाळो जे पुरुष होय तेज (खरेखरो) आत्मवादी, ^१ लोकवादी, कर्मवा-
दी, अने क्रियावादी [जाणवो] । (३)

(कर्म बंध हेतु विचार).

में कीवुं, ? में करावुं, २ में बीजा करनारने रुडुं मानुं, ३ हुं कलुंछुं,
४ हुं करावुंछुं, ५ हुं बीजा करनारने रुडुं मानुंछुं, ६ हुं करीच, ७ हुं करावीग,
८ हुं बीजा करनारने रुडुं गानीश ९ (ए नव भेदोने एन वचन अने कायथी २
गणीए तो सत्तावीश भेद थाय) (ए प्रमाणे) एटलाज (मात्र) आत्ता लोकमां क-
र्मसमारंभ एटले कर्म बांधवाना कारणभूत क्रियाओना भेदो जाणवाना छ. (४)

ए क्रियाओने नहि जाणनार पुरुषज आ दिशाओ तथा विदिशाओ अने
सर्व दिशाओमां भ्रम्य करे छे, अनेक योनिओमां^३ उपजे छे, अने अणगयता
स्पर्श विगेरनां दुःखो भोगने छे. (५)

(आ प्रमाणे भनवाने अपेचुं बापज बोलीने ह्वे पोते शुद्धि न्वापी जंदूने
कहे छे)

ए क्रियाओ पेटे भगवाने "परिण" (एटले शुद्ध समन) बोली छे. (६)

^१ वादी माननार—आत्मवादी—आ मां माननार खरोर उजातिओमां

इमस्सचेव जीवियस्स परिव्रंढणमाणणपूयणाए, जाइमरणमोयणाए,
दुक्खपाडिघायहेउं । (७)

एयाव्रंति सव्वाव्रंति लोगंसि कम्मसमारंभा परिजाणियव्वा भ-
वंति । (८)

जस्सेते लोगंसि कम्मसमारंभा परिण्णाया भवंति, से हु सुणी चि
वेमि^१ । (९)

[द्वितीय उद्देशः]

अट्टे^२ लोए परिजुण्णे दुस्संबोहे अविजाणए; अस्सिं^३ लोए पव्व-
इए तत्थ तत्थ पुढो, पास, आतुरां परित्तावैति । (१०)

^१ ब्रवीमि ^२ आर्त्तः ^३ अस्मिन्

(ए क्रियाओमां माणसो,) आ शरीरने ववु ट्काववा माटे, कीर्त्तिं मेळववा
माटे, यान पामवा माटे, अने खान पान तथा धनादिकना माटे (प्रवर्ते छे.) (७)

(ए प्रमाणे) आखा लोकमां ऊपर वताज्या तेदलाज क्रियाना भेदो जाण-
वाना छे. (८)

(उपसंहार)

(समस्त वस्तुना जाणनार भगवान् केवळ ज्ञानथी साक्षात् जोडने कहे छे
के) जेणे ए क्रियाना भेदो (ऊपरनी जणावेली वे परिज्ञाओथी) शुद्ध समजेल
होय, तेज, कर्मोने समजनि तेना कारणोथी दूर रहनार मुनि जाणवो.)

ए प्रमाणे (हेजंबू ए सघळुं हुं भगवान् पासेथी सांभळीने तने) कहुंछुं. (९)

वीजो उद्देश.

(पृथ्वीकायनी हिंसानो परिहार.)

आ जगत्मांना जीवो (त्रिपय अने कपायथी) पीडायेलो छे, वधी रीते धीन
थपला छे, अने घणी मुर्खावते समजा शके तेवा वनेला छे, (कारण के) तेओ
अजाण छे; (अने एवाज होवथी,) तेओ अधीरा यडने गरीव पृथ्वीकायना जूदा
जूदा खपमां ते पृथ्वीकायने संताप्या करे छे. (१०)

संति पाणा पुढो सिया । लज्जमाणा पुढो, पास[११]

अणगारा मो त्ति एणे^१ पवयमाणा; जमिणं विरूवरूवेहिं सत्येहिं पुढविकम्मसमारंभेणं पुढविसत्थं समारंभमाणा अण्णे अणेगरूवे पाणे वि-
हिंसइ । [१२]

तत्थखलु भगवया परिण्णा पवेइआ । इमरस चैव जीवियरस प-
रिवंदण-माणण-पूयणाए, जाइमरणमोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं, से स-
यमेव पुढविसत्थं समारंभइ, अण्णेहिं पुढविसत्थं समारंभावेइ, अण्णेवा
पुढविसत्थं समारंभंते समणुजाणइ । तं से अहियाए, तं से अबोहिए। [१३]

से तं संबुद्धमाणे आयाणयिं^२ समुट्ठाए सुच्चा खलु भगवओ,

१ [बौद्धाः] २ [ज्ञान दर्शन चारित्र रूप] आदानीयं. ३ इत्यर्थं
गृह्य :

पृथ्वीमां जूदा जूदा अनेक जीव छे. एथीज करीने, ज्ञानीओ तेनी हिंसा
करतां शरमाय छे. (११)

केटलाएक १ भिक्षुको कहे छे के “अमेज मात्र अणगार एटले जीवरक्षाने
माटे घर छोडीने थयेला यतिओ छीए ” पण ए तेमनो मात्र बकवादज छे कारण-
के तेओ आ पृथ्वीथी थता कामोमां पृथ्वीकायना जीवोने अनेक हथियारोवेडे मार-
ता रहे छे, तथा ते साथे वनस्पति विगेरे अनेक जीवोने पण मारे छे. (१२)

आ स्थळे भगवाने शुद्ध समज आपी छे के प्राणीओ, लांबुं जीववा माटे,
कीर्त्ति मेळववा माटे, मान पामवा माटे, जन्म जरा तथा मरणथी छुटा थवा माटे,
अने दुःख मटाडवा माटे, जाते पृथ्वीकायनी हिंसा करे छे, बीजा पासे करावे छे-
बीजाने करतां रुडुं माने छे; पण ए वधुं तेमने अहित करनार अने अज्ञान बधार-
नार (थवानुं). (१३)

समजु पुरुष ए पृथ्वीकायनी हिंसाने अहित करनारी जाणता थका साक्षात्

१ (बौद्धमतना.)

अणगाराणं अंति ए; इह मेगोसिं णायं भवति—एस खलु गंधे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णिरए । इच्चत्थं^३ गाटिए लोए ; जसिणं विरुवरुवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेणं पुढविसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरुवे पाणे त्रिहिसइ । [१४]

से वेसि—अप्पेगे अंध मब्भे,^१ अप्पेगे अंध मच्छे;^२—अप्पेगे पाय मब्भे, अप्पेगे पाय मच्छे;—अप्पेगे गुंफ मब्भे, २ ॐ अप्पेगे जंध मब्भे, २ अप्पेगे जाणु मब्भे, २ अप्पेगे ऊरु मब्भे, २ अप्पेगे कडि मब्भे, २ अप्पेगे णामि मब्भे, २ अप्पेगे उयर मब्भे, २ अप्पेगे पास मब्भे, २ अप्पेगे पिट्टि मब्भे, २ अप्पेगे उर मब्भे, २ अप्पेगे हियय मब्भे २ अप्पेगे थण मब्भे, २ अप्पेगे खंध मब्भे, २ अप्पेगे बाहु मब्भे २ अप्पेगे हत्थ मब्भे, २ अप्पेगे अंगुलि मब्भे, २ अप्पेगे णह मब्भे, २ अप्पेगे गवि मब्भे २ अप्पेगे हणुय मब्भे, २ अप्पेगे होट्टु मब्भे,

१आभिञ्जात् २ आच्छिद्यात् ३ द्विकचिह्नात् सर्वत्र अच्छे इत्यंत वीरिपदमपि वाच्यम्

तार्थिकर भगवान् अयत्र तेयना साधुओ पासैथी पोताने आदरवा लायक (ज्ञान दर्शन अने चारित्र रूप) वस्तुओ सांभळी करिने तेमनो अंगीकार करे छे.(अने) तेवा पुरुषो एवं सयजे छे के आ (पृथ्वीकायना आरंभ) ते खरेखर कर्मबंधनो हेतु छे, योहनो हेतु छे, मरणनो हेतु छे, अने नरकनो हेतु छे; एवं छतां जे घणा लोको ए पृथ्वीकायना जीवने तया तेना सायना बीजा अनेक जीवने अनेक प्रकारना ज-स्रोवडे मारता रहेछे, ते यात्र तेओ खावा पीवा तथा कीर्ति विगरे मेळववासां मुंशा-इ पडया छे. (१४)

(हे शिष्य, जो तमे मने पूछयो के ए पृथ्वीकायना जीवो देखता नयी, सूं-घता नयी, सांभळता नयी अने चालता पण नयी मोटे एमने मारतां ते त्री पीडा थती ह्यो! तो हुं एक दृष्टांतयी कहुं छुं के जेम कोई एक जन्मयीज अंधवधिर पुरुष होय तेने) जूदा जूदा माणसो तेना पण, छुंटी, जंघा, घुंटाण, सायळ, कंढ,

२ अप्पेगे जीह मब्भे, २ अप्पेगे तालु मब्भे, २ अप्पेगे गल मब्भे,
 २ अप्पेगे गंड मब्भे, २ अप्पेगे कड्ड मब्भे, २ अप्पेगे णास मब्भे,
 २ अप्पेगे अच्चि मब्भे, २ अप्पेगे भमुह मब्भे, २ अप्पेगे णिडाल मब्भे,
 २ अप्पेगे सीस मब्भे; २ अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्वए। (१५)

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चैते आरंभा अप्परिण्णाया भवंति।

एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चैते आरंभा परिण्णाया भवंति। (१६)

तं परिण्णाय मेहावी नेव सयं पुढविसत्थं समारंभेज्जा, नेवण्णेहीं
 पुढविसत्थं समारंभावेज्जा, नेवण्णे पुढविसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा।
 जस्सेते पुढविकम्मसमारंभा परिण्णाया भवंति से हु मुणी परिण्णायकस्से चि
 वेमि। (१७)



नाभि, पेट, पांसळी, पूंठ, छाती, हैयुं, स्तन, खभा, बाहु, आंगळीओ, नख, गळुं,
 इडपची, होठ, जीभ, तालु, लग्गणा, कान, नाक, आंख, भ्रमर, ललाट, अने
 मायुं विगेरे अवयवोणां भालानी अणीओ परेवे [त्यारे ते अंधवधिरने जे प्रमाणे
 वेदना थाय छे. तेज प्रमाणे एकेंद्रिय जीवोने पण मारतां वेदना थाय छे.]

(अथवा जेव एक माणसने कोइ एकदम घा मारी मूर्छित करे अने पछी
 मारी नारवे त्यारे तेने मूर्च्छा होवा छतां पण पीडा थायज छे ते प्रमाणे ए
 पृथ्वीकायना जीवोने पण मारतां वेदना थायज छे.) (१५)

ए पृथ्वीकायनी हिंसा करनार पुरुषने आरंभनुं ज्ञान अने त्याग नथी होता
 एटले आरंभ लाग्या करे छे, अने तेनी हिंसा वर्जनार पुरुषने आरंभनुं ज्ञान तथा
 त्याग होय छे एटले आरंभ लागी शक्तो नथी. (१६)

[माटे] बुद्धिमान् पुरुषे ए वधुं जाणीने जाते पृथ्वीकायनी हिंसा करवी नहि
 बीजा पासे कराववी नहि, अने तेना करनारने रुडुं मानवुं नहि. [एवी रीते] जे-
 पृथ्वीकायनी हिंसाने अहित करनारी समजीने त्याग करे तेज मुनि जाणवो; एम
 हुं कहुंछुं. [१७]

अणेगरूत्रे पाणे विहिंसाइ । [२३]

से बेमि, संति पाणा उदयनिस्तिया जीवा अणेगे । इह खलुभो
अणगाराणं उदयं जीवा वियाहिया^१ । सत्थं चेत्य अणुवीइ^२ पास । पुढे
सत्थं पवेदितं । [२४]

अदुवा अदिन्नादाणं । [२५]

“कप्पति णे कप्पति णे पाउं, अदुवा विभूसाए,”^३ पुढेसत्थेहिं
विउदंति^४ एत्थवि तेसिं णो णिकरणाए^५ । [२६]

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इव्वेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।

१ व्याख्याताः २ अनुविचिंत्य ३ [इत्युक्त्वा इतिशेषः] ४ व्या-
वर्त्तयंति [व्यपरोपयंति] ५ निकरणाय [निश्चयाय] [आगम इतिशेषः]
या जीविते सर्वा करे छे. [२३]

एवे हुं कहुं हुं के पाणीना साथे तेनां बीजा अनेक प्राणिओ-जीवी रहेला
छे. एण जैनआरामां तो, ए पाणी जाते एण सजीव छे, एम सावुओने जणावेहुं
छे. [माटे सावुओए अचित्त पाणी वापरवुं, ते अचित्त पाणी स्वभावे एण थाय
छे अने शस्त्रना संयोगे एण थाय छे, तेनां सावुओए शस्त्रना संयोगधी अचित्त
थएहुं पाणी वापरवुं.] ते शस्त्रो अनेक प्रकारना कहेला छे. माटे ते पांते विचारी
लेवां. [२४]

वळी सचित्त पाणी वापरतां अदत्तादाननो दोष एण लागे छे. [कारण
के सचित्त एक परपरिगृहीत वस्तु छे अने ते तदंतर्गत^१ जीवोनी रजा न होवा
छतां वापर्यायी अदत्तादान लागेज.] [२५]

केटलाक बोले छे के अकारे पीवा माटे अयत्रा स्नानशोभा माटे पाणी वाप-
रवामां कशो दोष नयी, अने एम कही तेओ अनेक प्रकारे तेनी हिंसा करे छे.
एण ए तेमहुं बोलवुं टकी शके तेहुं नयी. [कारण के तेओ पाणीने अजीव कहे
छे ते असिद्ध वात छे] [२६]

ए पाणीनी हिंसा करनारने तेनथी लागता आरंभोनी शुद्ध समज नबी

१ तेनी अंदर रहेला.

एत्य सत्यं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाय भवन्ति। तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं उदयसत्यं समारंभेज्जा, णेवत्तेहिं उदयसत्यं समारंभावेज्जा, उदयसत्यं समारंभंतेवि अण्णे ण समणुज्जाणेज्जा अस्सेते उदयसत्यसमारंभा परिण्णाय भवन्ति से हु मुणी परिण्णायकम्मे त्ति बेमि । (२७)

[चतुर्थ उद्देशः]

से बेमि, णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा । जे लोगं अब्भाइक्खति, से अत्ताणं अब्भाइक्खति; जे अत्ताणं अब्भाइक्खति, से लोगं अब्भाइक्खति । [२८]

होती. अने जेओ ए पाणीनी हिंसा तथा करता तेमने आरंभ वादत शुद्ध समज छे तथा तेने कसो आरंभ लागतो नथी. एवं जाणीने बुद्धिमान् पुरुषे जाते पाणीनी हिंसा न करवी, बीजा पासे न कराववी, अने तेना करनारने रुडं पण नहि मानवुं. एवी रीते पाणी संबंधी आरंभोनी जेने मःहिती होय तेज आरंभनुं स्वरूप जाणीने तेनो त्याग करनार मुनि जाणवो एम हुं रुडं छुं. [२७]

चौथो उद्देश.

[अग्रिकायनी हिंसानो परिहार.]

हुं कहुंछुं के लोकनो एटलै अग्रिकायना जीवोनो अपलाप^१ न करवो अने पोताना आत्मानो पण अपलाप न करवो, जे लोकनो अपलाप करे छे ते पोताना आत्मानो अपलाप करे छे; अने जे पोताना आत्मानो अपलाप करे छे ते लोकनो अपलाप करे छे. [२८]

जे दीहलोग ^१ सत्यस्स खेयन्ने, से असत्यस्स खेयन्ने; जे असत्य-
स्स खेयन्ने, से दीहलोगसत्यस्स खेयन्ने । [२९]

वीरे हिं एयं अभिभूय दिट्ठं संजतेहिं सया जतेहिं सया अप्पम-
चेहिं । [३०]

जे पमत्ते गुणट्टिए, ^२ से हु दंडे पवुच्चति । तं परिणाय मेहावी,
इयाणिं षो, जमहं पुव्वमक्कासी पमादेणं । (३१)

लज्जमाणा पुटो, पास, अणगारा मो त्ति एगे पवयमाणा; जमिणं
विरुवरुवेहिं सत्येहिं अगणिकम्मसमारंभेणं अगणिसत्थं समारंभमाणे,
अण्णे अणेगरुवे पाणे विहिंसति । (३२)

१ (दीर्घ लोकः खलु वनस्पति कायोज्ञेयः) २ (गुणाः अ-
ग्निगुणाः तेषुस्थितः)

जे पुरुष, दीर्घलोक अर्थात् वनस्पति तेने वाळघातुं शक्त्त जे अग्निकाय-
तेतुं स्वरूप जाणे छे ते संयमंतुं स्वरूप जाणे छे, जे संयमंतुं स्वरूप जाणे
छे ते वनस्पतिना शक्त्तरूप अग्निकायतुं स्वरूप जाणे छे. (२९)

आ वातने संयत एटले प्राणातिपातादिक पापथी अलग रहेनार अने
हमेसां निर्दोषपणे चारित्र पाळवासां यत्नवंत, अने अप्रमादी, एवा पराक्रमी
पुरुषोए परीषहादिकोने हरावी केवळज्ञान पासी साक्षात् दीठी छे. (३०)

जे प्रमादी थंडने अग्निसमारंभमां बर्त्या करतो होय ते शुलभगार कहे-
वाय छे. एवं जाणीने बुद्धिमान् पुरुष विचारे छे के जे अगाउ अग्निसमारं-
भ कर्यो छे ते हवेथी नहिं करं. (३१)

केटलाक शरमाता थका बोले छे के अमे अणगार छीये, पण ए तेमनो
फोगटनो वकवाद छे; जे माटे तेओ अनेक प्रकारे अग्निनी तथा ते साथे बीजा
अनेक जीवोनी हिंसा कर्या करे छे. [३२]

तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिया। इमस्स चव जीवियस्स प-
रिवंदणमाणणपूयणाए, जाइ मरणमोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं, से सयमेव
अगणिसत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा अगणि सत्थं समारंभमाणे समणुजा-
णति। तं से अहियाए, तं से अबोहिए। [३३]

से तं संबुद्धमाणे आयाणयिं समुट्ठाए सोच्चा भगवओ, अणगाराणं
वा अंतिए; इह मेगेसिं णायं भवति एस खलु गंथे, एस खलु मोहे,
एस खलु मारे, एस खलु णिए। इच्चत्थं गट्टिए लोए; जमिणं विरूव-
रूवेहिं सत्थेहिं अगणिकम्मसमारंभेणं अगणिसत्थं समारंभ माणे अण्णे
अणेगरूवे पाणे विहिंसति।” [३४]

से बेमि, संति पाणा, पुढविणिसिसया, तणणिसिसया, पत्तणिसिसया,
कट्टणिसिसया, गोमयाणिसिसया, कयवरणिसिसया। संति संपातिसया पाणा
आहच्चं संपयंति य। अगणिं च खलु पुट्ठा एगे संघाय मावज्जंति। जे

१ आहत्य [उभय]

अहीं भगवाने स्पष्ट रीते आज्ञा करी छे के, तेओ आ जीदगानीनी कीर्त्ति,
मान, अने खानपान मोटे, जन्म जरामरणथी छूटवा माटे तथा दुःखो टाळवा माटे
जाते अग्निनी हिंसा करे छे, बीजा पासे करावे छे अने तेना करनारने रुडुं माने
छे. पण ते तेमने आहित अने अज्ञान वधारनार थवानुं. [३३]

एवुं जाणीने सत् पुरुषो, भगवान अथवा तेमना साधुओ पासेथी आदरवा
लायक वस्तुओ सांभळीने आदरे छे अने तेओ एवुं माने छे के अग्निकायनी हिंसा
ते, खरेखर, कर्म बंधनी हेतु छे, मोहनी हेतु छे, मरणनी हेतु छे, अने नर्कनी
हेतु छे. पण अजाण लोको ए दावत विषे घणा मुंझाइ पडया छे. जे माटे तेओ
अनेक प्रकारे अग्निकायनी तथा ते साथेना बीजा जीवोनी हिंसा करता रहे छे. [३४]

जे माटे हुं बतावी आपुंछु के जर्मान, तणखला, पान, लाकडां, छाणा
अने कचरो ए सर्वे साथे त्रस जीवो रहे छे. ते त्रस जीवो तथा बीजा ओर्चिता
अंदर आवी पडता संपातिमं तस जीवो ते वधा अग्नि समारंभ करतां अग्निना

पडता नाना जीवो.

तत्थ संघाय मावज्जंति, ते तत्थ परियाविज्जंति, जे तत्थ परियाविज्जंति, ते तत्थ उड्ढाचंति । [३५]

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चैते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।
एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चैते आरंभा परिण्णाया भवंति । [३६]

तं परिण्णाय मेहावी नेव सयं अगणिसत्थं समारंभेज्जा, नेवन्नेहिं
अगणिसत्थं समारंभाविज्जा, अगणिसत्थं समारंभंतेवि अन्ने न समणुजाणे-
ज्जा । जस्सेते अगणिकम्मसमारंभा परिण्णाया भवंति, से हु सुणी परिण्णा-
यकम्मे त्ति बेमि । [३७]

पंचम उद्देश.

तं णां करिस्सामि मत्ता सतिमं, अभयं विदित्ता तं जे णो करए
अदर आव्ययी तेमना शरिर संकोचावा माडे छे, पछी तेओ मूर्च्छा पावी गरण
पापे छे. [३५]

ए रीते अग्निना समारंभमां पाप रहेला छे. माटे ते जे न करे तेने ए
पाप न लागे. [३६]

एवं जाणीने बुद्धिमान् पुरुषे जाते अग्निनी हिंसा न करवी, वीजा पासे
न कराववी, अने तेना करनारने रुडुं न मानवुं. आदी रीते जेने अग्निकाय
बावत शुद्ध मोहिती होय तेज शुद्ध सज्जवान् मुनि जाणवो एम हुं कहुं
छुं. [३७]

पांचमो उद्देश.

[वनस्पति कायनी हिलानो परिहार.]

हे बुद्धिमान् विष्य, जे पुरुष वनस्पतिने सजीव जाणीने मनमां विचा-

एसोवरए १ ए-थोवरए २ एस अणगारेत्ति पवुच्चति । [३८]

जे गुणे से आवट्टे, जे आवट्टे से गुणे । [३९]

उडुं अहं तिरियं पाईणं पासमाणे ख्वाइं पासइ, सुणमाणे सदाइं
सुणइ, उडुं अहं तिरियं पाईणं मुच्छमाणे ख्वेसु मुच्छति, सदेसुयावि एस
लोगे वियाहिए । एत्थ अगुत्ते अणणाए पुणे पुणे गुणात्ताते वंक्खमायारे
पमत्ते अगार मावसे । [४०]

लज्जमाणा पुढो, पास अणगारा सो त्ति एगे पवदमाणा; जमिणं
विख्वरुवेहिं सत्थेहिं वणस्सइकम्मसयारंभेणं वणस्सइसत्थं ससारंभमाणे
अण्णे अणेगख्वे पाणे विहिंसति । (४१)

१ एष उपरतः [आरंभात् निवृतः] २ अत्र उपरतः [नान्यत्र]

रेछे के हुं दीक्षित थइने वनस्पतिनो आरंभ नहि कलं, अने ए रीते जे
संयम स्वरूप जाणीले वनस्पतिनो आरंभ नर्था करता एवा आरंभत्यागी जैन
मतमां आशक्त होय तेज अणगार वहेवाय. (३८)

जे विषयो छे ते संसार छे अने जे संसार छे ते विषयो छे. (३९)

सागसो, उंचे नीचे अने आडी दिशाओमां जोतायका रूप देखे छे
सांभळता थका शब्द सांभळेछे अने शब्द तथा रूपमां आशक्त पता रहे
छे. विषयो असा छे. १ तेओमां जेओ मुनि थइने अगुप्त एटले बिन परहेज-
गार रहे छे ते भगवाननी आज्ञार्थी बोहर वत्ते . तेओ वारंवार विषयोनुं
आस्वाइन करता थका असंयमने आचरनार थइने प्रमादी वनी घरदास मांडी
छे छे. (४०)

केटलाक शरमाता थका बोलेछे के अमे अणगार छीए पण ते तेमनो
फोगटनो वकवाद छे, कारणके तेओ अनेकप्रकारना शस्त्रोथी वनस्पतिकाय तथा
तेना साथेना थीजा अनेक जीवोनी हिंसा करता रहेछे. (४१)

१(Jacobi) that is called the world भावार्थ—लोकने विषे विषयो एवा छे.

तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता । इमस्स चैव जीवियस्सं
परिवंदणमाणणपूयणाएजातीमरणमेयणाए दुक्खपडिघायहेउं से सयमेव
वणस्सतिसत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा वणस्सइसत्थं समारंभावेति, अण्णे
वा वणस्सइसत्थं समारंभमाणे समणुजाणति; तं से अहियाए, तं से अबो-
हिए । (४२)

से त्तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्टाए सोच्चा भगवओ, अणगारा-
णं वा अंतिए; इह मेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे,
एस खलु मारे, एस खलु णरए । इच्चत्थं गट्टिए लोए; जमिणं विरूवरूवे-
हिं सत्थेहिं वणस्सइकम्मसमारंभेणं वणस्सइसत्थं समारंभमाणे अच्चे अणे-
गरूवे पाणे विहिंसति । (४३)

से बेमि,—इमंपि ^१ जाइधम्मयं, एयंपि ^२ जाइधम्मयं; इमंपि

१ इदं (मनुष्य शरीरं) २ एतत् (वनस्पति शरीरं)

अहिं भगवाने शुद्धरीते समजाव्युं छे के आ जीदगीनी कीर्त्ति, मान,
तथा, खानपानने अर्थे, जन्म जरामरणथी छूटवामाटे, तथा दुःखो टाळवा माटे
जीवो, जाते वनस्पतिनी हिंसा करे छे, बीजा पासे करावे छे, अने तेना कर-
नारने रुडुं माने छे. पण ते तेमने अहित कर्त्ता तथा अज्ञान वधारनार
थवानुं. (४२)

एवुं जाणीने केटलाएकं सत्पुरुषो भगवान् अथवा तेमना साधुओ पासे-
थी स्वरूप सांभळीने आदरवा लायक वस्तु आदरे छे. तेवा पुरुषो एवुं समजे छे
के वनस्पतिनी हिंसा ए खरेखर कर्म बंधनी हेतु छे, मोहनी हेतु छे, मरणनी
हेतु छे, अने नरकनी हेतु छे. तेम छातां लोक, कीर्त्त्यादिकना अर्थे विचारं शून्य
वनेला छे, जे माटे आ वनस्पतिकायनो विविध शस्त्रोवडे समारंभ करता थका बीजा
अनेक प्राणीओनी हिंसा करता रहे छे. (४३)

हुं (जेम सांभल्युं छे तेम) कहंहुं के वनस्पति सजीव छे केमके जेम आ
आपणुं शरीर पेदा थती बीज छे तेम ए वनस्पति पण पेदा थती बीज छे; जेम

बुद्धिधम्मयं, एयंपि बुद्धिधम्मयं; इमंपि चित्तमंतयं, एयंपि चित्तमंतयं; इमंपि छिन्नं मिलाति, ३ एयंपि छिन्नं मिलाति; इमंपि आहारगं, एयंपि आहारगं; इमंपि अणिच्चयं, एयंपि अणिच्चयं; इमंपि असासयं, एयंपि असासयं; इमंपि चओवचइयं, एयंपि चओवचइयं; इमंपि विपरिणामधम्मयं, एयंपि विपरिणामधम्मयं । (४४)

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाय्वा भवंती।
एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाय्वा भवंती। तं परि-
ण्णाय मेहावी णेव सत्थं वणस्सइसत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वणस्सइसत्थं
समारंभावेज्जा, णेवण्णे वणस्सइसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा जस्सेते

३ स्लाति [स्लानतांगच्छति]

शरीर वधे छे तेम ए पण वधे छे; जेम शरीरमां चित्त छे तेम वनस्पतिने पण चि-
त्त छे; १ जेम शरीर कपायुं थकुं सूके छे तेम ए पण सूके छे; जेम शरीरने आहा-
र खपे छे तेम एने पण आहार खपे छे; जेम शरीर अनित्य छे; तेम ए पण अ-
नित्य छे; जेम शरीर अशाश्वत एटले प्रतिक्षण चदलतुं छे तेम ए पण तेवीज छे;
जेम शरीर वधे घटे छे तेम ए पण वधे घटे छे; अने जेम शरीर अनेक विकार
पामेछे तेम ए वनस्पति पण अनेक विकार पायी शके छे; घाटे वनस्पति सजी-
व छे. (४४)

ए वनस्पतिनो समारंभ करतां थर्का अनेक आरंभ लागेछे. जे तेनो समारंभ
न करे तेने कसो आरंभ लागतो नथी. एवं जाणीने बुद्धिमान पुरुषे जाते वनस्प-
तिनी हिंसा न करवी, वीजा पासे न कराववी, अने तेना करनारने रुडुं नाहि घा-

१ जे माटे धावडी-रीसमयणी विगेरे झाडोनो स्वाप तथा प्रबोध करमावुं
मफुल्लित थवुं जोवामां आवेछे केटलाक झाडो पोतानी पाडोथी निधानने बीदी रा-
खे छे. वकुळुं झाड दासना कोगळा छांटवाथी फळे छे. इत्यादि ए घावतना घ-
ण्ण द्रष्टांतो छे.

तस्य खलु भगवया परिण्णा पवेदिता । इमस्स चैव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाएजातीमरणमेयणाए दुक्खपडिघायहेउं से सयमेव वणस्सतिसत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा वणस्सइसत्थं समारंभावेति, अण्णे वा वणस्सइसत्थं समारंभमाणे समणुजाणति; तं से अहियाए, तं से अबो-
हिए । (४२)

से त्तं संबुद्धमाणे आयाणीयं समुट्ठाए सौच्चा भगवओ, अणगारा-
णं वा अंतिए; इह भेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे,
एस खलु मारे, एस खलु णरए । इच्चत्थं गट्टिए लोए; जमिणं विरूवखूवे-
हिं सत्थेहिं वणस्सइकम्मसमारंभेणं वणस्सइसत्थं समारंभमाणे अन्ने अणे-
गरूवे पाणे विहिंसति । (४३)

से बेमि,—इमंपि ^१ जाइधम्मयं, एयंपि ^२ जाइधम्मयं; इमंपि

१ इदं (मनुष्य शरीरं) २ एतत् (वनस्पति शरीरं)

अहिं भगवाने शुद्धरीते समजाव्युं छे के आ जीदगीनी कीर्त्ति, मान,
तथा, खानपानने अर्थे, जन्म जरामरणथी छूटवामाटे, तथा दुःखो टाळवा माटे
जीवो, जाते वनस्पतिनी हिंसा करे छे, बीजा पासे करावे छे, अने तेनां कर-
नारने रुडुं माने छे. पण ते तेमने आहित कर्त्ता तथा अज्ञान वधारनार
थवानुं. (४२)

एवुं जाणीने केटलाएक सत्पुरूषो भगवान् अथवा तेमना साधुओ पासे-
थी स्वरूप सांभळीने आदरवा लायक वस्तु आदरे छे. तेवा पुरुषो एवुं समजे छे
के वनस्पतिनी हिंसा ए खरेखर कर्म बंधनी हेतु छे, मोहनी हेतु छे, मरणनी
हेतु छे, अने नरकनी हेतु छे. तेम छतां लोक, कीर्त्त्यादिकना अर्थे विचारं शून्य
वनेला छे, जे माटे आ वनस्पतिकायनो विविध शस्त्रोवडे समारंभ करता थका बीजा
अनेक प्राणीओनी हिंसा करता रहै छे. (४३)

हुं (जेम सांभल्युं छे तेम) कहुंहुं के वनस्पति सजीव छे केमके जेम आ
आपणुं शरीर पेदा थती चीज छे तेम ए वनस्पति पण पेदा थती चीज छे; जेम

बुद्धिधम्मयं, एयंपि बुद्धिधम्मयं; इमंपि चित्तमंतयं, एयंपि चित्तमंतयं; इमंपि छिन्नं मिलाति, ३ एयंपि छिन्नं मिलाति; इमंपि आहारंगं, एयंपि आहारंगं; इमंपि अणिच्चयं, एयंपि अणिच्चयं; इमंपि असासयं, एयंपि असासयं; इमंपि चओवचइयं; एयंपि चओवचइयं; इमंपि विपरिणामधम्मयं, एयंपि विपरिणामधम्मयं । (४४)

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णायया भवंति।
एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णायया भवंति। तं परि-
ण्णाय मेहावी णेव सयं वणस्सइसत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वणस्सइसत्थं
समारंभावेज्जा, णेवण्णे वणस्सइसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा जस्सेते

३ स्लाति [स्लानतांगच्छति]

शरीर वधे छे तेम ए पण वधे छे; जेम शरीरमां चित्त छे तेम वनस्पतिने पण चित्त छे; १ जेम शरीर कपायुं थडुं सूके छे तेम ए पण सूके छे; जेम शरीरने आहार स्वपे छे तेम एने पण आहार स्वपे छे; जेम शरीर अनित्य छे; तेम ए पण अनित्य छे; जेम शरीर अशाश्वत एटले प्रतिक्षण वदलतुं छे तेम ए पण तेवीज छे; जेम शरीर वधे घटे छे तेम ए पण वधे घटे छे; अने जेम शरीर अनेक विकार पाभेछे तेम ए वनस्पति पण अनेक विकार पायी शके छे; घाटे वनस्पति सजीव छे. (४४)

ए वनस्पतिनो समारंभ करतां थकां अनेक आरंभ लागेछे. जे तेनो समारंभ न करे तेने कसो आरंभ लागतो नथी. एवं जाणीने बुद्धिमान पुरुषे जाते वनस्पतिनी हिंसा न करवी, बीजा पासे न कराववी, अने तेना करनारने रुडुं नाहि मा-

१ जे माटे धावडी-रीसुभगी विगेरे झाडोनो स्थाप तथा प्रबोध करमावुं प्रफुल्लित थवुं जोवाभां आवेछे केदलाक झाडो पोतानी पाडोथी निधानने बीटी राखे छे. वडुळनुं झाड दारुना कोगळा छांदवाथी फळे छे. इत्यादि ए वावतना चण द्रष्टांतो छे.

से तं संबुद्धमाणे आयाणीयं समुद्राए सोच्चा भगवओ, अणगा-
राणं वा अंतिए; इह मेगेसिं णायं भवइ—एस खलु गंधे, एस खलु
मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए । इच्चत्थं गट्टिए लोए; जमिणं
विरुवरूवेहिं तसकायसमारंभेण तसकायसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेग-
रूवे पाणे विहिंसति । (५१)

से बेमि—अप्पेगे अच्चाए^१ हणंति, अप्पेगे अजिणाए वहंति,
अप्पेगे मंसाए वहंति, अप्पेगे सोणिताए वहंति, अप्पेगे हिययाए वहंति,
एवं पित्ताए, वसाए, पिच्छाए, पुच्छाए वालाए, सिंगाए, विसाणाए, दंता-
ए, दाढाए, नहाए, ण्हारुणीए, अट्ठीए, अट्ठिमिजाए, अट्ठाए, अणट्ठाए, अ-
प्पेगे हिंसिसु मेत्ति वा वहंति, अप्पेगे हिंसति मेत्ति वा वहंति, अप्पेगे

१ अर्चार्थ [शरीरार्थ]

एस जाणाने भगवान अथवा तेमना मुनिओ पासेथी तत्व सांभळीने आद-
रणीय वस्तुने ग्रहण करनारा पुरुषो एवं जाणता रहे छे के ए त्रसकायनी हिंसा
खरेखर कर्म बंधनी हेतु छे, मोहनी हेतु छे, मरणनी हेतु छे, तथा नरकनी हेतु छे,
तेम छतां लोको विषयगृह वनेला छे, जेथी तेओ विचित्र आरंभाथी त्रस जीवो
तथा तेना संबंधे रहेल स्यावर जीवोनी हिंसा करता रहे छे. (५१)

(त्रस जीवोनी हिंसाना हेतुओ.)

केटलाएक लोको जानवरोना शरीरने भोग आपवा माटे तेने मारे छे. के-
टलाएक तेना चामडा माटे मारे छे. केटलाएक तेना मांस माटे मारे छे. एम केट-
लाएक लोहीना माटे, केटलाएक हृदयना माटे, केटलाएक पित्त माटे, वसाओ^१
माटे, पीछां माटे, पूछडी माटे, वाल माटे, शिंगडा माटे, दाढाओ माटे, नख माटे,
नाडीओ माटे, हाडकां माटे, चरबी माटे, एम अनेक स्वार्थो माटे तेने मारे छे.
केटलाएक निष्कर्मो जन मात्र गन्त स्वतः जीव हिंसा करे छे. केटलाएक “आप-
णने एणे माथुं हंतुं” एवं विचारीने तेने मारे छे. केटलाएक “आपणने ए मारे छे”

शरीरना अंदरनी रोगे जे रु पीजवाना मजबूत तांतणा तरीके वपराय छे तेमना
माटे.

हिंसिस्संति मत्ति वा वहांति । [५२]

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।
एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति । [५३]

तं परिण्णाय मेहावी णेव सय तसकायसत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं
तसकायसत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे तसकायसत्थं समारंभंते समणुजाणे—
ज्जा, जस्से ते तसकायसत्थसमारंभा परिण्णाया भवंति से हु सुणी परिण्णाय
कस्से त्ति बेमि । [५४]

[सप्तम उद्देशः]

पहू एजस्स^२ दुगंछणाए^३ आयंकदंसी अहियं—ति नच्चा ।

२ [एजः कंपमानः सचवायुः] ३ [आसेवन परिहारे]

एम धारी तेने यारे छे अने केटलाएक “आपणेने ए मारसे” एम विचारी तेने
मारे छे. (५२)

ए त्रसकायनो समारंभ करता अनेक आरंभ लागे छे अने तेहुं रक्षण करता
कशो आरंभ लागतो तयी. (५३)

एम जाणी बुद्धिमान् पुरुषे जाते त्रस जीवोनी हिंसा न करवी, बीजा पासे
न कराववी, तथा करनारने अनुयाति षण नहि आपवी. जेणे ए रीते त्रसकायनी
हिंसा अहितकर्त्ता जाणी त्यक्त करी होय तेज मुनि जाणवो, एम हुं कहुंहुं. (५४)

सातमो उद्देश.

(वायुकायनी हिंसानो परिहार)

जे हिंसाने अहित करनारी जाणी, वायुकायनी हिंसाने दुःख देबारी जाणे

जे अज्झत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ; जे बहिया जाणइ, से अज्झत्थं जाणइ । एयं तुल-मन्नेसि । इह सतिगया दविया^१ णावकंखंति जी-विउं^२ । (५५)

लज्जमाणा पुढो, पासं, “अणगारा मोत्ति” एगे पवयमाणा; जमिणं विरूवख्वेहिं सत्थेहिं वाउकम्मसमारंभेणं वाउसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगख्वे पाणे विहिंसइ । (५६)

तत्थ खलु भगवयां परिण्णा पवेइया । इमस्सचेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए, जाइमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं, से सयथेव वाउसत्थं समारंभति, अन्नेहिं वाउसत्थं समारंभावेति, अन्ने वा वाउसत्थं समारंभंते समणुजाणति; तं से अहियाए, तं से अबोहिए ।

[५७]

१ [द्रवः संयम स्तद्धंतः] २ [वायु कायोपमर्देन इति शेषः]

छे ते तेनी हिंसानो परिहार करी शके छे. जे आत्मनी अंदरनी वातने जाणे छे ते बाहेरनी वात (पण) जाणे छे, ने जे बाहेरनी वात जाणे छे ते अंदरनी वातने (पण) जाणे छे. ए वे वात सरखी रहेली छे एम समजहुं. माटे अहीं जे शांतिमां मय संयमि पुरुषो होय छे तेओ (वायुकायनी हिंसावडे) जीववाने नथी चाहता. (५५)

हिंसाथी शरमाता केटलाएक बोले छे के “अमे अणगार छीए,” पण ते तेमहुं बोलवुं व्यर्थ छे केमके जुओ, तेओ विचित्र शस्त्रीथी वायुकाय तथा अन्य अनेक जीवोनी हिंसा करता रहे छे. [५६]

आ स्थळे भगवाने सरस रीते समजण आपेली छे के लोको आ क्षणिक जींदगीना, कीर्ति, मान, तथा उदर निर्वाहार्ये, जन्म मरणथी मुक्त थवा माटे, तथा दुःखने दूर करवा माटे जाते वायुकायनी हिंसा करे छे, बीजा पासे करावे छे, अने करनारने रुडुं माने छे. पण ए प्रवृत्ति तेने अंते अहितकर्ता तथा अज्ञान व-धारनार थवानी. (५७)

से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाए सौच्चा भगवओ, अणगा-
राणं वा अंतिए; इह भेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु
मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णए । इच्चत्थं गटिए लाए; जमिणं
विख्वरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्मसमारंभेणं वाउसत्थं समारंभमाणे अन्ने अ-
णेगंरूवे पाणे विहिंसति (५८)

से बेमि—संति संपाइसा पाणा आहच्च संपयंति य । फस्सिं च
खलु पुट्ठा एगे संघाय मावज्जंति । जे तत्थ संघाय मावज्जंति, ते तत्थ
परियांविज्जंति, जे तत्थ परियाविज्जंति से तत्थ उड्ढायंति । [५९]

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति
एत्थं सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति । [६०]

तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं वाउसत्थं समारंभेज्जा, णेवच्चेहिं
वाउसत्थं समारंभावेज्जा, णेवच्चे वाउसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा । ज-
स्सेते वाउसत्थसमारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णायकस्सेप्पि
बेमि । [६१]

एम जाणीने जेओ भगवान् अथवा तेमना मुनिओ पासेथी तत्त्वज्ञान पामी
आदरणीय वस्तु अंगीकार करे छे तेओ जाणता रहे छे के ए वायुकायनी हिंसा,
कर्मबंध—मोह मरण—तथा नरकनी हेतु छे. एम छतां लोको विषयगृद्ध थइ ते वायु-
कायने विविध आरंभोथी जाते मारे छे, बीजा पासे मरावे छे, अने मारनारने अ-
नुमति करे छे. [५८]

हुं कहुंछुं के ए वायुकायनी साथे पण संपातिम जीवो छे. तेओ एकटा थई
वायुनी अंदर पडे छे. अने वायुनी हिंसा करतां ते पण पीढाय छे. [५९]

माटे वायुकायनी हिंसा करतां अनेक आरंभ लागे छे अने तेनी हिंसानो
परिहार करतां कशो आरंभ लागतो नथी. [६०]

एम जाणी बुद्धिमान् पुरुषे जाते वायुकायनी हिंसा न करवी, बीजा पासे-
थी न कराववी, अने करनारने रुडुं पण नाहि मानवुं. ए रीते जेने वायुकाय
संबंधी समारंभनी खरी समज होय तेज हिंसापरिहार करनार मुनि जाणवो. (६१)

एत्थंपि जाण उवादीयमाणा, जे आचारे न रमंति, आरंभमाणा विणयं वयंति, छंदोवणीया, अज्ज्ञोववणा. आरंभसत्ता पकरंति संगं । (६२)

से वसुभं सव्वसमण्णागययणाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावंकम्मं णो अन्नोसि । (६३)

तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं छज्जीवणिकायसत्थं समारंभेज्जा, णेवन्नेहिं छज्जीवणिकायसत्थं समारंभवेज्जा, णेवन्ने छज्जीवणिकायसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा, । जस्सेते छज्जीवणिकाय सत्थसमारंभा परिण्णाय्वा भवंति, से हु मुणी परिण्णायकम्भोत्ति वेमि । [६४]

उपसंहार.

जेओ आवा आचारमां नथी रमता, अने आरंभ करता थका पण “अमारं संयम छे” एम बोले छे, तथा स्वेच्छाचारी थइ आरंभमां तल्लीन थइ रहे छे तेओ आठे कर्म वांधे छे. (६२)

माटे संयमी पुरुषे सर्व रीते समजवान थइने न करवा लायक पाप कर्मेने कदापि नहि इच्छवुं. (६२)

एम जाणनि बुद्धिमान् पुरुषे जाते छकायनी हिंसा न करवी, बीजा पासे न कराववी, अने तेना करनारने वडा पण नहि मानवा. ए रीते जेने ए छकायना आरंभनी पूर्ण माहिती होय तेज आरंभत्यागी भुनि जाणवो. (६४)



लोकविजय नामकं द्वितीयमध्ययनम्

[प्रथम उद्देशः]

जे गुणे, ^१ से मूलद्वारे ^२ । जे मूलद्वारे, से गुणे । इति से गुणद्वी महता परियावेणं वसे पमत्ते, तंजहा—माया मे, पिया मे, भाया मे, भइणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे, धूया मे, सुन्हा मे, सहि—सयण—संगंथ^३—संथुया मे, विविचोवगरण—परियदृण^४—भोयणच्छायणं मे, इच्चत्थं गडिए लोए वसे पमत्ते । (६५)

१ [गुणाः विषयाः] २ (मूलं संसारस्तस्य स्थानं कारणं) ३ (स्वजनस्यापि स्वजनः) ४ द्विगुणत्रिगुणी करणं परिवर्त्तनं

अध्ययन बीजं.

लोकविजय.

पहेलो उद्देश.

(मातापिता वगैरे लोकने जीती संयम पाळवो.)

जे विषयो छे ते संसारना हेतु छे, अने जे संसारना हेतु छे ते विषयो छे. माटे विषयार्थी होय छे ते प्रमादी वनी बहु दुःख पामता रहे छे. ते ए रीते के,—मारी मा, मारो बाप, मारो भाइ, मारी बेन, मारी स्त्री, मारा पुत्रो, मारी पुत्री, मारा मित्र, मारा सगां, मारा संबंधि, मारा साधनो, मारी दोलत, मारुं खानपान, अने मारां वस्तु एवी अनेक पंचातोमां फसी पडेलो लोको मरणपर्यंत गाफल थइ आरंभ करता रहे छे. (६५)

अहोय राओ परियप्पमाणे, कालाकालसमुद्राई, संजोगट्टी, अट्टालोभी आलुपे, सहसाकारे, विणिविद्विचित्ते एत्थ, सत्थे पुणो पुणो^१ । [६६]

अप्पं च खलु आउयं इह मेगेसिं माणवाणं; तंजहा सोयपरि-
ण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, चक्खुपरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, घाणपरिण्णाणे-
हिं परिहायमाणेहिं, रसणपरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, फासपरिण्णाणेहिं
परिहायमाणेहिं, अभिक्कंतं च खलु वयं संपेहाए, तओ से एगया मूढ-
भावं जणयति । (६७)

जेहिं वा सद्धिं संवसति, तेविणं एगया णियगा पुव्वं परिव्वयंति ।
सो वा ते णियग्गे पच्छा परिव्वज्जा । णालं ते तव ताणाए वा, सरणाए
वा । तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा । से ण हासाए, ण कि-
ड्डाए, ण रतीए, ण विभूसाए । (६८)

१ प्रवर्त्तत इतिशेषः

तथा तेना माटे रात दिवस चिंता करता थका, काळ अकाळनी करी पण दरकार नहिं धरतां, कुटुंब परिवार तथा धनमां लुब्ध वली, विषयमांज चित्त धरता थका निर्भयपणे लूटफाट भचाववा मंडी पडे छे अने अनेक प्रकारे छकायनी हिंसा करता फरे छे. [६६]

मनुष्यनुं आयु घणं दूडुं छे. तेना दरस्थान जरा आवतां श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसना अने स्पर्शेंद्रियनुं ज्ञान घटतुं जाय छे. वृद्धावस्थां जोइने ते वखते ते प्राणी दिग्मूढ घनी जाय छे. [६७]

वळीं जेनी साथे ते वसे छे तेज वृद्धावस्थायां तेनी निंदा करवा मांडे छे, अथवा ते पोते पोतानां कुटुंबिओने निंदां मांडे छे. माटे हे जीव, ते कुटुंब तने वचावनार के आश्रय आपवा समर्थ नथीं. एम वृद्धावस्थायां हास्य, क्रीडा, मौज-शौख अने शणगार ए सर्वने माटे पुरुष अयोग्य बने छे. [६८]

इच्चैवं समुद्रिए अहोविहाराए १ अंतरं २ च खलु इमं संपेहाए
धीरो मुहुत्तामपि णो पमायए । वओ अच्चैइ जोच्चणं च । [६९]

जीविए इह जे पमत्ता । से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुंपित्ता, विलुंपिता,
उद्वेता, उत्तासइत्ता, अकडं करिस्सायित्ति सत्तणमाणे । (७०)

जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा णं एगया णियगा पुर्व्वि पोसंति,
सो वा ते णियगे पच्छा पोसेज्जा । णालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।
तुमंयि तेसिं णालं ताणाए वा, सरणाए वा । [७१]

उवादियसेसेण ३ वा संणिहिंसंणियओ कज्जति इह मेगेसिं असंजत्ता-
णं भोयणाए । तओ से एगया रोगसमुप्पाया समुप्पज्जंति । (७२)

जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा णं एगया णियगा पुर्व्वि परिहरंति

१ (यथोक्तसंयमानुष्ठानाय) २ (अवसरं) ३ (उपभुक्तशेषे-
णेत्यर्थः)

एम जाणी बुद्धिमान् पुरुष आ अवसर पापीने संयम माटे तरत उज्जाल
थाय छे अने घडीभर पण प्रमाद करतो नथी. जे माटे वय्र अने यौवन धसाराबंध
चाल्या जाय छे. (६९)

जेओ तेम नथी जाणता तेओ असंयमथी जीववामां गाफल थइ रहै छे
अने तेओ सर्वथी अधिकता मेळववा माटे छकायने मारता, कापता, फोडता,
लूंटता, झुंटाता, प्राणरहित करता तथा त्रास आपता रहे छे. (७०)

(पण जो तेनुं नशीव मंद होय छे तो कशुं मळीं शकतुं नथी) तेथी तेओ
कुटुंबनुं पोषण करवाने वदले पोते कुटुंबथी पोषाय छे. अथवा (कदाच तेओने
कांइ धन प्राप्ति थतां) तेओ कुटुंबनुं पोषण करे छे पण (अंते) तेओपाने कोइ
कोइने वचावीं शकनार नथी. तेम ते पण तेमने वचावीं शकनार नथी. (७१)

केट्टलाएक असंयतिओ वचेल्य आहारने बीजा दिवसे खावाना माटे राखी
मेले छे. पण तेमना शरीरे तेथी कोइ वेळा अनेक रोगो उत्पन्न थाय छे. [७२]

अने त्यारे तेनां सगां स्नेही वधा लांवा थइ वेत्ते छे कोइ पण वचावीं.

पं.ने त्याग करे छे. कलम ७१ नी छेली लीटीं प्रमाणे समजी लेवुं.

सो वा ते णियगे पच्छा परिहेरज्जा । णालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा, तुमंपि तेसिं णालं ताणाए वा, सरणाए वा । (७३)

एवं जाणि-तु दुक्खं पत्तेयं सायं, अणामिकंतं च खलु वयं सपे-
हाए, खणं^१ जाणाहि पंडिए [७४]

जाव सोयपण्णाणा अपरिहीणा, जाव जेत्तपण्णाणा अपरिहीणा,
जाव घाणपण्णाणा अपरिहीणा, जाव जीहपण्णाणा अपरिहीणा, जाव
फासपण्णाणा अपरिहीणा, इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं पन्नाणेहिं अपरिहीणेहिं
आयुं^२ सम्मं समणुवासेज्जसिच्चि बेसि । [७५]

[द्वितीय उद्देशः]

अरइं आउट्टे^२ से मेहावी ; खणंसि मुक्के । [७६]

१ (अवसरं) २ आवर्त्तत (निवर्त्तयेत्)

शक्तो नथी. तेम हे अर्सयतिओ तमे पण तेमनाथी मोढा के वहेला लांवा थइ
वेसनार छे, ने तेमने वचावी शकनार नथी. [७३]

ए रीते दरेक जीवना सुख दुःख जूदा जूदा सेहवानां जाणीने तथा हजु
पोतानी वय कायम रहेली जाणीने हे पंडित आ अवसर ओळख. (७४)

ज्यां लगी श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसना, तथा स्पर्शेंद्रियनी विज्ञान शक्ति मंद
नथी पडी तेना दरम्यान तुं तारुं आत्मार्थ सिद्ध करी ले. [७५]

बीजो उद्देश.

[अरति टाळी संयममां दृढ रहेतुं]

बुद्धिमान् पुरुषे संयममां अरति थवी दूर करवी, एम कर्माथी घणाज अ-
ल्पकाले मुक्त भवाय छे. (७६)

अणाणाए पुट्टावि एगे णियदंति मंदा मोहेण पाउडा^१ । [७७]

“अपरिगंहा भविस्सामो” समुद्राए लद्धे कामे अभिगाहंति, अणाणाए मुणिणो, पडिलेहंति, एत्थं मोहे पुणो पुणो सण्णा, णो, पाराए । (७८)

विमुत्ता हु ते जणा, जे जणा परिगामिणो लोभं अलोभेण दुर्गल्लमाणे लद्धे कामे णाभिगाहइ, विणावि लोभं निक्खम्म एस अकम्मं जाणाति पासति । पडिलेहाए णावकंखति, एस अणगारेत्ति बुच्चति । (७९)

अहोयराओ परतिप्पमाणे, कालाकालसमुद्राइ, संजोगट्ठी, अट्टालोभी आलुंप्पे, सहसाकारे, विणिविट्ठित्ते एत्थ, सत्थे पुणो पुणो । (८०)

१ प्रावृताः

अज्ञानी मूढ जीवो परीसह के उपसर्ग आवतां आज्ञाथी वाहेर थइ संयमयी भ्रष्ट थता रहे छे. [७७]

“अमे अपरिग्रहीज छीए” एम बोली केटलाएक दीक्षित थया थका पण आज्ञाथी वाहेर थइ मुनिना वेपने लजवता थका मळता काम सेवता रहे छे तथा ते भेळववाना उपयोगमां मच्या रही वारंवार मोहमां बुड्या रहे छे तेओ नथी आ पार, के नथी पेले पार. ^१ [७८]

खरेखर तेज पुरुषो विमुक्त २ जाणवा जेओ संयमने सदा पाळता रहे छे. जे पुरुष निर्लोभ थइ लोभने धिक्कारी कहाडी मळता कामभोगने इच्छे नहि, अधवा जे मूळथीजे लोभने निर्मूळ करी दीक्षित थाय ते कर्मरहित वनी सर्वज्ञ सर्वदर्शी थाय माटे एम विचारीने जे लोभने इच्छे नहि ते अणगार कहेवाय छे. (७९)

अज्ञानी जीवो रात दीवस दुःखी थता थका, काळ अकाळनी दरकार नहि धरतां, स्त्री अने घनना लोभी वनी बगर विचारे वारंवार अनेक आरंभ करता रहे छे. [८०]

१ एटले के नथी मुनी अने नथी गृहस्थ. २ त्यागी.

से आय^१ बले १, से णाइबले २, से सयणबले ३, से मित्रबले ४, से पेच्चबले ५, से देवबले ६, से रायबले ७, से चोरबले ८, से अति-
हिवले ९, से कियणबले १०, से समणबले ११, इच्छेतेहिं विरुवरुवेहिं
कज्जेहिं दंडसमायाणं संपेहाए भया कज्जति । पावसोकखोत्ति मण्णमाणे ।
अदुवा आसंसाए । (८१)

तं परिन्नाय मेहावी, णेव सयं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारभेज्जा, णे-
व्वण्णं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभाविज्जा, एएहिं कज्जेहिं दंडं समारभंतेवि
अन्ने णो समणुजाणेज्जा । (८२)

एस मग्गे आरिएहिं पवेदिए । जहेत्थ कुसले णोवलिप्पिज्जासिन्ति
वेमि । (८३)

१ आत्मबलार्थं. २ असकृत् (पुनः पुनः)

आत्मवळ, ^१ जातिवळ, स्वजनवळ, मित्रवळ, प्रेत्यवळ, ^२ देववळ, राजवळ,
चोरवळ. ^३ अतिथिवळ, कृपणवळ, ^४ तथा श्रमणवळनी प्राप्ति माटे अथवा पापस-
यना माटे अथवा आगंसाथी ^५ लोको अनेक आरभयां प्रवर्त्ते छे. (८१)

माटे बुद्धिमान् पुरुषे ए कामो माटे जाते पण हिंसा नहि कर्त्वी, वीजा पासे
पण हिंसा नहि कराववी, अने करनारने पण रुडुं नहि मानवुं. [८२]

ए मार्ग आर्योए (तीर्थं करोए) वतान्यो छे. माटे चतुर पुरुषोए जेम पोता-
नो आत्मा कर्षथी न लेपाय तेम वर्त्तवुं. [८३]

१ शरीर वळ. २ भवांतरं जतां यतुं वळ. ३ चोरो मने मदद आपसे ते
४ भिक्षुकुंतुं वळ मने थरो. ५ भवांतरमां ते वस्तु मळवानी इच्छाथी.

[तृतीय उद्देशः]

से असइ^१ उच्चगोए, असइं णीयागोए। णोहीणे णो अतिरित्ते, णो पीहए इतिसंखाए के गोयावादी, के माणावादी, कंसि वा एगे गिज्जे^२ । (८४)

तम्हा पंडिए णो हरिसे, णो कुप्पे, भूण्हिं जाण, पाडिलेह सातं समिते एयाणुपस्सी^३ तंजहा—अंधत्तं, बहिरत्तं, मूयत्तं, काणत्तं, कुटत्तं, खूज्जत्तं^४, बडहत्तं, सामत्तं, सबलत्तं, सहपमाएणं अणेगरूवाओ जोणीओ संधाति, विरूवरूवे फासे पडिसंवेदेइ । [८५]

से अबुज्जमाणे हतोवहते जाइमरणमणुपरियट्टमाणे । (८६)

१ असकृत् [पुनः पुनः] २ गृह्यचेत. ३ एतदनुदर्शी. ४ कुब्जत्वं.

त्रीजो उद्देश.

(मानने टाळवुं तथा भोगमां रक्त न थवुं)

जीव घणीवार ऊंच गोत्रमां^१ ऊपजेलो छे. अने घणीवार नीचगोत्रमां ऊपजेलो छे. एमां कशी न्यूनता के अधिकता नथी. माटे कोइ पण जातनो गर्व नहि करवो. आवुं समजतां कोण पोताना गोत्रनो गर्व करशे अथवा मान धरशे अथवा गृह्य थशे ? [८४]

माटे बुद्धिमान पुरुषे हर्ष के रोष नहि करवो. वधा जीवोने सुख प्रिय छे एम जाणी समितिवंत थइ विचारवुं. आ प्रमाणे जीव पोताना प्रमादथीज आंधळापणुं, बहेरापणुं, मुंगापणुं, टुंठापणुं, कुवडापणुं, बांकापणुं, काळापणुं, तथा कावरपणुं [विगेरे] पासे छे, अनेक योनियोमां जन्म धरे छे अने भयंकर दुःखो वेठे छे. [८५]

अजाण जीव रागथी ग्रस्त तथा अपयज्ञवत थयो थको जन्म मरणमां फसतो रहे छे. [८६]

१ ऊंच कुळमां.

જીવિયં પુઠો પિયં ઇહ સેગેસિં માણવાણં સ્વેત્તવત્થુમમાયા
માણાણં । [૮૭]

આરત્તં, વિરત્તં, મણિકુંડલં, સહહિરણ્ણેણ ઇત્થિયાઓ પરિગિજ્ઞ ત-
ત્યેવ રત્તા । (૮૮)

“ ણ ઇત્થં તપો વા, દમો વા, ણિયમોવા, દિસ્સતિ ” સંપુણ્ણં
બાલે જીવિઉકામે લાલપ્પમાણે મુઠે વિપ્પરિયાસ—મુવેતિ । (૮૯)

ઇળમેવ ણાવકંઠ્ઠાંતિ, જે જણા ધુવચારિણો; જાતીમરણં પરિચ્છાય
ચરે સંકમણે દઢે । (૯૦)

ણાત્થિ કાલસ્સણાગમો । (૯૧)

સવ્વે પાણા પિયાડયા, સુહસાયા, દુક્કલ્લપડિકૂલા, અપ્પિયવહા,
પિયજીવિણો, જીવિઉ કામા । (૯૨)

સવ્વેસિં જીવિયં પિયં । [૯૩]

ક્ષેત્ર તથા વસ્તુમાં મમત્વાન્ દરેક પ્રાણિને જીવવું ઘણું પ્રિય લાગે છે. (૯૭)
[તેવા વાલ્લજીવો] રંગવેરંગી વસ્ત્ર, મણિ, આભરણ, હિરણ્ય, અને સ્ત્રીઓ પા-
મીને તેમાંજ આસક્ત થઈ રહે છે. (૯૮)

એવા સંપૂર્ણ વાલ્લ અને મૂઠ વનેલા જીવો વિપર્યાસ પામીને નિર્ભયપણે
જીવવા ચહાતા થકા આ રીતે વક્ષે છે કે, “ આ જગતમાં યમ કા નયમ-
કશા કામના નથી.” [૯૯]

પણ જે પુરુષો આચારવંત છે તેઓ તેમ જીવવા નથી ચહાતા. તેઓ
તો જન્મ મરણ થતાં જાણી સંયમ પાલ્લવામાં જ ઉજ્જ્વાલ રહે છે, [૧૦]

મોતનો કંઈ ભરોસો નથી. (૧૧)

વધા જીવો લાંબી આવરદાને તથા સુખને ચાહે છે, અને જીવવા માગે
છે મરણ અને દુઃખ વધાને અપ્રિય લાગે છે. [૧૨]

જીવવું વધાને પ્રિય લાગે છે. (૧૩)

तं परिगिञ्ज दुपयं चउप्पयं अभिजुंजिया णं, संसंचिया णं, ति
धिंण जावि तत्थ मत्ता भवइ अप्पा वा बहुगा वा, से तत्थ गढिए चि-
इ, भोयणाए [९४]

तओ से एगयां त्रिविहं परिसिद्धं संभूयं महोवगरणं भवति । तंपि
से एगयां दायादा विभयंति, अदत्ताहारा वा से अग्रहरंति, रायाणो वा से
विलुंपंति, णस्सति वा से, विणस्सति वा से, अगारदाहेण वा से दञ्ज-
इ [९५]

इति से परस्सट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले पकुच्चमाणे तेण दुक्खेण
भूढे विप्परियासमुवेति । [९६]

मुणिणा हु एयं पवेइयं । [९७]

अणोहतरा^१ एते, णय ओहं तरित्ताए । अतीरंगमा एते, णय ती^२

१ (ओघः कर्मरूपः प्रवाह स्तं न तरंतीत्यनोघतराः)

जीवहुं भिय होवाथी जे लोको द्विपद तथा चतुप्पदने राखीने द्रव्यं
संचय करता थका जे कंड थोडुं के घणुं खावा पीवा माटे धन एकटुं कर-
छे तेमां मन वचन कायाथी गृह्य थता रहे छे. [९४]

वखते तेमना पासे घणोज वधतो द्रव्य भंडोळ एकटो थइ जाय छे.
पण अंते तेने भायातो वेहेंचे छे, अथवा चोरो चोरी जाय छे, या राजा
लुटी ले छे, या व्यापार विगेरेमां नाश थाय छे, या अग्निथी बळी जाय
छे. (९५)

एम बीजाओना माटे ते अज्ञान प्राणीओ कूर कर्म करतां थका तेनां
दुःख जाते भोगवतां विपर्यास पाभे छे [९६]

आ वधुं मुनिए (वीर प्रभुए) जणावेलुं छे. [९७]

परतीर्थीओ के पासत्याओ^२ संसारनो प्रवाह तरां शकवाना नथी, तथा

१ सुख इच्छता थका दुःख पाभे छे. २ नवळा आचारवाळा वेशधारिओ.

गमित्ताए । अपारंगमा एते, णय पारं गमित्ताए । [९८]

आयाणिज्जं च आयाय, तंमि ठाणे^१ ण चिट्ठइ, वितथं पप्पइखे-
यन्ने, तंमि ठाणांमि^२ चिट्ठइ । (९९)

उद्देशो^३ पासगास्स णत्थि । (१००)

बाले पुण णिहे^४ कामसमणुण्णे असमितदुक्खे दुक्खाणमेव आवट्ठं
अणुपरियदट्ठत्ति वेमि । १०१

चतुर्थ उद्देशः

ततो से एगया रोगसमुप्पाया समुप्पज्जति । १०२

१ (संयम रूपे) २ [असंयमरूपे] ३ [आज्ञा] ४ स्निहः
[रागी]

तेना तीर के पारने पामी शकवाना नथी. (९८)

जेओ संयम लइ पाछा संयममां नथी रही शकता ते अजाण जीवो
असत्य उपदेश पायीने असंयममां रहे छे. [९९]

तत्व समजनारने कइ कहेवुं जरुनुं नथी. (कारण के ते समजु होवारी
पोते सीधे मार्गे चाल्यो जाय छे (१००)

पण जे बाळ होय छे ते विषयोमां रक्त बनी तेमने सेवन करतो
थको दुःखो वधारीने दुःखोनाज चक्रमां रखडे छे. (१०१)

चौथो उद्देशः

[भोगोथां रोगो थाय छे.]

पछी^१ तेने कर्म उदय आवतां रागो उत्पन्न थाय छे, (१०२)

^१ कामभोगथी कर्मबंध, कर्मबंधथी मरण, मरणथी नरक, नरकथी गर्भ ते
गर्भथी रोग थाय छे.

जेहिं वा सार्द्धं संवसति, ते वा जं एगया णियगा पुंविं पखियंति ।
सो वा ते णियगे पच्छा पखिएज्जा । णालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा
तुमंपि तेसिं णालं ताणाए वा सरणाए वा । (१०३)

जाणि-तु दुक्खं पत्तेयं सायं । (१०४)

भोगामेव अणुसोयंति—इह मेगेसिं माणवाणं, तिंविहेण, जावि से
तत्थ मत्ता भवइ, अप्पा वा, बहुगावा, से तत्थ गढिए चिद्धति ! भोय-
णाए । (१०५)

ततो से एगया विप्परिसिद्धं संभूयं महोवगरणं भवति । तंपि से
एगया दायाया विभयंति, अइत्ताहारे वा से हरति, रायाणो वा से विलुंपं-
ति, णस्सइ वा से, विणस्सइ वा से, अगारदाहेण वा से डज्झति। (१०६)

इति से परस्स अद्दुए कूराणि कम्माणि बाले पकुव्वमाणे तेण
दुक्खेण मूढे विप्परियासमुवेति । (१०७)

एवे वखीते तेना स्नेहिओ तेने अवगणे छे या ते तेओने अवगणे छे
कारण के कोइ कोइने राखनार नथी. (१०३)

दुःख सुख सभ्र जूदा जूदा भोगवे छे. (१०४)

आ जागृमां केइलाएक जीव^१ मरण ली पग भोगनीज वांछा धरता रहे
छे. तेओने जे कंइ थोडी के वगी धन प्राप्ति थाय छे ते खावा पीवा माटे तेमां
मन वचन कायाथी गृद्ध थइ जाय छे. (१०५)

कइच बहु धन मळे छे तो अंते ते धन भायातो वेंचे छे, या चोरो चोरी
जाय छे, या राजाओ लूट्टी ले छे या व्यापारमां नाश पाये छे, या अधिधी
बळी जाय छे. (१०६)

ए रीते ते अज्ञानी जीवो धीजाना माटे कूर कर्म करता थका तेना दुःखो
जाते भोगवतां सुख इच्छतां दुःखमां पडे छे. [१०७]

१ जेमके ब्रह्मदत्त केमके ते मरणनी अणीपर तथा नरकमां पण “कुरुमती
कुरुमती”ज पोकारतो.

आसं च छंदं च विगिंच धीरे । (१०८)

तुमं चेव तं शङ्खमाहट्टु^१ । (१०९)

जे सिया, तेण णो सिया । (११०)

इणमेव णावबुञ्जंति, जे जणा सोहपाउडा । (१११)

थील्लोभपच्चहिए ते भो वयंति “एयाइं आयतणाइं” । (११२)

से दुक्खाए, मीहाए, माराए, णरगाए, णरगतिरिक्खाए ।

(११३)

सततं मूढे धम्मं णाभिजाणति । (११४)

उदाहु वीरे । अप्पमादो महामोहे । (११५)

^१ आहृत्य (स्वीकृत्य) (अशुभ मादत्से इतिशेषः)

हे धीर पुरुषो तमारे विषयनी आशा अने^१ छालचथी दूर रहेवुं. (१०८)

तमे जातेज ते आशारूप शस्य हृदयमां धरी हाथे करी दुःखी थाओ,

छे. [१०९]

पैशाथी थोगोपभोग मळे छे, तेम वखते नहि पण मळे. [११०]

पण मोहवंत प्राणिओ ए समजी शकता नथी. [१११]

स्त्रीओमां आसक्त थया थका तेओ वोल्ले, के “ए स्त्रीओज सुखनी स्थान

छे.” [११२]

पण खरं जोतां तो तेओ दुःख, मोह, मरण, नरक, अने तिर्यच गतिना

हेतुभूत छे. [११३]

छतां हमेशां मूढ वनेला जीवो धर्म जाणी शकता नथी. [११४]

वीर प्रभुए मजबुताइथी कथंछे के स्त्रीनो विश्वास मुनिए तहि करवो.

(११५)

? परानुवृत्तिथी वांछ्छ.

अलं कुसलस्स पमादेणं, संति—मरणं^१ सपेहाए, भिदुरधम्मं सपेहाए । (११६)

णालं पास । अलं तवेएहि । एयं, पास मुणी? महब्भयां । (११७)

णातिवाएज्ज कंचणं । (११८)

एस वीरे पंससिए—जे ण णिविज्जति आदाणाए^२ । (११९)

“ण मे देति” ण कुप्पेज्जा, थोधं लब्धुं ण खिसए, पडिसेहिओ परिणमेज्जा^३, पडिलामिओ परिणमेज्जा । (१२०)

एयं मोणं समणुवासिज्जासिति बेमि । (१२१)

[पंचम उद्देशः]

जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं लोगस्स कम्मसमारंभा कज्जात,

१ (शांतिर्मरणं चेतिद्वंद्वः) २ संयमाय. ३ निवर्तेत.

माटे कुशल पुरुषे अप्रमादधी मोक्ष अने प्रमादधी यतां मरण विचारीने तथा शरीरने क्षणभंगुर जाणीने प्रमाद दूर करवो. [११६]

विवयभोगधी कंडं तृप्ति थती नथी, माटे ए कला कामना नथी. हे मुनि, ए कामभोगेच्छा महा भयंकर छे एम विचार. [११७]

माटे मुनिए कोइ जंतुने पीडा नहि करवी. [११८]

एवा अनमादी पराक्रमी मुनी ज वखगायेला छे, जेओ संयम पाळतां क-शो खेद नथी पामता. [११९]

(गोचरीए जतां) कोइ नहि आपे तेना तरफ कोप नहि करवो, धांडुं न-क्याधी तेनी निंदा नहि करवी, तेणे ना पाडयाधी झट पाछा वळवुं या तेणे वोहो-राव्या वाद पण झट पाछा वळवुं. [१२०]

[हे मुनि,] तोरे आवुं मुनित्व पाळवुं. [१२१]

पांचमो उद्देश.

(मुनिए विवयभोग त्याग करी लोकनिश्राए आहारादिक लडने विचरवुं)

लोको पोताना माटे तथा पोताना पुत्र, पुत्री, बहुओ, नातजात, दाइ, राजा

आसं च छंदं च विगिंच धीरे । (१०८)

तुमं चेव तं शञ्चमाहट्टु^१ । (१०९)

जे सिया, तेण णो सिया । (११०)

इणमेव णावबुज्झंति, जे जणा सोहपाउडा । (१११)

थील्लोभपच्च्हिए ते भो वयंति “एयाइं आयतणाइं” । (११२)

से दुक्खाए, मोहाए, माराए, णरगाए, णरगतिरिक्खाए ।

(११३)

सततं मूढे धम्मं णाभिजाणति । (११४)

उड्डाहु वीरे । अप्पमादो महामोहे । (११५)

^१ आहृत्य (स्वीकृत्य) (अशुभ मादत्से इतिशेषः)

हे धीर पुरुषो तमारे विषयनी आशा अने^१ झालचथी दूर रहेवुं. (१०८)

तमे जातेज ते आचारूप शस्य हृदयमां धरी हाथे करी दुःखी थाओ

छो. [१०९]

पैशाथी थोगोपभोग मळे छे, तेम वखते नहि पण मळे. [११०]

पण मोहवंत प्राणिओ ए समजी शकता नथी. [१११]

स्त्रीओमां आसक्त थया थका तेओ वेळछे के “ए स्त्रीओज सुखनी स्थान
छे.” [११२]

पण खरुं जोतां तो तेओ दुःख, मोह, मरण, नरक, अने तिर्यच गतिना
हेतुभूत छे. [११३]

छतां हमेशां मूढ वनेल्य जीवो धर्म जाणी शकता नथी. [११४]

वीर प्रभुए मजबुताइथी कहांछे के स्त्रीनो विश्वास मुनिए तहि करवो.

(११५)

अलं कुसलस्स पमादेणं, संति—मरणं^१ सपेहाए, भिदुरधम्मं सपेहाए । (११६)

णालं पास । अलं तवेएहि । एयं, पास मुणी? महब्भयां (११७)

णातिवाएज्ज कंचणं । (११८)

एस वीरे पंससिए—जे ण णिविज्जति आदाणाए^२ । (११९)

“ण मे देति” ण कुप्पेज्जा, थोधं लब्धुं ण खिसए, पडिसेहिओ परिणमेज्जा^३, पडिलामिओ परिणमेज्जा । (१२०)

एयं मोणं समणुवासिज्जासित्ति वेमि । (१२१)

[पंचम उद्देशः]

जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं लोगस्स कम्मसमारंभा कज्जात,

१ (शांतिर्भरणं चेतिद्वंद्वः) २ संयमाय. ३ निवर्तते.

माटे कुशल पुरुषे अप्रमादधी मोक्ष अने प्रमादधी यतां मरण विचारीने तथा शरीरने क्षणभंगुर जाणीने प्रमाद दूर करवो. [११६]

विवयभोगधी कंड तृप्ति थती नथी, माटे ए कला कामना नथी. हे मुनि, ए कामभोगेच्छा महा भयंकर छे एम विचार. [११७]

माटे मुनिए कोइ जंतुने पीडा नहि करवी. [११८]

एवा अनमादी पराक्रमी मुनी ज वखगायेला छे, जेओ संयम पाळतां कशो खेद नथी पामता. [११९]

(गोचरीए जतां) कोइ नहि आपे तेना तरफ कोप नहि करवो, धांडुं मळ्याधी तेनी निंदा नहि करवी, तेणे ना पाडयाधी झट पाछा वळवुं या तेणे बोद्धे-राव्या वाद पण झट पाछा वळवुं. [१२०]

[हे मुनि,] तारे आहुं मुनिस्व पाळवुं. [१२१]

पांचमो उद्देश.

(मुनिए विवयभोग त्याग करी लोकनिश्राए आहारादिक लइने विचरवुं)

लोको पोताना माटे तथा पोताना पुत्र, पुत्री, बहुओ, नातजात, दाइ, राजा

तंजहा, अप्पणो से, पुत्ताणं, धूयाणं, सुग्हाणं, णातीणं, धातीणं, राईणं, दासाणं, दासीणं, कम्मकरणं, कम्मकरीणं, आएसाए^१, पुट्टेपेहणाए,^२ सामासाए^३, षायरासाए^४, संणिहि—संनिचओ कज्जई इह मेगेसी माणवाणं भोयणाए । (१२२)

समुद्धिते अगगारे आरिए आरियदंसी अयं संधित्ति ^५अइक्खु, से णाद्विए; णादिआवए, णादियंतं समणुजाणए । (१२३)

सव्वामांगंयं परिणाय गिणामांगो परिव्वए । (१२४)

अदिस्समाणो कयाविक्रयसु;—से ण किगे, ण किगावए, किगंतं ण समणुजाणए । (१२५)

१ (आदेशाः प्राचूर्णकास्तदर्थं) २ पृथक् (पुत्रादिभ्यः) प्रहेणकाय. ३ श्यामाशाय—रात्रिभोजनाय. ४ प्रातराशाय—प्रत्यूषभोजनाय. ५ अद्रक्षीत्

दास, दासी, चाकरनफर तथा परोणा माटे तथा पुत्रादिकोने जुट्टुं जुट्टुं वैहेंची आपवा माटे खावा पीवा साह अनेक आरंभ करीने आहार बनावीं राखे छे. (१२२)

माटे आवे प्रसंगे संयममां उज्जमाळ, आर्ये, पवित्र बुद्धिमान्, न्यायदर्शी अने तत्व समजनार अगगारे दूषित आहार लेवो नहि, लेवराववो नहि, तथा लेनारने प्रसंसवो नहि. [१२३]

वयां दूवणो रूडी रीते जाणीने निदूर्षणपणे संयम पाळवुं. [१२४]

वळी मुनिए आहारनो क्रयाविक्रय^१ न करवो, बीजा पासे न कराववो, करनारने रूडुं नहि मानवुं. (१२५)

से भिक्खू कालणो, बालणो, ^१ मायणो, खेयणो, खणयणो, विणयणो, ससमयणो, परसमयणो, भावणो, परिग्गहं अममायमाणो, कालाणुद्वाइ, अपडिन्ने^२ दुहओ^३ छित्ता, नियाई । (१२६)

वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं उग्गहं च कटासनं, एतेसु चैवं जाणेज्जा । (१२७)

लद्धे आहारे, अणगारे मातं जाणेज्जा, से जहेयं भगवया पवेइयं (१२८)

लाभोत्ति ण मज्जेज्जा, अलाभोत्ति ण सोएज्जा, वहंपि लद्धुं ण णिहे^४, परिग्गहाओ अण्णणं अवसक्केज्जा, अण्णहा णं पासए परिहरेज्जा (१२९)

१ छांदसत्वात् दीर्घत्वं. २ अनिदानः ३ रागद्वेषाभ्यां. ४ [स्था-पयेत्]

एवो मुनि काळ,^१ वळ,^२ मात्रा,^३ खेद,^४ क्षण^५ विनय^६ स्वसमय,^७ परसमय,^८ अने भाव^९नो जाणनार थइ परिग्रहनी ममता दूर करतो थको यथाकाळ अनुष्ठान करीने निरीह रही^{१०} रागद्वेष छेदीने मोक्षमार्गमां चाल्यो जाय छे. (१२६)

वळी वद्ध, पात्र, कंबळ, पादपुंछन,^{११} वसति^{१२} तथा कटासन ए सर्वे मुनिए गृहस्थ पासेथी शुद्ध रीते याची लेवां. [१२७]

मुनिए परिमित्त आहार लेवो एम भगवाने जणाच्युं छे. (१२८)

आहार मळ्यो जाणी खुशी नहि थवुं, नहि मळ्यो जाणी शोक न धरवो घणो आहार मळतां तेनो संग्रह राखवो नहि, वीजा परिग्रहथी पण दूर रहेवुं. वळी धर्मोपकरणे पण परिग्रहरूपे नहि देखतां धर्मोपकरणरूपे देखी तेमना पर ममता नहि धरवी. (१२९)

१ अवसर. २ पोतानी शक्ति. ३ विभाग. ४ अभ्यास. ५ समय. ६ ज्ञानादिकनो विनय. ७ स्वमत. ८ परमत. ९ चित्ताभिप्राय. १० इच्छा रहितपणे (without love and hate) ११ रजोहरण. (Brooms) १२ रहेवानी जग्या. अवग्रह The ground or place which the house holder allows the mendicant

एस मग्गे आरिएहिं पवेदिते, जहेत्थ कुसले णोवाल्लिप्पेज्जासि
त्ति बेमि । [१३०]

कामा दुरतिक्रमा, जीवियं दुप्पडिवूहणं, ^१ कामकामी खलु
अयंपुरिसे, से सोयति, झूरति, तिप्पति, पिड्ढति, परितप्पति । [१३१]

आयतचक्खू लोगविभन्सी लोगस्स अहोभागं जाणति, उड्डं भागं
जाणति, तिरियभागं जाणति । (१३२)

गद्धिए अणुपरियट्माणे ^२ संधिं विदित्ता इह मच्चिएहिं ^३, एसं
धीरे पसंसिए जे बद्धे पंडिमोयए । (१३३)

जहा अंतो तहा बाहिं जहा बाहिं तहा अंतो । [१३४]

१ दुःप्रतिवृहणीयं. (दुर्वर्द्धनीयं) ^२ [कामाभिलाष निवृत्तये न प्रभवतीतिशेषः]

३ मर्त्येषु [यो विषयादीन् त्यजतीतिशेषः]

ए मार्गे तीर्थंकर देवोए वताव्यो छे. एમાં પ્રવર્તનાર કુશલ પુરુષો કર્મથી
વંધાતા નથી. [૧૩૦]

વિષય વાંછનાથી દૂર રહેવું ઘણું વિકટ કામ છે. વહી જીવિત પળ વધી
શકતું નથી. [ઘાટે કોઈ વચ્ચે પળ પ્રમાદ નહિ કરવો] આ ^૧ જંતુ હમેશાં વિષય
વાંછામાં ગરકાવ થઈ રહે છે ને વિષયોનો વિયોગ થતાં શોચ કરે છે, ઝુરે છે/
નિર્મર્યાદ થાય છે, પીડાય છે અને અકલાય છે. (૧૩૧)

દીર્ઘદર્શી અને દુનિઆના રંગને જાણનાર પુરુષ લોકના અધોભાગ
ઊર્ધ્વભાગ અને તિર્યગ્ભાગને જાણે છે [પટલે કે એમાં શી રીતે જીવ ઉત્પન્ન થાય
ઇત્યાદિ વિના જાણી શકે છે.] [૧૩૨]

વિષયમાં ગૃહ લોકો વારંવાર સંસારમાં મટક્યા કરે છે. ઘાટે મનુષ્યમવમાં
અવસર આવેલો જાણીને જે વિષયાદિકનો ત્યાગ કરે તે પરાક્રમી પુરુષ વચ્ચણાયો
છે. એવો પુરુષ, સંસારમાં વંધાઈ ગયેલા વીજા જીવોને પળ અંદરના તથા વાહરના
વંધનોથી છોડાવી શકે છે. [૧૩૩]

શરીર જેમ વાહર અસાર છે તેમ અંદર પણ અસાર છે. અને જેમ અંદર
અસાર છે તેમ વાહર પણ અસાર છે.

अंतो पूतिदेहंतराणि पासति पुढोवि सवन्ति १ पंडिए पडिलेहए ।

[१३५]

से मतिमं परिष्णाय मा य हु लालपच्चासी, मा तेसु तिरिच्छ म-
प्पाण मावायए २ । [१३६]

कासंकासे ३ खलु अयं पुरिसे, बहुमायी, कडेण मूढे पुणो तं क-
रेति लोभं, वेरं वड्ढति अप्पणो । [१३७]

जमिणं परिकहिज्जइ इमस्स चेव पडिवूहणयाए अमरायइ ४ म-
हासद्धी अट्ट—मेतं पेहाए ५ । [१३८]

अपरिन्नाय कंदति ६ से तं जाणह जमहं बेमि । [१३९]

१ (श्रवन्ति नवभिः श्रोतैः) २ आपादयेत् ३ काषकवः किंकर्त-
व्यताव्याकुलः) ४ अमरायते (अमर इवाचरति) ५ प्रेक्ष्य—पर्यालोच्य
६ अनुभवति.

माटे पांडित पुरुष शरीरनी अंदर रहेल दुर्गंधि वस्तुओ तथा शरीरनी अंदर-
नी स्थितिओ के जे हमेशां शरीरनी बाहेर मळादिकने झरती रहे छे तेने जाण्णि
आ शरीरनुं यथार्थरूप जाणतो रहे छे. [१३५]

तेवा बुद्धिमान पुरुषे वाळको जेम मुखमांथी वहेती लारने पाछा चूशी ले
छे तेम लार चूसनार नहि थवुं. [अर्थात् छाँडैला भोगोनी पुनराभिलाषा न करवी,]
तेमज ज्ञानाभ्यासादिकर्मा विमुख पण नहि थवुं. [१३६]

“आ कीधुं अने आ करशुं” एषी चिंतावालो पुरुष अति मायावी बनी
तथा कामकाजयी व्याकुळ थइ वळी पण एवो लोभ करे छे के जेथी पोतानां
दुःखाने वधारे छे. [१३७]

जे माटे एतुं कोहवाय छे के ते महाइच्छावाळो पुरुष आ क्षणभंगुर शरीरना.
माटे आरंभ करतो थको जाणे अजर अमर होय एम वचें छे. [माटे मुनिए] एवा
पुरुषने दुःखी जाणीने [काय तथा धनमां धन नहिं धरवुं]. [१३८]

मूढ जीवो स्वरूप जाणता न होवायी इच्छा अने शोकना अनेक दुःख
भोगवे छे. माटे हुं जे कामपरित्याग विषे उपदेश आपुं हुं ते धारी राखो. [१३९]

ते इत्थं पंडिते पवयमाणे, से हंता, भेत्ता, लुंपिता, विलुंपिता, उद्वड्ता, अकडं करिस्सामित्तिमण्णमाणे जस्सविय णं करेइ^१, अलं बालस्स संगेणं, जे वा से करेति बाले^२, ण एवं अणगारस्स जायतित्ति वेमि । [१४०]

[षष्ठ उद्देशः]

से रां संबुज्झमाणे आयाणीयं समुद्वाए तम्हा पावकम्मं णेव कुज्जा, ण कारवे । १४१

१ (तस्यापि हननादिकाः क्रियाः स्युरितिशेषः) २ [तस्याप्यलं संगिनेतिशेषः]

परमार्थने नहि समजनार छतां पंडितपणांनुं अभिमान धारी वकवाद करनारा जे परतीर्थिओ काम शमाववाना उपदेशक थइ वर्त्ते छे अने जाणे अमे कंइ अपूर्व काम करशुं एम डोळ धरता थका तेओ जीवोने हणनारा, कापनारा, फोडनारा, लूंटनारा, झूटनारा, तथा प्राणथी रहित करनारा होय छे. एवा अजाण लोको जेने ऊपदेश आपे छे ते पण कर्मथी बंधाय छे. माटे एवा वाळो नी सोवत नहि करवी, एटलुंज नहि, पण जे तेवाओनी सोवत करता होय तेमनी पण सोवत नहि करवी. अने जे गृहवास छोडी मुनिओ थएला छे तेमने तो एवी रीते जीवघातथी कामचिकित्सा करवानो उपदेश करवी कल्पतोज नथी. (माटे तेमनी सोवत करवी.) [१४०]

छठो उद्देश.

[संयमार्थे लोकने अनुसरतां छतां तेनी ममता नहि करवी.]

पूर्वोक्त विना जाणीने संयममां उज्जाल थएला मुनिए जाते पाप कर्म न करवुं बीजां पासे पण न करावुं. [१४१]

सिया तत्थेगयरे विप्परामुसति १, छसु अण्णयरंमि क.पति। (१४२)

सुहठी लालप्पमाणे सण्ण दुक्खेण मूढे विप्परियास मुवेति, सण्ण

वेप्पमाणे^२ पुढो वयं पकुच्चति, जंस्सिमे पाणा पव्वहिया, पडिलेहाए णो.

गेकरणाए,^३ एस परिण्णा पवुच्चति, कम्मोवसंती^४ । (१४६)

ते ममाइयमतिं जहाति, से जहाइ ममाइतं, सेहु दिट्ठुणहे मुणीं जस्स,

एत्थि ममाइतं । (१४४)

तं परित्राय मेहावी विदित्ता लोगं, वंता लोगसण्णां, से मतिमं प-

रेक्कमेज्जत्ति वेमि । (१४५)

णारतिं सहते वीरे, वीरं णो सहते रतिं; जम्हा अविमणे वीरे, त-

१ समांरभं करोति २ विविधैः प्रमादैः ३ निकरणं परपीडोत्पादनं तस्मै

[नोत्कर्म कुर्यात् इतिशेषः] ४ एवंसति भवतीति शेषः

जो कोय छकाय माहेन। एक कायनों आरंभमां प्रवर्त्ततो होय तोपण ते छकाय माहेना गमे ते कायनो आरंभ करनार गणायछे. (पट्टे के छए कायनों आरंभी गणाय छे.) [१४२]

सुखार्थी थइ दोदधम करतो थको जीव पोतान। हथे करेला दुःख कराने मूढ वनी दुःखी थाय छे, तथा जाते करेला प्रमदर्थी व्रत भंग करे छे या विचित्र दशाओ भोगवे छे के जे दशाओमां रहेला जीवो अति दुःखित वर्ते छे. आवुं जाणीने मुनिए पत्ते पीडाकारी कइ पण काम नहि करवुं, परिज्ञा ते ए कहेवायः अने आम थयायीज कर्मक्षयथाय छे. [१४३]

जे ममत्व बुद्धिने मूके छे ते ममत्व मूके छे, अने ममत्व नथी तेज मार्गिनो जाण मुनि जाणवो. [१४४]

एम जाणी चतुर मुनिए लोक स्वरूप जागीने लोक संज्ञाओ दूर करी विवेकवंत थइ विचरहुं. [१४५]

पराक्रमी मुनि नथी रति धरत्ते, नथी अरति धरतो, म डे ते शत हायछे

म्हा वीरेण रज्जति^१ । (१४६)

सदे फासे अहियासमाणे, णिविद^२ णिदि^३ इह जीवियस्स ।
(१४७)

मुणी मोणं समादाय धुणे कम्मसरीरगं; पंतं^४ लूहं^५ च सेवन्ति,
वीरा संमत्तदंसिणो । (१४८)

एस ओघतरे मुणी, तिन्ने, मुत्ते, विरते, वियाहितेत्ति बेमि ।
(१४९)

^१ दुव्वसु—मुणी अणाणाए तुच्छए गिलाति वत्तए^७ । (१५०)

एस^६ वीरे पसंसिए अच्चेइ लोयसंजोयं । (१५१)

एस णाए^८ पवुच्चति जं दुक्खं पवेदितं इह माणवाणं, तस्स

१ (श्लोकोयं) २ निर्विदस्व, जुगुप्सस्व ३ तुष्टिं ४ प्रातं ५ रू-
क्षं ६ मुक्तिगमनायोग्यः ७ वक्तुं ८ सुवसुमुनिः ९ न्यायः

अने तेथीज ते रागी नथी थतो. [१४६]

शब्दादि विषयो उपस्थित थतां हे मुनि, तुं तेमां तारी खुशी नहि धारजे.
[१४७]

मुनिए संयम धारिने कर्मेने तथा शरीरने तोडवा मंडवुं. पराक्रमी तत्वदर्शी
पुरषो हलकुं अने लूखुं भोजन करे छे. [१४८]

एवी रीते वर्त्तनार मुनिओ संसारना प्रवाहने तरे छे अने तेओ संसारना
पारने पामेला परिग्रहथी मुक्त थएला अने त्यागी कहेवाया छे. [१४९]

तीर्थकरनी आज्ञाने न मानतां स्वेच्छथी वर्त्तनारा मुनि मुक्ति पामवाने
अयोग्य थाय छे. तेवा मुनिओ ज्ञानादिकथी अपूर्ण होवाथी वोलवा करवामां बहु
अचकाय छे. [१५०]

पण आज्ञाने माननार मुनिओ जेओ आ दुनियांनी जंजाळथी दूर थया छे
तेओ पराक्रमी होवाथी वखणाया छे. [१५१]

[जंजाळथी छुट्टं थं] ए बहु उत्तम रस्तो छे. [तीर्थकर देवे] जे मनु-

दुःखस्स कुसला परिण्ण मुदाहरंति । (१५२)

इति कम्म परिण्णाय सच्चसो १ । (१५३)

जे अणन्नदंसी से अण्णारामे, जे अण्णारामे से अण्णदंसी ।

(१५४)

जहा पुण्णस्स कत्थति तथा तुच्छस्स कत्थति, जहा तुच्छस्स कत्थति तथा पुण्णस्स कत्थति । (१५५)

अविय हणे २ अणातियमाणे ३ । एत्थंपि जाण, सेयं-ति णत्थि ।

(१५६)

केयं पुरिसे कंच णए ४ । एस वीरे पसंसिए, जे वच्चे पडि-प्रोयए

१ कथयतीतिशेषः २ हन्यात्—राजादिः । ३ अनाद्रियमाणः ।

४ नतः

प्योना दुःखोनां कारणो घताव्यांछे तेमनो कुशळ पुरुषो ज्ञान पूर्वक परिहार करेछे तथा करावे छे. [१५२]

ए रीते कर्मनुं स्वरूप जाणीने सर्व रीते उपदेश देवो. [१५३]

जे परमार्थदर्शी छे ते मोक्षना मार्ग शिवाय वीजे रमतो नथी. अने जे मोक्ष मार्ग शिवाय वीजे स्थळे नथी रमतो तेज परमार्थदर्शी छे. [१५४]

मुनिए जे रीते राजाने. उपदेश आपवो तेज रीते रांकने पण आपवो ने जे रीते रांकने आपवो तेज रीते राजाने आपवो. [अर्थात् निरीहपणे वन्नेपर सरखेा भाव राखवो पण एवो कंइ नियम नथी के एकरूपे उपदेश आपवो, किंतु जे जेम प्रतियोध पाये तेने तेम समजाववुं.] [१५५]

[राजाने उपदेश आपतां तेना अभिप्रायने अनुसरिने उपदेश आपवो] नहि वो कदाच ते कोपायमान थइ हणवा पण उठे. माटे धर्म कथा करवानी रीति जा-प्या शिवाय धर्मकथा करवामां पण कल्याण नथी. [१५६]

वांस्ते मुनिए उपदेश आपतां "श्रोता पुरूप केवी तरेहने छे तथा क्या देवने नमे छे" इत्यादि भावतो विचारी उपदेश आपवो. एवी रीतथी उपदेश आपने, संसारमां उर्ध्व अधो अने तिरस्वीन दिशाओमां बंधाइ रहैल्य जीवोने जे

उडुं अहं तिरियंदिसासु । (१५७)

से सव्वतो १ सव्वपरिन्नाचारी ण लिप्पती छणपदेण २ वीरिं १५८)

से मेघावी जे अणुघायणस्स ३ खेयन्ने ४ जे य बंधपमोक्ख म-
नेसी । (१५९)

कुसले ५ पुण णो बद्धे, णो मुक्के । (१६०)

से जं च आरभे जे च णारभे । अणारब्धं च ण आरभे । १६१)

छणं छणं परिन्नाय ६ लोगसन्नं च सव्वसो । (१६२)

उद्वेसो पासगोस्स णत्थि । (१६३)

बाले पुण णिहे कामसमणुन्ने असमितदुक्खे दुक्खी दुक्खाणमे-
व आवहं अणुपरियदत्ति बेमि । (१६४)

१ सर्वदा २ क्षणपदेन—हिंसया । ३ अणस्यकर्मण उद्घातनं दू-
रीकरणं तस्य ४ निपुणः । ५ केवली । ६ वर्जयेत् इतिशेषः ।

पराक्रमी पुरूषो छोडावे छे ते वखणाया छे. [१५७]

तेवा पराक्रमी पुरूषो हमेशां ज्ञानक्रियाथी वर्त्तता थका हिंसार्थी लोपाता
नथी. [१५८]

जे पुरूष कर्कने दूर करवामां कुशळ होय तथा बंध अने मोक्षनो तपास
नार होय ते खरेखरो बुद्धिमान् जाणवो. आ वात छन्नस्थने लगु पडे छे [१५९]

केवळां भगवान् तो नथी बंधायला अने नथी मूकायला [१६०]

तेवो जेम वर्त्त्या होय तेम वर्त्तवुं अने जेम नहि वर्त्त्या होय तेम नहि वर्त्तवुं
[१६१]

हिंसा तथा लोकसंज्ञाने जाणी करीने तेनो परिहार करवो. [१६२]

परमार्थदर्शी मुनिने कशुं जोखम नथी. [१६३]

पण जे अज्ञानी जीवो स्नेहथी विषयोने सेवता रहेछे तेओ दुःखोने कशी
रीते पण अछा नहि करतां वधु दुःखी थया थका दुःखोनाज चक्रम फर्या करेछे
[१४६)

शीतोष्णीयं नाम तृतीय मध्ययनम्.

[प्रथम उद्देशः]

सुप्ता अमुणी सया । मुणिणो सया जागरंति । (१६५)

ल्योयंसि जाण अहियाय दुक्खं^१ । (१६६)

समयं लोगस्स जाणित्ता एत्थ सत्थोवरए^२ । (१६७)

जस्सिमे सद्दा य, रूवा य, गंधा य, रसा य, फासा य, अहिसमन्नागया भवंति, से आयवं, णाणवं, वेयवं, धम्मवं, बंभवं, पन्नाणेहिं परियाणाति लोयं, मुणी वच्चे, धम्माविदुत्ति, अंजू^३ आवट्टसोयसंग—मभि-

१ अज्ञानं २ भवेदितिशेषः । ३ ऋजुः

अध्ययन वीजं.

शीतोष्णीय. *

पहेलो उद्देश.

(परमार्थे सूतेला कोण ?)

गृहस्यो सदा सूतेला छे. मुनिओ सदा जागता छे. (१६५)

दुनिआमां अज्ञान ए अहितकर्त्ता छे. (१६६)

माटे मुनिए हिसाने बाळ लोकोनो आचार जाणीने छकायनी हिसापी दुर रहेवुं. [१६७]

जे पुरुषने शब्द, रूप, गंध, रस, तथा स्पर्श ए वधा सुंदर के असुंदर यतां

* ताड ताप [विगेरेनी दरकार न राखवी एवा अर्थवाळा अध्ययनहुं हुकुं नाम शीतोष्णीय आर्युं छे.]

જાણતિ, સીઓસિળચ્ચાઇ, સે નિગ્ગથે, અરતિરતિસહે પક્સસયં ણો વેદેતિ,
જાગરે, વેરોવરણ, ધીરે એવં દુક્ખા પમુ ચ્ચતિ । (૧૬૮)

જરામચ્ચુવસોવળીણ ણરે સતતં સુદે ધમ્મં ણાભિજાણતિ । (૧૬૯)

પાસિયં આઠરિણ પાણે, અપ્પમત્તો પરિચ્ચણ । (૧૭૦)

મંતા એયં, મહ્મં, પાસ । (૧૭૧)

આરંભજં દુક્ખ મિળંતિ ણચ્ચાપ, માયી પમાઈ પુણરેઈ ગમ્મં ।
ઉવેહમાણે સદ્ધરુવેસુ અંજૂ, મારાભિસંકી મરણા પમુચ્ચતિ । (૧૭૨)

સમપણે ^૧ જણાયા છે તે પુરુષ ચૈતન્ય, જ્ઞાન, વેદ ^૨, ધર્મ તથા બ્રહ્મ^૩નો જાણનાર
જાણવો, અને તે પુરુષ જ્ઞાનવલ્લથી લોકોને જાણી શકે છે અને તેવા જ પુરુષ
મુનિ કહેવાય છે. એવા ધર્મના જાણ સરલ મુનિઓ સંસારચક્ર તથા વિષયામિલા-
ષાનો રાગદ્વેષ સાથે સંબંધ જાણેછે તથા સુખ કે દુઃખની કશી આશા નહિ ધરતાં
તેવા નિઃપરિગ્રહી મુનિઓ અરતિ અને રતિરૂપ પરીસહને સહન કરતા થકા સંયમની
મુશ્કેલીઓને નથી સંભારતા એવી રીતે તે પરાક્રમી મુનિઓ જાગતા રહી વૈર વિરોધ
ને દૂર કરતા થકા દુઃખોથી મુક્ત થાય છે. [૧૬૮]

જરા અને મોતના સપાટામાં સપડાયલા અને હમેશાં મહામોહથી મુંઝાઈ ગ-
ણા પુરુષો ધર્મને જાણી શક્તા નથી. [૧૬૯]

દુઃખિત પ્રાણિઓને જોઈને મુનિએ સાવધાનતાથી સંયમમાં પ્રવર્તવું. [૧૭૦]

હે બુદ્ધિમાન મુનિ, એવું જાણીને [પટલે કે ગૃહસ્થોને પરમાર્થે સૂતેલો જોઈ
અને એવા સૂતેલાઓને અનેક દુઃખો યતાં જોઈ] તું તેમ થવા નહિ કરીશ.
[૧૭૧]

સઘલ્લાં દુઃખો આરંભથી થાય છે એમ જાણી [તું જાગૃત થા,] [કારણ કે]
પ્રમાદિ અને કપાયવંત પ્રાણી વારંવાર ગર્ભમાં આવ્યાં કરે છે. અને જે પુરુષ
શબ્દાદિક વિષયમાં રાગદ્વેષ નહિ ધરતાં સરલ થઈ વર્તે છે તે પુરુષ મોતથી ડરતો
થકો મોતના ભયથી મુક્ત થાય છે. [૧૭૨]

अप्पमत्तो कागेहिं, उवरतो पावकम्मोहिं, वीरे आयगुत्ते जे खे-
यन्ने । (१७३)

जे पज्जवजातसत्थस्स खेयन्ने, से असत्थस्स खेयन्ने । जे अ-
सत्थस्स खेयन्ने, से पज्जवजातसत्थस्स खेयन्ने । (१७४)

अकम्मस्स व्यवहारो ण विज्जन्ति । कम्मणा उवाही जायति ।
(१७५)

कम्मं च पडिलेहाए, कम्ममूलं च जं छणं^१ । (१७६)

पडिलेहिय, सव्वं सपायाय दोहिं अंतेहिं^२ अदिस्समाणे । (१७७)

तं परिन्नाय मेहावी विदित्ता लोणं, वंता लोणसन्नं, से मइमं प-
रक्कमिज्जासित्ति बेमि । (१७८)

१ क्षणं प्राण्युपमर्दकारि कर्म— २ रागद्वेषाभ्यां परिव्रजे-
दिति शेषः

जे पुरुषो परने थतां दुःखो जाणे छे तेवा पराक्रमी पुरुषोए संयमवंत थइ
विषयो साथे नहि फसातां पापकर्मथी दूर रहेवुं. [१७३]

जे विषयोपभोगना अनुष्ठानने शस्त्ररूपे जाणे छे ते अशस्त्रने^१ जाणे छे
अने जे अशस्त्रने जाणे छे ते विषयोपभोगना अनुष्ठानने शस्त्ररूपे जाणे छे. [१७४]

जे कर्मरहित मुक्त जीवो छे तेमने कशो संसार साथे संबंध नथी. कर्मथी ज
सबळी उपाधीओ थाय छे. [१७५]

कर्मस्वरूप जोइने तेमने दूर करदी, तथा हिंसाने कर्मनी मूलहेतुभुत्त जाणीने
[तेथी दूर रहेवुं.] [१७६]

(कर्मस्वरूप) विचारी, (कर्म दूर करवानो) सर्व (उपदेण) ग्रहण करी,
(राग अने द्वेष) ए वेलो परिहार करवो. [१७७]

बुद्धिमान् मुनिए रागादिदने (अहितकर्त्ता) जाणी तेमनो त्याग करी, तथा
लोकाने (रागादिकथी दुःखित थएलो) जाणी लोकसंज्ञा दूर करीने संयममां परा-
क्रमवंत थवुं. [१७८]

द्वितीय उद्देश.

जातिंच बुद्धिंच इहज्ज^१ पास, भूतेहिं जाणे पडिलेह सातं;
तम्हा तिविज्जो^२ परमंति णच्चा, संमत्तदंसी ण करेति पावं । (१७९)

उम्मुंच पासं इह मच्चिण्हिं आरंभजीवी उभयाणुपस्सी;

कामेसु गिच्चा णिच्चयं^३ करेति, संसिच्चमाणा^४ पुणरेंति गब्भं । (१८०)

अवि से हासमासज्ज, हंता^५ णंढीति^६ मन्नति;

अलं बालस्स संगेणं, वेरं वड्ढति अप्पणो । (१८१)

तम्हा—तिविज्जं^७ परमं—ति णच्चा, आयंकदंसी ण करेति

१ अद्य २ अतिविद्यः ३ कर्मोपचयं ४ आपूर्यमाणाः ५ हत्वा.
६ क्रीडेति. ७ अतिविद्वान्.

बीजो उद्देश.

[पापनां फळ तथा हितोपदेश.]

हे मुनि, तुं जन्मना अने जराना दुःख जो. तने जेस सुख प्रिय छे तेम सर्व जीवोने सुख प्रिय छे एम विचार करी जाणतो था. माटे तत्वदर्शी उत्तम विद्वाने मोक्षने जाणतां थकां पाप कर्म नहि करवुं. [१७९]

मुनिए गृहस्थो साथे स्नेह के लटपट करवानी टेव नहि करवी. कारणके गृहस्थ आरंभथी आजीविका करे छे तथा हजु आ अने परलोक ए वनेनां सुखने चाह्यां करे छे. अने जेओ कामभोग्यां आशक्त थइ कर्मने वधारे छे तेओ ते कर्मोथी भराता थका वारंवार संसारयां भटक्या करणे. [१८०]

वळी कामाशक्त पुरुष हास्य विनोदमां जीवोने मारीने पण रमत गमत माने छे. माटे एका वाळ जीवो साथे सोवत नहि करवी कारण के तेम कर्माथी अंते आपणी खरावी वधवानी. [१८१]

माटे खरा विद्वान् पुरुषो मोक्षने जाणी करीने तथा नरकादिक दुःखोने

पावं; (१८२)

अगंच मूलं च त्रिगिंच धीरे, पलिच्छिंदिया^१ णं णिक्कम्मदंसी ।

(१८३)

एस मरणा पमुच्चति से, हु दिड्ढमए मुणी, लोकंसि परमदंसी वि-
वित्तजीवी उवसंते समिते सहिते सयाजते कालकंखी परिव्वए। (१८४)

बहुं च खलु पावकम्मं पगडं, सच्चंसि धितिं कुच्चह, एत्थोवरए
सेहावी सव्वं पावकम्मं झोसति । (१८५)

अणेनाचित्ते खलु अयं पुरिसे, से केयणं^१ अरिहइ पूरित्तए से
अन्नवहाए, अण्णपरियावाए, अण्णपरिगहाए, जणवयवहाए, जणवयपरि-
यावाए, जणवयपरिगहाए । (१८६)

आसेवित्ता एतममुं इच्चवेगे^२ समुट्ठिया, तस्हा तं बिइयं नो सेवते

१ छित्ता २ फेतनं—लोभेच्छां. ३ इत्येवैके

देखता थकां पाप नथी करता. (१८२)

माटे हे धीर मुनि, तुं मूल कर्म तेथी अय कर्मने जीवयीं जूडा पाडे. कारण
के कर्मने तोढवार्थीज सर्व पोत्ताना पवित्र आत्म रूपने जोनार धाय छे. (१८३)

अने एवा मुनिओज यरणना भयथी मुक्त थाय छे, एवा मुनिओ संसारना
दुःखोथी वीहीता थका लोकगां रहेला मोक्ष रथळने जोइने राग द्वेष रहितपणे वर्त्तता
थका शांत, रामित्तिवंत, ज्ञानवंत अने यद्ववंत थइने काळक्रमे कर्मक्षय करता थका
वर्त्त छे. [१८४]

जो "पाप कर्म बहु करेलां छे" एस जणाय तो सत्तगां हिम्मत्तवान् थाओ.
एमां तत्पर रहेला बुद्धिमान् पुराणे सर्वं गुरु कर्मो नो नाश करे छे. [१८५]

आ संनारी जीव अनेक काषोणां चित्तने दोडावेछे. ते चाळणी के दरिया
जेवा लोभने भरपूर कारवा मथेछे. तेथी ते वीजाओने मारवा. देसन करवा, कवजे
राखवा. देजने इजाइवा, देजने हेगन करवा, अने देजने कवजे नरवा नैपर धाय
छे. [१८६]

तेम ज्ञाने पण केउवाएत्ते अने संयममां उज्जल्ल थया माटे हे मुनिओ

१ भग्न राजाईक.

णिस्सारं पासिय णाणी । (१८७)

उववायं चवणं णच्चा अणण्णं चर माहणे । (१८८)

से ण छणे, ण छणावए, छणंतं णाणुजाणई । (१८९)

णिच्चिंदं णंदिं अस्ते पयासु^१, ^२ अणोमदंसी णिसन्तो पावेहिं
कम्मोहिं । (१९०)

कोहाइमाणं हणियाय वीरे, लोभस्स पासे णिरयं महंतं;
तस्हाय वीरे विरते बहाओ, छिंदिज्ज सोयं^३ लहुभूय गामी,^४
(१९१)

गंथं परिन्नाय इहज्ज वीरे, सोयं परिन्नाय चरिज्ज दंतं;

उम्मज्ज^५ लब्धुं इह साणवेहिं, ^६ णो पाणिणो पाण ससारभेज्ज-

१ स्त्रीषु. २ अनवमं—ज्ञानादि—तद्वर्ती ॥ ३ शोकं. ४ लघुभूतो
मोक्ष स्तं गंतुं शील मस्येति. ५ उन्मज्जनं. ६ मानवेषु.

तमारे दीक्षा लइ पछी भोगनी वांच्छा राखी वीजुं मृषावादरूप पाप नहि सेववुं,
अने विषयोने निःसार नगवा. [१८७]

हे मुनि, जन्म अने मरण सर्वने छे, एम जाणी संघप्रमां वर्त्ती कर. (१८८)

माटे मुनिए जाते हिंसा न करवी वीजा पासे न कराववी, तथा तेना कर-
नारने रूडुं नहि मानवुं [१८९]

स्त्रीओमां आशक्त नहि यतां कामथी यता दुरत्तने धिक्कारवुं, अने ज्ञानादि
उत्तम वस्तुने धारिने पाप-कर्मथी दूर रहेवुं. [१९०]

पराक्रमी मुनिए, क्रोध अने तेनुं कारण जे गर्व तेने भांगी नाखवुं अने
लोभथी मोहोटा दुःखथी थरेली नरकगतिए जवाय छे एम जेवुं. माटे तेवा मोक्ष
जवा तत्पर थएला मुनिए हिंसार्थी दूर रही गोकसंतप न करवा. [१९१]

परिग्रहने अहितकर्त्ता जाणी आजेज तेने छांडवुं. तथा विषयवांछारूप
प्रव्रह्मने एण अहितकर्त्ता जाणी इंद्रियो वश करी वर्त्तवुं. आ मनुष्यभवमां ऊंचे आवेला

सि-त्ति बेमि. [१९२]

तृतीय उद्देश :

संधिं लोगस्स जाणिता^१ । [१९३]

आययो^२ बहिया पास, तम्हा ण हंता ण विधायये । [१९४]

^३ जमिणं अन्नमन्नवित्तिगिंछाए पडिलेहाए ण करेइ पावं कम्मं, किं तत्थ मुणी कारणं सिया ? समयं^४ तत्थ उवेहाए अप्पाणं विप्पसायए ।

[१९५]

अणणपरसं नाणी, णो पमादे कयाइवी; आयगुत्ते सया धीरे,

१ न प्रमादः श्रेयानिति शैवंः २ आत्मवदित्यर्थः ३ निश्चयन-
यसूत्रमेतत्. ४ समतांसमयं वा आगमं—
थइने प्राणियोनी हिंसा कदापि नहि करवी. [१९२]

त्रीजो उद्देश.

‘पाप न करवां अने परीपह सधेवां एट्ठायी कंइ सावु नयी धवातुं’

(किंतु साथे संयम जोइए)

अवसर घळेलो जाणानि प्रमाद न करवो. [१९३]

हे मुनि पोता तरफ जेम जूए छे तेम थीजा तरफ जो, माटे दारे कोइ जं-
तुने मारवुं नहि अने मरावुं पण नहि. [१९४]

एक बीजानी सरसथी कोइ पाप कर्म नयी करतो तेमां गुं तेनुं मुनिपणुं
कारण भूत छे? (अर्थात् गुं एट्ठायी ते मुनि कही गकाशे? किंतु सप्रतामां रही
जो तेम करे तो मुनि थइ शके.) माटे ए सजनाथी मुनिए पोताने अनेक प्रकारे
प्रशांत करवुं. [१९५]

ज्ञानवंत मुनिए संयमप्रां प्रमाद न करवो, किंतु हमेशां आत्माने कवजे राखी

^१ आ निश्चयनयनुं मत छे. व्यवहारथी तो परस्परनी लज्जाथी पापकर्म
परिहरतां पण ते मुनि कही गकाय छे.

जायामायाइ^१ जावए । [१९६]

विरागं रूढेसु गच्छेज्जा महता खुदिएइं वा । [१९७]

आगतिं गतिं च परिण्णाय दोहिंवि अंतेहि अदिस्समाणेहिं से ण
छिज्जइ ण भिज्जइ, ण डज्जइ, ण हम्मइ कंचणं^२ सच्चलोए । (१९८)

अवरेण पुच्चं ण सरंति एगे, किमस्सतीतं किंवागमिस्सं;

भासंति एगे इह माणवाओ, जमस्सतीतं तं आगभेस्सं। (१९९)

णातीत—मट्टं णय आगभेस्सं, अट्टं निअच्छंति तहागताओ,

विधूतकप्पे एताणुपस्सी, णिज्झोसइत्ता खवए महेसी । (२००)

का अरती ! के आणंदे ! एत्थंपि अग्गहे चरे;

सच्चं हासं परिच्चज्ज, आलीणगुत्तो परिच्चए । (२०१)

१ संयमयात्तामात्रया. २ केनचिदित्यर्थः

धीरपणे संयम सचवाय तेवी रीते शरीरने नभाववुं [१९६]

मोहोटा के सामान्य सगळा रूपोभां विरक्त रहेवुं [१९७]

आगति अने गतिनुं स्वरूप जाणीने राग अने द्वेष जेणे दूर कर्याछे ते
कोइथी पण नहि तोडी शकाय, नहि वाळी शकाय, अने नहि मारी शकाय. [१९८]

केटलक^१ भूत अने भाविष्यकाळना वनावेने याद नथी करता, अने आ
जीवने शुं शुं थयुं अने शुं शुं थवानुं छे ते नथी विचारता. वळी केटलाएक कहछे
के जे सुखदुःख आ जीवने थइ गयुं तेज पाहुं अगाउ पण थवानुं. [१९९]

पण तत्वज्ञानी पुरुषो तेम नथी कहेता. [तेओ तो कहे छे के कर्मपरिणति
विचित्र होवाथी कर्मानुसार सुखदुःख थवानां] माटे पवित्र आचारवाणा महर्षिंए
ए पुर्वोक्त वात जाणीने कर्मने क्षय करवां. [२००]

योगि पुरुषना मनभां ते शी अरति होय अने श्यो आनंद होय? अने कादि
मानेने आसंयमभां अरति अने संयमभां आनंद उत्पन्न थाय तो त्यां पण आग्रह
रहितपणे वर्त्तवुं वळी सर्व हास्य भेली करीने इंद्रियो तथा मन वचन अने कायाने
कवजे करीने फरवुं. [२०१]

१ अज्ञानी जीवो.

पुरिसा, तुममेव तुमं मित्तं; किं बहिया मित्त- मिच्छसि।(२०२)
जं जाणेज्जा उच्चालइयं^१ तंजाणेज्जा दूरालइयं^२, जं जाणे-
ज्जा दूरालइयं तं जाणेज्जा उच्चालइयं । (२०३)

पुरिसा, अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ एवं दुक्खा पमोक्खसि ।
(२०४)

पुरिसा, सच्चमेव समभिजाणाहि; सच्चस्साणाए से उवट्ठिए से
मेहावी मारं तरति, सहिते धम्म मादाय सेयं समणुपस्सति । (२०५)
दुहओ^३, जीवियस्स परिवंदण—माणण-पूयणाए^४; जांसिएगे
पमोयंति । (२०६)

दुक्खमत्ताए पुट्ठो णो झंझाए; पासिमं, दत्रिए लोए लोयालोय-
पवंचाओ मुच्चतित्ति बेमि । (२०७)

१ उच्चालयितारं कर्मणां. २ दूरालयो मोक्ष स्तद्वंतं. ३ द्वाभ्यां
रागद्वेषाभ्यां हतः द्विहतः ४ हिंसादिषु प्रवर्त्तत इतिशेष,

हे पुरुष, तूं ज तारो मित्त छे. शा माटे वाहेर मित्तने जुए छे ? [२०२]
जे कर्मने नशादनार छे ते ज झुक्ति पामनारो छे अने जे मुक्ति पामनारछे
ते कर्मने नशादनार छे. [२०३]

हे पुरुष, तारा आत्माने ज विषयोथी रोक्री राखीने तूं दुःखोथी छूटीश.
[२०४]

हे पुरुष, तूं सत्यमुंज सेवन कर. केमके सत्यना फरमानथी ज प्रवर्त्ततां थ-
का बुद्धिमान् मुनिओ संसारनो पार पावे छे अने धर्म पाळीने कल्याण मेळवे छे.
[२०५]

रागद्वेषथी कलुपित वएलो जीव आ क्षणभंगुर जीदगीना कीर्त्ति अने
मानादिकना जथे हिंसामां प्रवृत्त धाय छे अने ते कीर्त्यादिकमां खुश बनि रहेछे
[पण तेथी आत्मानुं कल्याण थवातुं नथी.] [२०६]

मुनिए दुःख आवी पटतां व्याकुळ थवुं नहि, अने विचारुं के सायुओ
ज दुनिजाना तरेहवार देखावोनी जंजाळथी मुक्त रहे छे. [२०७]

सी से जम्मदंसी, जे जम्मदंसी से मारदंसी, जे मारदंसी से गिरयदंसी
जे गिरयदंसी से तिरियदंसी, जे तिरियदंसी से दुक्खदंसी । (२१७)

से मेहावी अभिनिवट्टेज्जा कोहंच, माणंच. मायंच, लोहंच, पे-
ज्जं च, दोसं च, मोहं च, गब्भं च, मरणचं, णरगं च, तिरियं च, दुक्खं
च एयं पासगस्स दंसणं उवरयसत्थरक पलियंतकरस्स । (२१८)

आयाणं णिसिद्धा सगडब्भिं । (२१९)

किमत्थि उवाधी पासगस्स ? ण विज्जति णत्थित्ति, बेमि। [२२०]

ते नरकयी मुक्त थाय छे, जे नरकयी मुक्त थाय छे ते तिर्यचगतिथी मुक्त थाय
छे, ने जे तिर्यचगतिथी मुक्त थाय छे ते दुःखथी मुक्त थाय छे. [२१७]

ए रीते बुद्धिशाली पुरुषे क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, तथा मोह
दुर करीने गर्भ, जन्म मरण, नरकगति, अने तिर्यचगतिना दुःखो निवारदां. एम
तत्वदर्शी शस्त्र त्यागी संसारना अंतकर्त्ता [भगवान वीरभद्र]तुं दर्शनछे. [२१८]

माटे मुनिए कर्मोनां मूळकारणोने बंध करी प्रथम करेलां कर्मोने स्वपावतां
रहेवुं. [२१९]

अने ज्यारे केवल्लियणुं पमाय त्यारे केवल्लिने तो कशी उपाधि नथी ज
होती. [२२०]



सम्यक्त्वाख्यं चतुर्थं मध्ययनम्.

[प्रथम उद्देशः]

से बेमि^१—जेय अतीता, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमिरसा,
भगवंतो, ते सव्वेवि, एव—माइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवंति, एवं
परुवेंति,—सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे लत्ता, ण हंतव्वा, ण
अज्जावेयव्वा^१, ण परिघेतव्वा^२ ण परितावेयव्वा, ण उइवेयव्वा^३

[२२१]

एस धम्मे, सुद्धे, णितिए, सासए, समेच्च लोयं खेयन्नेहिं पवेतिते

१ आज्ञापयितव्याः २ परिग्राह्याः ३ अपद्रावयितव्याः ।

अध्ययन चोथुं.

सम्यक्त्व.

पहेलो उद्देश.

(सत्यवाद)

हुं कहुंहुं के जे तीर्थंकर भगवान थइ गया, जे हाल वर्ते छे, अने ज थायता
काळयां थशे ते वथा आ रीते कहे छे, बोले, जणावेछे, तथा वर्णवेछे, के “सर्व
प्राण, १ सर्वभूत, २ सर्व जीव, ३ अने सर्व सत्त्वने^४ हणवु नहि, तेमनापर हकुमत
चलाववी नहि, तेमने कवजे करवां नहि, तेओने मारी नांखवा नहि अने तेओने
हेरान करवां नहि.” [२२१]

आओ पवित्र, अने नित्य धर्म, लोकना दुःखने जाणनार भगवाने सांभळवा

१-२-३-४ अहीं प्राण, भूत, जीव तथा सत्त्व ए चारे शब्दनो एकज

अर्थ थायछे.

तंजहा, उट्टिएसु वा, अणुट्टिएसु वा, उवरयदंडेसु वा, अणुवरयदंडेसु वा, सो
वाहिएसु वा, अणोवहिएसु वा, संजोगरएसु वा, असंजोगरएसु वा ।

२२२]

तच्चं^१ चैयं तथा चैयं अस्सि^२ चैयं पवुच्चइ । (२२३)

तं आइ-तु ण णिहे^३ ण णिक्खिक्खए, जाणि-तु धम्मं जहातहा ।

(२२४)

दिट्ठेहिं णिव्वेयं गच्छेज्जा । (२२५)

णो लोगस्सेसणं^४ चरे । (२२६)

जस्स णत्थि इमा णाती,^५ अन्ना तस्स कओ सिया । (२२७)

दिट्ठ सुयं मयं विन्नायं जमेयं परिकहिज्जइ । (२२८)

१ तथ्य मेतत् २ अस्मिन्नेव प्रवचने इत्यर्थः ३ गोपयेत्
४ लोकस्यैषणां. ५ ज्ञातिलोकैषणा.

तयार थएलाओने, नहि थएलाओने, १ मुनिओने, गृहस्थोने, रागिओने, त्यागिओने^४
भोगिओने, तथा योगिओने वत्तव्यो छे. [२२२]

ए धर्म स्वरेखरो ज छै अने मत्त जिनप्रवचनमां ज वर्णवेलो छे [२२३]

माटे यथार्थपणे धर्मसुं स्वरूप जाणीने श्रद्धा कर्थावाद आलसु नहि धरुं,
तथा समजीने लीधेला धर्मने कोइ बखते छोडी सण नहि आपरुं. [२२४]

देखाता दुनिआना ठाठमाठमां [अंजाइ न जत्तां] वैगन्य धरुं. [२२५]

दुनिआनी देखादेखी नहि करवी. [२२६]

जेने देखादेखी नथी तेने वीजी कुमति पण नहि थरो. अथवा जेने ऊपर
बतावेलो पवित्र धर्मनी श्रद्धा नहि होय तेने वीजी शी सुमति थरो? [२२७]

ए वधी विना जे कही छे ते दीटेली पण छे, सांभळेली पण छे, जाणेली
पण छे, अने अनुभवेली पण छे. [२२८]

१ कारण के कर्मनी विचित्र परिणति होवाथी बखते तेमने पण उपकार थायछे.

समेमाणा^१ पलेमाणा^२ पुणो पुणो जातिं पक्कपंति । (२२९)
 अहोय राओय जयमाणे धीरे सया आगयपन्नाणे । पसत्ते बहिया
 । अप्पमत्ते सया परिक्कमिज्जासित्ति बेमि । (२३०)

[द्वितीय उद्देशः]

जे आसवा ते परिस्सवा । जे परिस्सवा ते आसवा । (२३१)
 जे अणासवा ते अपरिस्सवा । जे अपरिस्सवा ते अणासवा ।
 (२३२)
 एते पए संबुज्झमाणे लोयं च आणाए अभिसमेच्चा पुढो पवेदि-
 तं^३ । (२३३)

१ शाम्यंतो गृह्णिं कुर्वतः २ प्रलीयमानाः ३ को धर्मप्रति
 नोद्यच्छेत इतिशेषः

संसारमां असक्त थइ अंदर खुचनारा जीवो चिरंकाळ संसारमां भमे छे.
 [२२९]

माटे तत्वदर्शी धीर पुरूपोए प्रमादिओने धर्मथी वाहेर रहेला जोइ अहर्निश
 उज्ज्वाल थइ सावधानपणे वर्त्तवुं. [२३०]

बीजो उद्देश.

[परमतनुं विचारपूर्वक खंडन.]

जे कर्म वांधवाना हेतुओ छे ते कर्म खपाववाना हेतुपण थइ शके छे, ने जे
 कर्म खपाववाना हेतुओ छे ते वखते कर्म वांधवाना हेतु पण थइ पडे छे. [२३१]
 अथवा तो जेटला कर्म खपाववाना हेतुओ छे एटला ज कर्म वांधवाना
 हेतुओछे अने जेटला कर्म वांधवाना हेतुओ छे तेटला ज कर्म खपाववाना हेतुओ
 छे. [२३२]

आ पदोने पूर्ण रीते समजनारा तीर्थकरना फरमाव्या प्रमाणे लोकोने
 कर्मोथी वंधाता जोइ कोण धर्ममां उज्ज्वाल नहि थाय? [२३३]

અઘાતિ ણાણી ઇહ માણવાણં સંસારપાડિવિન્નાણં સંબુજ્ઝમાણાણં
વિન્નાણપત્તાણં; અટ્ટાવિ સંતા અદુવા પમત્તા^૧ । અહાસચ્ચ મિણં ત્તિ વેમિ
(૨૩૪)

ના ણાગમો મચ્ચુમુહસ્સ અત્થિ । ઇચ્છાપણીયા વંકાણિકેયા
કાલગ્ગહીઆ ણિચ્ચયે ણિવિટ્ઠા પુઠો પુઠો જાઈં પકપ્પંતિ । (પાઠાંતરં)—
ઇત્થ મોહે પુણો પુણો । (૨૩૫)

ઇહ મેગેસિં તત્થ તત્થ સંથવો ભવતિ । અહોવવાઙ્ગે પાસે પાડિ-
સંવેદયંતિ । [૨૩૬]

ચિટ્ઠં^૨ કૂરોહિં કમ્મેહિં, ચિટ્ઠં પરિવિચિટ્ઠતિ; અચિટ્ઠં કૂરોહિં કમ્મેહિં,
ણો ચિટ્ઠં પરિવિચિટ્ઠતિ । (૨૩૭)

એગે^૩ વયંતિ અદુવાવિ ણાણી, ણાણી વયંતિ અદુવાવિ એગે ।
(૨૩૮)

૧ યથા પ્રતિબુદ્ધા ઇતિશેષઃ ૨ મૃત્શં ૩ ચતુર્દશપૂર્વવિદાદયઃ
જ્ઞાની ભગવાન સંસારમાં રહેલા અને પ્રતિવોધને પામનારા અથવા બુદ્ધિશાલી
પુરુષોને એવી રીતે ધર્મ કહે છે કે જેથી જીવો આર્તવ્યાનથી આકુલ હોવા છતાં
અથવા પ્રમાદી હોવા છતાં પણ પ્રતિવોધ પામે છે. આ વાત સ્વરેખરી છે. [૨૩૪]

મૃત્યુના મુલમાંથી રહેલા પ્રાણીને મૃત્યુ નથી આવવા નું એમ વિલકુલ છે જ
સહિ. છતાં આશાથી તણાતા અસંયમી જીવો મૃત્યુએ પકડી લીધેલા છતાં આરંભમાં
તણીન રહી વિચિત્ર જન્મ પરંપરા વધારે છે અથવા વારંવાર પાછા તેજ આશાના
પાશમાં સપડાય છે. [૨૩૫]

કેટલાએક જીવોને તો એ નરકાદિકના દુઃખો સાથે સોવત જ પડી રહેલી
હોય છે; તેથી તેવાં કર્મો કરી ત્યાં ઉપજી ત્યાનાં દુઃખ ભોગવતા જ રહે છે [૨૩૬]

અતિ ક્રૂર કર્મોથી જીવો અતિભયંકર દુઃખવાલા ઠેકાણે જઈ ઉપજે છે અને
જે અતિક્રૂર કર્મ નથી કરતા તે તેવા ઠેકાણે નથી ઉપજતા. [૨૩૭]

જે શ્રુતકેવલીઓ^૧ કહે છે તે જ કેવલજ્ઞાની કહે છે. અને જે કેવલ-
જ્ઞાની કહે છે તેજ શ્રુતકેવલીઓ કહે છે. [૨૩૮]

૧ ચતુર્થી દશ પૂર્વ જ્ઞાનના ધરનાર શ્રુતકેવલી કહેવાય છે

आवंती^१ केआवंती^२ लोयंसि समणाय माहणाय पुढो विवादं वदन्ति “से दिट्ठं च णे, सुयं च णे, मयं च णे, विण्णायं च णे, उट्ठं अहं तिरियं दिसासु सव्वतो सुपडिलेहियं च णे—सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, हंतव्वा, अज्जावेतव्वा, परिघेत्तव्वा, परियावेयव्वा, उद्वेयव्वा । एत्थंपि जाणह, णत्थित्थ दोसो । ” अणारियवयण—मेयं ।

(२३९)

तत्थ जे ते आरिया ते एवं वयासी—“ से दुदिट्ठं च भे, दुस्सुयं च भे, दुव्विन्नायं चभे, उट्ठं—अहं—तिरियंदिसासु सव्वतो दुप्पडिलेहियं च भे; जं णं तुब्भे एवं माइक्खह, एवं भासह, एवं परूवेह, एवं पन्नवेह—“ सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, हंतव्वा, अज्जावेयव्वा, परिघेत्तव्वा, परियावेयव्वा, उद्वेयव्वा, एत्थवि जाणह, नत्थित्थ दोसो । ” अणारियवयण—मेयं । (२४०)

वयं पुण एव—माइक्खामो, एवं भासामो, एवं परूवेमो, एवं

१ यावंतः २ केचन

आ जगतमां, जे कोइ श्रमणो^१ तथा ब्राह्मणो धर्म विरुद्ध वक्कावे करे छे, जेवो के “अमे दीट्ठं, सांभळ्युं, मान्युं, नक्कीपणे जाण्युं, तथा रुडी रीते तपाशी जोयुं छे के सर्व प्राण, सर्व भूत, सर्व जीव, तथा सर्व सत्व हणवा, दाववा, पकडवा दुःखी करवा के गर्दन कतल करवा. एम करतां कइए दोपथतो नथी.” ते सगळो वक्काव पापनो वधारनार छे, जे माटे ए तेमनो वक्काव ते अनार्य लोकोनुं ज वचन छे. [२३९]

अने जे आर्य पुरुषो छे ते तो एवं ज बोले छे के “हे वादियों, तमारं ते जोवुं, सांभळवुं, मानवुं, नक्कीपणे जाणवुं, तथा रुडी रीते तपाशी जोवुं ए वहुए दुष्ट छे,^१ जे माटे तमे एवं कहो छो, के “सर्व जीवोने धारवा करवामां कशो दोप नथी,” पण ए तमारं बोळवुं अनार्य लोकने ज अनुसरतुं छे. [२४०]

अने असे तो एम कहिए छीए के “कोइपण जीवने मारवुं के दुःख उप-

१ बुद्धमतन साधुओ

પન્નવેમો—“ સઘ્વે પાણા, સઘ્વે ભૂયા, સઘ્વે જીવો, સઘ્વે સત્તા, ણ હંત-
વ્વા, ણ અજ્જાવેત્તવ્વા, ણ પરિઘેત્તવ્વા, ણ પરિયાવેયવ્વા, ણ ઉદ્ધવેયવ્વા ।
एत्थपि जाणह, णत्थित्थ दोसो ” । આરિયવચન—મેયં । (૨૪૧)

પુઘ્વં નિકાય^૧ સમયં, પત્તેયં પત્તેયં પુચ્છિસ્સામો । હં મો પાવા-
દુયા, કિં મે સાયં દુક્ખં ઉદાહુ અસાયં? સમિયા પહિવન્નેયાવિ एवं बू-
या,—सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं,
असायं^૨ अपरिणिव्वाणं^૩ महब्भयं दुक्खंत्ति बेમિ । (૨૪૨)

(તૃતીય ઉદ્દેશઃ)

उवेहेणं^૪ बहियायलोयं । सेसव्वलोयंसि जे केइ विन्नु^૫ । (૨૪૩)
अणुवीइ पास, णिक्खिच्चदंडा जे केइ सत्ता पळियं^૬ चयांति

૧ નિકાચ્ય વ્યાવસ્થાપ્ય ૨ અનભિપ્રેતં ૩ અનિવૃત્તિરૂપં ૪ ઉપે
ક્ષસૈવનં ૫ તતોપ્યધિકઃ ૬ કર્મ

જાવવું નહિ એમ કરવામાં કરો દોષ નથી. ” આ વચન આર્યપુરુષોનું છે. [૨૪૧]
દરેક મતવાલાના શાસ્ત્રોમાં શું શું કહેલું છે તે તપાસી કરીને અમે દરેક મ-
તવાલાને સવાલ કરીએ છીએ કે હે પરવાદિઓ! “તમોને સુખ અપ્રિય છે કે દુ-
સ્વ અપ્રિય છે”! જો દુઃસ્વ અપ્રિય છે, તો તમારા મુજબ વધા જીવોને દુઃસ્વ મહા
ભયંકર અને અનિષ્ટ છે (૨૪૨)

ત્રીજો ઉદ્દેશ.

(તપોનુષ્ઠાન)

હે મુનિ આ ધર્મથી વાહેર રહેલા પાર્શ્વલોકની રીતમાતપર તારે કશું લ-
ક્ષ્ય નહિ આપવું. અને એમ જે વર્તે છે તે વધા વિદ્વાનોના ઝિરોમ્મણિ જાણવા
તું વિચારી જો કે જેઓ આરંભને દુઃસ્વનું કારણ જાણી હિંસાનાં કામ ત્યાં

૧ સ્વોટું છે (wrong)

णरे मुयत्त्वा^१ घम्माविदुत्ति अंजू; आरंभजं दुक्खमिणांति णच्चा । एवमाहु
संमत्तदंसिणो । (२४४)

ते सव्वे पावादिद्या दुक्खस्स कुसला पारिन्न-मुदाहरंति, इति कम्म
परिन्नाय सव्वसो । [२४५]

इह आणाकंखी पंडिए अणिहे एग-अप्पाणं सपेहाए धुणे सरी-
रगं । (२४६)

कसोही अप्पाणं । जरोहि अप्पाणं । (२४७)

जहा जुभाइं कट्टाइं हव्ववाहो^२ पमत्थति, एवं अत्तसमाहिते अ-
णिहे । (२४८)

विगिंच कोहं अविकंपमाणे इमं^३ णिरूद्धाउयं^४ सपेहाए । [२४९]

१ श्रुतार्थाः निःप्रतिकर्मशरीरा इत्यर्थः २ अग्निः ३ मनुष्यत्व ४ गलितायुष्कं-

करी शरीरनी पण कशी दरकार नहि करतां थका धर्मेना जाण अने सरल थइ
कर्मेने तोडे छे ते खरेखरा उत्तम विद्वान्छे. एय ययार्थदर्शी पुरुषो कहेछे (२४४)

जे माटे ते वधा वादिओ सर्व रीते कर्मोतुं स्वरूप जाणी दुःखनी वावतमां
समजवंत वनत्तां ते दुःख कोइने पण नहि आपहुं जोइए एवो ठराव करशे. [२४५]

माटे आ जगतलां आज्ञा पाळया चाहानार पंडित पुरूषे निरिह थइ आत्मा-
ने एकलो जोइने शरीरने तपथी शोषवुं. [२४६]

हे मुनि, तुं तारा शरीरने तपथी खूब छग तया जीर्ण कर. [२४७]

जे माटे जेय जूना लाकठाने अग्नि जलदी वाळेछे तेस जे स्नेहदहित^१ अने
सावधान पुरूष हने तेनां कर्म जलदीयी बळशे. [२४८]

वळी हे मुनि, गनुष्पभवतुं आयुष्य पूरुं थइ रहेवा आवेलुं जाणी हिम्यन
धरीने क्रोवने अलगो कर. [२४९]

दुक्खं च जाण अदुवागमिस्सं । पुढो फासाइं च फासे । लोयं
पास विप्फंदमाणी । (२५०)

जे णिव्वुडा, पावोहिं कम्मोहिं अणियाणा ते वियाहिया । (२५१)
तम्हा—तिविज्जो णो पडिसंजलिज्जासित्ति बेमि । (२५२)

[चतुर्थ उद्देशः]

आवीलए^१ पवीलए णिप्पीलए, जहिच्चा पुव्वसंजोगं हिच्चा^२ उव
समं । (२५३)

तम्हा अविमणे वीरे सारए^३ सामिए सहिते सया जए । (२५४)

१ आपीडयेत् २ गत्वा ३ स्वारतः

क्रोधादिकथी आवती काले केवां दुःख थसे ते विचार, तथा लोक केवी
रीते ए क्रोधादिकथी टळवळे छे ते तपाश. [२५०]

अने जेओ कषायोने उपशमावी शांत बन्या छे तेओने परम सुखी कहेला छे.
[२५१]

माटे खरा विद्वान पुरुषे क्रोधथी कोइ वखते वळवुं नहि. [२५२]

चौथो उद्देश.

(संयमर्मा संस्थित रहेवुं)

मुनिए सघळी सांसारिक जंजाल छोडी उपशम^१ पूर्वक शरीरने शरुआत
मां सादा तपथी दमवुं, पछी वधता तपथी दमवुं, अने प्रांते संपूर्ण रीते दमवुं.
[२५३]

अने एटला माटे पराक्रमी मुनिए शांत मनथी संयमर्मां राग धरी समिति^२
तथा ज्ञानादि हितकारक वस्तुओने साथे राखी हमेशां प्रयत्नवंत रहेवुं. [२५४]

१ क्षमा, २ पवित्रपणे वर्त्तवानी रीतिओ,

दुरणुचरो मग्गो वीराणं अणियद्दगामीणं^१(२५५)

विगिंच मंससोणियं । एस पुरिसे दवीए वीरे आयाणिज्जे वियाहिए
जे धुणाति समुस्सयं^२ वसिता बंभचेरंमि । (२५६)

णेत्तेहिं^३ पलिच्छन्नेहिं आयाणसोयगाडिए बाले अञ्चोच्छिन्नबंधणे
अणाभिक्कंतसंजोए । तमंसि^४ अविजाणओ आणाए लंभो णत्थि ति बेमि।
(२५७)

जस्स नत्थि पुरा पच्छा, सज्जे तस्स कुओ सिया । (२५८)
से हु पन्नाणमंते बुद्धे आरंभोवरए । सम्म—मेयंति पासह । जेण
बंधं वहं घोरं परितावं च दारुणं । (२५९)

१ मोक्षगामिनां । २ शरीरं ३ इंद्रियैरित्यर्थः ४ वर्तमानस्योतिशेषः

मुक्ति मेळवनार वीर पुरुषो नो मार्गे घणो विकट छे. [२५५]

माटे हे सुान, तुं तारां मांस अने लोही सूकाव. कारण के जे पुरुष ब्रह्म-
चर्यमां^१ हमेशां रहीने शरीरने तपथी दमे छे तेज वीर पुरुष मुक्ति मेळवनार
होवायी माननीय गणाय छे. [२५६]

जे पुरुष शरुआतमां कदाच दंद्रियोने वश करी वत्यो होय पण पाछे
भोहना जोसथी विषयोमां आशक थाय छे, ते बाळ पुरुष कशा पण बंधनथी छूटे
थएलो नथी तथा कशा पण प्रपंचथी रोहित थएलो नथी. एग अजाण पुरुषने
मेहना अकारामां वर्त्ततां परमेत्वरनी आज्ञानो लाभ^२ धतो नथी. [२५६]

अने ए रीते जेने पूर्व भवमां आज्ञानी प्राप्ति नथी अने भविष्यमां पण ध-
षांती नथी तेने आ वर्त्तमान भवमां ते शी रीते थवानी ? [२५८]

माटे ज्ञानवंत अने परमार्थदर्शी पुरुषो आरंभथी दूर रहे छे. तेमनी आ
वर्त्तणुक घणी प्रशंसनीय छे. जे मा आरंभथी जीवने वध बंधनादि भयंकर दुःखो
तथा असह्य पीडा भोगववी पडे छे. [२५९]

पालिच्छिदिय बाहिरगं च सोयं, णिकम्मदंसी इह मच्चिण्हि ।

[२६०]

कम्मुणो सफलत दट्टुं तओ णिज्जति वेयवि । [२६१]

जे खलु भो, वीरा समिता सहिता सयाजता संघडंदसिणो १
आतोवरया अहा तहा लोग मुवेहमाणा पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं इ-
ति, सच्चंसिं परिविच्चिट्ठिसु । [२६२]

साहिस्सामो २ णाणं वीराणं समिताणं सहियाणं सयाजताणं संघ-
डंदसीणं आतोवरयाणं अहातहा लोग मुवेहमाणाणं । किमत्थि उवाधी ३ ।
पासगस्स ण विज्जति णत्थिचि बेमि । (२६३)

१ निरंतरदर्शनः २ कथयिष्यामः

माटे हे मुनिओ, तमारे बाहेरना प्रतिबंध कापी करी मोक्ष तरफ लक्ष्य
राखी आ दुनियामां आरंभनो त्याग करी वर्त्तवुं. [२६०]

“करेलां कर्मनां फळ धवानांज ” एम जोइने आगमना तत्वने जाणनार
मुनिओए ते कर्मो वांधवाना हेतुओथी दूर रहेवुं. [२६१]

जे पुरुषो खरेखरा पराक्रमी, सत्यवृत्तिनी रीतिओथी वर्त्तनारा, ज्ञानादि
गुणोयां रमनारा, हमेशां उचमवंत, कल्याण तरफ दृढ लक्ष्य धरनारा, पापथी नि-
वर्त्तेला अने यथार्थपणे लोकने जोनारा हता तेओ पूर्व पश्चिम दक्षिण तथा उत्तर
ए चार दिशाओमां रहेता थका सत्यने ज वळगी रखा हता. [२६२]

तेवा सत्पुरुषोनो अभिप्राय हुं तमोने जणावुंहुं के तत्वदर्शी पुरुषोने उपा-
धिओ नथी रहेती. [२६३]

आवंतोनाम्ना प्रसिद्धं.

लोकासारनामकं पंचम—मध्ययनम्

(प्रथम उद्देशः)

आवंती केआवंती लोयंसि विप्परामुसंति ^१ अद्वाए अणद्वाए वा ।
एतेसु चैव विप्परामुसंति ^२ । गुरु से कामां । तओ से मारस्स अंतो ।
जओ से मारस्स अंतो, तओ से दूरे ^३, णेव से अंतो ^४, णेव से दूरे ^५ ।
(२६४)

१ हिंसांकुर्वतीत्यर्थः २ समुत्पद्यंतइत्यर्थः ३ मोक्षोपायात् ४ विषयसुख
स्य ५ विषयसुखस्य.

^१अध्ययन पांचमु.

लोकसार.

पहेलो उद्देश.

[प्राणिनी हिंसा करनार, विषयो माटे आरंभमां प्रवर्त्तनार, तथा विषयोमां
आसक्त जे होय तेने मुनि न गणवो.]

जे कोइ आ जगतमां समयोजन अथवा निष्पजन जीवोनी हिंसा करेछे
तेओ पाछा तेज जीवोनी गतिओमां जइ ऊपजेछे. एवा अतत्त्वदर्शी जनोने विषय
सुखो छोडाववां भारे मुश्केल पडेछे, माटे तेओ मरणनी परंपरायी छूटी शकता
नथी अने एम होवायी तेओ मोलना मार्गथी या सुखथी दूर रहेला छे. तेथी तेओ
नथी विषयसुखना अंदर, अने नथी तेनायी वेगळा. [२६४]

१ आ अध्ययननुं चीजुं नाम आवती छे.

से पासति फुसिय^१ मिव कुसगगे पणुच्चं णिवतितं वातेरितं, एवं बालस्स जीवियं मंदस्स अविजाणओ । (२६५)

कूराणि कम्माणि बाले पकुव्वमाणे ततो दुक्खेण मूढे विपरियास—सुवेति, मोहेणं गब्भं मरणाइ^२ एति एत्थ मोहे^३ पुणो पुणो । (२६६)

संसयं परियाणतो संसारे परिच्चाते भवति । संसयं अपरिजाणओ संसारे अपरिण्णाते भवति । (२६७)

जे छेए, सागारियं^४ ण से सेवए । (२६८)

कहु^५ एवं अविजाणओ^६ बितिया मंदस्स बालया । (२६९)

लच्चा^७ हुरत्था^८ पडिलेहाए आगमेत्ता^९ आणवेज्जा अणासेवण-

१ बिंदुमिव २ मरणादि ३ मोहकार्ये गर्भादिके. ४ मैथुनं ५ सेवित्वा ६ अपलपतः ७ लब्धान्कामान् ८ बहिश्चित्ते ९ ज्ञात्वा.

तत्त्वदर्शी जनो जुए छे के एवा अज्ञानीओनुं आयुष्य दर्भनी अणी पर रहेला वायराथी कंपायमान अने जलदीथी पही जनारा जळविंदुनी माफक अस्थिर छे. [२६५]

तेम छतां तेवा अज्ञानीओ क्रूर पाप करता थका ते पापना फळ उदय आवतां मूढ वनी विपर्यास पाये छे अने पाछा मोहथी गर्भ अने मरणादि दुःखमां रहेता थका वारंवार ते दुःखो पास्या करे छे. [२६६]

जे संशयने जाणे छे, ते संसारने पण जाणे छे जे संशयने नथी जाणतो तेणे संसार पण जाण्यो नथी. [२६७]

माटे जे चतुर होय तेमणे खि संग न करवो. [२६८]

जे स्त्री संग करीने पाछो गुरूना पासे इनकार जाय छे ते एकना बदले वे पाप करे छे. [२६९]

माटे मळेलां विषय सुखोने पण विचार पूर्वक दुःखना हेतु जणीने तेमना

१ कारण के संज्ञय ए प्रवृत्तिनो अंग गणाय छे, जे माटे अर्थ संज्ञय छतां पण प्रवृत्ति देखायछे. अर्थ शब्द मोक्षे नहि पण तेना चपाय लेवा.

याएत्ति बेमि (२७०)

पासह एगे रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे^१ । एत्थ फासे पुणो पु-
णो आवंती केआवंती लोयंसि आरंभजीवी । (२७१)

एएसु^२ चेव आरंभजीवी^३ । एत्थवि^४ बाले परिपच्चमाणे रमति
पावेहिं कम्मेहिं असरणं सरणंति मण्णामाणे । (२७२)

इह मेगेसिं एगचरिया भवति। से बहुकोहे, बहुमाणे, बहुमाए,
बहुलोभे, बहुरए, बहुनडे, बहुसडे, बहुसंकपे, आसवसकी^५ पळिओ-
च्छत्ते^६ उट्टियवायं पवयमाणे, “ मा मे केइ अदक्खु ” अन्नाणपमाय-
दोसेणं सततं कूढे धम्मं णाभिजाणति । (२७३)

१ परिणीयमानान् विषयाभिमुखं. २ गृहस्थेषु ३ परतीर्थिकः
प्रार्थथादिर्वा दुःखभाक्स्यादितिशेषः ४ संयमान्युपगमेपि ५ आ-
श्रवसत्की—आश्रववान् ६ पळितावच्छन्नः

सेववाथी दूर रहेवुं. [२७०]

जुओ केटलाएक विषयोमां आसक्त रही नरकादिक गतिओमां तणाया
जाय छे. अने एवो जे कोइ आ दुनिआमा आरंभयी जीवनाराछे ते वधा वारंवार
मोहजाळमां फसी पडे छे. [२७१]

वळी केटलाएक पासथ्यादिक पण ए गृहस्थोमां वर्चता थका सावद्यप्रवृत्तियी
प्रवर्त्तीने दुःखी थाय छे. अने आ संयम लीधा छतां पण तेवा वाळ जीवो विपय-
तृष्णाथी तणाइने अशरणने शरण मानता थका पापमां रमे छे. [२७२]

वळी आ मनुष्य लोकमां केटलाएक एकला थइ फरे छे, तेओ बहु क्रोधी,
बहु मानी, बहु मायावी, बहु लोभी, बहु पापी, बहु ढोंगी, बहु धूर्त्त, बहु दुष्टा-
ध्यवसायी, हिसक, अने कुकमीं होवा छतां “हुं खूव धर्म माटे छज्जमाल बन्यो
छुं” एवो बकवाद करता थका अने “रखे कोइ मने जाणी जाय?” एवी वीक-
थी एकला थइने फरता थका अज्ञान अने प्रमादथी निरंतर मूढ बनी धर्मने कंइ
पण समजता नथी. [२७३]

१ आचारहिं यत्तिओ—नेपयारी.

अद्या पर्या माणव? कस्मकोविया^१, जे अणुवरया, अविज्जाए पलिमोक्खमाहु आवदमेव मणुपरियदंतित्ति बेमि । (२७४)

[द्वितीय उद्देशः]-

आवंती केआवंती लोयंसी अणारंभजीवी, एतेसुचेव मणारंभजीवी । (२७५)

एत्थोवरए तं झोसमाणे “ अयं संघीति ” अदक्खू, जे इमस्स विग्गहस्स अयं खणोत्ति मन्नेसी । (२७६)

एस मग्गे आरिएहिं पवेदिते । उद्धितो णो पमायए, जाणित्तु दुक्खं पत्तेय सायं । (२७७)

१ कर्मणि अष्टप्रकारे कुशलाः

हे मनुष्य, जेओ पापालुष्टानथी नहि निवर्ततां अविद्यायी^१ ज मोक्ष धनो एम कहेछे तेवा दुःखी जीवो कर्ममां ज कुशळ छे, नहि के धर्ममां, अने तेओ संसारना चक्रमां ज फर्या करवाना. [२७४]

बीजो उद्देश.

[जे हिंसादिक पापेयी निवर्त्यो होय तेज सुनि गणाय.]

आ जगतमां जे कोइ निरारंभी^२ थइ वत्ते छे तेओ गृहस्थो पासेयी ज निर्दूषण^३ आहारादिक लइ अणारंभिपणे रहेछे. (२७५)

घाटे हे सुनि तारे सावध प्रवृत्ति^४ दूर रही कर्मोने खपावतां थकां “ हमणा आ अवसर छे. ” एम विचारी पछिन्न संयम पाळतां रहेवं; जे घाटे तें जाण्युं छे के आ शरीरनो आ अवसर छे. (२७६)

तीर्थकरदेवे ए मार्ग बताव्यो छे (३.जे आ मार्ग एम बताव्योछे) के यथा जंतुओने जूहुं जूहुं सुख-दुःख थायछे एम जाणी दीडा लइ ममाइ न करवो. (२७७)

पुढोच्छंदा इह माणवा । पुढो दुक्खं पवेदितं । से अविहिंसमाणे
अणवयमाणे^१ पुढो फासे विप्पणोदल्लए । एस समियापरियाए वियाहिते ।
(२७८)

जे असत्ता पावेहिं कम्महिं; उदाहु^२ ते आयंका फुसंति, इति
उदाहु^३ धीरे;—ते फासे पुढो—हियासए । (२७९)

पुच्चंपेतं पच्छापेतं भिउरधम्मं विद्धंसणधम्मं अधुवं अणितियं
असासयं चयावचइयं विप्परिणामधम्मं । पासह एयं रूवसंधिं । (२८०)

समुप्पेहेमाणस्स एकायतणरतस्स इह विप्पमुक्कस्स णत्थि मग्गे^४
विरयस्सात्ति बेमि । [२८१]

आवंती केआवंती लोगंसि परिग्गाहावंती;—से अप्पं वा, बहुयं

१ अनपवदन् २ कदाचित् ३ उदाहृतवान् ४ नरकादिरूपः

जम माणसोना आशय पण जूदा जूदाज छे तेम तेमनुं दुःख पण जूदुं
जूदुंज छे. माटे मुनिए कशी हिंसा नहि करतां तथा कंड पण मृया भापण नहि
करतां परीपहोने सहज करवां. एवी रीते वर्त्तनारो मुनिज रुडा चारित्रवाळो वर्ण-
व्यो छे. [२७८]

जेओ पापयां नथी प्रवर्त्तता तेमने कोइ वखते मोहोटा रोग आवी नडे तो
धीर तीर्थकरदेवे एम कहुंछे के ते रोगो सहन करवा. [२७९]

कारण के आ शरीर मोडुं के वेरुं पण नूटवानुं या फूटवानुं अधुव
अनित्य,^२ अशाश्वत,^३ वधतुं घटतुं अने नाश पामनार छे ज. हे मुनिओ, आ
शरीरनुं ऊपर प्रमाणे स्वरूप तथा अवसर विचारो. [२८०]

जे पुरूप ऊपर प्रमाणे शरीरनुं स्वरूप तथा अवसर विचारी सर्वथी सरस
ज्ञानादिक आयतनोमां^४ रमतो रही आ शरीरनी दरकार नथी धरतो तेवा त्यागी
पुरूपने भटकवानो रस्तो नथी. [२८१]

आ दुनिआमां जे कोइ पासे परिग्रह होय जेवो के थोडो अथवा घणा.

१ नियमविनानुं. २ फेरफार पामनुं, ३ ते ते रूपे पण हमेगां नहि टकनारं.
४ फापदा भरेला स्थळोमां

वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा, एते सु चेव परि-
ग्गहावंती । (२८२)

एव—मेवेगेसिं महब्भयं भवति । लोगावित्तं च णं उवेहाए ।
(२८३)

एए संगे अविजाणतो से सुपडिबुद्धं सूवणीयांति णच्चा, पुरिसा !
परमचक्खू विप्परिक्कमे । एतेसु चेव बंभचेरं—त्ति बेमि । (२८४)

से सुयं च मे, अज्झत्थं च मे;—बंधपमोक्खो च तुज्ज अज्झत्थेव
। [२८५]

एत्थ विरते अणगारे दीहरायं तित्तिक्खए । [२८६]

नानो अथवा माहोटा, साचित्त अथवा आचित्त, ते वधा कदाच व्रती कहेवाता होय
तोए गृहस्थोना जेवाज परिग्रहिओ गणवा. [२८२]

ए परिग्रहिपणुं ज केटलाएकोने नरकादिक महाभय आपनारुं थायछे, तथा
लोकोनो आचार^१ पण तेवो ज भयजनक थायछे, एम विचारी तेनाथी दूर रहेवुं.
[२८३]

ए परिग्रहनो संग त्याग करनारो मुनि ते रुडी रीते प्रतिबोध पायेलो छे
तथा तेने रुडी रीते ज्ञानादि गुण प्राप्त थया छे एम जाणी हे पुरुष, तारे उत्तम
दृष्टि धरीने वर्त्तवुं, जे माटे निःपरिग्रहि अने उत्तम दृष्टिवंत पुरुषोमां ज ब्रह्मचर्य
होयछे. [२८४]

मे सांभव्युं पण छे, अने अनुभव्युं पण छे के कर्मोथी छूटवुं ए तारा आ-
त्माथी ज थवावुं छे. [अर्थात् जो तुं ब्रह्मचर्यमां रहीश तोज कर्मोथी छूटीश.]
[२८५]

माटे परिग्रहथी अलगा थएला मुनिए जीवनपर्यंत जे संकटो आवी पडे ते
सहन करवां. [२८६]

१. आहार, भय, मैथुन, तथा परिग्रहरूप उक्तद संज्ञाओ.

पमत्ते बहिया^१ पास, अप्पमत्तो परिच्चए । (२८७)
 एयं मोणं सम्मं अणुवासिज्जसित्ति बेमि । (२८८)

[तृतीय उद्देशः]

आवंती केआवंती लोयंसि अपरिग्गहावंती एएसु^२ चेव अप्परि-
 ग्गहावंती, सोच्चा वई मेहावी, पांडियाण गिसामिया (२८९)
 समियाए^३ धम्मे अरिएहिं पवेदिते—“ जहेत्थ मए संघी^४ झो-

१ बहिव्यवस्थितान् । त्यक्तेषु सत्सु इति शेषः ३ समतया ४
 मोक्षमार्गः कर्मसंधिर्वा.

प्रमादीओने धर्मधी पराङ्मुख थएला जोइ मुनिए अप्पमत्त थइ फरवुं. [२८७]
 एम रुडं रीते तीर्थकरभापित संयमक्रियानि मुनिए परिपाळन कर्या करवी.
 [२८८]

त्रीजो उद्देश.

[जे मुनि होय ते कशो परिग्रह न राखे, तथा कामभोगनी
 इच्छा पण न करे.]

जे कोइ जगत्तमां निःपरिग्रहि थायछे ते वयाए तीर्थकरदेवनी वाणी सांभळी
 धिवेकवंत थइ पंडितोना वजन अवधारी सर्व प्रकारे परिग्रह छांडतांज निःपरिग्रही
 थायछे. [२९९]

तीर्थकरदेवे समतार्थी^१ धर्म वर्णव्यो छे, ते बोल्या छे के “हे लोको जे रीते
 में अर्धे कर्म खपाव्यां छे ते रीते धीजा मार्गोमां कर्म खपाववा मुश्केल छे, याटे

१ निष्पक्षपातपणे [Without partiality]

सिए^१ एव—मण्णत्थ संधी दुज्झोसए भवति । तम्हा बेमि णो णिहणे-
ज्ज वीरियं । ” (२९०)

जे पुव्वुद्दुई णो पच्छाणिवाती । जे पुव्वुद्दुई पच्छाणिवाती ।
जे णो पुव्वुद्दुई णो पच्छाणिवाई । से^२ वि तारित्तए सिया । जे^३ परि-
ण्णाय लोग मण्णेसिता । एयं णियाय^४ मुण्णिणा पवेदितं । (२९१)

इह आणाकंखी पंडिते अणिहे पुच्चावररायं जयमाणे सया सीलं
सपेहाए^५ । (२९२)

सुणित्ता भवे^६ अकामे अझंझे^७ । (२९३)

इमेणं^८ चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण वज्झओ । जुद्धारिहं ख-

१ सेवितः क्षापितोवा २ शाक्यादिरपि। ३. पासस्थादयः ४ ज्ञात्वा.
५ संप्रेक्ष्य तदेवानुपालयेत् । ६ भवेत् ७ मायालोभच्छारहितः ८
स्वशरीरेण

हुं कहुं छुं के मारो दाखलो लइ वीजा मुमुक्षाओए पण पोतानुं पराक्रम छुपावहुं
नहि.”

केटलाएक^१ पहेलां पण उज्ज्जाल थइ दीक्षा ले छे अने पाळां पण पतित
नथी थता. केटलाएक^२ पहेला उज्ज्जाल थइ दीक्षा ले छे पण पाळा पतित थायछे.
केटलाक^३नथी पहेला उज्ज्जाल थता अने नथी तेथी पाळा पति । थता. (शाक्तादिक
तेथी सावद्य^४ क्रियायां प्रवर्त्तनारा पासस्थाओ^५) नथी उट्टेला अने नथी पहेला
आ वात्त मुनिए (वीर प्रभुए)ज रुडी रीते जाणीने जणावी छे. [२९१]

तीर्थकर देवनी आज्ञा पाळवा इच्छनारा चतुर मुनिए निरीहपणे रात्रिना
पहेला तथा छेछा पहेरे यत्रवंत थइ हमेशां शीलने^६ मोक्षांग^७ विचारीने तेने
पाळवुं. [२९२]

शीळने नहि पाळनाराओनी थती दुर्दशाओ सांभळी कामभोगनी इच्छा
तथा मायायी रहित थवुं. [२९६]

हे मुनि, आ शरीर साथेज तुं युद्ध कर, वीजा वाहेरना युद्धनी तने शी

१ गणधरादिक. २ नन्दिषेण वगेरे. ३ गृहस्थो. ४ आरंभ भरेला वर्त्तणुकर्मां
५ आचारहीन अतिओ. ६ संयमने. ७ मोक्षनुं कारण.

लु दुल्लहं । (२९४)

जहेत्थ कुसलेहिं परिन्नाविवेगे भासिते^१ । चुते हु बाले गब्भाइ-
सु रज्जाति । (२९५)

अस्सिं^२ चेयं पव्वुच्चति । रुवंसि^३ वा छणंसि^४ वा । (२९६)

से हु एगे संविद्धपहे मुणी अण्णहा लोग—मुवेहमाणे । (२९७)

इतिकम्मं परिन्नाय सव्वसो, से ण हिंसाति संजमति णो पगव्भ-
ति । उवेहमाणो पत्तेयं सायं, । (२९८)

१ स तथैव श्रद्धेय इतिशेषः २ जिनमत ३ रूपादौ गृह्यः
४ हिंसादौ प्रवर्तते इत्यर्थः

जरुर छे. शुद्धने योग्य आवुं शरीर फरी मळवुं घणुं मुक्केल छे. [२९४]

तीर्थंकर देवे विचित्र अध्यवसायोनी जे रीते समज आपी छे ते तेज रीते
स्वीकारवी, माटे धर्म पामीने तेथी भ्रष्ट थएलो वाळ जीव गर्भादिक दुःख पाये छे.
[२९५]

आ जिनशासनमांज एवुं कहेवाय छे के जे विषयोमां गृह्य^१ थाय छे ते
हिंसामां प्रवर्ते छे. [२९६]

अने मुनि तो खरेखरो तेज जाणवो के जे लोकोने मोक्ष मार्गमां विमुख
प्रवृत्ति करतो देखी तेमने दुःखी विचारतो थको मोक्ष मार्गमां रुडी रीते चाल्यो
जाय. [२९७]

माटे कर्म स्वरूप जाणीने शुद्ध मुनिओ “दरेक जीवतुं मुख अलग अलग
छे” एम विचारी कोइ जीवनी हिंसा नथी करता किंतु संयममां वर्त्तता रही धीटा-
इथी दूर रहे छे. [२९८]

वन्नादेसी^१ णारभे कंचणं सव्वलोए, एग—प्पमुहे विदिसप्पतिन्न^२
निव्विन्नचारी अरए पयासु । (२९९)

से वसुमं सव्वसमन्नागयपन्नाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावं
कम्मं तं णो अन्नेसी । (३००)

जं सम्मं—ति पासह, तं मोणं—ति पासह । जं मोणं—ति पासह
तं सम्मं—ति पासह । (३०१)

ण इमं सक्कं सिढिलेहिं अदिज्जमाणेहिं^३ गुणासातेहिं वंकसमा-
यारेहिं पमत्तेहिं गारमावसंतेहिं^४ । (३०२)

मुणी मोणं समायाय धुणे कम्म—सरीरगं । पंतं लूहं सेवति वी-
रा संमत्तदंसिणो । एस ओहंतरे मुणी तिण्णे मुत्ते विरए वियाहित्त—ति
वेमि । (३०३)

१ वर्णः साधुकारः सुथशङ्कितयावत् तदाकांक्षी । २ विदिक्प्रतीर्णः
३ आर्द्रियमाणैः ४ अगारमावसद्भिः ।

सुयशना इच्छनार मुनिए सर्व लोकां कंड पण पाप प्रवृत्ति न करवी,
किंतु फक्त मोक्ष तरफ दृष्टि राखी आडुं अवलुं नहि जेतां स्त्रीओमां अरक्त रही
आरंभथी उदासीन रहेवुं. [२९९]

एवा संयमी मुनिओए सर्व रीते पवित्र बोध पामीने, नाहि करवा योग्य
पाप कर्म तरफ कदापि दृष्टि नहि आपवी. [३००]

जे सम्यक्त्व^१ छे ते मुनिपणुं छे ने जे मुनिपणुं छे ते सम्यक्त्व छे.
[३०१]

ए सम्यक्त्व या मुनिपणुं हिम्मत हीन, काचा हैयाना, विषयासक्त, मायावा,
प्रमादी, अने घरमां रहेनारा जीवैथी धरी शकायज नहि. [३०२]

किंतु मुनिओज पवुं मुनिपणुं धरीने शरीरने कसे छे. तेवा सम्यक्त्ववंत
वीर पुरुषो लूखुं अने हलकुं भोजन करे छे. अने एवा पराक्रमी अने सावधानु-
प्यानथी निवर्त्तेला मुनिओज संसारना तरनार होवथी तरीने पार पांमळा तथा
निःसंग होवथी मुक्त वर्णव्या छे. [३०३]

१ निश्चय सम्पक्त्व.

[चतुर्थ उद्देशः]

गामाणुगामं दूड्ज्जमाणस्स दुज्जातं दुप्परकंतं भवति अवियत्त-
भिकखुणो । (३०४)

वयसावि एगे चोइआ कुप्पंति माणवा । उन्नयमाणे^१ य णरे
मा मोहेण मुज्झति । संबाहा^३ बहवो भुज्जो दुरतिक्कमा अजाणतो ।
सतो । एयं ते मा होउ । एयं कुसलस्स^४ दंसणं । (३०५)

त्तद्धिद्वीए^५ तम्मुत्तीए तप्पुरक्कारे तस्सनी तनीवेसणे जयंविहारी
त्तणिवाती पंथणिज्झाती पलिबिहिर^६ पासिय पाणे गच्छेज्जा । से

१ अव्यक्तस्य २ उन्नत मानः ३ पीडाः ४ वर्द्धमानविभोः
गुरोर्दृष्टया ६ परिबाह्यः अवग्रहा- द्बहिर्वर्ती

चैथो उद्देश.

[अजाण, अगीतार्थ, अने सूत्रार्थमां निश्चय विनाना मुनिने
एकला फरदामां घणा दोष थाय छे)

सामर्थ्यहीन^१ मुनि एकलो थइने गामोगाम फरे तो तेतुं ते फरवुं तथा जवुं
सुंदर गणाय छे. केटलाएक मनुष्यो मात्र वचनोथी सारी शीखामण आपतां
खुश थाय छे. एवा अभिमानी पुरुषो^२ महामोहथी विवेकविकल वनी गच्छथी
दूदा पडे छे. तेवा अजाण अने अतत्वदर्शी पुरुषोने अनेक आवी पढती पीडाओ
लंघनीय थाय छे. हे मुनिओ, एवं तमारा माटे नहि वनो एवं कुशल पुरुष
वीरप्रभुनुं] दर्शन छे. [३०५]

माटे मुनिए दृशेण गुरुनी नजर आगळ रहींने गुरुए वतावेली निःसंगताथी
गुरुना बहुमान पूर्वक, अने गुरु परना श्रद्धार्थी, गुरुसमीप निवास करतां थकां
यतनापूर्वक गुरुना अभिप्रायने अनुसराने मार्गना अवलोकन ताथे जीवजंतुने जो-

१ वय तथा ज्ञाननी योग्यताथी रहित. २ अज्ञानथी.

अभिक्कममाणे पडिक्कमाणे संकुंचेमाणे पसारैमाणे विणियट्टमाणे संपल्लि-
मज्जमाणे । (३०६)

एगया गुणसमियस्स रीयतो^१ कायसं-मणुचिच्चा एगतिया पाणा
उद्वयंति; इहलोग वेयणवेज्जावडियं । जं आउट्टीकयं कम्मं तं परिच्चाय
^२विवेग-मेति । एवं से अप्पमाएणं विवेगं किट्ठंति^३ वेदवी । (३०७)

से पभूयदंसी पभूयपरिच्चाणे उवसंतंते समिए सहिते सयाजए दट्ठं
विप्पडिवेदेति^४ अप्पाणं;—“ किमेस^५ जणो करिस्सति । एस से परमारा-
मे जाओ लोगंसि इत्थिओ. ” मुणिणा हु एतं पवेदेतं । (३०८)

उव्वाहिज्जमाणे^६ गामधम्मोहिं. अवि णिव्वलाएस,^७ अवि ओ-

१ रीयमाणस्य सम्यगनुष्ठानवतः २ प्रायश्चित्तं. ३ कीर्त्तयति. ४
विप्रतिवेदयति. ५ स्त्रीजनः ६ उच्चाध्यमानः ७ निबलार्शकः निर्वलभोजी
“ स्यादि ” विशेष

तां थकां भूमंडळपर भयता रहेवुं. एटलुंज नहि पण जतां, आवतां, वेशतां, ऊउतां,
वळतां, अने प्रमार्जन करतां सर्वदा गुरुनी अनुज्ञा लइ वर्त्तवुं. [३०६]

कोइ वंसते एवा सद्गुणी मुनिए रुढी रीते वर्त्तता छतां तेना शरीरसंस्पर्श-
थी कोइ जंतु मरण पापे छे तो तेनो तेने आ भवयां क्षय थइ शके एटलो कर्मबंध
पडे छे. अने जो आकुट्टियो जाणी जोइने कायसंघट्टनादिकबडे कइ कर्म बंधाय छे
तो तेना माटे योग्य प्रायश्चित्त आचर्याथी कर्म क्षय थायछे. ए प्रायश्चित्त अप-
मादिपणे आचर्याथी कर्मक्षय थाय एम आगमना जाण पुरुषो बोलेछे. [३०७]

माटे दीर्घदर्शी, बहुज्ञानी, क्षमावंत, प्रदित्र प्रवृत्तिवंत, सद्गुणी, अने सदा
यत्नवंत मुनिए स्त्रीओने देखी विचारवुं के ए स्त्रीओ मारुं शुं कल्याण करवानी छे?
तया आ दुनिआमां स्त्रीओ ज अतिशय चित्तने मुंजावनारी छे. ए वथुं मुनिए
[वीरप्रभुए] जणावुं छे. [३०८]

विषयोथी जो मुनि पीडाय तो तेणे निर्वळ आहार करवो, पेटने अपूर्ण

मेदरियं कुज्जा, अवि उड्डं ठाणं ठाएज्जा, अवि गामाणुगायं दूइज्जा,
अवि आहारंवेछिंदिज्जा, अवि चए^१ इत्थीसु मणं । (३०९)

पुव्वं दंडा पच्छा फासा, पुव्वं फासा पच्छा दंडा । इच्चेते^२
कलहासंगकरा भवंति । पडिलेहाए^३ आगमित्ता^४ आणवेज्जा अणासेवणाए
—त्ति बेमि । (३१०)

से णो काहिए,^५ णो पासणिए, णो संपसारए^६ णो ममाए, णो
कयकिरिए, वइगुते, अज्झप्पसंवुडे, परिवज्जए सदा पावं । एयं मोणं सम-
णुवासेज्जासि—त्ति बेमि । (३११)

१ त्यजेत. २ स्त्रीसंबंधाः ३ प्रत्युपेक्षया. ४ ज्ञात्वा. ५ कथाका
रकइत्यर्थः ६ पर्यालोचनकारीत्यर्थः

राखवातुं करवुं, एक जगे ऊभा रही कायोत्सर्ग करवा, ग्रामांतर जाता रहेवुं,^१
छेवट तदन आहार पण छोडी आपवो,^२ पण स्त्रीओमां जाणी जोइने नहि फसावुं.
[३०९]

स्त्रीओमां फसातां, पहेलां संकटो भोगववां पडे छे अने पछी कामभोग थाय
छे. अथवा पहेलां कामभोग थाय छे तो पछी संकट भोगववां पडे छे. ए स्त्री
कलहनी उत्पन्न करनारी छे. माटे ए वधुं जाणी विचार करी तेमनाथी दुर रहेवुं.
[३१०]

स्त्रीसंग परित्यागी मुनीए स्त्रीओनी शृंगार कथा न करवी. स्त्रीओना अंगोपांग^३
न जोवां, स्त्रीओ साथे वातचित न करवी, स्त्रीओपर ममता न करवी, स्त्रीओनी
आगतास्वागता न करवी, किंवहुना, स्त्रीओ साथे वचनमात्रथी पण परिभाषण नहि
करतां पोताना मनने कवजे करीने हमेगां पापाचारथी दूर थड वचवुं. [३११]

१ कारण शिवाय मुनिने विहार निषिद्ध * छे. पण मोह उपशमावना ते
पण करवो. २ तयों गमे ते रीते आत्मचात पण करवो पण स्त्रीओमां न फसावुं.
३ अवयवो * आ वात चतुर्मासास्थित मुनिने माटे संभवेछे. [भा. क.]

[पंचम उद्देश.]

से बेमि—तं जहा, अवि हरए^१ परिपुन्ने चिद्दुति समंसि भोमे
उवसंतरए सारकरवमाणे । से^२ चिद्दुति सोयमज्झगए, से पास, सव्वतो
गुत्ते । पासं, लोएं सहेसिणो, जे य पन्नाणमंतो पबुद्धा आरंभोवथार, स-
म्म—मेयंति पासह, कालरस कंखाए परिव्वयति त्ति बेमि । (३१२)

वितिगिंच्छसमावण्णेणं अप्पाणेणं णो लभति समाधिं । (३१३)

सिया^३ वेगे अणुगच्छंति । असिया वेगे अणुगच्छंति । अणु-
गच्छमाणेहिं अणुगच्छमाणो कहां ण णिव्विज्जेज्जा । तमेव सच्चं णी-
संकं, जं जिणेहिं पवेइयं । (३१४)

१ हृदः २ आचार्यः ३ सिता बद्ध गृहस्था इत्यर्थः

पांचमो उद्देश.

(मुनिए सदाचारथी वर्त्तवुं तथा तेना माटे जळाशयनो दृष्टांत.)

जेम कोइ एक सपाट प्रदेशमां एक निर्मळ जळथी भरपूर थएलो अने मु-
रक्षित जळाशय हमेशां स्वच्छ वन्यो रहे छे तेम केटलाएक पवित्र आचार्यो ज्ञान
जळथी भरपूर वनी निर्दोष क्षेत्रमां रहीने जीवोनुं संरक्षण करता थका ज्ञानजळना
प्रवाहने चलावनार थइने गुरक्षित वन्या रहेछे. एटलुंज नहि पण केटलाएक मुनि-
ओ पण विवेकदंत वनी प्रतिबोध पामीने आरंभथी नित्त थइ समाधि मरणनी
इच्छा राखता थका ते जळाशयना जेवाज वर्त्ते छे. [३१२]

“ फळ थशे के नाहि धाय ” एवो संशय राख्याथी जीवने समाधि^१ नथी
मळती. [६१३]

वळी आचार्यना वाक्योने वखते गृहस्थो पण समजी शके छे, अथवा मु-
निओ समजी शके छे, एवे वखते जे मुनि पोताना कर्मोदयथी ते समजी शक्तो
नहि होय तेने मनमां खेद उत्तन्न थया विना रहेतो नथी. (आवा प्रसंगे गुरुए तेवा
शिष्यने कहेवुं के हे शिष्य,] “ जे जिनेओ भाष्युं छे तेज निःशकपणे सत्य छे, ”
(एवी तारे श्रद्धा राखवी.) [३१४]

सङ्घिस्स णं समणुन्नस्स संपव्वयमाणस्स समियं—ति मण्णमाण-
स्स एगया समिया होति, समियं ति मण्णमाणस्स एगया असमिया होति
असमियं—ति मण्णमाणस्स एगया समिया होति, असमियं—ति मण्णमा-
स्स एगया असमिया होति । (३१५)

समियं—ति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, समिया हो-
ति उवेहाए । (३१६)

असमियंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, असमिया
होति उवेहाए । (३१७)

उवेहमाणो अणुवेहमाणं ब्रूया—“ उवेहाहि समियाए; इच्चें तत्थ
संघी झोसितो भवति ” । (३१८)

से उठियस्स द्वियस्स गतिं^१ समणुपासह । एत्थवि बालभावे

१ प्रतिष्ठां गतिंवा.

श्रद्धालु अने संविग्रभाविता^१ जीवो के जेओ दीक्षा लेती वखते “जिन
भाषितज सत्य छे.” एवं माने छे तेओमांना केटलाएक त्यार वाद तेवीज श्रद्धा
टकायी राखे छे अने केटलाएक संगयी बनी जाय छे. वळी जेओने श्रद्धातमां
पाकी श्रद्धा नथो होती तेओमांना केटलाएक उत्तर काळमां शुद्ध श्रद्धावंत यइ
जाय छे अने केटलाएक तेवाने तेवाज रहे छे. (ए रीते परिणामनी विचित्रता छे)
[३१५]

जे पुरुषनी श्रद्धा पवित्र छे तेने सम्यक् या असम्यक् वस्तु वन्ने सम्यक्
विचारणाथी सम्यक् रूपे परिणमे छे. [३१६]

अने जे पुरुषनी श्रद्धा अपवित्र छे, तेने सम्यक् या असम्यक् वस्तु अस्-
म्यक् विचारणाथी असम्यक् रूपे परिणमे छे. [३१७]

माटे सम्यक्विचार करनारा पुरुषे विचार नहि करनारा पुरुषने सम्यक्
विचार करवा प्रेरित करवो के “हे पुरुष, तुं सम्यक् विचार कर, जे माटे तेम
कर्याथी ज संयममां कर्मसय करायेछे. ”

हे मुनिओ, श्रद्धावंत अने गुरुकुलमां बसनार मुनिनी पदवी अने गति

१ संविग्र पटले मुनि नेमणे भावित पटले समजावेला.

अप्पाणं णो उवदंसेज्जा । (३१९)

तुमंसि नाम तं चेव, जं हंतव्वं ति मन्नासि । तुमंसि नाम तं चेव, जं अज्जावेयव्वति मन्नासि । तुमंसि नाम तं चेव, जं परितावेयव्वंति मन्नासि । तुमंसि नाम तं चेव, जं परिघेतव्वंति मन्नासि । एवं तुमंसि नाम तंचेव, जं उद्वेयव्वंति मन्नासि । अंजू^१ चेयपडिबुद्धुज्जीवी^२ तम्हा । ण हंता, ण विघायए; अणुसंवेयण—मप्पाणेणं^३, जं हंतव्वं णाभिपत्थए। (३२०)

अे आया से विन्नाया । जे विन्नाया से आया । जेण विजाण-
ति से आया । तं पडुच्च परिसंखायए एस आयांवादी सभियाए परियाए

१ ऋजूः २ एतत्प्रतिबोद्धुज्जीवी । ३ ज्ञात्वा इतिशेषः

जुओ अने पासत्याओनी पणं पदवी अने गति जुओ. माटे बाळजनाचरित असर्य-
ममां आपणा आत्माने नहि स्थापवुं. [३१९]

हे पुरुष, जेने तुं हणवानो इरादो करे छे त्यां एम विचार कर के ते तुंज पोते छे, जेना पर हुडुधत चलाववा तुं धारे छे त्यां विचार कर के ते तुंज पोते छे, जेमने दुःखी करवा तुं धारे छे त्यां विचार कर के ते तुंज पोते छे, जेने पक-
डवा चाहे छे त्यां विचार कर के ते तुंज पोते छे, अने जेमने मारी नाखवा धारे छे त्यां पण विचार कर के ते तुंज पोते छे. सत्पुरुष ज खरेखर एवी समज धरता वचें छे. माटे सुनिए कोइ पण जंतुने हणवुं के मारवुं नहि. केमके तेने हणवा के मारवाथी आपणे पाछुं तेवुं दुःख भोगववुं पडे छे. एम जाणीने कोइना पर हणवा-
नो इरादो नहि धरवो. भावार्थ—परने दुःख उपजावतां पोतानो विचार करवो ए टले के आपणने कोइ दुःख उपजावे तो केवुं लागे ? एम दरेक बावत प्रथम पोता उपर अजमावदी जोइए. [३२०]

जे आत्मा छे तेज जाणनार छे. जेजाणनार छे तेज आत्मा छे. किंवा जे

येयाहिते^१—त्ति बेमि । (३२१)

[षष्ठ उद्देशः]

अणाणाए एगो सोवद्वुणे^२ । आणाए एगो निरूवद्वुणे । एतं ते
मा होउ । एयं कुसलस्त दंसणं । (३२२)

तद्धिद्वीए तम्मुत्तीए तत्परक्कारे तस्सण्णी ताण्णेवेसणे^३ अभिभूय
अदक्खू^४, अणभिभूते पभू निरालंबणयाए; जे महं अबहिमणे^५ ।
(३२३)

१ तस्येतिशेषः २ सोद्यमाः ३ तन्निवेशनः गुरुकुञ्जासीत्यर्थः
४ तत्त्वमितिशेषः ५ भगवदभिप्रायवर्तिमनो येषांते
ज्ञानबडे जाणी शक्याय छे ते ज्ञान ज आत्मा छे. ए ज्ञानने अनुसरने तद्रूप आत्मा
बोलाय छे. ^१ ए रीते जे ज्ञान अने आत्मानुं एकपणुं माने तेज स्वरो आत्मवादी
छे. ने तेवा पुरुषनुंज यथार्थपणे संयमानुष्ठान कहेलुं छे. [३२१]

छट्टो उद्देश.

(उन्मार्गिमां न जयुं तथा राग द्वेष तजवा.)

कटलाएक जिनाज्ञाथी विपरीत प्रवृत्तिमां उद्यमी वर्त्ते छे. केटलाएक जिना
ज्ञानुकूल प्रवृत्तिमां निरुद्यमी छे. ए वन्ने वात, हे मुनि, तारे न थाओ, एम कुश-
ळ (वीर प्रभु)नुं दर्शन छे. [३२२]

माटे जे पुरुष हमेशां गुरुनी दृष्टिमां वर्त्ततो होय, गुरु प्रदर्शित मुक्ति स्वी-
कारतो होय, गुरुनुं बहु मान करतो होय, गुरुपर श्रद्धा धरतो होय, गुरु कुळवास
करतो होय, ते पुरुष कर्मने जीतिने तत्त्व जोड़ शके छे. अने एवा महा पुरुष के
जेनुं मन लगाए पण सर्वज्ञोपदेशथी बाहेर जनुं नथी ते कोइनाथी पण पराभूत न
यतां निरालंबनता रूप भावनाने भाववा समर्थ थाय छे. [३२३]

? जेमेके जे इंद्र शब्दमां उपयुक्त होय ते इंद्र कही शक्याय छे.

पवादेणं^१ पवायं^२ जाणेज्जा; सहसम्मइयाए,^३ परवागरणेणं, अ-
न्नेसिं वा अंतिए सोच्चा । (३२४)

णिदेसं^४ णातिवत्तेज्जा मेहावी सुपाडिलेहिय सवत्तो सव्वयाए
सम्ममेव समभिजाणिया^५ । [३२५]

इहारामं^६ परिन्नाय, अल्लीणगुत्तो परिव्वए । णिट्ठियट्ठि^७ वीरे
आगमेणं सदा परिकमेज्जा^८ सि त्तिबेमि । [३२६]

उड्ढं सोता^९ अहं सोता, तिरियं सोता वियाहिया; एते साया
वियक्खया, जेहिं संगंति पासह । (३२७)

आवट्ट-मेयं तु पेहाए, एण्थ विरमेज्ज वेदवी । (३२८)

१ गुरुपरंपर्येण. २ सर्वज्ञोपदेशं ३ सहसात्प्रत्या, सहसंमत्यावा
४ आज्ञां ५ ज्ञात्वेत्यर्थः ६ संयममित्यर्थः ७ मोक्षार्थी, निष्ठितार्थोवा ८
पराक्रमेथाः ९ आश्रवद्वाराणि

गुरुपरंपरार्थी सर्वज्ञोपदेश जाणवो, अथवा जिनप्रवादार्थी परतीर्थिकना प्रवाद
तपाशवा. ते जिनप्रमाद् तथा परतीर्थिक प्रवाद त्रण प्रकारे जाणी शकाय छेः—
जाति स्मरणादिकर्था, तीर्थिकरना उषदेशर्था, अथवा वीजा आचार्योना पासेथी सां-
मळवाधी. [३२४]

माटे सर्व रीते सर्व प्रकारे सर्वज्ञवाद तथा परप्रवादने तपाशीने सर्वज्ञप्रवादने
यथार्थ जाणी बुद्धिमान् मुनिए सर्वज्ञोपदेशनुं उलंघन न करवुं. [३२५]

आ दुनिआमां संयमने खरेखरुं सुखस्थान जाणीने जितेंद्रिय थइ वर्त्तवुं.
किंवहुना, मोक्षार्थी वीर पुरुषे हमेशा जिनाज्ञार्थी ज प्रवर्त्तवुं. [३२६]

ऊंचे, नीचे, तथा तिरश्चीन दिशाओमां सर्व स्थळे पाप उपार्जन करनारा
प्रवाह रहेला छे. ज्यां ज्यां आसक्ति^१ थाय छे त्यां त्यां कर्म बंध थया करे छे.
[३२७]

कर्म रुपी चक्रने जोइने विषयभोग्यी आगमना जाण पुरुषे दूर
रहेवुं. (३२८)

१ ज्यां ज्यां जीव शैताना मनथी बंधाइ वेसे छे.

विणे-तुं सोयं णिक्खम एस महं^१ अकस्मा जाणति, पासति, पडिलेहाए^२
णावकंखति, इह आगतिं गतिं परिण्णाय अव्येति जातिमरणस्स वट्टमग्गं
णवक्खायरेते^३ । (३२९)

सव्वे सरा^४ णियदंति, तक्का^५ जत्थ ण विज्जति, मति तत्थ
ण गाहिता, ओए^६ अप्पतिट्ठणस्स^७ खेयन्ने । (३३०)

से ण दीहे, ण हस्से, ण वट्ठे, ण तंसे, ण चउरंसे, ण पारिभंडले,
किन्हे, ण णीले, ण लौहिए, ण हाल्लिद्धे, ण सुकिद्धे, ण सुरहिगंधे,
ण दुरहिगंधे, ण तिच्चे, ण कडुए, ण कसाते, ण अंबिले, ण महुरे, ण
कक्खडे, ण मउए, ण गरुए, ण लहुए, ण सीए, ण उण्हे, ण णिद्धे, ण

१ महान् २ प्रत्युप्रेक्ष्य ३ व्याख्यातोमोक्षस्तत्ररतः
४ स्वराः घ्वनयः ५ तर्काः ६ ओजः एकएव ७ मोक्षस्यज्ञाता
यद्वा अप्रतिष्ठानो नरक स्तत्र ज्ञाता सर्वलोकालोकज्ञइत्यर्थः

जे कोइ पुरुष पाप आववाना प्रवाहोने बंध करवा दीक्षा ले छे ते महा
पुरुष घाति कर्म क्षय करीने सर्वज्ञ तथा सर्वदर्शी थाय छे, (इंद्रादिकने पूजनीय
थाय छे) छातां परमार्थ विचारीने इंद्रादिकनी पूजानी पोते अभीलापा नथी धरता,
अने प्राणिओना संसारमां थवा परिभ्रमणने जाणता थका जन्म मरणना चक्रमांयी
छूटा यईने मुक्तिपुरीना मुखमां जइ विराजे छे. [३२९]

(मुक्तिना मुखमां रहेनारा जीवोनी जे अवस्था वचें छे ते जणाववा) कोइ
पण शब्द समर्थ थवा नथी, कोइ पण कल्पना दोडी शकती नथी, अने कोइनी
मति पण पोहोची शकती नथी. त्यां सकल कर्म रहित एकलो जीव संपूर्ण ज्ञानमय
विराजे छे. [३३०]

ते मुक्तिस्थित जीव नथी लांबो, नथी टंको, नथी गोळ, नथी त्रिकोण,
नथी चोरस, नथी मंडळाकार; नथी काळो, नथी लीलो, नथी रातो, नथी पीळो,
नथी घोळो; नथी गुंघि, नथी दुर्गंधि; नथी तीखो, नथी कडुओ, नथी कसाएन्त्रे,
नथी खाटो, नथी मीठो; नथी कर्कश, नथी मुकुमाळ, नथी भारी, नथी हलको
नथी थंडो, नथी गरम, नथी स्निग्ध, नथी रूद्र; नथी शरीरवालो, नथी जन्मथर-

लुक्त्वे, ण काऊ, १ ण रूहे, ण संगे, ण इत्थी, ण पुरिसे, ण अन्नहा, २
परिण्णे, सण्णे । (३६१)

उयमा ण विज्जती । अरूवी सत्ता । अपयस्स पयं णत्थि! (३३२)

से ण सद्दे, ण रूवे, ण गंधे, ण रसे, ण फासे इच्चेतावांतं चि
चेमि । (३३३)

१ न कायः—कायावान् नपुंसक इत्यर्थः

नार, नथी संगपामनार; नथी स्त्रीरूप, नथी पुरुषरूप, नथी नपुंसकरूप; किंतु
ज्ञाता अने परिज्ञाता थइ विराजे छे. [३३१]

मुक्त जीवोने जणाववा माटे उपमा कोइ छे ज नहि. केमके तेओनी अरूपी
हैयाती रहेली छे. तेमज तेओने कशो पण अवस्थाविशेष छे नहि, माटे तेमने
जणाववा माटे कोइ शब्दनी पण शक्ति नथी. [३३२]

केमके तेओ नथी शब्द रूप, नथी रूपरूप, नथी गंध रूप, नथी रस रूप
अने नथी स्पर्श रूप. (अने वाच्य वस्तुना विशेष तो मात्र ए शब्दादिक पांच
गुणज छे ते मुक्त जीवोमां छे नहि माटे तेओ अवाच्य छे.) [३३३]



धूतारख्यं षट् मध्ययनम्.



[प्रथम उद्देशः]

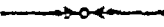
ओबुज्झमाणे १ इह माणवेसु अक्खाति से णरे । जस्सिमाओ जातिओ सव्वओ सुपडिलेहियाओ भवन्ति, अक्खाइ से णाण—मणोल्लिसं २ । (३३४)

से किट्ठति तेसिं समुट्ठियाणं णिक्खित्तदंडाणं ससाहियाणं पन्नाणमं-
ताणं इह मुत्तिसग्गं । एवं पेगे महावीरा विपरक्कमांति । पासह, एगे

१ अबबुच्यमानः २ अनीदृशं

अध्ययन छटुं

धूत १



पहेले उद्देश.

[स्वजन संबंधिओ छेडीने धर्ममां परायण थवुं.]

तीर्थंकरो पोते जा संसारजुं ययार्थ स्वरूप जाणता यका मनुष्योने तेमना कल्याण माटे धर्म वतावता रहे छे तथा जेओने आ एकेंद्रियादिक जीव जातिओ २ सर्व रीते यथार्थपणे माणुम होय एवा केवळी ३ अने श्रुत केवळीओ ४ पण सर्वोत्तम बोध आपे छे. [३३४]

तेओ धर्माचरण माटे उत्साही थएला गाणि हिंसार्थी निवर्त्तला—सावधान—
अने समजयान मुनिओने मुक्तिमार्ग वतावे छे. एवे वन्वते केटलाएक महापराक्रमी

१ धूत—कर्मनि धोवुं. २ जीवोना वर्गो. ३ केवळज्ञानी ४ चौदपूर्विको.

वितीयमाणे अणत्तपन्ने ? । (३३५)

से वेधि—से जहावि कुम्मे, हरए विणिविट्ठुचिसे पच्छन्नपलासे^२
उम्मगं^३ से ण लभति । (३३६)

भंजगा इव^४ सन्नियेसं णो चयंति । एवं एगे अणेगरूवेहिं कुलेहिं
जाया रूवेहिं सत्ता कलुणं थणंति^५ । णिदाणतो ते ण लभंति मोक्खं ।

[३३७]

अह पास तेहिं कुलेहिं आयत्ताए^६ जाया । (३३८)

१ अनात्मप्रज्ञा; २ पलाशप्रच्छन्नः ३ उन्मज्जनं उर्ध्वमार्गवा
४ वृक्षा इव ५ स्तनंति लपंतीत्यर्थः ६ आत्मत्वाय आत्मीयकर्मानुभवाय.

४

पुरुषो संयमयां सारी रीते पराक्रम वतावे छे, अने केटलाएक अणसमजुओ संयम-
मां लथडता पण रहे छे. [३३५]

जेम कोइएक जळाशयमां कोइएक काचवो तदासक्त थइने रहेता होय अने
ते जळाशयनुं जळ सेवाल तथा कमलिनीओना पत्रोथी छवायलुं हे. वथी पेला का-
चवाने पाणीनी ऊपर आववानुं बांडु मळी शकवुं घणुं मुश्केल छे, तेम आ संसार
रुपी जळाशयमां जीवरुपी काचवाने सम्यक्त्वरुप बांडुं हाय चडवुं पण एटलुंज
मुश्केल छे. [३३६]

तथा जेम दृक्षो (तेओने गमे तेटलुं दुःख वेठवुं पडे छे तोए) पोताना स्था-
नथी आघा जता नथी, तेस केटलाएक जूदा जूदा कुळोमां जन्मेला जीवो शब्दा-
दिक विषयोमां आसक्त वनी (दुःखधीज भरपूर घरवासने नहि छोडता थका अंते)
करुण विलाप करता रहे छे, पण दुःखना मूळ कारण कर्मथी छूटी शक्ता नथी.
[३३८]

जूदा जूदा कुळोमां पोतक्षेतानां वैर्म भोगववाने जीवो जन्म धरीने अनेक
अवस्थाओ भोगवे छे. (३३८)

गंडी अद्वा कुट्टी, रायंसी^१ अवमारिय;^२
 काणितं^३ झिम्मियं^४ चैव, कुणितं खुज्जितं तथा।
 उअरिं च पास मूयं च, सूणियं च गिलासिणिं;^५
 वेवयं^६ पीढसधिं च, सिल्लिवतिं^७ महुमेहणं ।
 सोलस एते रोगा, अक्खाया अणुपुच्चसो;
 अह णं फुसंति आयंका, फासा य असमंजसा ।
 मरणं तेसिं सपेहाए, उववायं चवणं णच्चा;
 परियागं च सपेहाए, तं सुणेह जहातहा । [३३९]

संति पाणा अंधातमंसि त्रियाहिया; ता-मेव^८ सइं^९ असइं^{१०}

१ राजयक्ष्मवान् २ अपस्मारवान् ३ काणत्वं ४ जडतां ५
 भक्ष्मको व्याधिरस्तं ६ बेपं कंपं ७ श्लीपदं ८ अवस्थां ९ सकृत्
 (अनुभूयोतिशेषः) १० असकृत्.

कोइने गंडमाळानो रोग थायछे, कोइने कोठ नीकले छे, कोइने क्षयरोग थाय
 छे, कोइने अपस्मार^१ थाय छे, कोइने आंखना रोगो थाय छे, कोइने शरीरनी ज-
 हता थवाना रोग थाय छे, कोइने हीनांगणाना दोषो होय छे, कोइने कूडडाणुं
 होय छे, कोइने पेटना रोग थाय छे, कोइने मूंगाणु थाय छे, कोइने सोजो चढे
 छे, कोइने भक्ष्मरोग^२ थाय छे, कोइने कंपवा थाय छे, कोइने पीढ वळेली होय
 छे, कोइने श्लीपदेराग^३ थाय छे, तथा कोइने मयु प्रमेह थाय छे. ए रीते ए सोल
 महारोगो वताज्या. तथा बळी अनेक शूळादिक पीडाओ अने जलज विगेरे भयंक.
 र बनावो पण थता रहे छे. ए सर्वे रोग अने पीडाओथी छेवट मरण पण थाय छे.
 तथा जेभने रोग नयी थता एवा (देवताओने) पण जन्मकरण रत्ता छे. एण जा-
 णीने तथा ए वथां करेलां कर्मनां फल छे एम धारीने कर्मना उच्छेदन माटे नत्पर
 थहुं. हे मुनिओ, ह्यु कर्मनां फल हुं वर्णवुं ह्युं ते सांभळो. (३३९)

कर्मना वशधीज जीवो अंध थइने घोर अंधदारमय स्वयोमां रहेला वर्णरेण

१ घेलापणं, सन्निपात वगेरे. २ अतिशय भूख उत्पन्न थाय ते. ३ एउ
 कठिन थइ रहेते. ४ बहु कर्म करवापी.

अतिअच्च^१ उचावए फासे पडिसंवेदेंति । बुद्धेहिं एयं पवेदितं ।
(३४०)

संति पाणा वासगा^२, रसगा^३ उदए^४ उदयचरा, आगासगा-
मिणो; पाणा पाणे किल्लेसंति । (३४१)

पास लाए महब्भयं । [३४२]

बहुदुक्खा हु जंतवो । (३४३)

सत्ता कामेहिं माणवा । अबलेण वहं गच्छंति सरीरेणं पभंगु-
रेणं । [३४४]

अट्टे से बहुदुक्खे, इति बाले पक्कुववि;

एते रोगे बहु णच्चा, आउत परितावए^५ । [३४५]

णालं पास। अलं तवेतेहिं । एयं पास मुणी ! महब्भयं । णाति-
वाएज्ज कंचणं । (३४६)

१ अतिगत्य. २ वासकाः शब्दंकर्तुं समर्थाः द्विन्द्रियादयः

३ रसगाः संज्ञिनः ४ उदकरूपाः ५ परितापयेद्युः प्राणिगणं.

छे, जेयो वारंवार त्यां जइने दारुण दुःख भोगवेछे. ए वडुं तीर्थकरोए जणावेळुं
छे. [३४०]

वळी वेईन्द्रियादिक जीवो, जळचर जंतुओ, तथा पक्षिओ ए बधा एकमेकने
दुःख आपता रहे छे. [३४१]

ए रीते जगतमां महाभय बरें छे. [३४२]

जंतुओना दुःखनी परिसीमा नथी, [३४३]

मनुष्यो कामभोगमां आसक्त रहे छे. निःसार क्षणगंगुर शरीरना माटे पाप
करी लोको दुःखी थाय छे. [३४४]

विवेकहीन अने बहु दुःखने पामनारा अज्ञानी पुरुषो शरीरमां अनेक रोगो
उत्पन्न थएला देखी तेनां चिकित्सां अनेक जंतुओनो नाश करे छे, [३४५]

पण तेथी कइ रोग तो टळता नथी. माटे हे मुनि, तारे एवी पापभरपूर
चिकित्सा नहि बरवी. जे माटे जीवहिंसा महाभयंकर छे. माटे मुनिए कोइ जीवने
मारवो नहि. [३४६]

आयाण^१ भो, सुस्सूस भो, धूयवादं पवेदइस्सामि इह खलु
अत्तत्ताए^२ तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएणं^३ अभिसंभूता, अभिसंजाता
अभिणिव्वट्ठा, अभिसंवुट्ठा, अभिसंबुट्ठा, अभिणिव्वंता, अणुपुव्वेणं
महामुणी^४ । (३४७)

त परक्कमतं परिदेवमाणा “मा णे चयाहिं” इति ते^५ वदंति;
“छंदोवणीया अज्जोववन्ना^७”, अक्कंदकारी जणगा रूवंति ।
“अतारिसे मणी ओहंतरए, जणगा जेण विप्पजढा^८” । (३४८)
सरणं तत्थ णो समेति^९, किह णाम से रमति । एवं णाणं सया
समणुवासिज्जासि-त्ति वेमि । (३४९)

१ आजानीहि. २ जीवास्तितया. ३. शुक्रशोणितादिक्रमेण
४ अभूवन्नितिशेषः कुटुंबिनः ५ वयं त्वयीति शेषः ७ (कुटुंबिवाक्य
मेतत्) ८ [एतदपि कुटुंबिवाक्यं] ९ मुनिरिति शेषः

हे मुनिओ, ध्यान धरिने सांभळो, हुं तपोने कर्मो धोवानो वाद^१ कही
बतावुं छुं. आ संसारमां घणाएक जीवो स्वकृतकर्मोनी परिणतिथी ते ते कुळोमां,
मावापना शुक्रसोणितसंयोगादिक^२ क्रमे करीन उत्पन्न थइ, जन्म पामी, मोहेटा थइ
प्रतिबोध लही दीक्षा ग्रही अनुक्रमे महामुनि थया छे. [३४७]

ज्यारे सत्पुरुष दीक्षा लेवा तैयार थाय छे त्यारे तेना मावाप तथा स्त्रीपुत्रा-
दिक शोक करता यका तेने कहे छे के “अमे तमारी इच्छा प्रमाणे वचनारा अने
तमारा पर प्रीति धरनारा छीए माटे अमोने छोडीने दीक्षा ल्योमां. जे मावापने
छोडी दे छे ते कइ मुनि न गणाय तथा संसारने पण तरी शके नहि” [३४८]

पण आवे वखते ते दीक्षा लेवा तैयार थपलो पुरुष तेमनुं कवन स्वीकारतो
नथी केमके ते जाणे छे के तेनाथी हने आ दुःखभरपूर गृहवासमां रही शक्या
एम नथी. आहुं ज्ञान हमेसां मुनिए दिल्लमां धारी राखवुं. [३४९]

१ वात्ता २ लोहा अने वीर्यनो संयोग.

(द्वितीय उद्देशः)

आतुरं लोय-मायाए^१ चइत्ता पुव्वसंजोगं, हिच्चा^२ उवसमं,
 वसित्ता बंभचेसंमि, असु^३ अणुवसु^४ वा जाणीतु धम्मं अहातहा अथेगे
 त-मवाइ^५ कुसीला, वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं विउसेज्जा^६,
 अणुपुच्चेण अणहियासमाणे परीसंहे दुरहियासए । कामे ममायमाणस्स
 इयाणिं वा मुहुत्तेण वा अपरिमाणाए^७ भेदो ८ । एवं से अंतराइएहिं
 कामेहिं आकेवल्लिएहिं ९ अवतिन्नावेए^{१०} । (३५०)

१ आदाय ज्ञात्वा. २ गत्वा. ३ वीतरागो मुनिर्वा. ४ सरागः
 श्रावकोवा. ५ त्यजेयुः ६ व्युत्सृज्य-त्यक्त्वा. ७ अपरिमितकालंयावत्
 ८ शरीरनाशः ९ असंपूर्णैः १० अवतीर्णा भ्रांताः ।

बीजो उद्देश.

(कर्मोने आत्माधी दूर करवा)

आ दुनिआने दुःखी जाणी, मावाप तथा स्त्रीपुत्रादिकोने छोडी करीने
 उपशम धारण करी ब्रह्मचर्यने पाळन करनारा केटलाएक मुनिओ धर्मने जाणतां
 छतां पण तथाविध कर्मना उदयथी मोहजाळमां फसाइ सदाचारने छोडी आपे छे;
 अने विकट परीपहोने अनुक्रमे सहन करतां धाकी जइने वस्त्र, पात्र, कंबल, तथा
 पादपुंछनने छोडी गृहस्थपणुं आदरे छे. परंतु ए रीते जे कामभोगमां मूर्च्छित
 थाय छे तेने घणा थोडा वखतमां आ क्षणभंगुर शरीरथी जूदा पड्या पछी अनंत
 काळ लगी आवी सामग्री मळवी मुक्केल छे. ए रीते तेओ बहु दुःखमय काम-
 भोगोमां अवृत्त यया थका भटकता रहेवाना. [३५०]

केटलाएक भव्य पुरुषो धर्म पापीने दीक्षा लइ शरुआतथी ज सावधान रही
 जंजाळमां नहि फसातां लीपेली प्रतिज्ञामां दृढ थइ वत्ते छे. [३५१]

अहेगे धम्ममादाय आदाणप्पभित्ति सुपणिहिण्णु चरे अप्पलीयमाणे
दढे । (३५१)

सव्वं गिद्धिं परिणाय । एस पणते महामुणी । (३५२)

अइअच्च सव्वतो संगं “ण महं अत्थित्ति इति एगोह-मांसि”
जयमाणे एत्थ विरते, अणगारे, सव्वसो मुंडे, रीयंते, जे अचेले परिवुसिए
संन्धिक्खति^१ ओसायरियाए^२ । (३५३)

से आकुट्टे वा, हए वा, लुंचिए वा, पालियं पकंथे^३, अदुवा प-
कंथे, अतहेहिं संदफ्फासोहिं, इति संखाए^४ एगतेर^५ अन्नयेर^६ अभिन्नाय^७

१ संतिष्ठति २ अवमौढर्या ३ प्रकथ्य ४ स्वकृततकर्मफलमिति-
संख्याय ५ अनुकूलान् ६ प्रतिकूलान् ७ ज्ञात्वा

जे पुरुष वधी आसत्तिओने दुःख करनारी जाणी तेथी दूर रहे छै तेज
महामुनि संयमी जाणवो. [३५२]

माटे मुनिए सर्व प्रपंच छोडीने, “ मारुं कोइ नथी, हुं एकलो ज छुं, ”
एवी भावना धरी पापक्रियाथी निवृत्त यह मुनिना आचारमां यत्न करतां थकां,
सर्व प्रकारे मुंडित थइ अचेल^१ वनी संयममां उत्साहवान रही परिमित आहार
रुइ पेडने अपूर्ण राखता रहेवुं. [३५३]

ज्यारे कोइ पुरुष मुनिने तेना प्रथमना निंदित कामो वोलीने अथवा गये
तेम वेअदव बोली बोली तथा खोटा आरोपो चडावी निंदवा भंडे, अथवा मुनिना
आंग ऊपर हुमला करे, मारे के चाल खेंचे, त्यारे मुनिए पोताना कर्धिल्या यमोनुं
फल आवेवुं जाणी तेवा कंटाळो आपनारा प्रतिकूल परीपट्टोने तथा स्तुतिविगेरे म-

^१ जीनकल्पिक होय तो भवेया वत्त रहित वनी अने स्थविर कल्पिक होय
तो अल्प वत्त धारण करी, २ भावलत्त.

तितिक्रवमाणे परिव्वए जे य हिरी^१, जे य अहिरीमाणें^२। चिच्चा सव्वं
विसोचियं फासे समियदंसणे ।^३ (३५४)

एते भो णगिणा वुत्ता, जे लेांगीस अणागमणधम्मिणो^४ ।
(३५५)

“आणाए मामगं धम्मं^५।” एस उत्तरवादे^६ इह माणावाणं वि-
याहिते । (३५६)

एत्थोवरए^७ तं^८ झोसमाणे । आयाणिज्जं परिण्णाय, परियाएणं^९
विगिंचइ^{१०} (३५७)

इह सेगेसिं एगचरिया होति। तत्थियरा इयरेहिं कुलेहिं सुद्धेसणाए
सव्वेसणाए से सेहावी परिव्वए। सुब्बिंभ अदुवा दुब्बिंभ । अदुवा तत्थ भेरवा
पाणा पाणे किल्लेसंति । ते फासे पुट्टो धीरो अहियासेज्जासि चि बेमि।(३५८)

१ मनोहराः २ अमनोहराः ३ स्पृशेदितिशेषः ४ प्रतिज्ञानिर्वाह-
काइत्यर्थः ५ तीर्थकृद्वाक्यमेतत् ६ प्रधानवाद ७ अत्रः उपरतः रक्तः
८ कर्म ९ श्रामप्येन १० क्षपयति.

नने हरनार अनुकूळ परीपहोने पण सहन करता रहेवुं. किंवहुना, कशी पण फि-
कर नहि धरतां शुद्ध श्रद्धा धरीने सर्व परीसह तथा उपसर्ग सहा करवा. [३५४]

हे मुनिओ, ए रीते जेओ परीसह सही निःपरिग्रही रहे छे अने गृहवासमां
पाछा नयां फसाता, तेओ ज परमार्थे नग्न^१ कहेला छे. [३५५]

तीर्थकर देवे कहुं छे के “आज्ञार्थी मारो धर्म पाळवो.” आ तेमणे मनुष्यो
माटे उत्कृष्ट भाषण कहेलुं छे. [३५६]

माटे मुनिए संयममां लीन रही कथोने रूपावतां थकां धर्म कर्या करवो. जे
माटे कर्मतुं स्वरूप जाण्वावाद संयमयी कर्म क्षय थाय छे. [३५७]

केटलाएक महर्षिओने एकला फरवानी प्रतिज्ञा होय छे त्यारे ते उत्तम मह-
र्षिओए अंतःप्रांत^२ कुलागांथी निदाप आहार लइ पवित्रपणे विचरता रहेवुं अने
ते आहार सुगंधी होय अथवा दुर्गंधी होय छतां तेना पर कशी प्रीति के अप्रीति
नहि लाववी. वळी ज्यारे एकला विचरतां भयंकर सिंह विगेरे श्वापदो हेरान करे
त्यारे धैर्य धरीने रुडी रीते ते परीपह सहन करवा. [३५८]

[तृतीय उद्देशः]

एयं खु मुणी आयाणं^१ सया सुअक्खायधम्मो विधूतकप्पे णि-
ज्झोसइत्ता । (३५९)

जे अचेले परिचुसिए तस्स णं भिक्खुस्स णो एवं भवइः—परि-
जिन्ने मे वत्ये, वत्ये ज्जइस्सामि, सुत्तं जाइस्सामि, सूइं जाइस्सामि, सं-
धिस्सामि, सीविस्सामी, उक्कसिस्सामि, वोक्कसिस्सामि, परिहरिस्सामि, पाउ-
णिस्सामि । (३६०)

अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसंति तेउफासा
फुसंति दंसमसगफासा फुसंति, एगयरे अन्नयरे विरूवरूवे फासे अहिया-

१ धर्मोपकरणातिरिक्तं वस्त्रादि

त्रीजो उद्देश.

[मुनिए अल्प उपकरण^१ राखवां अने शरीरने जेम घने तेम
कसता रहेवुं.]

हमेशां पवित्रपणे धर्म साचवनार अने आचारने पाळनार मुनि धर्मोपकरण
शिवाय सर्व वस्त्रादिक वस्तुओं त्याग करे छे. [३५९]

जे मुनि अल्पवस्त्र राखे छे अथवा तदन बत्तरहित^२ रहे छे, ते मुनिने
आवी चिंता नथी रहेती, जेवी के मारं बत्तर फाटी गयां छे, मारे वीजुं नवुं बत्तर
न्यावुं छे, चूत्र^३ न्यावुं छे, सोय न्याववी छे, तथा बत्तर सांधवुं छे, सीववुं छे,
चयारवुं छे, तोडवुं छे, पटेरवुं छे, के चिंटाळवुं छे. [३६०]

बत्तरहित रहेतां तेवा मुनिथेने कदाच बारंवार शरीरमां तणस्वन्ना के कांटा

१ बत्तर बगैरे सामान. २ जिनकल्पिषणामां. ३ श्रीवन्नानो दांरो.

સૌતિ અચેલે લાઘવં આગમમાણે^૧ । તવે^૨ સૈ અભિસમણ્ણાગૈ ભવતિ ।
(૩૬૧)

જહેયં ભગવતા પવેદિતં તમેવ અભિસમેચ્ચા સવ્વતો સવ્વત્તાણ
સમત્ત-મેવ સમભિજાણિયા । एवं તેसिं महावीराणं चिरराइं पुच्चाइं^૩
वासाणि^૪ रीयमाणाणं द्वियाणं पास, अहियासियं । (૩૬૨)

આગયપન્નાણાણં કિસા^૫ વાહા ભવંતિ, પયણુણ મંસસોણિણુ ।
વિસ્સોણિં કટ્ટુ પરિણ્ણાણુ^૬ એસ તિન્ને મુત્તે વિરણુ વિયાહિણુ-ત્તિ બેમિ ।
(૩૬૩)

વિસયં ચિક્કસુવં રીયંતં ચિરરાતોસિયં અરતી તત્થ કિં વિહારણુ^૭ ?

૧ બુદ્ધ્યમાનઃ ૨ તપઃ ૩ પ્રભૂતાનિ ૪ વર્ષાણિ ૫ કૃશાઃ ૬ પરિ-
જ્ઞયા ૭ પ્રતિસ્વલેત્

ભરાયા કરે^૧ અથવા તાઢ વાય, અથવા તાપ લાગે, અથવા દંસા^૨ કે મચ્છરો કરડે
જીવિરે અગમતા પરીપહો આવી નડે, ત્યારે તે મુનિઓ વસ્ત્રરહિતપણામાં નિષ્ચિ-
તપણું માની તે વધા પરીપહ સહેતા રહે છે. એમ કર્યાથી તપ કરેલું ગણાય છે.
[૩૬૧]

માટે જે રીતે ભગવાને જણાવ્યું છે તેને અનુસરીને સર્વ રીતે પવિત્ર ભાવથી
વર્તવું. અને પૂર્વે ધન્ય મહર્ષિઓએ ઘણા વર્ષો લાગી સંયમમાં રહી જે જે કષ્ટો સહ-
ન કર્યાં છે તે તરફ જોતા રહેવું. [૩૬૨]

સમજાણ મુનિઓની યુજાઓ કૃશ હોય છે અને તેમના શરીરમાં માંસ ત-
થા લોહી વધુ થોડું હોય છે. એવા મુનિઓ સમત્વભાવનાથી રાગદ્વેષ તથા કપાયરૂપ
સંસારશ્રેણીને તોડી પાડી ક્ષમાદિક ગુણો ધારીને વર્તતા હોવાથી ભવજલથિથી
તરેલા, ભવવંધનથી છૂટેલા, અને પાપમટ્ટત્તિથી દૂર થયેલા કહ્યા છે. [૩૬૩]

લાંબા વચ્ચતથી સંયમને ધરનારા, અસંયમથી નિવર્તેલા, ઉત્તરોત્તર પ્રશસ્ત
ભાવમાં વર્તનાર મુનિને પણ વચ્ચતે સંયમમાં થયેલી અરતિ સંયમથી સ્વલિત
કરાવે છે. ^૩ અથવા કદાચ એવા ગુણ વિશિષ્ટ^૪ મુનિને અરતિ કરું પણ કરી

૧ તૃણશ્યાપર સૂવાનું હોવાથી. ૨ ઢાંસ. ૩ જે માટે કર્મપરિણતિ વિચિત્ર
છે ૪ ગુણસંપન્ન.

(३६४)

संधेमाणे समुद्रिणु । जहा से दीवे असंदीणे । (३६५)

एवं से धम्मे आरियपदेसिए । (३६६)

ते अणवकंखमाणा, पाणे अणतिवातेमाणा दइता मेहाविणो
पंडिया । (३६७)

एवं तेसिं भगवओ^१ अणुद्राणे जहा से दियपोए^२ । एवं ते सिस्सा
दियाय राओय अणुपुव्वेण वाइयत्ति^३ वेमि । (३६८)

[चतुर्थ उद्देशः]

एवं ते सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाइया तेहिं महा-

१ वर्द्धमानस्वामिनः २ पक्षिपोतः ३ वाचिताः पाठिताइत्यर्थः
शकती नथी. [३६४]

क्रमके ते मुनि उत्तरोत्तर प्रशस्त परिणासपर चढयो जाय छे. अने एवा
उत्तरोत्तर प्रशस्त भावमां चडनार मुनिं ररेखर पाणीयी कदापि नहि ढंकाइ जता
द्वीप तुल्य छे. [३६५]

तेमज तीर्थकरभापित धर्म पण तेदा ज द्वीपतुल्य छे. [३६६]

माटे ते मुनिओ संसारना भांओनी इच्छा त्याग करी प्राणीओनी हिंसा
नहि करता थका सर्व लोदने प्रिय थइ मर्षादामां रहेता थका पंडितपद पांमे छे.
[३६७]

अने जेओने तेजुं ज्ञान नहि होलाथी जेओ हजु भगवान्ना धर्ममां रुडी रीते
उत्साहवान् नथी थएका एवा शिष्योने ते पंडित मुनिओ जेय पक्षिओ पोताना
वचाने ऊंठे छे तेम वणी घणी रीते संभाळ राखी धर्ममां कुशल करावता रहे छे.
ए रीते ते शिष्योने रात दिवस अट्टामे भगाव्या करवाथीतेओ संसार तरी शकवा
समर्थ थाय छे. [३६८]

चौथो उद्देश.

(मुनिप सुव्वल्पट न थवुं)

उपर वनाल्या प्रमाणे महापराक्रमी अने विद्यावंत गुरुओण रातदिवस

વીરોર્હે પળ્ણાણમંતેર્હિં તેર્સિંતિણ્ણ પળ્ણાણ—મુવલબ્મ હેચ્ચા ઉવસમં ફારુસિ-
યં સમાદિવંતિ । (૩૬૯)

વસિત્તા બંમ્બેરંસિ આણં તં ણો-ત્તિ મળ્ણમાણા । [૩૭૦]

અઘાયં^૧ તુ સોચ્ચા ણિસમ્મ, “ સમણુના જીવિસ્સામો, ” ઇમે
ણિક્કસ્મ તે અસંભવેતા વિડઙ્ગમાણા કામેર્હિં ગિદ્ધા અઙ્ગોવવળ્ણા સ-
માહિ—માઘાય^૨—મઙ્ગોસયંતા સત્થાર—મેવ ફરુસં વદંતિ । [૩૭૧]

સીલમંતા ઉવસંતા સંઘાણ^૩ રીયમાણા “અસીલ્લ” અણુવયમાણ-
સ્સ બિતિયા મંદસ્સ બાલયા । (૩૭૨)

ણિય્ઠમાણા વેમે આયારગોયર—માઙ્કલંતિ । [૩૭૩]

૧ આખ્યાતં ૨ આખ્યાતં ૩ પ્રજ્ઞયા

પોતાના શિષ્યોને ધનાવ્યાથી તે શિષ્યોમાંના કેટલાએક શિષ્યો તેવા ગુરુઓ પા-
સેથી વિદ્યા મેલવીને ઉપશમને છોડી દઈ ગર્વિત થઈને ઉદ્ધત વની જાય છે. [૩૬૯]

વઠી કેટલાએક શિષ્યો સંયમમાં જોડાયાવાદ તીર્થંકરની આજ્ઞાનો અનાદર
કરીને સુખલંપટ થઈ શરીરની શોભા કરવા મંડી પડે છે. [૩૭૦]

કેટલાએક “ આપણે સર્વને માનનીય થઈશું. ” એમ વિચારીને દીક્ષા લે છે,
અને તેથી મોક્ષમાર્ગમાં નહિ ચાલતાં કામેચ્છાર્થી વલ્લતા થકાં સુખમાં મૂર્ચ્છિત થઈ
કરી વિષયોમાં ધ્યાન ધરીને તીર્થંકરભાષિત સમાધિને નથી સેવતા. અને જો તેમને
કોઈ શીઘ્રામણ આપે છે તો તે સાંભળીને તે શીઘ્રામણ દેનારને જ નિંદવા મંડે છે.
[એ સર્વે એમની મૂર્ખાઈ જાણવી.] [૩૭૧]

વઠી કેટલાએક તો પોતે ઋષ્ટ છતાં વીજા સુશીલ જ્ઞમાવંત અને વિવેકથી
વર્તતા મુનિઓને પણ ઋષ્ટ કહેતા રહે છે, તેવા પાસત્યાદિક મંદજનોની તો સ્વર-
સ્વર વેવડી મૂર્ખાઈ જાણવી. [૩૭૨]

કેટલાએક પોતે સંયમ નથી પાળી શક્તા, પણ આચાર શુદ્ધ કરી વતાવેહે
તેઓની વેવડી મૂર્ખાઈ નથી થતી.) [૩૭૩]

घायमाणे, हणओयावि समणुजाणमाणे “घेरे धम्मे उदीरिए” उवहइ^१
 णं अणाणाए एस विसण्णे वितट्ठे^२ वियाहिते-त्ति बेमि । (३७७)

किमणेणं भो, जणेण करिस्सामि-त्ति मण्णमाणा एवं एगे विदित्ता,
 भातरं पितरं हिच्चा णातओ य परिग्गहं, वीरायमाणे समुट्ठाए अविहिंसा
 सुव्वया दंता, पस्स, दीणे, उप्पइए पडिवयमाणे । (३७८)

वसट्ठा कायरा य जणा लूसगा भवंति । (३७९)

अह-भेगेसिं सिलोए पावए भवति;—से समणविब्भंते समणवि-
 ब्भंते^३ [३८०]

पासहेगे समन्नागएहिं^४ असमन्नागए. णममाणेहि अणममाणे
 विरतेहिं अविरते दविएहिं अदविए । (३८१)

१ उपेक्षते २ विहिंसकः ३ वीप्सायां द्विरुक्ति ४ उद्युक्तविहारिभिः

साधारण-ऊतरता.

धारी तुं तेमनी आज्ञायी बाहेर थइ ते धर्मनी उपेक्षा करतो रहे छे ते खरेखर
 तुं कामभोगमां मूर्च्छित अने हिंसामां तत्पर थएलो देखाय छे, एम हुं कहुं छुं.
 (३७७)

शरुआतमां केटलाएक पुरुषो दीक्षा लेती बखते मातापिता तथा स्त्रीपुत्रादि-
 कने अनर्थमूळ जाणीने मावाप, ज्ञाति, तथा धनद्रोहत छोडी करी पराक्रम दाख-
 वता थका दीक्षा लइ अहिंसक, पवित्र नियमने धरनारा, अने जीतेंद्रिय थइने
 संयमपर चडया थका पाछा तेपरथी भ्रष्ट थइ दीन बने छे. [३७८]

कारण के जेओ विषय अने कषायने तावे थइ दुर्ध्यानी थाय छे तथा
 जेओ सत्वहीन होय छे तेओ संयमयी भ्रष्ट ज थाय छे. [३७९]

अने संयमयी भ्रष्ट थतां तेमनी दुनियांमां घणी अपकीर्ति फेलाय छे,
 जीवीके, अरे आ जुओ सावु थइने पाछे संसारना भूलवामां पड्यो छे. [३८०]

केटलाएक कमनशीव पुरुषो उग्रविहारिओ साथे रखा थका आलसु थइ
 रहे छे, विनयवंत पुरुषो साथे अविनीत रहेछे. विरतिवंत पुरुषो साथे रही अविरत
 रहे छे अने पवित्र पुरुषो साथे रही अपवित्र रहे छे. [३८१]

अभिसमेच्चा पंडिए मेहावी णिट्टियद्धे वीरे आगमेणं सया परक्क-
मेज्जासित्ति बेमि । (३८२)

[पंचम उद्देशः]

से गिहेसु वा गिहंतरेसुवा गामेसु वा गामंतरेसु वा नगरेसुवा
नगरंतरेसुवा जणवएसु वा, जणवयंतरेसुवा, संतेगातिया जणा लूसगा^१ भवन्ति,
अदुवा फासा फुसन्ति, ते फासे पुट्ठे धीरो अहियासए ओए^२ समियदंसणे^३ ।

[३८३]

१ उपसर्गकारकाइत्यर्थः २ ओजः एकः ३ प्राप्तदर्शनः

एम धारीने मयादाशीळ पंडित पुरुषे विषयवांच्छा त्याग करी हिम्मतवान
रही तीर्थकरना उपदेशने अनुसरीने ह्मेशां प्रवर्त्तवुं. [३८२]

पांचमो उद्देश.

(मुनिए संकटोथी नहि डरवुं तथा कोइ प्रशंसा के सत्कार करे

तेथी खुशी न थवुं.)

मुनिने आहारादिक लेवा जतां घरोमां^१, घरोनी आसपासमां, गामोमां,
गामोनी आसपासमां, नगरोमां, नगरोनी आसपासमां, अने विहार करवां देशोमां तथा
देशोनी आसपासमां, केटलाएक लोको उपसर्ग करे, अथवा धीजा कइ पण संकटो
के दुःखो आवी पडे तो ते धीरपणे अडग रही सम्यकत्ववंत मुनिए सर्व सहन
करवां. [३८३]

१ ऊंच नीच तथा मध्यम घरोमां.

दयं^१, लोगस्स, जणित्ता पादीणं पडीणं दाहीणं उदीणं, आइक्खे, विभये, किट्ठे, वेदवी । (३८४)

से उट्ठिएसु^२ वा अणुट्ठिएसु^३ वा सुस्सूसमाणेसु पवेइए, संतिं, विरतिं, उवसमं, णिव्वाणं सोयं अज्जवियं मद्दवियं लाधवियं, अणइ-वत्तिय^४ । (३८५)

सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं^५ अणुवीइ भिकखू धम्म—माइक्खेज्जा । [३८६]

अणुवीइ भिकखू धम्म—माइक्खमाणे णो अत्ताणं आसाइज्जा, णो परं आसाइज्जा, णो अन्नाइं पाणाइं, भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसादे-ज्जा । [३८७]

१ दया २ साधुषु ३ श्रावकेषु ४ अनतिपत्य—अनातिकाम्य ५ अत्र प्राणादय एकार्थवाचकाः

आगमना जाण मुनिए पूर्व, पश्चिम, दक्षिण तथा उत्तर ए सर्वस्थळोमां लोकना ऊपरे दया करतां यकां तेमने धर्म कहेवो, धर्मना विभाग वताववा, तथा तेनां फळ जणाववां. (३८४)

तेणे सांभणवा इच्छनार दीक्षीत पुरुषोने तथा श्रावको विगेरेने अहिंसा, त्याग, क्षमा, उत्तम फळ, पवित्रता, सरळता, कोमळता, तथा निष्पग्रिहता ए सर्व वावतो यर्थार्थपणे दर्शाववी. [३८५]

ए रीते विचारपूर्वक सर्व जीवोने मुनिए धर्म कहेवो. [३८६]

पूर्वापर विचारपूर्वक धर्म कहेतां यकां मुनिए पोताने तथा बीजा सर्व जीवोने कशा नुकशानमां ऊतारवा नहि. [३८७]

से अणासादए अणासादमाणे वज्झमाणाणं पाणाणं भूयाणं
जीवाणं सत्ताणं जहा से दीवे असंदीणे एवं से भवति सरणं महामुणी
(३८८)

एवं से उट्ठिए ठियप्पा अणिहे अचले चले अबहिलेस्से परिव्वए ।
(३८९)

संखाय पेसलं धम्मं दिट्ठिमं परिणिव्वुडे । [३९०]

तम्हा संगं-ति पासह । गंथेहिं गढिया णरा विसण्णा कामक्कंता ।
तम्हा लूहओ^१ णो परिवित्तसेज्जा । (३९१)

जस्सिमे आरंभा सव्वतो सव्वत्ताए सुपरिण्णाया भवंति, जेसि मे^२
लूसिणो णो परिवित्तसंति, सेट्ठुं^३ वंता^३ कोहं च माणं च मायं च
लोभं च^४ । एस तुट्ठे^५ वियाहिते—त्तिवेमि । (३९२)

१ रूक्षतः (संयमात्) २ येषु आरंभेषु इमे लूषकाः (हिंसकाः)

३ वांत्वा ४ मोहनीयं त्रोटयतीति शेषः ५ त्रुट्टः अपगतः कर्मसंततेरिति शेषः

अने तेम कर्याथी ते महामुनि, नाश पामता जीवोने उत्तम वेटना मुजव
शरण आपनार थाय छे. [३८८]

ए माटे दीक्षित पुरुषे आत्मा स्थिर राखी निरीह रही परीपहोथी नहि
डरतां तथा स्थिरवास नहि करतां संयममां लक्ष राखी बर्त्या करवुं. [३८९]

जे माटे पवित्र धर्मेने जाणी करोने ज सत्क्रिया करनारा पुरुषो मुक्त थया
छे. [पण पवित्र धर्मेने न जाणनारा पुरुषो मुक्त थता नथी.] [३९०]

माटे (हे मुनीओ) तमे प्रपंचमां मुंझासो नहि. धनदौलतमां मुंझाएला लोको
अनेक कामनाओथी पीडाता रहे छे. माटे मुनिए संयमथी नहि डगवुं. [३९१]

जे पापप्रवृत्तिओ करतां हिंसक लोको नथी डरता तेवी सर्व पापवृत्तिओथी
जे पुरुष सर्व प्रकारे यथार्थ ज्ञान पूर्वक दूर रहेछे, ते पुरुष क्रोध मान माया तथा
लोभने बन्धी करीने (मोहनीय कर्म तोडे छे) अने एवो पुरुष [कर्मनी जाळो
थी] छूटो थएलो छे एम हुं कहं छुं. (३९२)

कायस्स वियाघाए संगामसीसे वियाहिए । सेहु पारंगमे मुणी ।
अविहम्ममाणे फलगावयट्ठि कालोवणीते कंखेज्ज कालं जाव सरिरभेओ-त्ति
वेमि । (३९३)

“शरीरनो नाश करवो” ए खरेखर, संग्रामतुं टोच छे. (ए वखते जे नहि
मुंझाय) ते मुनि नकी संसारनो पार पाये छे. माटे मुनिए अंतकाळे परीषहोथी
नहि डरतां लाकडाना पाटीआनी माफक अचळ रहीने मृत्युकाळ आदतां अणसण
आदरी ज्यां लगी आ शरीरथी जीव जूदो पडे, त्यां लगी मरणकाळने इच्छतां
रहेवुं. (३७३)



महापरिज्ञाख्यं सप्तमं मध्ययनम्.

(इदं सप्तोद्देशं मध्ययनं व्यवच्छिन्नम्)

अध्ययन सातमं

महापरिज्ञा.

(सात उद्देशानुं आ अध्ययनं विच्छिन्नं धयुं छे. केमके एवुं कहेवाय छे के श्रीमान् देवादिगणिए ज्यारे आ सूत्र पुस्तकपर लख्युं त्यारे ते अध्ययन-मां केटलीक चमत्कारिक विद्याओ जेना तेना हाथे जाय तो लाभना बदले गेरलाभ धवानो वधु संभव रहे एम धारी ते लखवुं वंघ राख्युं. गमे तेम होय पण आपणा कमनशीवे आहुं उत्तम अध्ययन दिच्छिन्न धयुं छे, तेथी आपणने अतिशय अफशोष जाहेर कर्या शिवाय बीजो उपाय रह्यो नथी.]

भाषांतर कर्ता.

विमोक्षाख्य-मष्टम मध्ययनम्.

(प्रथम उद्देशः)

से बेमि समणुन्नस्स वा असमणुन्नस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पहिग्गहं वा पायपुंछणं वा णो पाएज्जा णो निमंतेज्जा णो कुज्जा वेयावडियं परं आढायमाणेत्ति बेमि । (३९४)

“धुयं चेतं जाणेज्जा असणं वा जाव पापपुंछणं वा लभिया, णो लभिया, भुंजिया, णो भुंजीया, पंथं वियत्तुणवि उक्कम्म.” विभत्तं धम्मं झोसेमाणे समेमाणे वलेमाणे पाएज्जावा णिमंतेज्जावा कुज्जा वेया-

अध्ययन आठमं.

विमोक्ष.

पहेलो उद्देश.

(कुशीळ परित्याग.)

हुं कहुं छुं के मुनिए रुडा वेपवाला^१ अथवा नरसा वेपवाला^२ असंयति-ने अतिशय आदरवंत धइने * अशन, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पात्र, कंबल, अने पादपुंछन^३ आपचां नहि, आपवा माटे निमंत्रण करवुं नहि, अने तेमनुं वैयावृत्त्य^४ करवुं नहि. [३९४]

ते असंयतिओ कहे के “ हे मुनिओ तमे नकीं करी मानो के तमने अश-नादि मळ्युं होय अथवा न मळ्युं होय, तमे ते खावुं होय अथवा न खावुं होय, तो पण तमारे अमारे त्यां आवुं, कदि आडो मार्ग होय अथवा वच्चमां कंड

१ स्वमती-पासत्या प्रमुख. २ परमती-शाक्यादि. ३ रजोहरण. ४ चाकरी

* अन्न, पाणी, मेवो, मीठाइ-आ अर्थ इरेक ठेकाणे समजी मेवो.

वडियं परं अणाढायमाणे-त्ति वेमि । (३९५)

इह मेगेसिं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवति । ते इह आरंभद्वी
अणुवयमाणे, “हणपाणे” घायमाणे, हणतो यावि समणुजाणमाणे, अदुवा
अदिन्न—माइयंति, अदुवा वायाओ विप्पउंजंति; तंजहा, अत्थि लोए,
णत्थि लोए, धुवे लोए, अधुवे लोए, सादिए लोए, अणादिए लोए, सपज्ज-
वसिते लोए अपज्जवसिते लोए सुकडे-त्ति वा दुक्कडे-त्ति वा, कल्लाणे-त्ति
वा, पावे-त्ति वा, साधू-त्ति वा असाधू-त्ति वा, सिद्धी-त्ति वा, असिद्धी-त्ति
वा, णिए-त्ति वा, अनिए-त्ति वा (३९६)

सुनां घ होय, तोपण ते ओल्लोणीने पधारुं ” ए रीते बोलीने जूदा धर्मने पाळ-
नार तेओ आवता थका के जता थका कइं आपे के आपवा माटे नियंत्रण करे
अथवा कइं वैयावृत्य करे तो ते कबुल करुं नहि. किंतु जेम बने तेम अलगा रहे
हुं. [३९५]

केटलाएकोने^१ आचार संबंधी पावतनी माहिती होती नथी तेथी तेओ
आरंभना अर्थी थइने परधर्मिओना वचनोनी नकल करीने “जीवोने मारो” एवं
कही बीजा पासे जीवोने मरावे छे, अने जीवना मारनारने रुडुं जाणे छे, अथवा
अणदीधेळुं लेता रहे छे, अथवा अनेक प्रकारना नीधे मुजब वाक्यो बोले
छे:—एक कहे छे “लोक छे” बीजा^२ कहे छे “लोक नथी.” एक कहे छे
“लोक निश्चळ छे” बीजा^३ कहे छे “चळ [फरतो] छे.” एक कहे छे “लोक
आदिसहित छे,” बीजा कहे छे “अनादि छे. एक कहे छे “लोकनुं अंत छे,”
बीजा कहे छे “नथी.” एक कहे छे “ए ठीक कर्युं,” बीजा कहे छे “ए खोडुं
कर्युं.” एक कहे छे “ए कल्याण छे,” बीजा कहे छे “ए पाप छे.” एक कहे
छे आ साधु छे,” बीजा” कहे छे “ए असाधु छे.” एक कहे छे “सिद्धि छे,”
बीजा कहे छे “सिद्धि नथी.” एक कहे छे “नरक छे,” बीजा कहे छे “नरक
नथी.” [३९६]

जमिणं विष्पाडिविन्ना “ मामगं धम्मं ” पन्नवेमाणा, एत्थवि जाणह—अकम्हा। एवं तेसिं णो सुअक्खाए सुपन्नते धम्मे भवति, से जहेतं भगवया पवेदितं आसुपणेण जाणयाद्दु पासया । अदुवा गुत्ती वउगोयरस्स—त्ति वेमि । [३९७]

सच्चत्थ संमयं पावं । तमेव उवतिकम्म^१ । एस महं विवेगे वियाहिते । [३९८]

गामे अदुवा रण्णे, णेण गामे णेव रण्णे, धम्म—मायाणह पवे-दितं माहणेण मईमया (६९९)

जामा^२ तिण्णि उदाहया, जेसु इसे आरिया संबुज्झमाणां समुद्धिया । (४००)

१ व्यवस्थितोहमितिशेषः २ व्रतविशेषः

ए रीते जे पोतपोतानो धर्म वतावता रहे छे तेमने माटे उत्तर आपवाने एटलुं जाणवुं बस छे के “ तमारं वोळवुं अकस्मात् [हेतुविनानुं] छे.” ए रीते ते एकांत वादिओनो धर्म सिद्ध बुद्धिशाली^१ सर्वज्ञ सर्वदर्शी भगवान वीर प्रभुना कहेला धर्मना मुजब खरेखर रीते कहेलो के जणावेलो सिद्ध थतो नथी. (माटे समर्थ मुनिए परवादीओने बादमां जीतीले यथार्थ उत्तरो देवा) असमर्थ मुनिए मौन रहेवुं. [३९७]

(परवादिओने शरुआतमां मुनिए कहेवुं के) वधाओमां पाप रहेलुं छे, २ हुं तेने छोडी वरुंछुं, ए मारो विवेक^३ जाणवो, [३९८]

बुद्धिशाली^४ महान^५ वीर प्रभुए कहुं छे के (विवेक होय तो) गाममां रहेतां पण धर्म छे अने अटवीमां रहेतां पण धर्म छे. [विवेक न होय तो] गाममां रहेतां पण धर्म नथी अने अटवीमां-रहेतां पण धर्म नथी. [३९९]

[वळी ते भगवाने] ऋण याम [महाव्रत] वताव्या छे; जेओमां आ आर्यो प्रतिबोध पामीने तैयार थया छे. [४००].

१ सदा उपयोगवंत. २ कारणके वधाओ पाप करे छे. ३ मुकावेलो-त-फावत Distinction ४.केवल ज्ञानवान् ५. कोइने हणोमां ” एवुं वोळनार.

जे णिव्वुता, पावेहिं कम्मेहिं अणियाणा ते वियाहिया । (४०१)

उड्डं अथं तिरियं दिसासु सच्चंतो सच्चावन्ति च णं पाडियक्कं
जीवेहिं कम्मसमारंभे णं । (४०२)

तं परिन्नाय मेहावि णेव सयं एतेहिं काएहिं दंडं समारंभेज्जा,
णेवण्णे एतेहिं काएहिं दंडं समारंभावेज्जा, नेवन्ने काएहिं एएहिं दंडं
समारंभंतेवि समणुजाणेज्जा । (४०३)

जेयन्ने एतेहिं काएहिं दंडं समारंभंति तेसिंपि वयं लज्जामो ।
(४०४)

तं परिण्णाय मेहावी तं वा दंडं अण्णं वा दंडं णो दंडमी दंडं
समारंभज्जासि चिबेमि । ४०५

१ प्रत्येकं

जेओ निर्वृत [क्रोधादिक मटवाथी शांत] थया छे ते पापना कामथी
अलगा रहेनार क्हाछे, [४०१]

चंचेनीचे, त्रिच्छं, अने सघळी दिशाओ तथा विदिशाओमां, सर्व प्रकारे
जीवोमां दरेके जीवदीठ कर्म समारंभ रहेलो छे, [४०२]

तेने रुडी रीते समजी करीने, मर्यादावंत मुनिए पेते ए पृथ्वीकायादिक
जीवोने आरंभ न करवो, बीजावती न कराववो, अने जेओ करता होय तेमने
रुडा पण न गणावा. [४०३]

[मुनिए विचारखुं के] जेओ ए जीवोने आरंभ करे छे तेनाथी पण अमे
शरमाइए छीए. [४०४]

एम रुडी रीते जाणीने मर्यादावंत अने आरंभथी बीहीता मुनिए ते आरंभ
अथवा बीजा आरंभ नहिं करवा. [४०५]

[द्वितीय उद्देश.]

से भिक्खु अरक्कमेज्ज वा, चिद्धज्ज वा णिसीएज्ज वा तुयदेज्ज^२ वा सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरिगुहंसि वा, ख्खमलं सि वा, कूभाराययाणांसि वा, हुरत्था वा कर्हिचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंक्कमित्तु गाहावती बूया, “आउसंतो समणा! अहं खलु तव अट्टाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पाणाइं भुताइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स, कीयं पामिच्चं^१ अच्छेज्जं^२ अणिसट्ठं अमिहडं आहट्टु वेतेमि,^३ आवसहं वा समुस्सिणामि, से भुंजह वसह । ” (४०६)

आउसंतो समणा? भिक्खु तं गाहावतिं समणसं सवयसं संप-

१ त्वग्वर्तनं विदध्यात्. २ अपरस्मादुच्चार्य गृहीतं. ३ आच्छेद्यं—
आच्छिद्य गृहीतं. ४ वितरामि. ५ संप्रत्याचक्षीत.

बीजो उद्देश.

[अकल्पनीय परित्याग]

मुनि, स्मशानमां^१ अथवा सूनां घरमां अथवा पर्वतनी गुफामां अथवा झाडना मूळमां अथवा कुंभारना घरमां फरतो होय उभो होय अथवा सूतो होय अथवा बोहेर क्यां पण विचरतो होय, तेने जोइ कोइ गृहस्थ, पासे आवी कहे के “हे आयुष्यमान् मुनि, हुं तमारा सारं असन पान खादिम स्वादिम वस्त्र पात्र-कंबल तथा पादपुंछण, प्राणिओना आरंभयी वनावीने अथवा वेचातां लइने अथवा ऊधारे आणीने अथवा कोइ पासेयी झुंटावी लइने अथवा वीजाना होवा छतां तेमनी रजा लीधा शिवाय अथवा मारा घेरयी लवीने तमोने आपुंछुं अथवा तमारा सारं मकान चणावुंछुं के समावुंछुं. माटे तमो खाओ अने रहो. ” [४०६]

हे आयुष्यमान् साधुओ? ते मुनिए ते पोताना जाणीता अथवा मित्र गृ-

१ स्मशानमां स्थविर कल्पानि रवेतुं न घटे माटे तेवा पद जिनकल्पी माटे ना जाणवा एव टीकाकार जणावे छे.

डियाइक्खे ? “आउसंभो गाहावइ? णो खलु ते वयणं आढत्सामि, णो खलु ते वयणं परिजाणेमि, जो तुमं मम अट्टाए असणं वा [४] वत्थंवा [४] पाणाइं वा [४] समारब्बु समुद्धिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसदं अभिहडं आहट्टु वेएसि, आवसहं वा समुस्सिणासि । से विरतो आउसो गाहावती ! एयस्स अकरणयाए । [४०७]

से भिक्खू परक्कमेज्ज वा जाव हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमि-तु गाहावती आयगयाए पेहाए असणं वा (४) वत्थं वा (४) पाणाइं (४) समारंभ जाव आहट्टु वेएति आवसहं वा समुस्सिणाति तं भिक्खू परिघासिउं, तं च भिक्खू जाणेज्जा सह संमइयाए परवागरणेणं अण्णेसिं वा सोच्चा “अयं खलु गाहावती ममट्टाए असणं वा (४) वत्थं वा (४) पाणाइं (४) समारंभ जाव वेएति आवसहं वा समुस्सिणाति” तं च भिक्खू संपडिलेहाए आगमेत्ता २ आणवेज्जा अणासेवणाए-त्ति वेमि । (४०८)

१ संप्रत्याचक्षीत २ ज्ञात्वा.

गृहस्थने आ रीते कहेहुं. “ हे आयुष्यमान् गृहस्थ, हुं तारुं ए वेल्खुं कबुल कर तो नथी अने पाळतो नथी. माटे ज्ञा राहं तुं मारा माटे आरंभादिक करीने व-त्तादिकनी खटपट करे छे अथवा मकान चणावे छे? हे आयुष्यमान् गृहस्थ, हुं ए वावतो न करवाना लीधे तो त्यागी थयो हुं. [४०७]

मुनि स्मशानादिकमां फरतो होय के वाहेर क्यां पण विचरतो होय तेने जोइने ते मुनिने जमाडवा कोइ गृहस्थ पोताना मनमां धारणा राखी ते मुनिना सारु आरंभादिक करीने आहारादिक आपे अथवा मकान चणे, एवामां ते मुनिने पोताना बुद्धिबळे अथवा तीर्थकर देवे वतावेला मार्गथी खबर पडे अथवा ते गृहस्थ ना सगा वहालाना पासेथी सांभळ्याथी खबर पडे के “आ गृहस्थ मारा माटे आहारादिक नीपजावी मने आपया चाहे छे अथवा मकान चणे छे” आम थनां ते मुनिए पूरती तपास करीने ते वावत जाणीने ते गृहस्थने मनाइ पाडवी के हुं आहार के मकान वापरवानो नथी. [४०८]

भिक्षुं च खलु पुट्टा^१ वा अपुट्टा^२ वा जे इमे^३ आहच्च
 गंथा^४ फुसंति^५ से हंता “हणइ खणह^६ छिंदह दहह पयह आलुंपह
 विलुंपह सहसाकरेह विप्परा मुसह” । ते फासे पुट्टो धीरो अहियासए
 अदुवा आयारणोय-माइक्खे तक्कियाण-मणेलिसं^७, अदुवा वइगुत्तीओ
 गोयरस्स अणुपुव्वेण सम्मं पडिलेहाए आयगुत्ते । बुद्धेहिं एयं पवेदितं ।
 (४०९)

से समणुन्ने असमणुन्नस्स^८ असणं वा [४] वत्थं वा [४] नो
 प्राएज्जा नो निमंतेज्जा नो कुज्जा वेयावडियं परं आढायमाणेत्ति बेमि ।
 (४१०)

१ पृष्ठा वा २ अपृष्ठा वा ३ गाथापतयः ४ आहृत्य ढौकयित्वा
 ग्रंथात् महतो द्रव्यव्ययात् ५ उपतापयंति ६ क्षणत ७ अनीदृशं तर्क-
 यित्वा ८ पार्श्वस्थादेः

कोइ गृहस्थो मुनिने पूछी अथवा नहि पूछीने मोडं खरच करी आहारा-
 दिक वनावी मुनि आगळ धरे ते मुनि अशुद्ध जाणी न ल्ये एटले तेओ तपे अने
 कदाच^१ मारे अथवा बोले के “आ साधुने मारो, कूटो, कापो, वाळो, पचावो,
 लूटो, झूटो, पूरुं करी द्यो, वधी रीते सतावो. ” आवा संकटमां आवी पडतां धीर
 मुनिए वधुं सहन करवुं; अथवा पुरुष विशेष विचारीर सरस रीते साधुने आचार
 कही बताववा; अथवा मौन धरी आत्मगुप्त [सदा उपयोगी] थइने गोचरीनी अनु-
 क्रमे रुडी रीते शुद्धि करता रहेवुं. एम ज्ञानिओए कहेलुं छे. [४०९]

संविग्न मुनिए आदरवान थइने असंविग्न पुरुषने आदार तथा वत्तादिक
 आपवां नहि, ते संवंधे मागणी पण न करवी अने तेनुं वेयावृत्य पण न करवुं.
 एम हुं कहुं हुं. [४१०]

१ वखते राजादिक होवारी २ सामा पुरुषना स्वभाव विगरे योग्यतानो
 विचार करी.

धम्म-मायाणह पवेइयं माहणेण मतिमयाः-समणुत्ते समणुत्तरस असणं वा
(४) वत्थं वा (४) पाएज्जा णिमंतेज्जा कुज्जा वेयावडियं परं आढाय-
माणोत्ति बेमि । (४११)

[तृतीय उदेशः]

मज्झिमेणं वयसा एगेसंबुज्झमाणा समुद्धिता । (४१२)

सोच्चा मेधावी वयणं पडियाणं निसामित्ता^१ । (४१३)

समयाए धम्मे आरिएहिं पवादिते । (४१४)

ते अणवकंखमाणा अणतिवाएमाणा अपरिग्गहमाणा णो परि-
णाहावांति^२ सव्वायंति च णं लेगांसि । णिहाय दंडं पाणेहिं पावं कम्मं

१ समता मालंबेत इतिशेषः २ न परिग्रहवंतः

बुद्धिपान् महान महावीर प्रभुए कहेलो धर्म समजो. सविग्ग मुनिए संविग्ग
मुनिने आहारवस्त्रादिक आदरपूर्वक आपवां ते संवंधे निमंत्रण पण करवुं, अने
तेमनी चाकरी पण करवी, अेम हुं कहुंछुं. [४११]

त्रीजो उदेश.

[खोटी शंकातुं निवारण]

मध्यम वयसा केटलाएक जीव श्रित्तोय पापी दीवा ले छे. [४१२]

चतुर पुरुषे पंडितो,ना वचन सांभळी तथा अवधारीने [समता राखवी]
[४१३]

आर्थ तीर्थकरदेवोए समताए धर्म भाष्यो छे. [४१४]

दीक्षित मुनिओ कामभोगनी अभिलाषा छोडीने कोइ जीवनी पण हिंसा
नहि करता थका तथा क्षत्रो पण परिग्रह नहि धारत्र श्रद्धा आस्ता जगतमां निःप

अकुञ्च्यमाणे एस सहं अगंथे वियाहिए, ओए जुतिमस्स खेयन्नः
उववायं चवणं च णच्चा । [४१५]

आहारोवचया देहा, परीसहपभंगुरा । पासहेगे सच्चिदिण्हिं प-
रिगिलायमाणेहिं (४१६)

ओए दयं दयति [४१७]

जे संनिहाणसत्थस्स^४ खेयन्ने से भिक्खू कालण्णे बालण्णे, मायाण्णे,
खणयण्णे विणयण्णे समयण्णे परिगहं अममायमाणे कालेगुद्दइ
अपडिन्ने दुहओ छेत्ता णियाति । [४१८]

तं भिक्खु सीयफासपरिवेचमाणगायं उवसंकमित्तु गाहावई

१ चुतिमतः संयमस्य खेदज्ञोनिपुण इत्यर्थः ४ समयस्य

रिग्रही थाय छे. प्राणिओनी हिंसा छोडीने पापना काम नहि करता थका तेओ
महोदा निर्ग्रथ कहेला छे. एवा मुनिओ रागद्वेप छोडीने ओज एटले एकरूप बन्या
थका संयमना जाणनार थद, देवताओने पण जन्ममरण थतां जाणी पापनो
परिहार करेछे. [४१५]

शरीर आहारथी वये छे ने टके छे, छतां परीपहो [संकटो] आवतां
तेनुं वळ घटे छे. जुओ वणाएक कातर जनो [व्यसनी मनुष्यो—Men whose or-
gans are failing] परिपहोथी सघळी इंद्रियो नरम पडतां असमर्थ बनता रहे छे.
[४१६]

पराक्रमी पुरुषो परीपहो पडतां पण दया छोडता नथी. [४१७]

जे मुनि संयममां कुगळ होय तेज मुनि, काळ^१ वळ माना क्षण विनय
तथा समयना जाय जाणवा. तेवा मुनि परिग्रहनी ममता छोडीने टाइमसर क्रिया-
ओ करता थका अप्रतिज्ञ एटले निदानरहित थइने. रागद्वेप वने वाजु कापता थका
रुडी रीते संयम मार्गमां चाल्या जाय छे. [४१८]

तेवा मुनिनुं शरीर वखते ताठथी धुजतुं देय तेवायां कोइ गृहस्थ कहे

१ काळादि पदेनो अर्थ लोकाविजयना पांचमां उद्देगमां फुटनेोटमां आप्ये
छे.

बूचा :—“ आउसंतो समणा, णो खलु ते गामधम्मा^१ उब्बाहंति ? ”
 “ आउसंतो गाहावद्द, णो खलु मम गामधम्मा उब्बाहंति, सीयफासं
 णो खलु अहं संचाणमि अहियासित्तए । णो खलु मे कप्पति अगणि-
 कायं उज्जालेतए वा पज्जालेतए वा कायं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा,
 अण्णेसिं वा वयणाए । (४१९)

सिया से एवं वदंतरस परो अगणिकायं उज्जालेता पज्जालेत्ता
 कायं आयावेज्जा वा पयावेज्जा वा । तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता
 आणवेज्जा अणासेवणाएत्ति वेमि । (४२०)

[चतुर्थ उद्देशः]

जे भिक्खू तिवत्थेहिं परिवुसिते पायचउत्थेहिं^२ तस्सणं णो एवं

१ विषयाः २ पात्रचतुर्थैः

के “ हे आयुष्यमान् श्रमण तमने काम तो पीडतो नथीने ? ” त्यारे मु-
 निए तेने कहेवुं के “ हे आयुष्यमान् गृहस्थ, मने कंइ काम पीडतो नथी, किं
 तु ताढ वायछे ते हुं सही शकतो नथी, वेथी शरीर कंपे छे ; मारे कंइ अग्नि
 सलगाववो के बाळवो कल्पतो नथी. तेमज तेना पासे शरीरने तगाववुं करवुं अ-
 थवा बीजाने तेम करवा कहेवुं पण कल्पतुं नथी. ” [४१९]

कदाच मुनिए एम कइयाथी गृहस्थ पोते अग्नि सलगावी मुनितुं शरीर
 तषावे तो मुनिए ते संबंधी हकीकत जाणीने तेने मनाइ पाडवी के मारे ए अग्नि
 सेववो युक्त नथी. [४२०]

चौथो उद्देश.

[मुनिए कारणयोगे वेहानसादि वाल मरण पण करवां.]

जे सायुने^१ पात्र अने व्रण वत्त होय तेने एवो विचार न थाय के मारे

१ जिनकल्पीने.

भवति “चउत्थं वत्थं जाइस्सामि”। से^१ अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा,
अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा, नो धोविज्जा, नो रएज्जा, नो धोत्त-
रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा, अपलिउंचमाणे^२ गामंतरेसु, ओमचेलए । एयंखु
वत्थधारिस्स सामग्गियं । (४२१)

अह पुण एवं जाणेज्जा;—उवतिकंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवन्ने
अधापरिजुन्नाइं^४ वत्थाइं परिद्विविज्जा; अदुवा संतरुत्तरे, अदुवा ओमचेले,
अदुवा एगसाडे, अदुवा अचेले, लाघवीयं आगममाणे । तवे से
अभिसमन्नागए भवति। जमेयं भगवया पवेदितं तमेव अभिसमेच्चा
सव्वतो सव्वत्ताए समत्तभेव समभिजाणिया । (४२२)

१ यदिपुनः कल्पत्रयं न स्यात् तदा २ अगोपयन् ३ अपरहेमं-
तस्थीतिसहिष्णूनि तु तानि प्रत्युपेक्षयन् विभर्ति. ४ क्वचित् प्रावृणोति
क्वचित् पार्श्ववर्ति विभर्ति.

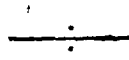
चोथुं वत्थ जोइसे. जो त्रण वत्थ न होय तो सूझतां^१ वत्थ याचवां अने जेवां जडे
तेवां पहेरवां, वत्थ धोवां के रंगवां नहि^२, धोएलां के रंगेलां पहेरवां नहि, गामांतरे
जतां वत्थ संताडवा नहि^३ अने ए रीते हळकां वत्थ राखवां. ए वत्थधारी मुनिनो
आचार छे. [४२१]

हवे ज्यार मुनि एस जाणेके शीयालो गयो हवे ऊनाळो वेठो त्यारे जूना-
जूनां वत्थ परठवी नाखवां^४ अथवा (वत्थते उनाळामां पण क्षेत्रादियोगे ताढनो सं-
भव होय तो] केइ वत्थते पासे राखवां अथवा त्रणमांथी एक परठवी दइ वे
पहेरवां अथवा वे परठवी एक पहेरवुं अथवा ताढ टळता वधां छांडवां. कारण के
ए रीते उपकरणहुं लाघव [ओछापणुं] प्राप्त थाय छे. आम करतां तप करेहुं
गणाय छे. जे ए वत्थुं भगवाने भाष्युं तेनेज जाणीने वत्थसहितपणावां तथा वत्थ-
हितपणामां जेम वने तेम सरखापणुंज जाणता रह्वे^५. [४२२]

१ सावुने लेवा घटे एवा. २ स्थविरकल्पी वर्षादि कारणे वत्थ धुम् खरा-
जिनकल्पी न धुए. ३ अर्थात् संताडवानी जरूर न पटे एवां हळकां वत्थ
पहेरवा ४ छांडी आपवां.

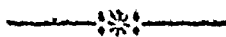
जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति पुट्ठो खलु अहमंसि, नाल
महमंसि सीयफासं अहियासित्तए, से वसुमं सव्वसमण्णागयपन्नाणेणं
अप्पाणेणं केइ अकरणाए आवट्ठे, तवस्सिणो हु तं सेयं जं सेगे विह
मादिए^१ । तत्थवि तस्स कालपरियाए । सेवि^२ तत्थ विअंतिकारए^३ ।
इच्चेतं विमोहायतणं हियं सुह खमं णिस्सेयसं आणुगामियं त्ति बेमि ।

४२३)



१ आदद्यात् २ वेहानसमरणकर्त्तापि ३ व्यंतिकारकाऽतः क्रियाकारकः

जे साधुना मनमां एवो विचार उपजे के “ हुं उपसर्गमां सपढायोहुं,
हुं शीतादिक^१ उपसर्ग स्वमी शकतो नथी ? ” त्यारे ते संयमी साधुए जेय वने
तेम समजवान थइने अकार्यमां^२ प्रवृत्ति न करतां वेहानसादिक^३ मरणे
मरवुं उत्तम छे. त्यां पण तेनो कालपर्यायज छे (एटले जेम भक्तपरिज्ञादिक^४
कालपर्यायवाला^५ मरण हित कर्त्ता छे तेम ए वेहानसादि मरण पण हितक-
र्त्ताज छे.] तेवी रीते मरनारा पण मुक्तिए जाय. छे. ए रीते ए वेहान-
सादिक मरण पण मोहरहित पुरुषोत्तुं कृत्य छे, हितकर्त्ता छे, सुख कर्त्ता
छे, वाजवी छे, कर्म खपावनार छे, अने भवांतरे तेतुं पुण्य चाली शके
छे. [४२३]



१ आदिशब्दे स्त्री वगैरेना उपसर्गो लेवा. २ मंथुनादिकमां. ३ वेहानस
मरण एटले आकाशमां चाली मरवुं. आदि शब्दयी झंपापात विगैरे मरण लेवा.
४ भक्त एटले भोजन तेनी परिज्ञा एटले त्याग तेणे करी मरवुं एटले अणस्तण्णी
मरवुं ते विगैरे. ५ वस्त्रतना अनुक्रमवाला.

करणाए^१ । (४२७)

आहद्दु परिन्नं^२, आणक्खेस्सामि^३, आहडं च सातिज्जिस्सामि
 (१) आहद्दु परिन्नं, आणक्खेस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि (२)
 आहद्दु परिन्नं, णो आणक्खेस्सामि, आहडं च सातिज्जिस्सामि (३)
 आहद्दु परिणं णो आणक्खेस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि (४)
 एवं से अहाकिट्ठिय-मेव धम्मं समहिजाणमाणे संते विरते सुसमाहितलेसे
 । तत्थवि तरस कालपरियाए । से तत्थ विअंतिकारए । इच्चेतं विमोहाय-
 तणं हितं सुहं खमं णिस्सेयसं आणुगामियं-ति बेमि । (४२८)

१ करणाय—तदुपकाराय (स भिक्षुः प्रकल्पं पालयन् भक्तपरिज्ञया
 प्राप्नानपि जहात् नपुनः प्रकल्पं खंडयेदिति शेषः) २ परिज्ञां ३ अन्वे-
 षयिष्यामि.

[तेवा मुनिए ए पोतानो आचार पाळतां भक्तपरिज्ञा नामना मरणे करीने प्राण
 जवा देवा पण आचार खंडवो नहि.] [४२७]

[चउभंगी] हुं वीजाने माटे लावीश, वीजानुं लाव्युं पण खाइश. [१] हुं
 बीजा माटे लावीश पण वीजानुं लाव्युं नहि खाडं [२] हुं वीजा माटे नहि ला-
 वीश, पण वीजाए आणोळुं खाइश. [३] हुं वीजा माटे पण नहि लावीश, वी-
 जानुं लाव्युं पण नहि खाइश. [४] आ रीते जेम प्रतिज्ञा लीधी हाये तेमज
 क्हा मुजव धर्मेने पाळतो थको संकट पडतां शांत अने विरत वनी सारी ले.
 श्याओ धरतो थको मुनि (अणसण करे) पण प्रतिज्ञा-भंग न करे. तेम करतां
 पण तेनो काळपर्याय^१ छे. ते मुनि त्यां कर्मसयनो करनार छे. ए रीते ए वि-
 भेदी पुरुषोनुं स्थान छे, हितकर्त्ता छे, सुख कर्त्ता छे, वाजवी छे, कर्म खपावनार
 छे अने एनुं सुकृत भवांतरे पण चाले छे, [४२८]

^१ काळपर्याय पडले चार वर्षानी संश्लेषनःशी शरीर घसवी अणसण करवंते.

[षष्ठ उद्देशः]

जे भिक्खू एणेण वत्येण परिवुसिते पायवितिण्ण, तस्स णो एवं भवइ, “वितियं वत्य जाइस्सामि” । से अहेसणिज्जं वत्य जाएज्जा, अघापरिग्गहियं वा वत्यं धारेज्जा । जाव गिम्हे पडिवन्ने, अघापरिजुत्तं वत्यं परिट्टवेज्जा । अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले लाघवियं आगममाणे । तवे से अभिसन्नागए भवइ । जहेयं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमेच्चा सव्वओ सव्वत्ताए समत्तमेव समभिजाणिया । (४२९)

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, असणंवा (४) आहारेमाणे णो वामाओ हणुयाओ दाहिणं हणुयं संचारेज्जा आस्ताएमाणे, दाहिणाओ वा

छठो उद्देश.

[धैर्यवन्त मुनि ए इंगित मरण^१ करवुं.]

जे साहु पासे पात्रा साये मात्र एकज वत्त होय,^३ तेने एम चिंता नहि घवानी के हुं बीजुं वत्त माणीन. ते मुनि ययायोग्य वत्त याचे, अने जेहुं मळे तेहुं पहेरे; ऊनाओ आवतां ते परिजीर्ण वत्त परठवी थे; अथवा ते एक वत्त पहेरे पण अंते छांडी करीने वत्त रहित यइ निश्चित थाय एम ऊर्यार्थी तेने वन प्राप्त थाय छे. माटे जेम भगवाने भाण्युं तेनेज जाणी करीने जेम वने तेम समपणुं समजता रहेवुं. [४२९]

साहु अथवा साव्वाए, असनादिक आहार करतां स्वाद मेळववा माटे ते आहारने डावा गाल्यी जमणा गाले न लाववुं अने जमणार्थी डावे न लाववुं. आम स्वाद नहि लेवार्थी घणी पंचात ओळी घवानी, तथा तप पण प्राप्त थाय छे. माटे जेम भगवाने कहुं छे तेनेज जाणीने जेम वने तेम समपणुं जाणता रहेवुं.

१ इंगित एटले सांकेतिक एटले के आटला प्रेदशमांज मारे इरवु फरवुं एता ट्राववारुं अगसण करीने शरीर छांडवुं ते इंगित मरण कहैजाय. २ तेचो अभिग्रह लीयेळ होवार्थी.

हणुयाऔ वामं हणुयं णो संचारेज्जा आसाएमाणे । से अणासायमाणे
लाघवियं आगममाणे । तवे से अमिसमन्नागए भवइ । जहेयं भगवता
पवेइय्ये तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वताए समत्त—मेव समभिज्जाणिया।
(४३०)

जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति;—से गिलाणामि च खलु अहं
इमंमि समए इमं सरीरगं अणुपुव्वेण परिवहित्तए, से अणुपुव्वेणं आहारं
संवद्वेज्जा । आहारं अणुपुव्वेण संवदित्ता कसाए पयणू किच्चा समाहियं-
च्चे फलगावयद्वी उट्ठाय भिक्खू अभिनिव्वुडच्चे, अणुपचिसित्ता गामं
वा, णगरं^१ वा, खेडं^२ वा, कव्वडं^३ वा, मडंबं^४ वा, पट्ठणं^५ वा, दोणमुहं^६

१ कररहितं २ धूलिप्राकारवेष्टितं ३ क्षुल्लकप्राकारवेष्टितं ४ अ-
र्द्धतृतीयगव्यूतांतर्ग्रामरहितं ५ जळस्थळ भेदभिन्नद्विविधं ६ जळस्थळनि-
र्गमप्रवेशं

[४३०]

जे मुनिनो एवो अभिप्राय थाय के हुं आ वखतमां^१ हवे आ शरीरने
क्रियानां^२ क्रममां धरतां थकां अशक्त थाऊं हुं, ते मुनिएं अनुक्रमे^३ आहारने
घटाडवो, अने तेम करीने कपायो पातला करी शरीरथी यता व्यापारो नियमीने
फळकनी^४ माफक रहेता थकां रोगादिक आवीं पडतां तैयार थइ शरीरना संताप
थी रहित थइ धैर्यधरी इंगित मरण करवुं. ते आ रीते के गाम, नगर, खेडुं-
कंसवो, प्रगणो, पाटण, धेंदर, आगर, आश्रम, यात्रास्थळ, व्यापारस्थळ, के रा-

१ रोगादिक धवायी अथवा लुखा आहारथी शरीर क्षीण थइ जवायी,
२ आवश्यकतादिक क्रियाओमां ३ छट अग्रमादिक्रमे, नहि के वार वर्षनी संलेख-
नाना क्रमे, कारण के मांडुं माणस कंड तेटलो वखत टकी शके नहि, ४ जेम
फळक [पाथीयुं] कपातां घडातां वधुं सहन करे तेम वधुं सहन करतां थकां

वा, आगरं^१ वा, आसमं^२ वा, संपिनेसं^३ वा, णिगमं^४ वा, रायधाणिं वा,
तणाइं जाएज्जा । तणाइ जाइत्ता से तं—मायाए एगंत—मवक्कमिज्जा ।
एगंत मवक्कमिच्चा अप्पंडे अप्पपाणे अप्पबीए अप्पहरए अप्पोसै अप्पोदए
अप्पुत्तिंग पणय-दग्ग-मट्टिय-मक्कडासंताणए पडिलेहिय [२] पमज्जिय [२]
तणाइं संधरेज्जा । तणाइं संधरेत्ता एत्थवि समए इत्तरियं कुज्जा ।
[४३१]

तं सच्चं सच्चवादी ओए तिण्णे छिण्णकहंकहे आतीतट्ठे अणातीते,
चेच्चाण भिउरं कायं, संविहूणिय विरूवरूवे परीसहोवसग्गे; अस्सि वि—
संभण्याए, भेरव—मणुच्चिन्ने । तत्थवि तस्स कालपरियाए । सेवि तत्थ
वियंतिकारए इच्चेतं । विमोहाययणं हितं सुहं खेमं णिस्सेयसं आणुगामि-

१ स्वर्णाकरादि २ तापसावसथः ३ यात्रागतजनावासः ४
प्रभूततरवणिग्वर्गावसथः

जधानीमां जइने दर्भे विगेरे तणखला मागी आववां. ते लइने एकांत स्थळमां
जवुं. त्यां जइ, कीडिओनां इंडा, जीवजंतु, वीज, वनस्पति, झाकळ, पाणी,
कीडिओना नागरा,^१ लीलफुल, लीली माटी, तथा करोळिआथी रहित जमीनने
रुडी रीते जोइ पुंजी प्रमाजीं, दर्भे पाथरवा. अने त्यां एवे वरवते इत्वरिक^२ एटले
पादपोपगम मरणना हिशावे थोडी मुश्केलीवाळुं इंगित मरण करवु. [४३१]

सत्यवादी पराक्रमी, संसारनो पार पामेल, “ केम करीश ” एवी वीकथी
रहित, रुडी रीते वस्तुस्वरूपने जाणनार, संसारमां नहि फसेल, मुनि जिनप्रवचन-
ना विश्वासथी भयंकर परीपह तथा उपसर्ग अवगणीने आ विनश्वर शरीरने छां-
डतां थकां खरेखरुं सत्य अने दुक्कर काम वजावे छे. आम करतां पण तेनो काळ-
पर्याय [संलेखना] ज गणाय छे, ते मुनि आ स्थळे पण अंताक्रिया करे छे. ए री-
ते ए इंगित मरण विमोही पुरुषोतुं स्यान छे, हितकर्त्ता छे, सुखकर्त्ता छे, वाजवी

? दरकीडीयारां २ अर्दी सागारी अणसण न लेवुं केमके ते जिनकलीने न संभवे.

यं—ति चेमि । (४३२)

—१०—

[सप्तम उद्देशः]

जे भिक्खू अचेले परिवुसिते. तस्स णं एवं भवति, चाणुमि^१ अहं तणफासं अहियासित्तए, सीयंफासं अहियासित्तए, तेउफासं अहियासित्तए, दंसमसगफासं अहियासित्तए, एगतरे अन्नतरे विरूवरूवे फासे अहियासित्तए; हिरिपडिच्छादणं च णो संचाणुमि अहियासित्तए^२ एवं स कप्पति कडिबंधणं धारित्तए । (४३३)

अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसंती, सीयंफासा फुसंति, तेउफासा फुसंति, दंसमसगफासा फुसंति, एगयरे अन्नयरे विरूवरूवे फासे अहियासेति अचेले लाघवियं आगममाणे । तवे से अभिसमन्नागए भवति । जहेतं भगवया पवेदियं तमेव अभिसमेच्चा

१ शक्नोमि २ हीप्रच्छादनं त्यक्तुं न शक्नोमि.

छे, कर्म खपावनार छे अने भवांतरे एतुं सुकृत साथे चाले छे [४३२]

सातमो उद्देश.

[पादपोपगमन मरण.]

जे साधु वत्तरहित [दिगंबर] होय, तेने एतुं थसे के हुं घासनो स्पर्श खमी शकुंछुं, ताप खमी शकुंछुं, दंस के मशकनो^१ उपद्रव खमी शकुंछुं अने बीजा पण अनुकूल प्रतिकूल परीपह खमी शकुंछुं; पण नग्न रहेतां लज्जा परीपह खमी शक्तो नथी, ते साधुए कटिवंध वस्त्र [चोलपट्ट^२ राखवुं.] [४३३]

जो लज्जा जीती शकाती होयतो अचेल [वस्त्र रहित] ज रहेवुं. तेम रहेतां

१ मच्छर २ चरोटो [अपभ्रंश]

सव्वओ सव्वत्ताए समत्त—मेव समभिजाणिन्त्या । (४३४)

जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति;—अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा [४] आहट्ठु दलइस्सामि, आहडं च सातिज्जिस्सामि [१] जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति;—अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा० आहट्ठु दलइस्सामि आहडं च णो सातिज्जिस्सामि [२] जरसणं भिक्खुस्स एवं भवति;—अहं च खलु असणं वा० आहट्ठु नो दलइस्सामि आहडं च सातिज्जिस्सामि [३] जरसणं भिक्खुस्स एवं भवति;—अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं असणं वा० आहट्ठु नो दलइस्सामि आहडं च णो सातिज्जिस्सामि (४)—अहं च खलु तेण अघातिरित्तेणं अधेसणिज्जेणं अघापरिग्गहिणुणं असणेणं वा० अभिकंख साहम्मियस्स कुज्जा

वृणस्पर्श, ताड, ताप, देशमशक, तथा बीजा पण अनेक अनुकूल प्रतिकूल परीषद् आवे ते सहन करवा. एम कर्याथी लाघव [अल्पचिंता] प्राप्त थाय छे, अने तप पण प्राप्त थाय छे. माटे जेम भगवाने कहुं छे तेनेज जाणी जेम वने तेप समपणुं जाणता र्हेवुं. [४३४]

[चउभंगी] जे साधुना मनने एम थाय के हुं बीजा साधुने आहारादिक लावी आपीश, अने हुं पण बीजातुं लइश [१]; अथवा लावी आपीश पण लइश नहि [२]; अथवा हुं नहि लावी आपुं पण लावेतुं लइश. [३] अथवा हुं बीजा माटे लावीश पण नहि अने लइश पण नहि. [४] [ए रीते चउभंगीथी प्रतिज्ञा करे अथवा आ प्रमाणे छूटी प्रतिज्ञा करे के] मारे मारा खपथी वधेला यथायोग्य जेवा मळेल तेवा आहारादिकथी निर्जराना अर्थे साधर्मि मुनिनुं उपकारार्थे वैयावृत्त्य करवुं. अथवा मारुं कोइ तेवी रीते आहारादिक आपी वैयावृत्त्य करे ते स्वीकारीश. जे माटे एवी प्रतिप्राथी लाघव प्राप्त थायछे. तप प्राप्त थायछे. माटे जेम भगवाने

कसाए पयणुए किच्चा, अप्पाहारो तितिवखए;
 अहभिकंखू गिलाएज्जा, आहारस्सेव अतियं ।३। (४४०)
 जीवियं णाभिकंखेज्जा, मरणं णावि पत्यए;
 दुहतोवि ण सज्जेज्जा, जीविते मरणे तहा ।४।
 मज्जत्थो णिज्जरापेही, समाहि-मणुपालए;
 अंतोबहिं विउस्सज्ज, अज्झत्थं मुद्ध-मैसए ।५। (४४१)
 जं किंचि बक्कमे जाणे, आउक्खेमस्स अप्पणो;
 तस्सेव अंतरच्चाए, खिप्पं सिक्खेज्ज पंडिए ।६। (४४२)
 गामे वा अदुवा रण्णे, थंडिलं पडिलेहिया;
 अप्पपाणं तु विच्चाय, तणाइं संथरे मुणी ।७। (४४३)

कपाय पातला करी आहार गटावी [संकट] सहन करतो थका जो साधु
 वादाच आहार विना बहु ज मुंझाय तो तदन आहारनो त्याग करी अणसण करे
 अथवा समाधि राखवा माटे थोडो वखत आहार लइ पछी संलेखणा चलावे.
 (४४०)

मुनिए अणसण करतां जीवतुं पण न इच्छतुं तेम मरतुं पण न इच्छतुं.
 जीवित अने मरण ए वन्नेमां आशा न वांधवी. किंतु समभावी थइ निर्जरानी
 इच्छा धरतां थकां समाधि पाळ्या करवी. अंदरना [कपाय] अने बाहेरना (शरीरा-
 दिक) छोडीने पवित्र अंतःकरण (राखवा) चहातुं. [४४१]

(ओचित्यो कंइ रोग उत्पन्न थाय तो समाधिने इच्छता मुनिए) पोताना
 पाळवाना जे उपाय मालम होय ते उपाय अणसणना अंदर करी लइ
 समाधि मेळवी पाछी पण संलेखणा करवी. [४४२]

गामयां अथवा अरण्यमां स्यंडिल^१ तपाशीने तेने जीवजंतु रहित जाणीने
 दांदां दर्भादि तृणोथी त्यां संधारो पाधरवा. [४४३]

अणाहारो तुअद्वेज्जा, पुट्ठो तत्थ हियासए;
 णातिवेलं उवचरे, माणुस्सेहिं वि पुट्ठए । ८ । [४४४]
 संपप्फगा य जे पाणा, जे उ उड्ढु—सहे—चरा;
 भुंजंते मंससोणीतं, ण छणे ण पमज्जए । ९ । [४४५]
 पाणा देहं विहिंसंति, ठाणातो ण विउब्भमे;
 आसवेहिं विवित्तेहिं, तिप्पमाणो हियासए । १० ।
 गंथेहिं विवित्तेहिं, आउकालस्स पारए; [४४६]
 पग्गाहिअतरगं^१ चेयं, दवियस्स वियाणतो । ११ । [४४७]
 अयं से अवरे धस्से, णायपुत्तेण साहिए;

१ इत्त इंगितमरणसूत्रं. प्रगृहीततरकं श्रेष्ठतरामित्यर्थः

ते संथारा पर आहार त्याग करी (अणसण करी) मुनिए शयन करवुं.
 अणसणमां जे परीषह के उपसर्ग [दुःख तथा संकट] ऊपजे ते सहन करवां. वोइ
 मनुष्यो तरफथी उपसर्ग थाय तो मर्यादा उल्लंघनी नाहे. (आर्त्तध्यानमां नो
 पडवुं.) [४४४]

फरता जंतुओ^१ पक्षिओ^२, रार्पादि जंतुओ, मांसभक्षी प्राणीओ^३, अने
 रक्तभक्षी प्राणिओ^४ अणसणमां रहेल मुनिने उपद्रव करे तो मुनिए हाथ विगेरेथी
 तेमने मारवुं नहि अने रजोहरणादिकथी शरीरने प्रमार्जवुं पण नहि. [४४५]

जंतुओ मारुं शरीर खाए छे पण घारा गुणो नथी खाता, एम विचारि
 मुनिए ते ठेकाणैथी ऊठी वीजे स्थळे न जवुं, आश्रमो^५ छांडीने आनंदमां रीते
 सर्व सहन करवुं. वळी जूदा जूदा शास्त्रोने सांभलतां अथवा जूदी जूदी जातनो
 परिग्रह छांडतां पोतानुं आयुष्य पूरुं करवु. [४४६]

हवे जे संयमी मुनि गीतार्थ^६ होय तेवा मुनि इंगितमरण नामनुं अणसण
 करे छे. ते अणसण घणी काठिन रीते लेवाय छे. (४४७)

१ कीडिओ प्रमुख. २ गीधविगेरे ३ सिंहादि ४ मछर जेवा. ५ कपाय
 विगेरे पापना हेतुओ. ६ जघन्यथी पण नवपूर्वी होवा जोइए.

आयवज्जं पडीयारं विजहेज्जा तिहा तिहा । १२ । [४४८]
 हरिएसु ण णिवज्जेज्जा, थंडिलं मुणिआ^१ सए;
 विउस्सज्ज अणाहारो, पुट्ठो तत्थ हियासए । १३ । (४४९)
 इंदिएहिं गिलायंते, समियं आहरे मुणी;
 तहावि से अगारहे, अचले जे समा हिए । १४ । ४(५०)
 अभिक्कमे षडिक्कमे, संकुचए पसारए;
 कायसाहारणट्टाए, इत्थंवावि अचेयणे । १५ । (४५१)
 परिक्कमे परिकिलंते, अदुवा चिट्ठे अहायते; ^२
 ठाणेण परिकिलंते, णिसिएज्जा य अंतसो । १६ । (४५२)

१ ज्ञात्वा २ यथायतः

ए अणसणमाटे ज्ञातपुत्र वीर प्रभुए एम कहेलुं छे के ते अणसणसंस्थित मुनिए जाते ज उद्धर्त्तनादि^१ क्रियाओ करवी वीजा पासे त्रिविधे त्रिषिधे न कराववी. (४४८)

लीलेतरिवाळी जग्यामां न सूवं किंतु निर्जीव स्थंडिलमां शयन करवुं आहारने त्यागीने जे उपसर्गो थता रहे ते सहन करवा. (४४९)

वळी इंद्रियो^२ बहु अकडाय त्यारे ते इंद्रियाने हेरवी फेरवीने आत्माने समाधिमां राखवो. कारण क जेम तेम करतां पण जे समाधिवंत रहे छे ते पवित्र अने अचल कहेलो छे. [४५०]

ए अणसणमां नियमित करेली भूमिमां शरीरना सहज टकाव माटे जवुं आववुं, वेसवुं, चरणादिक पसारवा धरोरा क्रियाओ करी शकाय छे, अने जो कोइ समर्थ मुनि होय तो तेणे अचेतन (निर्जीव वस्तु) माफक अडंगज थइ रहेवुं. [४५१]

पण तेम नाहि करी शकता मुनिए वेशी वेशी थाकी जतां (समाधिना आर्थे)] हरवुं फरवुं, अथवा हरतां फरतां थाकेला मुनिए यतनापूर्वक वेसवुं, अने ये सवायी थाकी जतां शयन पण करवुं. [४५२]

१ उद्धर्त्तन-ऊठवुं, परिवर्त्तन-पासुं फेरवुं, उच्चार. खरचु जवुं, प्रश्रवण-पिगाव करवा जवुं, इत्यादि क्रियाओ. २ करचरणादिक.

आसीणे णेलिसं मरणं, इंदियाणि समीरए;
 कोलावासं समासज्ज, वितहं पादुरेसए^१ ।१७। [४५३]
 जओ वज्जं समुप्पज्जे, ण तत्थ अवलंबए;
 ततो उक्कसे अपाणं, सव्वे फासे अहियासए ।१८। [४५४]
 अयं^२ चायततरे सिया, जो एवं अणुपाळए;
 सव्वगायणिरोधेवि, ठाणातो ण विउब्भमे ।१९। [४५५]
 अयं से डत्तमे धम्मे, पुवट्ठाणस्स पग्गहे;
 आचरं पडिलेहित्ता, विहो^३ चिट्ठु माहणे ।२०। [४५६]
 अचित्तं तु समासज्ज, ठावएतत्थ अप्पयं;
 वेसिरे सव्वसो कायं, ण मे देहे परीसहा ।२१। (४५७)

१ गवेषयेत् २ पादपोषणमरणविधिः ३ अनुपालयेदित्यर्थः कार्यः

आवा अणसणमां उजमाल थएला मुनिए पोतानी इंद्रियो तेमना विषयोथी
 खूब खेंची लेवी. अवष्टंभना माटे (अढेलवा माटे) जे मुनिओ पोतानी पौठ पा-
 छल पाटिउं राखे छे ते सुषिर होय तो ते बदलावी वीजुं लेवुं. (४५३)

कारण के जेथी पाप उत्पन्न थाय तेनुं अवलंबन न करवुं. माटे सर्व सदोष
 योगोथी आत्माने दुर करीने सर्व परीषह तथा उपसर्ग सहेवा. (४५४)

(हवे पादपोषण अणसण कहे छे) जे मुनि सर्व शरीर अकडातां पण
 जे स्थानमां अणसण करेलुं होय ते स्थानथी लवलेष पण न डगे अने ए रीते जे पा-
 दपोषण अणसण पाळे ते सर्वथी अधिक काम जाणवुं. [४५५]

आ अणसण सर्वथी उत्तम छे, कारण के ए पेहेला बत्तावेला भक्तपरिज्ञा
 तथा इंगितमरण ए वन्ने अणसणोथी मुश्केल छे. [एनी विधि आ रीते छे] अचिर
 एटले निर्जीव भूमि तपाशीने त्यां वेशीने ए अणसण आदरवुं. (४५६)

मतलब ए के अचित्त स्थंडिल अथवा फळक मेळवीने त्यां पोते स्थित थवुं,
 अने आखा शरीरने बोसराववुं. [पछी परीषह के उपसर्ग थाय तो विचारवुं के]
 मारा शरीरमां परीषह छे ज नहि. [शरीर ऊं मांसं नथी त्यारे तेना परीषह ते
 मारे शेना होय] (४५७)

जावज्जविं परीसहा, उवसग्गा इति संखया;
 संवुडे देहभेयाए, इतिपन्ने धियासए ।२२। [४५८]
 भिउरेसु न रज्जेज्जा, कामेसु बहुतरसु वि;
 इच्छालोभं ण सेवेज्ज, धुवं वन्नं सपेहिया ।२३। (४५९)
 सासएहिं णिमंतेज्जा दिव्वमायं ण सहहे;
 तं पडिबुद्धं माहणे, सव्वं नूमं विधूणिया ।२४। (४६०)
 सव्वदेहं अमुच्छिण्ण, आउकालस्स पारए;
 तितिकखं परमं णच्चा, विमाहन्नतरं हितं-ति वेमि ।२५।
 (४६१)

१ (उपसंहारसूत्रं)

बली विचारवृत्तं के ज्यां लगी जीर्वाश त्यां लगी परीपहोपसर्ग सहेवाना छे एम धारीने “मैं शरीरथी जूदो थवा माटे ज शरीरको त्याग करेलो छे ? ” एम विचारी पंडित मुनिए सर्व परीपहोपसर्ग सहन करवा. (४५८)

बली आवे बखते कदाच कोइ राजादिक त्यां आवी अनेक लालचो वतावे मुनिनुं मन डगावे तो पण मुनिए ते क्षणभंगुर शब्दादिक विषयोमां राम करवो नहि. सदा स्थिर रहेनारी यशकीर्ति विचारिने मुनिए इच्छालोभ एटले “ हुं चक्रवर्ती थाउं ” ए विधेरे निदान न करवा. [४५९]

बली कोइ कदाच शाश्वत एटले अनर्गल द्रव्यथी मुनिने निमंत्रणा करे तो मुनिए चितवृत्तं के मारुं-गीरि ज शाश्वत नथी माटे ए द्रव्य शाश्वत शी रीते वने. ” बली कोइ देवता आवी माया वतावे तो ते पण मानवी नहि ; किंतु सर्व जजाळ दूर करिने हे मुनि, तुं समज के ए नकी देवमायाज छे. [४६०]

ए रीते सर्व विषयोमां अमूर्च्छित थइने मुनिए आयुकाळना पारंगामी वृत्तं [उपसंहार] ए रीते ए त्रणे मरणोमां उत्कृष्ट तितित्वा [सहनशीलता] रहेली होवाथी स्वप्रोत्पत्तालुसारे. नवे ते मरण कल्याणकर्ता छे (४६१)

उपधानश्रुताख्य नवम मध्ययनम्

[प्रथम उद्देशः]

अहासुयं वदिस्सामि, जहा से समणे भगवं उट्ठाय;
 संखाय^१ तंसि हेमंते, अहुणापव्वइए रीयत्था^२ ।१। ४६२)
 गोचेविमेण^३ वत्थेण, पिहिस्सामि तंसि हेमंते;
 से पारए आवकहाए, एयं^४ खु अणुधम्मियं तस्स ।२।
 (४६३)

१ ज्ञात्वा २ रीयतेस्म-विजहार इत्यर्थः ३ नचैवानेन ४ वस्त्रधारणं

अध्ययन नवसुं.

उपधानश्रुता.

— ≡ : ० : ≡ —

पहेलो उद्देश.

(महावीर स्वाधिनो विहार)

(हे जेवू,) में जेम सांभव्युं छे तेम कहुं हूं के श्रमण भगवान [महावीरे]
 दीक्षा लइने हेमंत रतुमां तरतज विहार कर्यो. [४६२]

(तेमने इंद्रे एक देवदूष्य वत्त आपेळुं हतुं पण) भगवाने नथी विचार्युं
 के ए दइने हूं शियाळामां पहेरीअ. ते भगवान तो जीवितपर्यंत परीषहोना स-
 हनार हता. मात्र वधा तीर्थकरोना रिवाजने अनुसरीने तेमणे [इंद्रे आपेळुं]
 वत्त धर्युं हतुं, [४६३]

चत्तारी साहिए मासे, बहवे पाणजाइया आगम्म,
अभिरुज्झ कायं विहरिसु, आरुहिया^१ णं तत्थ हिंसिसु ।३।

(४६४)

संवच्छरं साहियं मास, जं ण रिक्कासि^२ वत्थगं भगवं,
अचेळए ततो चाई, तं वोसज्ज वत्थं-मणगारे ।४। (४६५)

अदु^३ पोरिसिं^४ तिरियभित्तिं, चक्खु-मासज्ज^५ अंतसो ज्ञाति^६;
अह चक्खुभीया^७ सहिया^८ ते^९, हंता हंता १०-बहवे कंदिसु
।५। (४६६)

सयणेहिं^{११} वितिमिसेहिं, इत्थीओ तत्थ-से-परिन्नाय;

१ आरुह्य २ क्तयत्वान्, ३ अथ ४ पुरुषप्रमाणवीथिं ५ सावधानोभूत्वा
६ ध्यायति ७ दर्शनभीताः ८ संहिता मिलिताः ९ डिंभाः १० हत्वा
हत्वा ११ शयनेषु—वसन्निषु

[भगवानना शरीरे दीक्षा लेती वखते पुष्कळ सुगंधि वासक्षेप वर्षे लो हो-
वार्थी] चार महिना लगी घणा भ्रमरादिक जंतुओ तेमना शरीरने वलगता हता
अने मांस तथा लोही चूसता हता. [४६४]

भगवाने लगभग तेर महिना लगी ते [इंद्रे दीधेलुं] वस्त्र संकथपर धर्युं हतुं.
पछी ते वस्त्र छांडीने भगवान वस्त्ररहित अणगार थया [४६५].

भगवान सावधान थइ पुरुषप्रमाण मार्गने इयासामितिथी शोधीने चालता
हता. आ वखते माना वाळको तेमने देखी भयभ्रांत थइ एकठा मळी तेमने
लाठमूठ^१ वगेरेथी मारता मारता रडवा लागता. [४६६]

वळी भगवान, गृहस्थ अने तीर्थकरोथी सेळभेळ धएली वस्तिर्मा रहेता
त्यारे जो स्त्रिओ तेमने प्रार्थना करती तो ते भगवान ते स्त्रिओने शुभमार्गनी
अर्गळाओ^२ गर्णाने तेमनो परिहार करता थका मैथुन नहि सेवता. ए रीते तेओ

१ लाकडी-मुठी २ आगळिया रूप—विघ्न करनार.

सागारियं ण सेवइ, इति से सयं पवेसिया^१ ज्ञाति ।६।

(४६७)

जे केइ इमे अगारत्था, मीसीभावं पहाय से ज्ञाति;

पुट्ठोवि णाभिभासिंसु, गच्छति णाइवत्तती अंजू ।७। (४६८)

णो सुगर—मेत—मेगेसिं, णा भिभासे अभिवायमाणे;

हयपुच्चो तत्थ दंडेहिं, लूसियपुच्चो^२ अपुत्तेहिं ।८। (४६९)

फरुसाइं दुत्तितिक्खाइं, अतिअच्च^३ मुणी परक्कममाणे;

आघयणहगीताइं, दंडजुज्झाइं मुट्ठिजुज्झाइं ।९। (४७०)

गढिए मिहोकहासु, समयंमि णायपुत्ते विसोगे अदक्खू;

१ आत्मानं वैराग्यमार्गेप्रविश्य. २ हिंसितपूर्वः ३ अतिगत्य

पेते पोताना आत्माने वैराग्यमार्गमां लावीने धर्मध्यान ध्याता हता. [४६७]

भगवान्, गृहस्थो साथे हळवुं मळवुं छोडीने ध्याननिमग्न रहेता. गृहस्थो कंइ पूछता तो तेमना साथे ए वखते भगवान् बोलता नहि पण पोतानुं हित संपादन करवा चाल्या जता हता. सरल स्वभावी भगवान् ए रीते मोक्ष मार्गने अनुदर्शता हता. [४६८]

भगवान्ने कोइ बखाणता तो तेना साथे पण कशुं बोलता नहि, तेमज जे पुण्यहीन अनार्यो तेमने दंडादिकथी मारता के बाळ खेंचाने दुःख देता तेमना तरफ कोप करता नहि. [एवुं प्रवर्चन खरे एवा महापुरुषो ज करी शके छे. प्राकृत जनोथी एम वर्तवुं मुश्केल छे.] [४६९]

बळी भगवान्, नहि खमी शकाय एवा कठोर परीषहोनी कशी दरकार नहि करता अने लोकोथी थवा नृत्य के गीतमां राग नहि धरतां; तथा दंडयुद्ध के मुष्टियुद्धनी वातो सांभली उत्सुक नहि बनता. [४७०]

कोइ वखते ज्ञातनंदन भगवान्, स्त्रीओने परस्परनी कामकथामां तल्लीन थएली जोता तो त्यां रागद्वेषरहित मध्यस्थपणे रहेता. ए रीते एवा जवरजस्त संकटो पर कशुं पण लक्ष नहि आपतां ज्ञातपुत्र भगवान् संयममां प्रवर्च्या जता

एताइं सो उरालाइं, गच्छति णाच्यपुत्ते असरणाए । १०।
 अवि साहिए दुवासे सीतोदं अभोच्चा णिक्खंतै;
 एगत्तगाए पिहियच्चे, से अहिन्नायदंसणे संते । ११। (४७२)
 पुढविं च आउक्कायं, तेउक्कायं च वाउक्कायं च;
 पणगाय बीयहरियाइं, तसकायं च सव्वसो णच्चा । १२।
 “एयाइं संति” पडिलेह, चित्तमंताइं से अभिन्नाय;
 परिवज्जियाण विहरित्था, इति संखाए से महावीरे । १३।

(४७३)

अदु थावरा तसत्ताए, तसजीवा य थावरत्ताए;
 अदुवा सव्वजोणीया सत्ता कम्मुणा कप्पिया पुढो बाला । १४।
 (४७४)

भगवं च एव—मन्नेसीं, सोवहिए हु लुप्पती बाले;

हता. [४७१]

भगवाने दीक्षा लीधा अगाउ लगभग वे वर्षथी थंडुं पाणी पीतुं छाडंयु हतुं.
 ए रीते तेओ वे वर्ष लगी अचित्त जळ पीता थका एकत्वभावना भावता कपायरूप
 अग्नि उपशमावीने शांत वन्या थका तथा सम्यक्त्वभावथी भावित रहेता थका
 दीक्षित थया. [४७२]

भगवान, पृथ्वी, जळ, अग्नि, वायु, सेवाळ—बीज—लीलोतरीरूप, वन-
 स्पति, तथा तसकाय ए वचने “ छता ” अने “ सज्जि छे ” एम गणीने तेना
 आरंभनो परीहार करी विचरता. [४७३]

वळी स्थावर जीवो कर्मानुसारे भवांतरे त्रसरुपे पण ऊपजी शके छे अने
 तस जीवो स्थावररुपे पण ऊपजे छे. अथवा रागद्वेष सहित सर्व जीवो कर्मानुसारे
 सर्व योनिओमां ऊपजता रहे छे. [एम संसारनी विचित्रता रहेली छे एवुं भगवान्
 विचरता] [४७४]

अने एम भगवान महावीरदेवे विचारीने जाणुं के उपाधिसहित १ अज्ञानी

१ उपाधि—उपाधि—ते वे प्रकारनी छे द्रव्योपाधि तथा भावोपाधि.

कम्मं च सव्वसो णच्चा, तं पडियाइक्खे पावगं भगवं ११५।
(४७५)

दुविहं संमेच्च मेहावी, किरिय—मक्खाय मणेलिस्स णाणी;
आयाणेसोय—मतिवाय, सोयं जोगं च सव्वसो णच्चा ११६।
(४७६)

अतिवातियं^१ अणाउट्ठिं^२, सय—सन्नेसिं अकरणेयाए;
जस्सि त्थिओ परिन्नाया सव्वकम्मवहा उ से अदक्खू^३ ११७।
(४७७)

अहाकडं न से सेवे, सव्वसो कम्मुणा बंधं अदक्खू;
जंकिंचि पावगं भगवं, तं अकुच्चं वियडं भुंजित्था; ११८।
(४७८)

१ अतिपातिकां निर्दोषां २ अहिंसां “आश्रित्य.” इतिशेषः

३ अद्राक्षीत्.

जीव कर्मोत्थी बंधाय छे. माटे सर्व रीते कर्मोने जाणीने ते कर्मो तथा तेना हेतु पा-
पने भगवान त्याग करता हता. [४७५]

ते ज्ञानवंत बुद्धिमान् भगवाने वे प्रकरना कर्म^१ तथा तेना आववना मार्ग,
हिंसाना मार्ग, तथा योग^२ ए बंधुं जाणीने संयमनी अत्युत्तम क्रिया कहेली छे.
[४७६]

वळी ते भगवाने पवित्त अहिंसाने अनुसरने पौताने तथा वीजाओने पापभां
पडता अटकाव्या. अने ते भगवाने स्त्रीओने सर्व पापनी मूळ तरीके जाणीने त्या-
गी छे माटे खरेखर ते ज भगवान परमार्थदर्शी हता. [४७७]

ते भगवान्, आधाकर्मादिक दूषित आहारथी सर्व रीते कर्म बंधाता देखीने
तेवो आहार सेवता नहता. एम जे कंड पापना कारण छे ते बंधाने छांडीने भगवा-
न शुद्ध आहार करता हता. ४७८

१ इर्याप्त्यय कर्म तथा सांपरायिक कर्म वर्तमान भावी कर्मो (Jacobi) Present
and future Karmans. २ मन वचन कायरूप.

णो सेवती य परवत्थं,^१ परपाए^२ वि से ण भुंजित्था;^३
परियज्जियाण ओमाणं^४, गच्छति संखडिं^५ असरणाए ।१९।
(४७९)

मायन्ने असणपाणस्स, णाणागिच्छे रसेसु अपडिन्ने;
अच्छिपि णो पमज्जिय, णोविय कंडूयये मुणी गायं ।२०।
(४८०)

अप्पं तिरियं पेहाए, अप्पं पिट्ठओ व पेहाए;
अप्पं वुइए पडिभाणी, पंथपेही चरे जयमाणे ।२१।(४८१)
सिसिरंसि अद्धपाडिवन्ने, तं वोस्सज्ज वत्थ—मणगारे;
पसारित्तु बाहू परक्कमे, णो अवलंबिया ण कंधंसि. ।२२।
(४८२)

१ प्रधानं परकीयं वा वस्त्रं २ परपात्रेपि ३ भुंक्ते ४ अपमानं
५ पाकस्थामं ६ अल्पशब्दोत्राभाववाची.

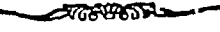
वर्ली परायुं वस्त्र अंगे नहि धरता; पराया पात्रमां पण ते नहि जमता; अने
अपमानने नहि गणतां अहीन भावे रसोइखानाओमां आहार याचवा जता हता.
[४७९]

वर्ली तेश्रो नियमित अशनपान वापरता; रसमां आसक्त न थता; तथा
रस माटे प्रतिज्ञा पण नहि बांधता; किंवहुना खरज मटाडवा माटे खरडता पण
न हता. [४८०]

भगवान विहार करतां आडुं के पूंठे अल्प जोता अर्थात् जोता नहि रस्ता-
वां न चर्तां अल्प वोलता अर्थात् वोलता नहि, किंतु मार्ग जोता थका यत्नवंत
यइ के चाल्या जता हता. [४८१]

भगवान वीजे वर्षे ज्यारे अर्धी शिशिररुतु वेठी त्यारे ते [इंद्रवत्त] वस्त्रने
छांटी दइने छूट बहुथी विहार कर्या जता. [अर्थात्] ताठना माटे बाहुने संकोचतां
[नहि.] तथा स्कंध उपर पण बाहु धरता नहि. [४८२]

एस विही अणुकंतो, माहणेण मइमया;
बहुसो अप्पडिन्नेण, भगवया एवं रियंति त्ति बेमि ।२३।
[४८३]



[द्वितीय उद्देशः]

चरियासणाइं^१ सेज्जाओ, एगतियाओ जाओ भइयाओ;
आइक्ख ताइं सयणा, सणाइं जाइं सेवित्था से महावीरो
।१। [४८४]

१ अयंच श्लोक श्चिरंतनटाककारेण न व्याख्यातः सूत्रपुस्तकेषु
तु दृश्यते ।

ए रीते मतिमान् महान निरीह भगवान वीर प्रभुए अनेक रीते एवी विधि
पाळी छे. ए विधिमां बीजा मुनिओए पण कर्म खपाववा यत्न करवो. (४८३)



बीजो उद्देश.

.....

(महावीर स्वामिनी वसति)

वीर प्रभुए विहार करतां जे जे स्थळे निवास कर्यो ते ते स्थळो आ प्रमाणे
छे. (४८४)

आवेक्षण^१—सभा^२—पवासु^३, पणियसालासु^४ एगदा वासो;
अदुवा पलियद्वुणेसु^५ पलालपुंउे.सु^६ एगदावासो ।२।

[४८५]

आगंतारे आरामा गारे णगरे वि एगदा वासो;

सुसाणे सुण्णगारे वा, रुक्खमूले वि एगदा वासो ।३। [४८६]

एतेहिं मुणी सयणेहिं, समणे आसीं पतरेस^७ वासे;

राइं दियंपि जयमाणे, अप्पमत्ते समाहिणु ज्ञाति ।४। [४८७]

णिदंपि णो पगामाए, सेवइ य भगवं उट्टाए;

जग्गावती य अप्पाणं, इस्सिसाति^८ य अपाडिने ।५। [४८८]

१ शून्यं गृहं । कुडयाद्याकृति २ पानीयशाळा. ३ पण्यशा-
लाषु हृदेषु ४ अयस्कारकुड्यादिषु ५ मंचोपरिच्यवस्थितेषु तदध;
७ प्रकर्षेण त्रयोदशं वर्षं यावत् ८ शीते ।

कोइ वखते भगवान निर्जन झूपडाओमां; झूपडीओमां, पाणी पीवा माटे
करेला परवोमां के हाटोमां रहेता तो कोइ वखते लुहार विगेरेनी कोडोमां अथवा
घासनी गंजीओमां नीचे रहेता. [४८५]

कोइ वखते परामां, वागमांना घोमां के शहेरमां रहेता तो कोइ वखते म-
शाण, सुनां घर के झडनी तलेठीमां रहेतां. [४८६]

ए रीते एवा स्थळोमां रहेतां थकां ते श्रमण मुनि प्रमाद परिहार करी स-
माधिमां लीन थइ वरोवर तेरमां वर्ष लगी पवित्र ध्यान ध्याता रहा. (४८७)

दीक्षा लइने भगवान क्वाय पण ववु निद्रा लेता नहि.^१ अने हमेशां पोताने
जगावता रहा. क्वांक जरा सूता तो पण त्यां निद्रा करवानी इच्छा नहि करता.

[४८८]

१ फक्त वार वर्षमां अस्थिकग्राम (वढवाण) पामे काउसग्मां रहा हता ते
वखते एक मुहुत्त मात्र निद्रा लीथी हती एम टीकाकार जणावे छे.

संबुद्धमाणे पुणरवि, आसंसु भगवं उद्गाए,
 णिक्खम्म एगया राउ, बहिं चंकमिन्ता मुहुत्तागं ६। (४८९)
 सयणेहिं^१ तस्सुवसग्गा, नीचा आसी अणेगरूवा य,
 संसप्पगाय^२ जे पाणा, अदुवा पक्खिणो उवचरंति^३ ।७।
 (४९०)

अदुवा कुचरा उवचरंति, गामरक्खाय सात्तिहत्था य;
 अदु गामिया उवसग्गा, इत्थी एगति या पुरिसो वा. ।८।
 [४९१]

इहलेइयाइं परलोइयाइं भीमाइं अणेगरूवाइं;
 अवि सुब्बि-दुब्बिभगंधाइं सद्दाइं अणेगरूवाइं ।९।
 अहियासए सया समिते, फासाइं विरूवरूवाइं; [४९२]

१ शयनेषु वसतिषु शयनैर्वा. २ अहिनकुलादयः ३ मांसादिकं
 भक्षयंति

तेओ निद्राने कर्म बांधनारी जाणता थका जागता रहेता. कदाच निद्रा
 आववा मांडती तो तेओ शीआळानी राते ताढमां वाहेर जइ मुहुत्त लगी ध्यान
 लीन थइ निद्रा टाळता. [४८९]

उपर जणावेला स्थळोपां रहेतां भगवानने भयंकर अनेक प्रकारना उपसर्ग
 (दुःख) थया. सर्प विगेरे जंतुओ तथा गीघ विगेरे पंखिओ आवी भगवानने कर-
 ङता हता. [४९०]

जार पुरुषो शून्य घरमां कुकर्म करवा जतां भगवानने देखी उपसर्ग करता
 गामना रवेवालो शक्ति विगेरे हर्थाआरो हाथमां धरी भगवानने उपसर्ग करता.
 च्छी विषयवांछनाथी भगवानने लोको उपसर्ग करता; जे.म के भगवानने एकला
 देखी तेमना रुपथी मोहित थइ व्याकूल वनेली स्त्रीओ विषय भोग माटे तेमने प्रा-
 र्थना करती, तथा पुरुषो पण सतावता हता. [४९१]

ए रीते भगवाने मनुष्य तथा तिर्यचो तरफथी अनेक प्रकारनी भयंकर
 सुगांधि तथा दुर्गांधि वस्तुओना तथा अनेक जातना शब्दोना, वीहायणा उपसर्ग
 हमेवां समितिथी वर्त्ततां थकां सहन कर्या. [४९२]

अरतिं रतिं अभिभूय, रीयति माहर्णे अबहुवाई ११०। [४९३]
 स जणेहिं तत्थ पुच्छिसु^१, एगचरा^२ वि एगदा राओ,
 अव्वाइते^३ कसाइत्था, पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने १११
 (४९४)

अय-मंतरंसि को एत्थ, अह-मसि-त्ति भिक्खू आह्दु^४
 अय-मुत्तमे से धम्मे, तुसिणीए सकसाइए ज्ञाति ११२।
 जंसि-प्पेगे पवेयंति^५, सिसिरे मारुए पवायंते,
 तसि-प्पेगे अणगारा, हिमवाए णिवाय^६ मेसंति. ११३।
 संघाडिओ^७ पविसिस्सामी, एधा य समादहमाणा,
 पिहिता वा सक्खामो, अतिदुक्खं हिमगसंफासा ११४।
 तांसि भगवं अपडिन्ने, अधा वियडे अहियासए दविए^७

१ पृष्ट एकचरा उपपत्यादयः पप्रच्छु रितिशेषः ३ अव्यकृते
 ४ प्रवेपंते यद्वा प्रवेदयंत्यनुभवन्ति ५ निवातं—वातरहितस्थानं.
 ६ वस्त्राणि ७ संयमी

वळी भगवान हर्ष शोक टाळीने बहु थोडुं बोळता थका विचरता रहेता.
 [४९३]

(निर्जन स्थळमां भगवानने ऊभेला जोड) लोको पूछता अथवा रात्रिने वखते
 जार पुरुषो तेमने पूछता के अरे तुं कोण उभो छे? आ वखते भगवान कशुं नहि
 बोळता; तेथी तेओ चीडवाइ वखते भगवानने मारवानुं पण करता. पण भगवान
 तो निरीह वन्या थका समाधिमां तळीन वन्या रहेता. [४९४]

“अरे अहीं कोण ऊभो छे” एवुं लोकोए पूछतां, कोइ वखते भगवान
 बोळता के “हुं भिक्षुक ऊभो छुं.” ते सांभळी जो तेओ बोळता के “अहींथी
 जलदी जवो रहे” तो भगवान अन्यत्र जता. कारण के ए उत्तम आचार छे. अने
 जो तेओ जवानुं कशुं नहि कहेतां कपायवंत वनता तो भगवान मौन रही त्यां ज
 [जे थवानुं हशे ते थशे एम विचारी] ध्यान करता. (४९५)

ज्यारे शिशिर रतुमां थंडो पवन जोसथी फुंकातो हतो, ज्यारे लोकोथरथर

णिकखस्म एगदा राओ, चाएति^१ भगवं समियाए. 19५।

४९६)

एस विही अणुक्कंतो माहणेण मईमया;
बहुसो अप्पडिण्णेण, भगवया एवं रियंति—त्ति वेमि। १६।
(४९७)

[तृतीय उद्देशः]

तणफासे सीयफासे, तेउफासे य दंसमसगेय;

१ शक्नोति

ध्रुजता हता, ज्यारे अपर सायुओ तेवी थंडीमां निर्वात [वायरा विनानी] जग्या शोधता हता, तथा वस्त्रो पहेरवाने चहाता हता, ज्यारे तापसो लाकडां वाळीने शीततुं निवारण करता हता, एम ज्यारे शीत सहन करवुं घणुं दुःखभरेलुं हतुं, तेवे समये संयमी भगवान (वीर प्रभु) निरीह वनी खुल्ला स्थानमां रही शीतसहन करता रहेता. कदाच अत्यंत शीत पडतां ते सहन करवुं विकट पडतुं त्यारे रात्रिण (मुहूर्त्त मात्र) वाहेर हरी फरीने साम्यपणे रहेता थका पाछा अंदर वेशी; ते शीत सहेता रहेता. [४९६]

ए रीते मतिमान् निरीह भगवाने वारंवार एवी विधि पालन करी छे; तेम बीजा मुनिओए पण वर्त्तवुं. [४९७]

त्रीजो उद्देशः

(वी र प्रभुए केवां परीपह सहां.)

(महावीरदेव) सदा समितिवंत वनीने कर्कश स्पर्श, ताढ, ताप, तथा दंस

अहियासए सया समिए, फासाइं विरूवरूवाइं ।१। [४९८]

अह दुच्चर—लाढवारी, वज्जभूमिं च सुब्भभूमिं च;

पंतं सेज्जं सेविसु, आसणगाइं चेव पंताइं ।२। [४९९]

लाढेसु तरसु—वसग्गा, बहवे^१ जाणवया लूसिसु;

अह लूहदेसिए भत्ते, कुक्कुरा तत्थ हिंसिसु णिवत्तिसु ।३।

(५००)

अप्पे जणे णिवारेइ, लूसणए सुणए डसमाणे;

छुछुकारंति आहंतुं, “समणं कुक्कुरा डसंतु” ।४। [५०१]

एलिव्वए^२ जणो भुज्जो, बहवे वज्जभूमिइ फरुसासी;

१ उपसर्गाणां विशेषणं २ ईदृक्षः

अने मशकना डंखो विगेरे भयंकर परीषहो सहन करता. [४९८]

वळी भगवान दुर्गम्य लाटदेशना वज्जभूमि तथा शुभ्रभूमि नामना वने भा-
गोमां जइ विचर्या इता. त्यां तेमने रहेवाने घणी हलकी वसतिओ मळती. तेमज
पीठफळकादि आसन पण घणां हलकां मळता. [४९९]

लाट देशमां ते भगवानने घणा उपसर्गो थया. त्यांना लोको तेमने मारता;
भोजन पण लूखुं मळतुं; तथा कूतराओ आवी वीरप्रभुना ऊपर पडता ने करडता.
[५००]

आ वखते वहु थोडा ज लोक ते कूतराओने करडतां निवारता.^१ नहि तो;
घणा लोको तो उल्टा भगवानने मारता थका तेमने करडवा माटे कूतराओने छु-
छुकारीने तेमना तरफ मोकलावता. [५०१]

आवा लोकोमां भगवान घणीवार विचर्या. त्यांनी वज्जभूमिना घणाखरा
लोक लूखुं खाता तेथी तेओ वधारे क्रोधवाळा होवार्थी सावुने देखी कूतराओवडे
तेने एटलो वधो उपद्रव करता के त्यां (बौद्धभर्मी) भिक्षुको त्याना भोमिया छर्ता

१ अटकावता.

लट्टिं गहाय णालीयं, समणे^१ तत्थएवि विहरिंसु ।५।

एवंपि तत्थ विहरंता, पुट्टुपुव्वा अहेसि सुणएहिं;
संलुंचमाणा सुणएहिं, दुच्चरगाणि तत्थ लाढेहिं^२ ।६।

णिधाय दंडं पाणेहिं, तं कायं वौसज्ज मणगारे;
अह गामकंटए^३ भगवं, ते हियासए अभिसमेच्चा ।७।

[५०२]

णागो^४ संगामसीसे वा, पारए तत्थ से महावीरे; (५०३)

एवंपि तत्थ लाढेहिं, अलद्धपुव्वोवि एगदा गामे ।८।

उवसंकमंत—मपाडिन्नं, गामंतियंपि अप्पत्तं;

पडिणिकखमिच्चु लूसिंसु, “एतातो परं पलेहि^५” ति. ।९।

[५०४]

१ शाक्यादयः २ लाटेषु ३ रूक्षालापान् ४ हस्ती ५ पर्येहि

पण एक महोटी लाकडी के नाल हाथमा पकडीने विचरतां, तेम छतां पण कूतरा—
ओ तेमनी पूठ पकडता तथा करडी खाता. ए रीते लाटदेश विहार करवाने घणो
विकट हतो. त्यां वीरप्रभुए आरंभ त्याग करीने शरीरने पण वोसरवीने निर्जरने
अर्थे नीच जनोनां कडवां वाक्यो सहन करी. [५०२]

ए रीते जेम बळवान हस्ती संग्रामना मोखरे पोहोची जय मेळवी पराक्रम
घतावे तेम वीरप्रभु ए विकट उपसर्गोना पारंगामी थया. [५०३].

वळी एक वखते जंगलमां चालतां चालनां सांज लगी तेमने कोइ गोमे पण
प्राप्त थयुं नहोतुं. अने कोइ स्थळे वळी तेओ गामना पादर जता के त्यांना अनार्य
लोको सामा आवी तेमने मारता अने वोलता के “अहिथी दूर जतो रहे”
[५०४]

सिसिरंमि एगदा भगवं, छायाए झाइ आसीया ।३।
 आयावई य गिम्हाणं, अत्यति उकुडुए अभिताधे; [५१२]
 अदु जावई^१-त्य लूहेणं, औयण-मंथु-कुम्मासेणं ।४।
 एताणि तिन्नि पडिसेवे, अद्रुमासे य जावए भगवं; (५१३)
 अवि इत्य एगया भगवं, अद्धमासं अदुवा मासंपि ।५।
 अवि साहिए दुवे मासे, छप्पि मासे अदुवा विहरित्था^२;
 रायोवरायं^३ अपडिन्ने, अन्नगिलाय^४-मेगया भुंजे ।६।
 छट्टेण एगया भुंजे, अदुवा अद्रुमेणं दसमेणं,
 दुवालसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ।७।
 (५१४)

णच्चाण से महावीरे, णोच्चिय पावगं सय सकासी,
 अन्नेहिं वा ण कारित्था, कीरंतंपि णाणुजाणित्था ।८। (५१५)

१ यापयति २ जलमपीत्वा इति शेषः ३ रात्रोपरात्रं ४ पर्युषित्त्वात्तं.

भगवान् शीआळामां छरियंतामां वेशी ध्यान करता, अने ऊनाळामां उत्कुडुका
 आसने तडकामां वेशी ताप सहन करता. [५१२]

शरीर-निर्वाहार्ये तेओ लुखा भात, मंथु^१ अने अडदोनो आहार करता.
 एम आठ महिना लगण ए त्रण चीजो ज भगवाने वापरी. [५१३]

वळी पनर पनर दिवस लगी महिना महिना लगी तथा वे वे महिना ने
 छ छ महिना लगी भगवान पाणी नहि वापरतां दिनरात निरीह थइ विचरता.
 वळी अन्न पण ग्लान एटले ठरीगएलो वापरता ने तेपण त्रीजे त्रीजे, चोथे चोथे,
 तथा पांचमे पांचमे दहाडे वापरता. [५१४]

तत्कजाणीने महावीर देव पोते पाप नहि करता, वीजापासे नहि करावता,
 तथा करनारने रुडुं नहि मानता. [५१५]

गामं पविस्स णगरं वा, घास—मेसे कडं परद्दाए;
सुविसुद्ध मेसिया भगवं, आयतजोगयाए सेवित्था. १९।
(५१६)

अदु वायसा दिगिंच्छित्ता, जे अन्ने रसेसिणो सत्ता;
घासेसणाए चिट्ठंते, सययं णिवतिए य पेहाए १९०। (५१७)
अदु माहणं व समणं वा, गामपिंडोल्लगं च अत्तिहिं वा;
सोघागं मूसियारं वा, कुक्कुरं वा विट्ठितं पुरतो १९१।
वित्तिच्छेदं वज्जंतो, तेसि—मप्पत्तियं परिहरंतो;
मंदं परिक्रमे भगवं, अहिंसमाणो घास—मेसित्था १९२।
(५१८)

अवि सूइयं वा सुक्कं वा, सीयपिंडं पुराणकुम्मासं;
अदु बक्कसं पुलागं वा, लद्धे पिंडे अलद्धए दविए १९३।
(५१९)

भगवान शहेर के गाममां जइ बीजामे माटे करेलो आहार मागता, अने ए
रीते पवित्र आहार लइने सावधानपणे ते आहार वापरता. [५१६]

भिक्षा लेवा जतां भगवानने रस्तामां भूख्या कागडा विगेरे पक्षीओ जमीन-
पर रहींने हमेशां पोतानो आहार लेतां जो नजरे पडता तो, भगवान तेमने कशी
षण अडचण न पाडता थका चाल्या जता. [५१७]

तथा त्यां कोइ ब्राह्मण, श्रमण, भिखारी, विदेशी, चांडाळ, मार्जार के कू-
तराने कइ मळतुं देखी तेमने विघ्न न पाडता थका तथा मनमां कशी अप्रीति
नहि धरता थका धीमे धीमे चाल्या जता (किं बहुना, भगवान कुंशु^१ विगेरेनी पण
हिंसा नहि करता थका भिक्षाटन करता.) [५१८]

बळी आहार पण भीजेलो, के सूकेलो, ठरी गएलो के बहु दिवसपरनो
रांधेली अहदनो अथवा जुनाधान्यनो के जवविगेरे मीरस धान्यना जेवो मळी
ओवे तोते शांतभावे वापरता, अगर नहि मळतो तोपण शांतभावे रहेता. [५१९]



द्वितीयः श्रुतस्कंधः

—*—

(प्रथम चुडा)

पिंडैषणानामकं दशम मध्ययनम्.

(प्रथमा उद्देशः)

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए^१

१ पिंडपातप्रतिज्ञया.

श्रुतस्कंध बीजो.

(पहेली चूळिका)

अध्ययन दशमं.

पिंडैषणा.

पहेलो उद्देश.

[मुनिए कयो आहार लेवो अने कयो नहि लेवो.]

जो कोइ भिक्षु अथवा भिक्षुणी आहार लेवा माटे गृहस्थना घरे जाय अने

पुण ओसहीओ जाणेज्जा अकसिणाओ असासियाओ विदलकडाओ तिरि-
च्छच्छिण्णाओ अव्योच्छिण्णाओ तरुणियं वा छिवाडिं अभिङ्कंतभज्जियं
पेहाए, फासुयं एसणिज्जंति मण्णमाणे लाभे संते पडिग्गाहेज्जा^१ (५२६)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे समाणेसे ज्ज पुण जा-
णेज्जा पिहुयंवा^२, बहुरयं वा, भुज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा, चाउलप-
लंबं वा, सइं^३ भज्जियं अफासुयं अणेसणिज्जं मण्णमाणे लाभे संते णो
पडिग्गाहेज्जा, (५२७)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, जाव पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण
जाणेज्जा पिहुयं वा, जाव चाउलपलंबं वा, असइं भज्जियं दुक्खुत्तो वा
भज्जियं तिक्खुत्तो वा भज्जियं फासुयं एसणिज्जं जाव लाभे संते पडि-
ग्गाहेज्जा (५२८)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावतिकुलं जाव पविसित्तुकामे
णो अन्नउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ^४ वा, अपरिहारिएण
सद्धिं, गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज

१ णरणेसाति २ पृथुकं. ३ सकृत् ४ परिहारिकः साधुः

वस्तुओ लइने वापरवी.^१ (५२६)

भिक्षु अथवा भिक्षुणीए एकज वार पैंवा, ममरा, पैंक. घहुंनो भूको, चोखा,
कणक विगेरे अद्रासुक अने अयोग्य जाणीने ग्रहण करवां नहि. (५२७)

जो ए पैंवा विगेरे देवार के त्रणवार शेकेला होय तो ते प्रासुक अने योग्य
जाणी ग्रहण करवा. [५२८]

(गृहस्थना घेर प्रवेश करवानी विधि)

भिक्षु अथवा भिक्षुणीए आहार लेवा माटे गृहस्थना वर तरफ जतां अन्य-
तीर्थिको साथे अथवा ब्राह्मणो साथे अथवा पासत्याविगेरे साथे तेना घरमां पेसवुं

१ प्रयोजन होय तो.

वा, [५२९]

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, बहिया वियारभूमि^१ वा, विहार भूमि^२ वा, णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा णो अण्णउत्थिएण वा गार-
त्थिएण वा, परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्धिं बहिया विचारभूमिं वा,
विहारभूमिं वा, णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा [५३०]

से भिक्खूवा [२] गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो अण्णउत्थिएण
वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा सद्धिं, गामाणुगामं दुइ-
ज्जेजा (५३१)

से भिक्खूवा [२] जाव पविट्ठे समाणे से णो अण्णउत्थिएअस्स
वा, गारत्थियस्स वा, परिहारिओ अपरिहारिअस्स वा; असणं वा [४]
देज्जा वा अणुपदेज्जा^३ वा [५३२]

से भिक्खू वा [२] जाव पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा अ-

१ संज्ञाव्युत्सर्गभूमिं. २ स्वाध्यायभूमिं. ३ अनुप्रदापयेत् परेण.
के नीकळ्वुं नहिं. (५२९)

एज मुजव दिशाए तथा स्वाध्यायस्थळमां पण अन्यतार्थिक, के पासत्थाओ
साथे आववुं के जवुं नहिं. [५३०]

वळी ग्रामानुग्राम विचरतां पण अन्यतार्थिक गृहस्थ अने पासत्थाओ साथे
विचरवुं नहिं. [५३१]

तथा ए त्रणेने मुनिए आहार देवो के देवराववो नहिं. (५३२)

गृहस्थे जे आहार निर्ग्रथं साधुनी सारु एटले के अमुक साधार्मिक साधुने
उद्देशीने छकायनी हिंसा करी तैयार कर्यो होय, वेचातो लीधो होय, उधारे लीधो
होय कोइना पासेथी झूटावी लीधो होय के मालेकनी रजा वगर लइ राख्या होय
तेवो आहार ते गृहस्थ कोइ पण मुनि के आर्याने आपवा मांडे तो तेमणे जाणतां
छतां ते आहार ग्रहण नहिं करवो. अगर जो के ते आहार ते गृहस्थे पोते कर्यो
होय अथवा वीजाए कर्यो होय, घरथी घाहेर काढयो होय अथवा न काढयो

सणं वा (४) अस्संपडियाए^१ साहम्मियं समुद्धिस्स, पाणाइं भूताइं जीवा-
इं सत्ताइं समारब्ब, समुद्धिरस कीयं पामिच्चं^२ अच्छेज्जं^३ अणिसट्ठं अभि-
हडं आहट्ठु वेतंति, तहप्पगारं असणं वा (४) पुरिसंतरकडं अपुरिसंतर-
कडं वा, बहिया णीहडं वा, अनीहडं वा, अत्तद्धियं वा, अणत्तद्धियं वा, प-
रिभुत्तं वा, अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा, अणासेवियं वा, अफासुयं जाव
णो पडिग्गाहेज्जा (५३३)

एवं बहवे साहम्मिया, एगा साहम्मिणी, बहवे साहम्मिणीओ,
समुद्धिस्स चत्तारि आलायगा भाणियच्चा^४ (५३४)

से भिक्खू वा [२] गाहावइकुलं जाव पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण
जाणेज्जा असणं वा (४) बहवे समण^५ माहण-आतिथि कियण-वणीमए^६
पगणिय पगणिय समुद्धिस्स, पाणाइं जाव सत्ताइं समारब्ब आसेवियं वा
अफासुयं अणेसणिज्जंति मण्णमाणे लाभे संते जाव णो पडिग्गाहेज्जा
(५३५)

१ अस्वप्रतिज्ञया, निर्ग्रथप्रतिज्ञया. २ उच्छिन्नकं. ३ आच्छेद्यं
४ पूर्वपश्चिमतीर्थकरमुनिना मयं कल्पः ५ शाक्यादयः श्रमणाः ६ वनी-
पकाः बंदिप्रायाः

होय, ते गृहस्थे ते आहार पोतानो करी राख्यो होय अगर न होय, तेणे वापरेलो
होय तोपण ते अप्रासुक अने अनेपणीय जाणीने मुनिए के आर्याए ग्रहण न
करवो. (५३३)

ए रीते घणा साधार्मिकं साधुना माटे करेले आहार तथा एक के घणी
साध्वीओ माटे करेले आहार पण कोइ साधु के साध्वीए ग्रहण करवो नहि.^१
(५३४)

जे भोजन, गृहस्थे घणा पण मुकरर संख्यामांना श्रमण, ब्राह्मण, प्राहणा,
दीन, के चारणभाटना माटे करेलुं होय ते वापरेलुं छतां के अणवापरेलुं छतां अ-
प्रासुक अने अनेपणीय गणी मुनिए नहि व्हाग्वं. (५३५)

१ पेहेला तथा छेला तीर्थकरना साधुओ माटेज आ नियम छे.

से भिक्खु वा (२) गाहावइकुलं जाव पविट्ठे समाणे से जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) बह्वे समण माहण-आतिथि कियण-वणी-मए सम्भुद्धिरस पाणाहं (४) जाव आहट्टु वेतेति, तं तहप्पगारं असणं वा (४) अपुरिसंतरकडं जवहियाणीहडं अणत्तद्धियं अपरिभुत्तं अणासेवितं अफासुयं अणेसणिज्जं जाव णो पडिग्गाहेज्जा (५३६)

अह पुण एवं जाणेज्जा पुरिसंतरकडं बहियानीहडं अत्तद्धियं परिभुत्तं आसेवियं फासुयं एसणिज्जं जाव पडिग्गाहेज्जा (५३७)

से भिक्खु वा (२) गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसित्तुक्कं वा से जाहं पुण कुलाहं जाणेज्जा, ईमसु खलु कुलेसु णितिए पिंडे दिज्जति णितिए अग्गपिंडे दिज्जति, णितिए भाए दिज्जति, णितिए अबडुसाए दिज्जति, तहप्पगाराहं कुलाहं णितियाहं णितिअग्गणाहं, णो अत्थाए वा पाणाए वा पविसेज्ज वा भिक्खसेज्ज वा (५३८)

जे भोजन, ग्रहस्थे पणा भ्रमण, हावण, प्राहुणा, दीन, के भास्वारणना माटे करेलुं होय पण ते तेणे पोतेज करुं होय, घरथी बाहेर पण नहि छाव्युं होय अने हजु पोतानाज खपलुं गणी वापरुं पण न होय तो ते अमासुक अने अनेवणीय गणीने मुनिए नहि लेनुं. [५३६]

पण णो ते भोजन ग्रहस्थे बीजाना हाथे कराव्युं होय, घर बाहेर राख्युं होय अने पोते पोताना खपलुं गणी ते वापरेलुं पण होय तो ते मासुक अने पवणीय जाणीने ग्रहण करुं. [५३७]

जे कुवोयां हमेवां दान देवातुं होय अथवा जमवी-पेच्चा सक्तआरमां दान कोटे अन्नपिंड कहाडी रामवदायां आगतो होय अथवा आस्वा भोजननेो हितोयांके के चतुर्थीयां दानमां अपगतो होय अने तेथी कयां घणा खचको बालवा ऊवरी पडता होय नेवा कुलोमां मुनिए आहार-वाणीं माटे न करुं. [५३८]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा साम्मिगियं जं
सव्वद्वेहिं समिते सहिते सयाजएत्ति वेभि [५३९]

—:—

(द्वितीय उद्देशः)

से भिक्खू वा [२] गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठे
समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) अट्टमिपोसहिएसु वा,
अट्टमासिएसु वा, दोमासिएसु वा, तेमासिएसु वा, चाउम्मासिएसु वा, पंच-
मासिएसु वा, छम्मासिएसुवा^१ उऊसु वा, उउसंधीसु वा, उउपरियट्ठेसु
वा बहवे समण-माहण-अतिहि-क्खण-वणीमगे एगातो^२ उक्खातो^२ परि-
एसिज्जमाणे पेहाए, दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, तिहिं उक्खाहिं
परिएसिज्जमाणे पेहाए, चउहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, कुंभीमु-

१ उत्सवेषु २ पिठरकात्.

साधु के साध्वीतुं एज कर्त्तव्य छे के हमेशां सर्व पदार्थोंमां समभाव राखी
ज्ञानदर्शन अने चारित्र तात्परतां थकां सदा उद्योगी थइ वर्त्तवुं. [५३९]

बीजो उद्देश.

[मुनिए अशुद्ध आहार न लेवो तथा जमणवारमां न जवुं]

गृहस्थना घरे ज्यारे अष्टमीना उपवासना उत्सवप्रसंगे अथवा अर्द्धमासिक,
मासिक, द्विमासिक, चतुर्मासिक, छमासिक, उत्सवना वखते अथवा स्तुओना
अंत्यादिने के आद्यदिवसे घणाएक [शाक्यादि] श्रमण, ब्राह्मण, परोणा, दीन,
अने भाटचरणोने एक के अनेक वासणोमांथी भोजन पीरसातुं देखवामां आये

हातो वा कालोवातितो वा संपिहिसंपिचयाओ वा परिणसिज्जमाणे पेहाए तहप्पगारं असणं वा [४] अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवितं अफासुयं अणेसाणिज्जं णो पडिग्गाहेज्जा (५४०)

अह पुण एवं जाणेज्जा पुरिसंतरकडं जाव आसेवितं फासुयं जाव पडिग्गाहेज्जा (५४१)

से भिक्खूवा [२] जाव पविट्ठे समाणे से जाइं पुण कुलाइं, जाणेज्जा, तंजहा, उग्ग कुलाणि ^१ वा, मोगकुलाणि ^२ वा, राइण्णकुलाणि वा, खत्तियकुलाणि ^३ वा, इक्खागकुलाणि वा, हरिवंसकुलाणि वा, एसिथकुलाणि ^४ वा, वेसियकुलाणि वा, गंडागकुलाणि ^५ वा, कोट्टागकुलाणि ^६ वा, ग्रामरक्खकुलाणि वा, चोक्कसालियकुलाणि ^७ वा, अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु कुलेसु अदुगंच्छिएसु अगरहितेसु वा, असणं वा (४) फासुयं एसणिज्जं जाव पडिग्गाहेज्जा (५४२)

१ आरक्षककुलानि २ राज्ञः पूज्यस्थानीयानी ३ राष्ट्रकूटादीनि ४ गोपालकुलानि. ५ नापितकुलानि ६ वर्द्धकिकुलानि ७ तंतुवायकुलानि.

अने हज्जु गृहस्थे ते भोजन जाते कयाळतां वापर्युं न होय तो मुनिए ते भोजन अप्रासुक अने अनेषणीय जाणौ न लेवुं. [५४०]

अने जो ते कोइ बीजा पुरुषे रांधी तैयार कर्युं होय अने गृहस्थोए वापर्युं होय तो ते मुनिए योग्य जाणी ग्रहण करवुं. [५४१]

मुनिए, उग्रकुळ, ^१ भोगकुळ, राजन्यकुळ, क्षत्रियकुळ, इक्ष्वाकुकुळ, हरिवंशकुळ, एण्यकुळ, ^२ वैश्यकुळ, गंडुककुळ, ^३ कोट्टागकुळ, ^४ ग्रामरक्षककुळ अने चोक्कशाळीयकुळ, ^५ तथा एवीज जातना बीजा पण अतिरस्कृत अने अनिंदित कुळोमां निर्दोष आहार लेवा जवुं. [५४२]

१ उग्रथी हरिवंशलगीना छकुळो रजपूतवर्गना छे. अने एण्यथी चोक्कशाळीयलीना छ कुळो वैश्यवर्गना छे. २ गोवाळ. ६ उद्योसणा करनार ४ सुत्तार ५ साळवी

से भिन्न वा [२] गाहावहकुलं पिंडवायपट्टियाए अणुपविद्धे स-
 माणे से जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) सस्वाएसु वा, पिंडणियरेसु
 वा, इंधमहेछ वा, खंदमहेछ वा, रुहमहेछ वा, मुगुंदमहेछ वा, भूतमहेछ
 वा, जक्खमहेछ वा, णागमहेछ वा, थूममहेछ वा, चेइयमहेछ वा, रुक्ख-
 महेछ वा, गिरिमहेछ वा, दरिमहेछ वा, अगडमहेछ वा, तडागमहेछ वा,
 व्हमहेछ वा, णदिमहेछ वा, सरमहेछ वा, सागरमहेछ वा, आगरमहेछ
 वा, अप्पातरेछ वा तहप्पगारेछ विरूवरूवेछ महामहेछ वट्टमाणेछ बहवे
 ससण—आहण अतिहि किंण—वणीमए एगातो उक्खातो परिएसिज्जमा-
 णे पेहाए, बोहिं, जाव संणिहिसंणिचयातो वा परिएसिज्जमाणे पेहाए तह-
 प्पगारं असणं वा [४] अपुसिंतरकडं जाव णो पडिग्गाहेज्जा (५४३)

अह पुण एवं जाणेज्जा, विष्णं जं तेसिं दायच्चं, अह तत्थ भुं-
 जमाणे पेहाए गाहावतिभारियं वा, गाहावतिभगिणिं वा, गाहावतिपुचं
 वा, गाहावतिधूयं वा, सुण्हं वा, धातिं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं

कार्ये गृहस्थना घरे मेळो भरायो होय अथवा पितृभोजन होय अथवा ईद्र,
 स्कंद, रुद्र, धळदेव, भूत, यक्ष, के नगनो बहोत्सव होय अथवा स्तूप के चैत्यनो
 बहोत्सव होय अथवा वृक्ष, गिरि, कूषा, तलाव, द्रव, रदि, सर, सागर के आय-
 रणे अथवा एना जेवी गमे ते वाचतनो बहोत्सव होय अने तेथी त्यां घणाएक
 [पुत्र्यादि] श्रमण, ब्राह्मण, अतिथि, दीन तथा भाटसारणोने एक के अनेक
 वासणोथी भोजन पीरसातुं होय अने ते भोजन घालेके हाथे करेलुं छतां हट्टु ते
 गृहस्थोए वापरेलुं न होय सो सेवा आहारजे अशुद्ध गन्दी कुनीए ते वासन
 न लेवो. [५४३]

पण जो त्यां मुनिने एव जणाय के अथने ए भोजन आपवानुं हट्टं ते
 यने अपायुं अने हवे गृहस्थ लोको तेने वाचकेते तो मुनिए गृहस्थनी सीने अ-
 थवा केवने अथवा पुत्र, पुत्री के पुत्रधूने अथवा घाह, दास, के दासीते पणे-

वा, कम्पकरिं वा, से पुष्वामेव आलोएज्जा, “आउसो”सि वा, “मगि
णी”सि वा, “दाहिसि मे हत्तो अन्नयरं भोयणजायं?” सेवं बढंतस्स
परो असणं वा, [४] आहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं असणं वा (४) सयं
बाणं जाएज्जा, परो वा से देज्जा, फासुयं जाव पडिग्गाहेज्जा (५४४) .

से भिक्खू वा [२] परं अट्टुजोयणमेराए संखडिं णञ्चा संखडि—
पडियार णो अभिसंधारेज्जा गमणाए (५४५)

से भिक्खू वा [२] पार्हणं संखडिं णञ्चा पडीणं गच्छे अणाढा-
यमाणे, पडीणं संखडिं णञ्चा पार्हणं गच्छे अणाढायमाणे दाहिणं संखडिं
णञ्चा उदीणं गच्छे अणाढायमाणे, उदीणं संखडिं णञ्चा दाहिणं गच्छे
अणाढायमाणे (५४६)

जत्थेव सा संखडी सिंथा, तंजहा गामांसि वा, णगारंणि वा, खेडं-

केशी जोइने कहेवुं के हे आयुष्यमात् अथवा बेन, धने आ योजनजाधी अन्यतर
भोजन आपजो?, आम कहेता मुनिने तेओ अस्सनादि आहार आपवा धांहे ह्ये
मुनिए निर्दोष जाणी ते आहार लेवो. (५४४)

बीजा ग्रामोभां संखडि [जमणवार] होय तो एवे बस्वते मुनिए हे गा-
हनी हदमां ण संखडिमांथी भोजन लेवा बाटे न जहुं. [५४५]

जो पूर्व दिशामां संखडि होय तो मुनिए संखडि तरफ कर्षी लालच न
राखतां पश्चिमदिशा तरफ जाता रहेवुं. जो पश्चिमबाजु संखडि होय तो पूर्वतरफ
बळवुं. जो दक्षिण बाजु संखडि होय तो उत्तर तरफ बळवुं. अने जो उत्तरबाजु
संखडि होय तो दक्षिणतरफ बळवुं. [५४६]

विंदहूना, ज्या ज्यां गाममां, नगरमां, खेडामां, कवाहावां, कस्थामां,
शहेरमां, आगणेमां, वंदरमां, व्यापारस्थळमां, तीर्थस्थळमां, राज्यधानीमां, के
नगरपस्थळमां [कायमां] संखडि होय तो संखडिने मनमां धारीने त्यां न जहुं.

सी वा, कच्चडंसि वा, मडंबंसि वा, पट्टणांसि वा, आगरांसि वा, दोण-
मुहंसि वा, निगमांसि वा, आसमांसि वा, रायहाणिसि वा, सणिवेसंसि वा,
संखडिं संखडिपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए । केवली बूया
“आयाण-मेयं” (५४७)

संखडिं संखडिपडियाए अभिसंधारेभाणे अह्हाकम्मियं वा, उदे-
सियं वा, मीसजायं वा, कीयगडं वा, पामिच्चं वा, अच्छेज्जं वा, अणिसट्ठं
वा, अभिहडं वा, आहट्ठु दिज्जमाणं भुजेज्जा. अरसंसजए भिक्खुपीडयाए
खुड्डियदुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा, महल्लियदुवारियाओ खुड्डियाओ
कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ
समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवाया-
ओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतोवा बहिंवा उवसयस्स, हरियाणि
छिंदिय [२] दालिय [२] संधारगं संधारेज्जा, “एस्स विलुंगयामो
सिज्जाए^१.” तम्हा से संजए णियंठे अण्णयरं वा तहप्पगारं
पुरेसंखडिं वा पच्छ,संखडिं वा संखडिपडियाए णो अभिसंधारेज्ज

१ इतिविचिंत्य

कारण के केवली भगवाने कहें छे के “संखडिमां जवाथी कर्म वधाय छे” [५४७]

जो मुनि संखडिमांथी भोजन लेवा माटे संखडि तरफ जशे तो आधाक-
मिकादिदोष-युक्त दुष्ट आहारमां फसाइ पडशे. वली असंयति ग्रहस्थो तेना सारु
नाना दरवाजावाली जग्याओने मोहोटा दरवाजावाली करशे अथवा मोटा दरवाजा-
वाली जग्याओने नाना दरवाजावाली करशे, सीधी जग्याओने आडी करशे,
आडीओने सीधी करशे, बहु पवनवाली जग्याओने निर्वातजग्याओ करशे, निर्वा-
तजग्याओने बहु पवनवाली करशे, वली अंदर के वहार वनस्पतिओ कापी तोडी
मकान मुधरावशे अथवा साधुने अकिंचन धारी तेना माटे सूवानुं विछानुं पथरा-
वशे. (एम् अनेक दोष संभवे छे.) माटे निर्ग्रथ संयति मुनिए अनेक प्रकारे.

गमणाए (५४८)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामगियं, जं सव्वट्ठे
हिं समिते सहिते स्याजये-त्ति बेमि (५४९)

(तृतीय उद्देशः)

से एगया अण्णतरं संखडिं आसित्ता पिवित्ता छड्डेज्ज वा वसेज्ज
वा, भुत्ते वा से णो सम्मं परिणमेज्जा, अण्णतेरे वसेदुवखे रोयातंके
समुप्पज्जेज्जा, केवलीबूया 'आयाण मेयं.' (५५०)

मनुष्यनी ह्यातीमां अने मनुष्यना षरण पछी कराती संखडिओमां भोजन लेवा
माटे नहि जवुं. [५४८]

मुनिनुं एज कर्त्तव्य छे के हमेशां सर्व पदार्थीमां समता राखी पवित्र गुणो
साचवर्ता थकां यत्नवंत थइ वत्तवुं [५४९]

श्रीजो उद्देश.

(मुनिने जमणवारमां जवाथी थता गेरफायदा)

जौ मुनि संखडिभोजन करश तौ कोइ बखते तेने तेनार्थी वमन के विशू-
चिकाना दुःखमां ऊत्तरवुं पडशे. अथवा तो खाथेलुं अन्न रुही रीते न पचतां कुष्ट
के शूलादिक रोग उत्पन्न थशे. माटे केवली भगवान जणावे छे के संखडिभोजन
कर्मबंधनो हेतु छे. [५५०]

इह खलु भिक्खू गाहावतीहिं वा, गाहावलिणीहिं वा, परिवाय-
 एहिं वा, परिवाहयाहिं वा, एगब्भं सद्धिं सोडं पाउ^१ भो वतिमिस्सं हुरत्था^२
 वा उवस्सयं पडिलेहमाणे णो लभेज्जा, तमेव उवस्सयं संमिस्सिमाव-
 नावज्जेज्जा अण्णमण्णे वा से मते विपरियासियभूते इत्थिदिग्गहे वा कि-
 लीवे वा तं भिक्खुं उवसंक्खित्तु बूयां "आउसंतो समणा, अहे आरामं-
 सिदा, अहे उवस्सयंसि वा, राओ वा, वियाले वा, गामधम्मणियंतियं कट्टु
 रहस्सियमेहुणधम्मपरियारणाए आउट्टामो." तं वेगातितो सातिज्जेज्जा।
 अकरणिज्जं च्चेयं संखाए^३ एते आयतणा संति संच्छिज्जमाणा पञ्चादाया भवन्ति
 ताह्हा से संजाए णियंठे तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छा संखडिं वा संखडिं-

१ पाङ्कः पीत्वेत्यर्थः २ बहिः ३ संखडिगणनं न कुर्यादिति शेषः

बली ए संखडियोमां एकटा थयला गृहस्थो, गृहस्थनी स्त्रीओ, परित्रामको,
 तथा परित्राजिफाओ चिंजे सत्थे सुनि त्यां जइ एकटो भेळायायी कदाच स-
 दिराएनयां पण फली पडे^१ अने तेथी ते मदिरामत्त बनी पोताना मुफामे न-
 दि पोहोचतां त्यांज लच्छही पडे छे. तथा त्यां निसाना आवेशथी वेहोश थइ
 स्त्रीओमां आसक्त थाय छे. अथवा त्यां रहेली स्त्रीओ के नपुंसकोयांतुं कोइ एक
 सुनिपर आसक्त थइ कइवा झंडे छे के " हे आयुष्मन् भ्रमण, आ वगीचायां अथ-
 वा उपाश्रयमां राते अथक्क अमुक वावते आपणे एकटा बली भोगविलासमां व-
 तीरुं. " एम कही तेओ सुनिने विषयोथी ललचावी कवणे करे छे. अनेतेमां कराच
 एकलो सुनि फलाइ पण पडे छे, माटे ए बातने अकरणीय जाणीने सुनिइ
 संखडिमां नाहे जवुं. कारण के त्यां जदारी उपर सुजव तथा ते करतां पण दवतं
 वधता येरफायज्जा थवा संभव छे, माटे निर्ग्रथ संयतिप पूर्वसंखडि के पश्चात्संखडिमां
 भोजनार्थे एवानो इरादो नाहे करवो. [५५१]

१ केसके लोलुप जनेम सर्व कइ संभवे.

संपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए (५५१)

से भिक्खू वा (२) अन्नतरं संखडिं वा सोच्चा णितम्म संपहावे-
ति उस्सुयभूतेण अप्पाणेणं “ धुवा संखडी ” णो संचाएति तत्थ इयरे-
तरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं
आहारेत्तए । माइटाणं संपासे । णो एवं करेज्जा । से तत्थ कालेणं अणु-
पविसिन्ता तत्थेतरेतरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडि-
गाहेत्ता आहारं आहारेज्जा (५५२)

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण जाणेज्जा गासं व जाव
रायहाणिं, वा, इमंषि खलु गासंसि वा जाव रायहाणिंसि वा संखडी
सिया, तंषिय गासं वा रायहाणिं वा संखडिंपडियाए णो अभिसंधारेज्जा
गमणाए । केवली बूया आयाण—मेयं (५५३)

आइण्णोवमाणं संखडिं अणुपविस्समाणस्स पाएण वा पाए अक्कं-

१ इतिकृत्वेति शेषः

जो कोइ मुनि पूर्वसंखडि के पश्चात्संखडि थती साभळी त्यां उत्सुकता
धरी चाल्यो जशे तो त्य, जूदा जूदा कुळोमांथी आधाकर्मादिदोषरहित पवित्र
आहार ग्रहण करीने वापरी शकवानो नथी, किंतु त्यां दूषित आहार वापरीने
दोषपात्र थवानो. माटे मुनिए संखडिमां नहि जवुं. किंतु भिक्षाना समये जूदा
जूदा कुलोमां जइने पवित्र आहार मेळवी ते वापरवो. [५५२]

जे गास के राजधानीमां संखडि थवानी होय त्यां तेना माटे मुनिए जवानो
इरादो न करवो. केमके केवळज्ञानियो घेल्या छे के तेम करतां कर्मबंध
थाय छे. [५५३]

जे संखडिमां घणा लोक एकठा मळ्या होय अने भोजन थोडं रंथायलुं
होय त्यां जो मुनि जाय तो त्यां भीडंभीडायां तेना पग धीजाओना पगतळे.

तपुव्वे भवति, हत्थेण वा हत्थे संचालियपुव्वे भवति, पाण^१ वा पाए
 आवडियपुव्वे भवति, सीसेण वा सीसे संघट्टियपुव्वे भवति, काएण वा
 काए संखोभियपुव्वे भवति, दंडेण वा अट्टिणा वा मुट्टिणा वा लेलुणा
 वा क्वाल्लेण वा अभिहयपुव्वे भवति, सीतोदण वा उसित्तपुव्वे भवति, रयसा
 वा परिघासिय पुव्वे भवति, अणेसणिज्जेण वा परिभुत्तपुव्वे भवति, अ-
 ण्णेरिं वा, दिज्जमाणे पडिगाहितपुव्वे भवति, तम्हा से संजए णिग्गंथे
 तहप्पगारं आइण्णोमाण संखाडिं संखाडिपडियाए णो अभिसंधारेज्जा ग-
 मणाए (५५४)

से भिक्खू वा [२] गाहावड्कुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठे समाणे
 से ज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) एसणिज्जं सिया अणेसणिज्जं सिया
 वित्तिगिच्छसमावण्णेणं अप्पाणेणं असमाहडाए लेस्साए तहप्पगारं असणं
 वा (४) लाभे संते णो पडिग्गाहेज्जा. (५५५)

१ पात्रेण.

दवाशे, हाथ वीजाना हाथो साथे अथडाशे, पात्र वीजाओना पात्रो साथे अफळाशे,
 माथुं वीजाना माथा साथे अढकाशे अने शरीर वीजाना शरीर साथे घसाशे.
 वळी त्यां तेवी भीडमां लाकडी, हाडका, मूठ, पत्थर के स्वप्परनो मार पण कदाच
 सहेवां पडशे. अगर कोइ मुनिना शरीरपर ताहुं पाणी फेंकशे, अथवा धूळ फेंकशे
 अथवा मुनिने त्यां अशुद्ध आहार मळशे, अथवा वीजाने मळवानुं छातां बचगालेथी
 मुनि ते आहार झुटावी लेशे. [ए रीते अनेक दोष संभवे छे] पाटे निर्ग्रथ मुनिए
 तेवी जातनी संखाडिमां भोजन मेळववाना इरादाथी कदापि नहि जवुं. [५५४]

गृहस्यना घरे भिक्षा लेवा जतां मुनिने जे आहार निर्दोष के सदोष छातां
 शक भरेलो जणाय तो ते आहार तेवा मलिनाशयथी ग्रहण न करवो. [५५५]

से भिक्खू वा [२] गाहावतिकुलं पविसिज्जामे सच्चं भंडग—
मायाय गाहावतिकुलं पिंडवायपडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा
(५५६)

से भिक्खू वा [२] बहिया विहारभूमिं वा विचारभूमिं वा णिक्ख-
म्ममाणे पविसमाणे सच्चं भंडग मायाए बहिया विहारभूमिं वा विचारभू-
मिं वा णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा (५५७)

से भिक्खू वा [२] गामाणुगामं दूइज्जमाणे सच्चं भंडग—मायाए
गामाणुगामं दूइज्जेज्जा (५५८)

से भिक्खू वा [२] अहपुण एवं जाणेज्जा तिच्चदेसियं वासं
वासमाणं पेहाए, तिच्चदेसियं महियं सण्णिवयमारिं पेहाए महावाएण वा
र्यं समुद्ध्यं पेहाए, तिरिच्छसंपातिमा वा तसा पाणा संघडा सन्निवयमा-
णा पेहाए, से एवं णच्चा णो सच्चं भंडग मायाय गाहावइकुलं पिंडवाय
पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा, बहिया विहारभूमिं वा विचारभूमि
वा पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा. गामाणुगामं दूइज्जेज्ज वा [५५९]

मुनि^१ गृहस्थना घरे भिक्षा लेवा जतां सर्व धर्मोपकरण साथे लइने त्यां
जवुं आववुं. [५५३]

तेमज स्वाध्यायभूमिपर अथवा दिशाए जतां पण तेवीज रीते जवुं
आववुं, [५५७]

अने ग्रामानुग्राम विहार करतां पण तेज रीते वर्त्तवुं. [५५८]

पण जो बरसाद बहु बरसतो होय अथवा द्रव बहु पढतुं हेय अथवा
आकरा वायुथी धूल बहु उडती होय अथवा झीणा जीवजंतुंओ घणा ऊडतां होय
तो त्यां सर्व धर्मोपकरण साथे लइने भिक्षा लेवा के भणवा दिशाए या ग्रामांतरे
जवा आववावुं करवुं नहि. [५५९]

? आ सूत्र जिनकल्पिक विगेरे माटे छे. एम टीकाकार जणावे छे. इहां
समाचारी ए छे के जिनकल्पिके तो तेवे टांकणे चालवुं ज नहि. पण स्थविरकल्पिक
कारण योगे जाय आवे तो साथे सर्वोपकरण नहि लेवा.

से भिक्खू वा [२] से ज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा; तंजहा, खत्तियाण वा, राईण वा, कुराईण वा, रायपेसियाण वा, रायवंसट्ठियाण वा, अंतो बहिंवा संगिविट्ठाण वा, गच्छंताण वा णिमंतेमाणाण वा, अणिमतेमाणाण वा, असणं वा (४) लामे संते णो पडिगाहेज्जासित्ति बेमि [५६०]

चतुर्थ उद्देश.

से भिक्खू वा [२] जाव पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा मंसाइयं वा, मच्छाइयं वा, मंसखलं वा, मच्छखलं वा, आहेणं वा, पहेणं वा, हिंगोलं वा, संमेलं वा, हीरमाणं संपेहाए, अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया बहुहरिया बहुओसा बहुउदया बहुउत्तिंगपणग—दगमदिय—मक्खडासंताणगा, बहवे तत्थ समण—माहण—अतिहि—क्विण—वणीमगा उवागता उवागामिस्संति, तत्थाइण्णा वित्ती, णो पण्णस्स

मुनिए चक्रवर्ति प्रमुख क्षत्रियो, राजाओ, डाकोरो, सरदारो, के राजवंगी लोको, जेओ शहेरमां के शहेर बाहेर रहेता होय या रस्ते प्रयाण करता होय तेमने त्यांथी निर्मंत्रण छतां या नहि छतां आहार ग्रहण न करवो. [५६०]

चोथो उद्देश.

[मुनिए जमणवारमां न जवुं.]

मुनिए गृहस्थना^१ घरे भिक्षार्थे जतां तेने त्यां एवुं जणाय के अहिं मांस, मत्स्य के मद्यबालुं विवाहभोजन, मृतकभोजन, या प्रीतिभोजन छे, अने तेने त्यां कोइ लइ जतुं होयें, तोपण जो मार्गमां वीज, वनस्पति, टार, पाणी, के झीणा जीवजंतु घणा होय अथवा त्यां घणाएक [दुद्धधर्मा] श्रमणो, ब्राह्मणो, वटेमारुओ, स्कांधिओ, क भाटचारणो, आवेला के आववाना होय अने तेथी त्यां बहु भीड थवानी होय जेथी चतुर पनिने त्यां जतुं वळवुं मुक्केलभिरेलुं थइ पडे अने

१ गृहस्थमां तमाम धर्माळानो समावेश थायछे.

णिक्रमणपवेसाए, वायणबुच्छणपरियट्टणाणुपेहाए धम्माणुओगचिंताए, सेवं
णच्चा तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिपडियाए णो अभिसं-
धारेज्जा गमणाए (५६१)

से भिक्खू वा (२) गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठे समाणे
से ज्जं पुण जाणेज्जा, मंसाइयं जाव संमेलं वा हरिमाणं पेहाए अंतरा से
मग्गा अप्पंडा जाव अप्पसंताणगा, णो जत्थ बहवे समणमाहणा जाव
उवागमिस्संति, अप्पाइण्णा विची, पण्णस्स णिक्रमणपवेसाए पण्णस्सा
वायण-बुच्छण-परियट्टणाणुपेहाए धम्माणुओगचिंताए, सेवं णच्चा तहप्पगारं
पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिपडियाए अभिसंधारेज्ज गमणाए
(५६२)

से भिक्खू वा (२) गाहावइकुलं जाव पविसित्तुकामे से ज्जं ण
जाणेज्जा खीरिणियाओ गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए असणं वा (४)
उवसंखडिज्जमाणं पेहाए पुरा अप्पजूहिए, सेवं णच्चा णो गाहावइकुलं

पठनपाठन के धर्मोपदेश अटकी पडवाना जणाय तो तेवा स्थळे ते मुनिए जवानो
इरादो नहि करवो. [५६१]

पण जो तेवा मांस मत्स्य, के मद्यग्रधान, विवाहभोजन, मृतकभोजन,
या प्रीतिभोजनमां मुनिने कोइ तेडी जतुं होय अने मुनिने मार्गमां कशी वनस्पति,
जळ, के जीवजतुं नहि जणाय तेमज त्यां श्रमण-व ह्यणादिकनी बहु भीड पण
नहि होय जेथी मुनिने त्यां जवुं आववुं सुलभ होय अने पठनपाठनादिक पण
थइ शके तो तेवा स्थळे [कारणयोगे] मुनिए भिक्षार्थे जवुं पण खरुं. [५६२]

गृहस्थना घरे मुनिए जतां त्यां ए वखते गायो दोवाती होय अथवा भो-
जन रंधातुं होय अथवा तैयार थइ रहुं छतां हजू बीजा याचकोने अपायुं नहि

? मुनि रस्ते चाली थाक्यो होय या मांदगीथी उठ्यो होय या दुर्भिक्ष होय
विगेरे कारणयोगे मांसादिक त्याग करवा समर्थ मुनिए त्यां जवुं एम टीकाकारे
जणान्हुंछे.

पिंडवाय पडियाए णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा । से त्तमायाए एगंत म-
वक्खमेज्जा, अणावाय-मसंलोए च्चिद्वेज्जा । अहपुण एवं जाणेज्जा, खी-
रिणीओ गावीओ खीरियाओ पेहाए, असणं वा [४] उवक्खडियं पेहाए,
पुरापजूहिते, से एवं णच्चा ततो संजयामेव गाहावतिकुलं पिंडवायपडि-
याए पविसेज्ज वा निक्खमेज्ज वा (५६३)

भिकखागा णामेगे एव माहंसु समाणे वा वसमाणे वा, गामाणु-
गामं दूइज्जमाणे, “खुड्ढाए खलु अयं गामे संणिरुच्चाए णो महालए, से
हंता-भयंतारो बाहिरगाणि गामाणि भिक्खाथारियाए वयह ” (५६४)

संति तत्थेगतियस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया वा पच्छासंथुया वा
परिवसंति, तंजहा, गाहावती वा, गाहावतिणीओ वा, गाहावतिपुत्ता वा,
गाहावतिधूयाओ वा, गाहावतिसुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासी वा, दा-
सीओ वा, कम्मकरा वा, कम्मकरीओ वा, तहप्पगाराइं कुलाइं पुरेसंथु-
नहि होय तो मुनिए ते घरमां प्रवेश न करवो. किंतु पाछा वळीने कोइ नहि दे-
खी शके तेवा स्थळे जइ ऊभा रहेवुं. अने ज्यारे जणाय के गायो दोवाइ रहीं छे
या भोजन तैयार थइ रहुं छे अने बीजा याचकोने अपाइ चूक्खुं छे त्यारे यतना-
पूर्वक ते गृहस्थना घरे जइने आहार लइ वळवुं. [५३३]

वृद्धपणार्थी स्थिरवास करनारा के मासकल्पथी फरनारा मुनिओ नवा आ-
वता मुनिओने एम कहे के “हे पूज्य मुनिओ, आ गाम घणुं नानकहुं छे
अने अहीं [सूतकादिकर्था] घणां घरो रोकयेलां छे. माटे आप बीजा गामे भिक्षा-
माटे पधारो.” तो मुनिए तेम सांभळी ग्रामांतरे चाल्या जहुं. [५६४]

कोइ गाममां मुनिना पूर्वपरिचित^१ तथा पश्चत्परिचित^२ सगावहाला रु-
हेता होय, जेवाके:-गृहस्थो, गृहस्थ वानुओ, गृहस्थपुत्रो, गृहस्थपुत्रीओ, गृहस्थ
पुत्रवधुओ, दाइओ, दास, दासीओ, अने चाकरो, के चाकरडंओ; तेवा गाममां
जतां जो ते मुनि एवो विचार करे के हुं एकवार वधार्थी पहेलां मारा सगाओमां
भिक्षार्थे जइश, अने त्यां मने अन्न, पान, दूध, दहिं, माखण, घी, गोळ, तेल,

याणि वा पच्छासंथुयाणि वा पुत्रामेव भिक्खायारियाए अणुपविसिस्सामि, अ-
वेय इत्थ लभिस्सामि पिंडं वा, लोयं वा, खीरं वा, दधिं वा, नवणीयं वा,
वयं वा, गुलं वा, तेछं वा, महं वा, मज्जं वा, मंसं वा, संकुलिं वा, फाणियं
वा, पूयं वा, सिहरिणिं वा, तं पुव्वामेव भुच्चा पेच्चा, पडिग्गहं संलिहिय
सपमज्जिय, ततो पच्छा भिक्खूहिं सद्धिं गाहावतिकुलं पिंडवायपडियाए
पविसिस्सामि निक्खमिस्सामि वा । माइट्ठणं फासे । णो एवं करेज्जा ।
से सत्थ भिक्खूहिं सद्धिं कालेण अणुपविसित्ता तत्थियरेयरेहिं कुलेहिं सा-
मुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेज्जा । (५६५)
एयं खलु तस्सा भिक्खुस्सा वा भिक्खुणीए वा सामगियं ।

(५६६)

[पंचम उद्देशः]

से भिक्खू वा [२] जाव पविट्ठेसमाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, अ

मधु, मद्यमांस^१ तिलपापडी, गोळवालुं पाणी, बुंदी, के श्रीखंड मळशे ते हुं सर्व-
थी पहेलां खाइ पात्रो साफ करी पछी बीजा मुनिओ साथे गृहस्थना घरे भिक्षा
लेवा जइश, तो ते मुनि दोषपात्र थाय छे माटे मुनिए एम नहि करवुं, किंतु बीजां
मुनिओ साथे वखतसर जूदा जूदा कुलोमां भिक्षानिमित्ते जइ करी भागमां मळेला,
निर्दूषण आहार लइ वापरवो. [५६५]

एज भिक्षु के भिक्षुणीनो पूर्ण आचार छे. [५३३]

—=:*:—

पांचमो उद्देश.

[मुनिए कयो आहार लेवो अने कयो नहि लेवो.]

गृहस्थने त्यां रंधां तैयार थएला आहारमांथी शरूआतमां थोडुंएक-

१ वखते कोइ अतिप्रमादि गृह होवाथी मद्यमांस पण खावा चाहे माटे
ते लीधाछे एम टीकाकार लखेछे.

अग्निपिंडं उक्त्विष्यमाणं पेहाए, अग्निपिंडं णिक्त्विष्यमाणं पेहाए, अग्निपिंडं
हीरमाणं पेहाए, अग्निपिंडं परिभाइज्जमाणं पेहाए, अग्निपिंडं परिभुज्जमाणं
पेहाए, अग्निपिंडं परिद्वेज्जमाणं पेहाए, पुरा असिणाति वा, अवहाराति वा
पुरा' जत्थन्ने समण-माहण-अतिहि-क्विण वणीमगा खट्ठं खट्ठं^१ उव-
संकमंति, से हंता अहमवि खट्ठं उवसंकमामि, माइट्ठणं संफासे णो एवं
करेज्जा । (५६७)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे अंतरा से वण्णाणि वा, फलिहा-
णि^२ वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गलपासगाणि वा
सति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा । केवली बूया
आयाण-मेयं. ” । (५६८)

से तत्थ परक्कमेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा। से तत्थ पयलेमाणे
वा पवडेमाणे वातत्थसे काये उच्चारणे वा, पासवणेण वा खेलेण वा, सिं-
घाणेण वा, वंतेण वा, पितेण वा, पूएण वा, सुक्केण वा सोणिएण वा, उ,

१ त्वरितं त्वरितं २ परिखाः

देवताने चडाववामाटे कहाडेला अग्निपिंडनामे आहारने, काहाडती वेळा,
नाखती वेळा, लइ जता वेळा, वेहेंचती वेळा, खाती वेळा, के देवालयनी
चामेर ऊछाळती वेळा घणाएक श्रमण-ब्राह्मणादिक भिक्षुओ पूर्वे घणी
वखतं ते आहार खाधेलो अने मेळवेलो होवार्थी फरी तेनामाटे त्यां ऊतावळा
ऊतावळा दोड्या जाय छे. तेमने देखीने मुनि विचारे के हुं पण त्यां
जाऊं तो ते दोषपात्र थायछे. माटे मुनिए तेम न करवुं. (५६७)

मुनिए गृहस्थने त्यां भिक्षा लेत्रा जतां वचगाले गढ, खाइ, कोट, तोरण,
के आगळीओ आडी आवे तो ते रस्ते ना जतां वीजे रस्ते मुनिए त्यां जवुं.
कारणके ते रस्ते जतां केवळज्ञानिओ जोखम भरेलुं गणेछे. [५६८]

जे माटे ते रस्ते चालतां कदाच मुनि त्यां लथडी जाय के पडी पण जाय
अने तेम थतां तेहुं शरीर, विष्टा मुत्र, श्लेष्म, श्रूक, वमन, पित्त, परु, वीर्य, के
लोहीथी खराव पण थाय [हवे कदाच वीजो मार्ग न होवार्थी मुनिए तेज रस्ते जतां]

पलित्ते सिया। तहप्पगारं कायं णो अणंतरहियाए^१ पुढवीए, णो ससाणि-
च्चाए पुढवीए, णो ससरक्खाए^२ पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए, णो
चित्तमंताए लेलूर, कोलावासंसि^३ वा दासुए, जीवपतिट्ठिए सअंडे सपाणे
जाव ससंताणए, णो आमज्जेज्ज वा, णो पमज्जेज्ज वा—संलिहेज्ज वा,
णिह्तिहेज्ज वा,—उच्चलेज्ज वा,—उच्चट्टेज्ज वा,—आयावेज्ज वा,—पयावे-
ज्ज वा । से पुच्चासिेव अप्पससरक्खं तणं वा, पत्तं वा, कट्ठं वा, सक्कर
वा जाएज्जा । जाइत्ता से त्त मायाए एगंत-मवकमेज्जा (२) अहे
झामथंडिलंसि^४ वा जाव अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि पडिलेहिय (२)
पमज्जिय (२) ततो संजयासेव आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा ।

[५६९]

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा,
गोणं वियालं^५ पडिपहे पेहाए, महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, एवं मणुस्सं
आसं हत्थि सीहं वग्गं दीवियं अच्छं तरच्छं परसरं सियालं विरालं सु-

१ अनंतर्हितया. २ सरजस्कया. ३ घुणाकीर्णे ४ अथ दग्धस्थं-
डिले. ५ व्यालं दुष्टं.

तेनुं शरीर ऊपर जणावेली रीते अशुचिर्था खराव थाय तो तेणे तरतनी सूकैली
के चीकणी के कवरावाली माटीथी अथवा साचित्त पत्थराथी या ब्रीणाजविजंतुथी
भरेला लाकडा विगेरेथी शरीरने घसवुं के साफ करवुं के सूकववुं नहि. किंतु
तेवा वखते तरतज गृहस्थयासेथी निर्जीव घास पान के काष्ट अथवा रेती मागी
लाववी. अने ते लइने एकांत स्थळयां जरने त्यां निर्जीव जमीनने जोइ प्रमाजी
यत्नापूर्वक ते तृणादिकवडे शरीरने साफ करवुं. [५६९]

मुनिने भिक्षा लेवा जनां मार्गमां विक्राळ वळढ, पाडो, मनुष्य, अश्व, हाथी
सिंह, बाघ, दीपडो, रींछ, तरग, शरभ, [अष्टापद], सीआळ, विलाडो, कूतरो
चाराहिभूर, लोंकडो, के कोइषण जातनुं जंगली जानवर ऊभुं रहेलुं जणाय

णयं कोलसुणयं कोकंतियं^१ चित्ताच्चैल्लस्यं^२ वियालं पडिपहे पेहाए, साति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा । [५७०]

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे अंतरा से ओवाओ वा, खाणू वा, कंटए वा, घसी^३ वा, भिलुगा^४ वा विसमे वा विज्जले^५ वा परिया-वज्जेज्जा, साति परक्कमे संजयामेव णो उज्जुयं गच्छेज्जा । [५७१]

से भिक्खू वा (२) गाहावतिकुलस्स दुवारसाहं कंटकवोदियाए पडिपिहियं पेहाए तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुण्णविय अपडिलेहिय अप-मज्जिय नो अवगुणेज्ज^६ वा, पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा । तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुण्णविय पडिलेहिय पमज्जिय ततो संजयामेव अवगु-णेज्ज वा, पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा । [५७२]

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा समणं वा, साहणं वा, गाम पिंडोलगं वा, अतिथिंवा, पुव्वपविट्ठं पेहाए णो तेसिं

१ लोभटकं २ आरप्यजीवविशेषं ३ स्थला दधस्ता दवतरणं
४ स्फुटितकृष्णभूराजिः ५ कदर्भः ६ उद्घाटयेत्
अने बीजो रस्तो होय तो ते भयभरेला सीधे रस्ते न जतां बीजे रस्तेथी जवुं. [५७०]

एज प्रमाणे मार्गमां खाडा होय, खीला होय, कांटा होय, वोंकराना घस [नळियां] होय, फाटेली जमीन होय, टीवाटेकरा होय, के कीचड होय, तो मार्गां तर छातां ते मार्गें न जवुं. [५७१]

मुनिए गृहस्थना घरनो दरवाजो कांटानी डाळयी हांकेलो देखी गृहस्थनी रजा लीधा शिवाय तथा जोया प्रमार्ज्या शिवाय ऊघाडवो नहि तेमज तेना अंदर पेसवुं पण नहिं. किंतु (जे जरूरी काम होय तो) गृहस्थनी रजा लइ पुंजी प्रमार्जी यत्ना पूर्वक ऊघाडवो अजे अंदर जवुं. [५७२]

मुनिए गोचरीए जतां गृहस्थना घर कोइ पण श्रमण, ब्राह्मण, भोचारी,

संलोए सपडिदुवारे चिट्टेज्जा, । केवळी बूया “आयाण-मेवं” [५७३]

पुरा पेहाए तरसद्दाए परो असणं वा [४] आहद्दु दल-ज्ज

अह भिक्खूणं पव्वावादिद्दा एस पतिन्ना, एस हेऊ, एस उवएसो, जं णे
तेसिंसंलोए सपडिदुवारे चिट्टेज्जा से त्त-मायाए^१ एगंत-मवक्कमेज्जा (२)
अणावाय-मसंलोए चिट्टेज्जा । (५७४)

से परो अणावाय-मसंलोए चिट्टेमाणस्स असणं वा आहद्दु दल-
एज्जा, से य वदेज्जा “आउसंतो समणा, इमे भो असणे दा (४)
सव्वजणाए निसिद्धे, तं भुंजह च णं, परिभाएह च णं.” तं चेगतिओ
पडिगाहेत्ता तुसिणीओ ओहेज्जा, “अवियाइ एयं मममेव सिया ” एवं
माइद्दुणं संफासे । णो एवं करेज्जा । से त्त-मायाए तत्थ गच्छेज्जा (२) से
पुव्वा मेव आलोएज्जा “आउसंतो समणा, इमे भो, असणं वा (४)
सव्वजणाए णिसिद्धे तं भुंजह चणं, परिभाएह च णं” से वं वदंतं परो
वएज्जा, “आउसंतो समणा, तुभं चैव णं परिभाएहि ” से तत्थ परिभा-
एमाणे णो अप्पणो खद्दुं खद्दुं^२ डायं^३ (२) ऊसडं^४ (२) रसियं २ मणुवं

१ तं पूर्वप्रविष्ट आदाय ज्ञात्वा. २ प्रचुरं प्रचुरं. ३ शाकं. ४
उत्तृतं वर्णादिगुणोपेतं

के परदेशीने पोताथी पेहेलो पेठेलो जोइ तेमना देखतां गृहस्थना दरवाजे उभा
रेहेवुं नहि. केमके तेम उभा रेहेतां केवळी भगवाने बहु दोष जणाव्या छे. [५७३]

जे माटे ते मुनिने दरवाजे उभो रहेलो जोइ गृहस्थतेना माटे अदहारादिफ
वनावीने आशदातुं करे छे. माटे मुनिना सारुं ऊपर जणाव्या मुजव आवी प्रतिज्ञा
आवो हेतु अने आवो उदेश जरुरनो छे के तेणे गृहस्थने त्यां ह्वे पेठेला
वाचकोना देखतां दरवाजे नहि उभा रहेवुं. किंतु कोइ नहि देखी शके तेवा-
स्यळे जइ उभा रहेवुं. [५७४]

[२] णिद्धं (२) लुक्खं [२] से तत्थं अमुच्छित्ते अग्निद्धे अग्निद्धि
अणञ्चोवज्जणे बहुसममेव परिभाएज्जा । (५७५)

से णं परिभाएमाणं परो वदेज्जा “आउसंतो समणा, मा णं तुमं
परिभाएहि, सव्वे वेगतिया भोक्खामो वा पहामो^१ वा” से तत्थं^२ भुंज-
माणे णो अप्पणो खद्धं (२) जाव लुक्खं- (२) से तत्थं अमुच्छिण्णं (४)
बहुसममेव भुंजेज्जा वा पीएज्जा वा । (५७६)

१ प्रथमो वा २ परतीर्थिकैः सार्द्धं न भोक्तव्यं स्वयूयैश्च
पार्श्वस्थादिभिः हभुंजानाना मयं विधिः

एवे स्थळे ऊभा रेहेतां छतां मुनिने ते गृहस्थ त्यां आधी अशनादिक
आहार आपे अने कहके “हे आयुप्पन् सायुओ, आ आहार में तयो सर्व जणने
आप्यो छे. माटे तमे वधा जण भेगा मळी खाओ अथवा वेंहेची ल्यो.” तेणं छतां
ते मुनि आहार दळ्यावाद गुपचुप रही एम विचार करे के “आ तो मनेज मात्र
पूरतो छे” तो ते दोषपात्र धाय छे. माटे एवो वितर्क कदापि न करवो. किंतु ते
आहार लइ वीजा श्रमणादिको पासै जतुं अने शरुआतमांज जणावहुं के “आयुप्पन्
श्रमणो, आ आहार आप सर्व जणने एकठो मळ्यो छे. माटे भेगा खाओ अथवा
वेंहेची ल्यो.” आम मुनिण कहेतां मुनिने कोइ कहे के “हे आयुप्पन् श्रमण,
तुंज वधाने वेंहेची आप.” त्यारे मुनिण ते वेंहेची आपतां पोता तरफ ज्ञाजो ज्ञाजो
या स्वादिष्ट या उत्तम उत्तम या रसिक रसिक या मनोहर मनोहर घृतवाळो
घृतवाळो या चोखो चोखो नहि नाखवो. किंतु त्यां मुनिण सर्व लोलपिपणुं त्याग
करी शांतपणे ते वरोवर सरखीरीते ज वेंहेची आपवो. [५७५]

अगर वेंहेचती वेळा कोइ मुनिने कहे के “हे आयुप्पन् श्रमणं तुं वेंहेच
मा. आपण वधा एकठा मळी खाणुंपीणुं.” त्यारे मुनिण तेमना^१ साथे जमतां पण
कणुं वधतुं वधतुं के सारं सारं पोते नहि खातां सरखी रीते शांतपणे जमवुं
[५७६]

१ (परतीर्थिको साथे नहि जमवुं पण स्वयूथिक पासत्यादिक साथे जमवा-
नीं आ विधि छे, एम टीकाकार जणावे छे.)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा समणं वा, माहणं वा, गार्सपिंडोलगं वा, अतिहिं वा, पुव्वपविट्ठं पेहाए णो ते उवातिकम्म पविसेज्ज वा ओभासेज्ज^१ वा। से य त-मायाए एगंत-मव-क्कमेज्जा अणावाय-मसंले ए चिट्ठेज्जा। अह पुण एवं जाणेज्जा, पडिसे-हिए व दिन्ने वा, ततो तसि णियाट्ठे संजयामेव पविसेज्ज वा ओभासेज्ज वा। (५७७)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामागियं। (५७८)

[षष्ठ उद्देशः]

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, रस-सिणो बहवे पाणे घासेसणाए संघडे संणिवतिए पेहाए, तंजहा; कुक्कुड-

१ अवभाषेत वा.

मुनिए गृहस्थना घरे भिक्षार्थे जतां त्यां पोतार्थी अगाऊ पेठेला श्रमण, ब्राह्मण, भीखारी के अतिथिने ऊभा रहेला जोइने तेमंतुं उलंघन करी कदापि अंदर पेशवुं के मागवुं नहिं. किंतु तेम जाणी कोइ नहिं देखी शके तेवा स्थळमां एकांते जइ ऊभा रहेवुं. अने ज्योर एम जणाय के तेमने गृहस्थे पाळ्य वाळ्या छे अथवा दीधुं छे त्यारे तेमना जवा वाद मुनिए यतनापूर्वक ते गृहस्थना घरनी अंदर जवुं के मागवुं. [५७७]

एज खरेखरो मुनि अने आर्याओनो आचार छे. [५७८]

छठो उद्देशः.

[केवो आहार लेवो तथा केवो न लेवो तेना नियमो.]

मुनिने भिक्षं मार्गमां राध जातसेल्लुपि कूकडाओ, सुअरो, नया

जातियं वा, सूयरजातियं वा, अग्गापडासिं वा वायसा संघडा संणिवडिया पेहाए, सति परक्कमे संजयामेव नो उज्जुयं गच्छेज्जा । [५७९]

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठे समाणे नो गाहावतिकुलस्स दुवारसाहं अवलंबिय (२) चिट्ठेज्जा; नो गाहावतिकुलस्स दगच्छड्डुणमत्तए चिट्ठेज्जा; नो गाहावतिकुलस्स चंदणिउयए^१ चिट्ठेज्जा णो गाहावत्तिकुलस्स सिणाणस्स वा वच्चस्स वा संलोए सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा; णो गाहावतिकुलस्स आलोयं वा थिग्गलं वा संधिं वा दग्गभरणं वा बाहाउ पग्गिञ्जिय (२) अंगुलियाए वा उदिसिय (२) ओणामिय (२) उण्णमिय (२) णिज्जाएज्जा; णो गाहावतिं अंगुलियाए उदिसिय [२] जाएज्जा; णो गाहावतिं अंगुलियाए चालिय [२] जाएज्जा; णो गाहावतिं अंगुलियाए तज्जिय^२ (२) जाएज्जा; णो गाहावतिं अंगुलियाए उदखुलंपिय^३ [२] जाएज्जा; णो गाहावतिं वंदिय [२] जाएज्जा णो वयणं फल्लं वदेज्जा । [५८०]

कागडा विगेरे घणाएक प्राणिओ खावा माटे रस्तामां एकटा मळेला जणाय तो ते रस्तो सीधो छतां बीजा मार्ग मळी आवतो होय तो ते रस्ते मुनिए नहि चालवुं. [५७९]

मुनिए भिक्षार्थे गृहस्थना घरे जतां त्यां गृहस्थना दरवाज्यानीं शाखा पकडी उभा रहेवुं नहिं, ग्रहस्थना पाणी ढोळवाना स्थानक तरफ उभा रहेवुं नहिं, कोगळा फेंकवाना स्थानक तरफ उभा रहेवुं नहिं, अने स्नान करवाना के खरचु जवाना स्थान तरफ उभा रहेवुं नहिं. वळीं ब्रह्मस्थना घरनी वारीओ या छिट्टो या फाट तथा पाणीआराने मुनिए पोताना हाथ के आंगळीओ अडकावी उंचानीचा यइ तेओमांथीं ग्रहस्थनुं घर जोवुं नहिं. मुनिए आंगळीओवडे भिक्षानीं करी याचवुं नहिं. तेमज आंगळीओ वडे तेने धुणावीने के दनावीने पण याचवुं नहिं तथा आंगळीओवडे तेने अरज करीने याचवुं नहिं वळीं प्ररक्षणे सलाप करीने पण कंड याचवुं नहिं. ग्रहस्थ कदाच कंड नहिं आपे तो पाडोर वचन न बोलावां. [५८०]

अह तत्थ कंचि भुंजसाणं, पेहाए तंजहा; गाहावइयं वा जावं कम्मकरिं वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा;—“ आउसो—त्ति वा, भइणि—त्ति वा, दाहिसि से एत्तो अन्नयरं भोयणजातं । ” से एवं वदंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दर्विं वा, भायणं वा, सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा, उच्छोलेज्जे वा, प्होएज्ज वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा “आउसो—त्ति वा भगिणी—त्ति वा, मा एयं तुमं हत्थं वा, मत्तं वा, दर्विं वा, भायणं वा, सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेहि वा प्होवाहि वा । अभिकंवासि से दातुं, एमेव दलाहि । ” से सेवं वदंतस्स परो हत्थं वा [४] सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेत्ता पधोइत्ता आहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारेण पुरेकम्मएण हत्थेण वा [४] असणं वा [४] अफासुयं अणेसणिज्जं जाव णो पडिगाहेज्जा । अहपुण एवं जाणे-

१ उदकाद्रिण.

मुनिए गृहस्थने घरे जतां त्यां कोइने जमतो देखी शरुआतमां तपास करवी के आ कोण छे. के यावत् चाकर चाकरडी छे? त्यारवाद तेणे वोलवुं के “ हे आयुष्मन् अथवा हे वेहेन, आ भोजनमांथी मने कइ पण थोहुंएक भोजन आपसो? ” एम मुनिए वोलतां गृहस्थ पोताना हाथ, पात्र, अने चाटवो के वासण थंडा पाणीथी अथवा ठरीने सचित्त थएला ऊना पाणीथी छांटे के धेवा मंडे तो मुनिए शरुआतमां ज तेने जणावुं के “ हे आयुष्मन् या वेन तेमे एम पाणीथी छांटीने के धेइने मने आपता ना, वगर छांटे धेएज मने आपो ” तेम कहैतां पण जो ते गृहस्थ पोताना हाथपात्र पाणीथी छांटी के धेइने ज आपवा मंडे तो मुनिए तेवा आहारने अशुद्ध गणीने ग्रहण न करवुं. तेमज कदाच एम वने के गृहस्थ आहार आप्या अगाउ तेम चाहौने हाथपात्र पाणीथी भीजाइ गएला होय तोपण तेनावडे आहार मुनिए न लेवो. वळी कदि गृहस्थना हाथपात्र

एवं खलु तस्मिन् भिक्षुस्स वा भिक्षुणी ए वा सामगिर्यं ।

[५८६]

(सप्तम उद्देशः)

सै भिक्षू वा [२] जाव समाणे सै ज्जं पुण जाणे-
ज्जा, असणं वा (४) खंवांसि वा, थंभांसि वा, मंचांसि वा, मालांसि
वा, पासायांसि वा, हम्मियतलांसि वा, अनयरंसि वा तहप्पगारांसि
अंतलिकखजायांसि उवणिक्खित्ते सिया, तहप्पगारं मालोहडं असणं
वा [४] जाव अफासुयं णो पडिगाहेज्जा । केवली बूया “आया-
ण-मेतं” । अस्संजए भिक्षुपडियाए पीढं वा, फलहगं वा, णिस्सेणि

ए मुनि अने आर्याओनो पवित्र आचार छे. [५८६]

सातमो उद्देशः.

(केम अने केवो आहार लेवो तथा केम अने केवो न लेवो.)

ज आहार गृहस्थे भीति ऊपर, थांभला ऊपर, मांत्ता ऊपर, माळ ऊपर, घर
ऊपर के हवेली ऊपर अथवा पृथी जातना कोइ पण उच्च स्थळमां राख्यो होय
अने त्यांथी लावीने गृहस्थ आपवा मांडे तो ते आहार अशुद्ध गणीने मुनिपु न
लेवो केमके ज्ञानिओर तेमां दोष बताव्याछे. ज माटे गृहस्थ सावुना माटे
त्यां वाजोठ, पाटिउं, निसरणी के ऊखळ मांडी त्यां चढतां जो पडे तो

वा, उद्वहलं वा, आहृत् उस्सविय दुखहेज्जा । से तत्थ दुखहमाणे पय-
लेज्जं वा पवडेज्जं वा । से तत्थ पयलेमाणे वा पवडेमाणे वा हत्थं वा,
पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अण्णयरं वा कायंसि इ-
दियजायं लूसैज्जं वा: पाणाणि वा भूयाणी वा जीवाणी वा सत्ताणि वा
अभिहणेज्जं वा वत्तेज्जं वा लेसेज्जं वा संवसेज्जं वा संघट्टेज्जं वा परिया-
वेज्जं वा किलामेज्जं वा ठाणाओ ठाणं संक्रामेज्जं वा । तं तहप्पगारं
मालोहडं असणं वा (४) लामे संते णो पडिगाहेज्जा । (५८७)

से भिक्खू वा [२] जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा असणं
वा (४) कोट्टियातो वा कोलज्जातो^१ वा अस्संजए भिक्खुपडियाए
उक्कुञ्जिया अघउञ्जिया ओहरिया ओहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं असणं वा
(४) मालोहडंति णच्चा लामे संते णो पडिगाहेज्जा । (५८८)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा असणं
वा (४) मट्टिओलित्तं तहप्पगारं असणं वा (४) जाव लामे संते णो पडि-

१ अभावृत्तरवाताकारात्.

तेना हाथ, पाग, बाहु, साधळ, पेट, माथुं के गमे ते अंगनो भंग थाय तथा
वीजा जीव जंतुओ पण हणाय माटे तेवी जातनो माळथी आपेलो आहार
मळतां छतां पण न लेवो: [५८७]

चळी जो गृहस्थ, कोठीमां के कोठलाभांथी साधुना माटे उंचो नीचो के
आडो थइ आहार लावी मुनिने आपवा मांडे तो ते पण न लेवो. [५८८]

मुनिए जे आहार माटीथी लीपी बंध राखेलो होय ते मळतां छतां नहि
लेवो. जे माटे केवळज्ञानिओए एमां दोष बतान्या छे, केमके असंयति गृहस्थ सा-
धुना माटे माटी ऊखेडी ते आहारने कहाइवा जतां पृथ्वीकाय तथा आग्ने, वायु,

गाहेज्जा । केवली बूया " आयाण-मेयं " अस्संजए भिक्खू-पडियाए मट्टिओलित्तं असणं [४] उद्धिदमाणे पुढविकाय समारंभेज्जा, तथा तेज्जा वाऊ-वणस्सति-तस- तयं समारंभेज्जा, पुणरवि ओलियमाणे पच्छाक-स्सं करेज्जा । अह भिक्खूणं पुव्वावदिट्ठं जाव जं तहप्पगारं मट्टिओलित्तं असणं वा [४] लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । [५८९]

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठेसमाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, असणं वा (४) पुढवि कायपतिट्ठियं, तहप्पगारं असणं वा (४) अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा । [५९०]

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण जाणेज्जा, असणं वा [४] आडकायपतिट्ठियं तह चेव एवं अगणिकायपतिट्ठियं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । केवली बूया " आयाण-मेयं " अस्संजए भिक्खुपडियाए अगणि उ-स्सक्किय (२) णिसक्किय (२) ओहारिय (२) आहट्टु दलएज्जा अह भिक्खूणं पुव्वावदिट्ठं जाव णो पडिगाहेज्जा । [५९१]

वनस्पति, अने त्रसकायनी हिंसा करे, तथा पाहुं बंध करतां पण तेडली हिंसा करे माटे साधुने एवीं भलायण छे के तेणे मायीथी बंध करेलो आहार ग्रहणां नहि लेवो. [५८९]

मुनिए जे आहार सचित्त पृथ्वीकाय उपर पडेलो होव ते पोताने " अयंत्यधारी" ग्रहण न करवो. [५९०]

एज रीते पाणी उपर रहेलो आहार पण न लेवो. वळी अग्नि उपर चडेलो आहार पण न लेवो केमके तेम करतां कर्मबंध साय छे, जे माये तेवे दलते असंयति मृइस्य मुनिना माटे अग्निने बधती वाळशे अथवा ओळी करतो, अथवा हांडाने आहुं पाहुं करतो, माटे मुनिने उपर जणावेली खास बलायण छे के तेणे अग्नि उपर चडेलो आहार ग्रहण न करवो. [५९१]

से भिक्खू वा (२) जाव पविहेसमाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, असणं वा (४) अच्चुसिणं अस्संजणं भिक्खुपडियाए सूवेण वा, नियमेण वा, साखियंटेण वा, पत्तेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुणहत्थेण वा, च्छेलेण वा, च्छेलकलेण वा, हत्थेण वा, सुहेणवा, फुसेज्ज वा, वीएज्ज वा, से पुच्चामेव आलोएज्जा "आउहा-
त्ति वा, भगिणि-त्ति वा, मा एयं तुमं असणं वा [४] अच्चुसि-
णं सूएण वा जाव फुसाहि वा वीयाहि वा । अभिक्खसि मे दातं, ए-
मेव दलयाहि ।" से सेवं वंदतस्स परो सूवेण वा जाव वीइत्ता आ-
हहु दलएज्जा, तहप्पगारं असणं वा (४) जाव णो पडिगाहेज्जा ।

(५९२)

से भिक्खू वा [२] जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा [४] वणस्सइकायपत्तिद्धियं, तहप्पगारं असणं वा [४] वणस्सइकाय-
पत्तिद्धियं अफासुयं अणेतणिज्जं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । एयं तसका-
एवि । (५९३)

आहार-पाणी अति ऊनां हेवाशी गृहस्थ तेने मुनिना माटे सूपडावडे, वींजडावडे, मोरपीछना वींजडावडे, पंखावडे, साखावडे, शाखाना कटकावडे, मोरपीछवडे, कपडावडे, कपडानी किनारवडे, हाथवडे के सुखवडे वींजीकरीने थंडा पंखवां मांडे त्तरे मुनिए शरआतमां ज तेने जोइने जणावडुं के " हे आयुव्यन्, अथवा देहेन, तमे आ आहारपाणीने सूपडा के पंखा विगेरेथी वींजो मां. जो मने देवा चाहाता हो तो एमज आपो " एम कहा छतां पण गृहस्थ ते आहारने सूपडा दिनेरेथी वींजी करीने. आपे तो तेवी जातनां आहार पाणी ग्रहण न करयो [५९२]

जे आहार वनरपति ऊपर के त्रस जीवो ऊपर पडेलो होय ते पण मु-
निए ग्रहण न करयो. [५९३]

(पानकाधिकारः)

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्टे समाणे से ज्जं पुण पाणगजातं जाणेज्जा, तंजहा; उस्सेइमं^१ वा, संसेइमं^२ वा, चाउलोदगं वा, अण्णतरं वा तहप्फगारं पाणगजातं अहुणोघोतं अणंबिलं अत्रोक्कंतं अपरिणतं अविच्चत्थं^३ अफासुर्यं अणेसणिज्जं मण्णमाणे णो पडिगाहेज्जा । [५९४]

अहं पुण एवं जाणेज्जां चिराघोतं अंबिलं वक्कंतं परिणतं विट्ठत्यं फासुर्यं जाव पाडिगाहेज्जा । (५९५)

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्टे समाणे से ज्जं पुण पाणगजातं जाणेज्जा, तंजहा; तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, ज्जोदगं वा, आयामं^४ वा, सेवीरं^५ वा, सुद्धवियडं वा, अण्णतरं वा तहप्फगारं पाणगजातं पुव्वामेव आलोएज्जा, “आउसो—त्ति वा, भग्गिणि—त्ति वा, दाहिसि मे एत्तो अन्नतरं

१ पिष्टोत्स्वेदनार्थं मुदकं २ तिलघावनोदकं ३ अविच्चस्तं. ४ अवश्यानकं ५ आच्छणनाम्नाप्रसिद्धं

(पाणीनो अधिकारः)

लोट मशळवा भाट्टेनुं पाणी, तिल धोयातुं पाणी, चोखा धोयातुं पाणी, तथा एवीज जातनुं धोतुं हरेकं पाणी जो तरतनुं धोएलुं होय हउ तेनो स्वाद फर्यो न होय तेमज तेनुं पूरतुं परिणामांतर पण न थयुं होय तथा तेनो योनिध्वंसं पण हउ न थयो होय तो तेनुं पाणी अनेपणीय जाणीने मुनिए नहि लेवुं. [५४९]

पण जो तेनुं पाणी लांवा बरवतनुं धोएलुं स्वादथी फरेलुं परिणामांतर पावेलुं अने योनिरहित धएलुं होय सो ते लेवुं. [५९५]

मुनिए तिल, तुप, के यवोथी आधित करेलुं पाणी, ओसापणतुं पाणी छासती पछण, ऊतुं पाणी, तथा एवी जातनां धीजां पाणी भाइने तेना मालेक न करेवुं “ हे आयुष्यमान अथवा बेहेन, मने आ पाणीमांयी धोतुं पाणी आप-

पाणगजातं ?” से सेवं वदंतं परो वएज्जा “आउसंतो समणा, तुमं चेवेदं पाणगजात्तं पडिगाहेण वा उरिसचियाणं (२) औयत्तियाणं गिण्हहि, ” तहप्पगारं पाणगजायं संयं वा गिण्हिज्जा, परो वा से दिज्जा, फासुयं लाभे संते पडिगाहेज्जा । (५१६)

से भिक्खू वा [२] से ज्जं पुण पाणगं जाणेज्जा अणंतरहियाए पुढवीए जाव संताणए ओहट्टु निक्खित्ते सिया, असंसजए भिक्खुपडियाए उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा सकसाएण वा मत्तेण, सीओदएण वा संभोएचा आहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं पाणगजातं अफासुयं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । (५१७)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामगियं । (५१८)

१ अपवृत्त्य

शा ? ” त्पारे ते कदाच एवं बोले के “ हे आयुष्मन् तमे पोतेज बीजा वासण बडे अथवा तेज पाणीना वासणने उलटावी ने पाणी लइ ल्यो ” त्पारे मुनिए ते पोते पण लेवुं, अथवा बीजो ओपे तां तेम पण लेवुं [५१६]

जे पाणी लाली के जीवर्जतुवाली माटी पर राखेखुं हेय अथवा असंयत गृहस्थ सचित्तपाणी के माटीथी भीजेला के खरडेला वासणवडे मुनीने आपवा मांडे अथवा ते पाणीमां बीजुं धोडुं धंडुं पाणी ऊमेरीने आपवा मांडे तो ते अमासुक जाणीने मुनिए नहि लेवुं. [५१७]

ए सर्व मुनि तथा आर्याओना आचार छे. [५१८]

से भिक्खू वा [२] जाव पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा पलंबजातं^१ तंजहा ; अंबपलंबं वा, अंबाडगपलंबं वा, तालपलंबं वा, झिञ्जिरिपलंबं^२ वा सुरभिपलंबं^३ वा, सल्लइपलंबं वा, अन्नतरं वा तहप्पगारं पलंबजातं आमगं अमत्थपरिणितं अफासुयं अणेसणिज्जं जाव लाभेसंते णो पडिगाहेज्जा । (६०३)

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठेसमाणे से ज्जं पुण पवालजातं जाणेज्जा, तंजहा ; आसोत्थपवालं^४ वा, णग्गोहपवालं वा, पिलंक्खु-पवालं^५ वा, णीयूरपवालं^६ वा, सल्लइपवालं वा, अन्नतरं वा तहप्पगारं पवालजातं आमगं असत्थपरिणयं अफासुयं अणेसणिज्जं जाव णो प-डिगाहेज्जा । (६०४)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से ज्जं पुण सरडुयजायं^७ जाणेज्जा, तंजहा ; अंबसरडुयं वा, कविट्ठसरडुयं वा, दाडिम सरडुयं

१ फलजातं २ (वल्लीविशेषः) ३ (शतद्रुः) ४ (पिप्पलं)
५ (पिप्पली) ६ (नंदा वृक्षः) ७ अबद्धास्थिकफलजातं.

वळी आंवानांफळ, अंबाडानाफळ, तालफळ, जिञ्जिरिवेलनाफळ, शतद्रु-फळ, सल्लकिफळ, तथा एवां वीजां पण हरेक फळ काचां होय ने शस्त्रथी हुंदाय-लां नहि होय तो ग्रहण न करवां. (६०३)

तथा काचां अने शस्त्रथी नहि भेदायलां पीपळानां कूपळ, वडनां कूपळ, पीपळीनां कूपळ, नंदीवृक्षनां कूपळ, तथा शल्लकिनां कूपळ पण नहि लेवां.
[६०४]

एज रीते कांचा अने शस्त्रथी नहि भेदायलां आंवानां मोर (काचां फळ) कांठनां मोर, दाडयनां मोर वीलुनां मोर तथा एवी जातना वीजा पण सघळां

वा बिद्धसरडुयं वा, अण्णतरं वा तहप्पगारं सरडुयजातं आमं असत्य-
परिणतं अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा । [६०५]

से भिक्खू वा [२] जाव पविट्ठे समाणे सेज्जंपुण संथुजातं^१
जाणेज्जा, तंजहा ; उंबरमंथुं वा, णग्गोहमंथुं वा, पिलक्खुमंथुं वा आ-
सोत्थमंथुं वा, अण्णतरं वा तहप्पगारं संथुजातं आमयं दुरुक्क^२ साणु-
वोय^३ अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा । [६०६]

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे सेज्जंपुण जाणेज्जा, आमडागं^४
वा पूतिपिण्णागं^५ वा महंवा, मज्जं वा, सिंय वा, खोलं^६ वा, । पुराणं;
एत्थ पाणा अणुप्पसूता, एत्थ पाणा संवुद्धा, एत्थ पाणा जाया एत्थ पाणा
अशुक्कंता, एत्थ पाणा अपरिणता, एत्थ पाणा अविद्वत्था, णो पडिगाहे-
ज्जा । (६०७)

१ चूर्णजातं २ ईषत्पिष्टं ३ अविध्वस्तयोनिर्कं ४ अर्द्धपक्वं
५ कुथितखलं ३ मद्याधः कर्दमः

मेर मुनीए ग्रहण न करवा [६०५]

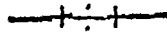
मुनिने ऊंवरुं चूर्ण, वडुं चूर्ण, पीपळीनुं चूर्ण, पीपळानुं चूर्ण, के
एवी जातना वीजा चूर्ण काचां थोडा पीसेलां अने सवीज [योनिस्सहित] जगा-
तो ग्रहण न करवां. [६०६]

मुनिर गोचरीए जतां अर्धी रंधाएल शाकभाजी न लेवी तथा सडेणुं खोला
न लेवुं, तथा जूनुं मय, जूनी मदिरा^१, जूनुं घृत जूनो मदिरानी नीचे वेशुते
कचरो, ए पण न लेवा, एटले के जे चीज जूनी यतां तेमां जीवजंतु ऊपजेऊ
अने हजु हयातीमां वर्त्तनारा जणाय ते चीज न लेवी. [६०७]

गं वा, कासवणालियं^१ वा, अण्णतरं वा आमं असत्थपरिणतं जाव णो पडिगाहेज्जा । (६१३)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, कणं वा, कणकुंडग^२ वा, कणपूयल्लं वा, चाउलं वा, चाउलपिट्ठं वा, वा, तिलं वा, तिलपिट्ठं वा, तिलपप्पडगं वा, अन्नतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणतं जाव लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । (६१४)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामगियं । (६१५)

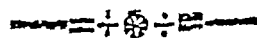


१ श्रीपर्णीफलं २ कणभिश्चकुक्कुसाः

काचां अने शस्त्रवडे नहि चूरायलां होय तो ग्रहण न करवां. [६१३]

मुनिए धान्यना दाणा, दाणावाळा कूसका, दाणावाली रोटली, चावल, चावलनो लोट, तल, तलनो लोट, तलपापडी, के एवीज जातुं वीजुं कंड पण का चुं अने शस्त्रवडे नहि चुरायलुं होय ते ग्रहण न करवुं. (६१४)

ए सर्व, मुनि अने आर्यानो आचार छे. [६१५]



[नवम उद्देशः]

इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा, संते-
 गतिया सङ्घा १ भवन्ति; गाहावती वा जाव कम्मकरी वा । तेसिं च णं एवं
 वुत्तपुच्चं भवन्ति;—जे इमे भवन्ति समणा, भगवन्तो, सीलमन्ता, वयमन्ता,
 गुणमन्ता, संजता, संवुडा, बंभचारी, उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु
 एतेसिं कप्पति आहाकम्मिए असणं वा (४) भोइत्तए वा पाइत्तए वा ।
 सेज्जंपुण इमं अम्हं अद्दाए णिद्धितं, तंजहा; असणं वा (४) सच्चमेयं
 समणाणं णिसिरामो । अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सअद्दाए असणं
 वा [४] चेतिससामो, २ ” एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा ३ णिसम्म ४ तहप्प-
 गारं असणं वा (४) अफासुयं अणेसणिज्जं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।
 (६१६)

१ श्रावकाः प्रकृतिभद्रावा २ चेतयिष्यामो निष्पादयिष्याम इति-
 यावत् ३ (स्वयं) ४ (परतः)

नवमो उद्देशः

(कयो आहार लेवो अने कयो न लेवो)

आ जगतमां चारे दिशाओ तरफ केटलाएक गृहस्थो, स्त्रीओ के तेमना दास
 दासीओ श्रावको अथवा भद्र स्वभाववाळा होय छे. तेओ हमेशां एवं बोले छे के
 “जे मुनिओ ज्ञानवंत, शीलवंत, व्रतवंत, गुणवंत, संयमवंत, संवरवंत, ब्रह्मचारी,
 अने मेशुनने त्याग करनारा होय तेओ आधाकर्मिक आहार पाणी विलकुल लेता
 नथी. जे आपणा सारु आहार पाणी तैयार करेलां छे ते सर्व तेमने आपणुं अने
 आपणे वळी आपणा सारु वीजा तैयार करणुं” आवा वाक्यो सांभळीने मुनिए
 ते आहार पाणी अनेपणीय जाणीने ग्रहण करवां नहि. [६१६]

से भिक्खु वा (२) जाव समाणे वसमाणे वा गामाणुगामं दु-
 इज्जमाणे सेज्जंपुण जाणेज्जा गामं जाव वा रायहाणिं वा, इमंसि
 खलु गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा संतेगति यस्स भिक्खुस्स पुरे-
 संथुया वा पच्छासंथुया वा परिवसंति, तंजहा ; गाहावती वा जाव क
 म्मकरी वा ; तहप्पगाराइं कुलाइं णो पुव्वामेव भत्ताए वा पाणाए वा
 णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा । केवली बूया, “ आयाण-मेयं । ”
 पुरा पेहाए तस्स परो अट्ठाए असणं वा [४] उवकरेज्ज वा उवक्खडे-
 ज्ज वा ; अह भिक्खूणं पूव्वोवद्धिद्धा (४) जं णो तहप्पगाराइं कुलाइं
 पुव्वामेव भत्ताए वा पाणाए वा पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा । से त-
 मायाय एंगंत-मवक्कमित्ता अणावाय मसंलोए चिट्ठेज्जा । से तत्थ कालेणं
 अणुपविसेज्जा [२] तत्थितरेतरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं
 पिंडवायं एसित्ता आहारं आहारजेज्जा । (६१७)

सिया से परो कालेण अणुपविट्ठस्स आधाकम्मियं असणं वा [४]

मुनिए शहेरमां वसतां के ग्रामानुग्राम फरतां तेने एवं जणाय के आ गाम-
 मां के आ राउ घानीमां अमुक साधुना सगावहालां रहे छे तो तेवा सगाओना घरे
 भिक्षाकाळथी अगाऊ आहारपाणी मांटे न जवुं. केमके तेम करतां बहु दोष संभ-
 वे छे. जे मांटे भिक्षाकाळथी अगाउ त्यां गयाथी ते गृहस्थो मुनिने जोइने तेना
 मांटे उपकरण वनाववा मांडशे अथवा आहार रांधवा माडशे. मांटे भिक्षुने एज भ-
 लामण छे के तेणे भिक्षाकाळथी अगाउ तेवा सगावाहालाओना घरे नहि जवुं. कं-
 दाच ओचितुं त्यां जवाय तो झट पाछा वळी कोइ देखे नहि तेवा एकांत स्थळमां
 ऊभा रहेवुं. अने पछी भिक्षाकाळ थतां जूदा जूदा घरोमांथी निर्द्वेषण आहार लड-
 ने वापरवो. [६१७]

मुनिए वखतसर भिक्षार्थे जतां गृहस्थ तेना मांटे उपकरण के आहार वनाववा
 मांटे अने मुनि तेम जाणीने ते वखतेज तेने मनाइ न पाडतां एम विचारे जे ज्यारे

उवकरेज्ज^१ वा उवक्खडेज्ज वा, तं चेगतिओ तूखणीओ उवेहेज्जा
 “ आहड—मेव पच्चाइक्खिस्सामि ” माइट्ठणं संपासे । णो एवं करेज्जा।
 से पुव्वामेव आलोएज्जा “ आउसो त्ति वा भग्गिणि—त्ति वा, णो खलु
 से वप्पति आहाकम्मियं असणं वा (४) भोत्तए वा पायए वा । मा उ-
 वकरिज्जा, मा उवक्खडेहि । ” से सेवं वदंतस्स परो आहाकम्मियं अ-
 सणं वा (४) उवक्खडेत्ता आहट्ठु दलएज्जा तहप्पगारं असणं वा [४]
 अकासुयं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा [६१८]

से भिक्खू वा [२] जाव समाणे से ज्जं पुण जाणे-
 ज्जा संसं वा सच्छं वा भज्जिज्जमाणं पेहा । तेल्लपूययं वा आएसाए^२ उ-
 वक्खडिज्जमाणं पेहाए णो खद्धं खद्धं^३ उवसंकमित्तु ओभासेज्जा ।
 णत्तथ गिलागणीसाए । (६१९)

से भिक्खू वा जाव समाणे अण्णतरं भोयणजायं पडिगाहेत्ता

१ उपकरणं दौकयेत् २ प्राचूर्णकार्थं ३ त्वरितं त्वरितं

मने आपन्न घांडे त्यारे ना पाडीण तो ते दोषपात्र थाय छे. माटे एम नहि
 करवुं. किंतु शरुआतमांज मुनिए ते गृहस्थने जणाववुं के “ हे आयुप्पन् अयवा
 वेहेन, मने द्वारा माटे वनावेवुं आहारपाणी काम आववुं नथी. माटे तये मारा माटे
 वनावो मा. ” एम कथा छतां पण गृहस्थ अधाकर्भिक आहारपाणी वनावी आप-
 वा मांडे तो ते, मुनिए ग्रहण न करवुं. [६१८]

मुनिए मांस के मत्स्य भुंजाता जोइ अथवा परोणाना माटे पूरीओ तेलमां
 तळाती जोइ तेना सारु गृहस्थपामे उतावळा उतावळ देडी ते चंजो मागवी
 नहिं. अगर वांदगी भोगवनार मुनीना सारुं [गरस पूरीओ] खपनी होय तो
 जूदीवात छे. [६१०]

जे मुनि कोइपण भोजन लइ आव्या वाइ तेमांनुं मुगंधि मुगंधि खाइ

सुब्धिं सुब्धिं भोच्चा दुब्धिं दुब्धिं परिद्वेति; साइद्गुणं संफासे । णो एवं करेज्जा । सुब्धिं वा दुब्धिं वा सव्वं भुंजे, न छड्डुए । (६२०)

से भिक्खू वा (२) जाव ससाणे अन्नतरं वा पाणयजायं पडि-
गाहेत्ता पुप्फं ^१ आसाइत्ता कसायं ^२ परिद्वेति, साइद्गुणं संफासे णो , एवं
करेज्जा । पुप्फं पुप्फेति वा, कसायं कसाएत्ति वा, सव्वमेयं भुंजेज्जा,
णो किंचिवि परिद्वेज्जा । (६२१)

से भिक्खू वा (२) बहुपरियावणं भोयणजायं पडिगाहेत्ता,
बहवे साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुच्चा अपरिहारिया ^३ अदूरग-
या, तेसिं अणालोइया अणामंतिया परिद्वेति, साइद्गुणं संफासे णो एवं
करेज्जा से च सादाय तत्थ गच्छेज्जा, (२) से पुव्वामेव आलोएज्जा
“ आउसंतो समणा, इमे मे असणं वा [४] बहुपरियावणो तं भुंजह

१ वर्णगंधोपेतं २ तद्विपरीतं ३ एकार्थिका इमे शब्दाः

करीने दुर्गंधि दुर्गंधि परठवी आपे तो ते दापपात्र थायछे, माटे तेम न करवुं.
किंतु सुगंधि दुर्गंधि सर्व कंड खाइ जवुं; छांडवुं नहि. [६२०]

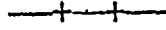
जो मुनि कंड पण पाणी लइ आव्या वाढ तेमांनुं भीटुं अने सुंदर पाणी पी
करीने कसायलुं^१ पाणी परठवी आपे तो ते दोपपात्र थाय छे माटे एम नहि करतां
भीटुं के कसायलुं सर्व कंड पी जवुं; छांडवुं नहि. [६२१]

जे मुनि पोताना खप करतां वधु भोजन लइ आव्यो होय ने त्यां नजीकमां
घणाएक समानधर्मि मुनिओ रहेता होय तो तेमने ते आहार वताव्या के आम-
त्रण कर्या शिवाय जो परठवी आवे तो दापपात्र थाय छे माटे तेम नहि करवुं.
किंतु ते आहार लइने मुनिए ते साधर्मिक मुनिओ पासे जड कहेवुं “हे आयु-
प्पन् मुनिओ; आ आहार मने वधी पडयो छे माटे आप वापरो, ” आम कहे-

च णं ” से सेवं वदंतं परो वदेज्जा “ आउसंतो समणा, आहार—मेतं असणं वा [४] जावतियं (२) परिसडति तावतियं (२) भोक्खामो वा पाहामो वा, सव्व मेयं परिसडइ सव्वमेयं भोक्खामो वा । ” (६२२)

से भिक्खू वा [२] सेज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) परं समुद्विस्स बहिया णीहडं तं परोहिं असमणुन्नातं अणिसिट्ठं अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा, तं परोहिं समणुन्नातं संणिसिट्ठं फासुयं लामे संते जाव पडिगाहेज्जा । [६२३]

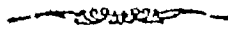
एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामगियं । (६२४)



नार मुनिने ते साधर्मिक मुनिओए आ प्रमाणे कहेबुं ” हे आयुष्मन् मुनि, आ आहारमांथी जेट्ठो अमेने जोइशे एट्ठो वापरीशुं अगर वधो वापरीशुं [६२२]

मुनिए जे आहार वीजाने आपवामाटे लइ जवानो होय ते दीजानी रजा शिवाय ग्रहण न करवो, अने जो वीजाओ रजा आपे के आपवा माडे तो ते ग्रहण करवो. [६२३]

ए सर्व, मुनि अने आर्याओनो आचारछे. [६२४]



[दशम उद्देशः]

से एगतिओ साधारणं वा पिंडवायं पडिगाहेत्ता, ते साहम्मिए अणापुच्छित्ता जस्स जस्स इच्छंइ तस्स तस्स ख्वं ख्वं दत्ताति, माइद्वाणं संफासे, नो एवं करेज्जा । से त-मायाए तत्थ गच्छेज्जा [२] पुव्वामेव आलोएज्जा “आउसंतो समणा, संति मम पुरेसंश्रुया वा पच्छासंश्रुया वा, तंजहा; आयरिए वा, उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी वा, गणहरे वा, गणावच्छेइए वा, अवियाइं एनेसिं ख्वं ख्वं दाहामि” सेणेवं वयंतं परो वएज्जा “कामं खलु आउसो अहापज्जत्तं णिसराहि, जाइइयं [२] परो वदति तावइयं (२) णिसिरेज्जा, सव्वमेयं परो वदति सव्वमेव णिसिरेज्जा” । (६२५)

दशमो उद्देशः.

(मुनि ए आहारपाणी लावतां शो रीते वर्तवुं.)

कोइ पण मुनि वधा मुनिओना माटे साधारण आहार लाव्या पछी तेओने पूछया शिवाय पोतानी घरजी मुजव गये तेने झट झट आपना मांडे तो तं दोपपात्र थाय माटे कोइय तेम नहि करवुं किंतु तेवो आहार लावीने वधा मुनिओ पास लइ जइ कहेवुं के ” हे आयुप्पन् साधुओ मारा पूर्व परिचित^१ या पश्चात् परिचि^२ आचार्य^३; उपाध्याय^४ प्रवर्तक^५; स्थविर^६; गणी^७; गणधर^८; के गणावच्छेदकने^९ आ आहार हुं आपी आवुं? ” आवुं सांधली ते मुनिओण, बोळवुं के “हे आयुप्पन्, खुशियी जे जोइए ते आपी आवो. अतर जो तेमने वधा जोइतो होय तो वधा आ पी आवो. ” [६२६]

१ जेमना पास दीक्षा लीधेली तेओ २ जेमना पास ज्ञाना दि शरुकेत्या ३ य तेओ ४ सूत्रार्थ शीखवनार ५ सूत्र शीखवनार ६ प्रवर्तानार ७ वृद्ध ८ गच्छ-नायक ९ गच्छना अमुक भागने संभाळनार १० गच्छनी चिंता करनार.

से एगतिओ मणुन्नं भोयणजायं पडिगाहिच्चा पंतेण भोयणेण पलिच्छाएति “सामेतं छाइयं संतं दद्वुणं सय-माइए आयरिए वा जाव गणावच्छेइए वा, णो खलु मे कस्सवि किंचिं दायव्वं सिया,” माइद्वुणं संफासे, णो एवं करेज्जा, से त मायाए तत्थ गच्छेज्जा (२) पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे पडिग्गाहं कट्टु “ इमं खलु इमं खलु ति ” आले, एज्जा, णो किंचिन्नि णिगूहेज्जा । (६२६)

से एगतिओ अण्णतरं भोयणजायं पडिगाहेज्जा, भदयं [२] भोच्चा विवन्नं (२) समाहरति, माइद्वुणं संफासे । णो एवं करेज्जा । [६२७]

से भिकखु वा (२) सेज्जंपुण जाणेज्जा, अंतरुच्छुयं वा उच्छुगं-डियं वा, उच्छुचोयगं वा, उच्छुमेरगं वा, उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं व संवालं, वा, संदलिवालगं वा;-अस्सिं खलु पडिग्गाहियंमि अप्पे सिया भोयण-

कोइ मुनि मनोहर भोजन लक्ष्मीने मनमां विचारे के “ रखेने आ खुल्लुं वतावीश तो आचार्य के उपरी लावु लइ लेगे पण मारे तो कोइने आपवुं नथी ” एम विचारी ते मनोहर भोजनने हलका भोजन बडे ढांकी करीने पली आचार्यादि कने वतावे तो ते दोष पात्र थाय छे. माटे एम मुनिए नहि करवुं; किंतु ते मनोहर भोजनना पात्रने ऊंचा हाथमा खुल्लुं धरीने “ आ आ र्खुं, आ आ र्खुं ” एम खुल्लुं वतावुं. कइ पण वस्तु छुपाववी नहि. [६२६]

कोइ मुनि लबेला भोजनमांथी सारुं सारुं खइ करीने रुराव तराव वता-ववा जाय तो ते दोषपात्र थाय छे, माटे तेम पण नहि करवुं. [६२७]

मुनिए गेलडीनी गांठो, गांठवाळुं ककडुं, गेलडीना छालां, गेलडीनां पूंछटां, गेलडीनी आखी शाखा के तेनो कटका के वाफेली मगफळी के वालनी

जाए, बहु उज्झियधम्मए—तहप्पगारं अंतरुच्छुयं जाव संवलिवालमं वा अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा । (६२८)

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण जाणेज्जा, बहुअट्ठियं मंसं वा, मच्छं वा बहुकंटगं;—अस्सि खलु पडिगाहितंसि अप्पे सिया भोयणजाए, बहु उज्झियधम्मिए—तहप्पगारं बहुअट्ठिं मंसं मच्छं वा बहुकंटगं लाभे संते जाव णो पडिगाहेज्जा । (६२९)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे सिया णं परो बहुअट्ठिण्ण मंसेण मच्छेण उवणिमंतेज्जा “आउसंतो समणा, अभिकंखसि बहुअट्ठियं मंसं पडिगाहेत्तए ?” एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुच्चा-भेव आलोएज्जा, “आउसो—त्ति वा भइणित्ति वा, णो खलु मे कप्पइ से बहुअट्ठियं मंसं पडिगाहेत्तए । अभिकंखसि मे दाउं, जावइयं तावइयं

फळी विगेरे जेओमां थोडुं खावानुं होयछे अने बहु छांडवानुं होयछे, तेवी चीजो ग्रहण न करवी. [६२८]

वळी बहु ठळियावाळुं [पनस विगेरे फळोनुं दळ] गर्भ^१ या बहु कांटावाळी मत्स्याकारनी वन पति जे लेवाथी थोडुं खावानुं वने अने बहु छांडवुं पडे छे ते पण ग्रहण नहि करवां. [६२९]

कदाच मुनिने कोइ निमंत्रण करेके “हे आयुष्मन् श्रमण, तमने ठळियावाळुं पुद्गल जोइए छीए”? आनुं वाक्य सांभळी मुनीए तरतज जवाव आपवो के “हे आयुष्मन् या वहेन, मने बहुठळियावळुं पुद्गल—गर्भ नथी जोइतुं, अगर तमे मने ते देवा चहाता हो तो जेटलुं तेना अंदर पुद्गल—गर्भ छे तेदलुं आपो ठळिया नहि

? टीकाकार—वाह्य परिभोगादि माटे अनिदार्थ कारणघोगे मूल पाठना शब्दानो अर्थ मत्स्य—मांस अपवाद मार्गो करेछे. परंपरा अर्थ भाषान्तरमां लख्या मुजव प्रसिद्धछे. जुओ शब्दार्थ विवेक.

गेगलं दलयाहि, मा अट्टियाइं । ” से सेवं वदंतस्स परो ओमहट्टु अंतो पडिग्गाहगंसि बहुअट्टियं मंसं परिभाएत्ता णिहट्टु दलएज्जा; तहप्पगारं पडिग्गाहगं परहत्यंसि वा परपायांसि वा अफासुयं अणेसणिज्जं लाभे संते जाव णो पडिगाहेज्जा । से आहच्च पडिगाहिए सिया, तं णो “हि” त्ति वएज्जा, णो “अणहि ” त्ति वइज्जा । से—त्त मायाए एगंत—मवक्कमेज्जा, [२] अहे आरामंसिवा अहे उवस्सयांसि वा अप्पंडए जाव अप्परांताणए मंसगं मच्छगं भोच्चा अट्टियाइं कंटए गहाय से त मायाए एगंत—मवक्कमेज्जा । अहे ज्झामथंडिलंसि वा जाव पमज्जिय (२) परिट्टवेज्जा ।

[६३०]

से सिक्खू वा (२) जाव समाणे सिया, से परो अभिहट्टु अंतो पडिग्गाहए विलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं, परिभाएत्ता णिहट्टु दलए—ज्जा; तहप्पगारं पडिग्गाहग परहत्यंसि वा परपायांसि वा अफासुयं जाव

आपो” एम क्खा छां पण गृहस्थ पोताना वासणमांधी तेवुं बहु ठळियावाल्लं पुद्गल—गर्भे लाबिने आपवा मांडे तो ते मुनिए तेनाज हाथमां के वासणमां रहेवा देवुं, ग्ररण नहि करवुं. अगर कदाच गृहस्थ ते मुनिचा पात्रमां झट नाखीदे तो मुनिए ते गृहस्थने कशुं नहि कहेवुं, किंतु ते आहार लइ एकांत स्थळमां जइ जीवजंतु विगेरेयी रहितवाग के उपाश्रयनी अंदर वेशीने ते भोगनी ठळिया अने कांटा निजीव स्थंडिलमां पुंजी प्रमार्जी परठयी आववा. [३३०]

मुनिए गृहस्थना घरे भिक्षार्थे जइ [खांडविगेरे मांगतां] गृहस्थ पोताना वासणमांधी थोडुंएक वीडलूण के दरिआइ लूण लइने आपवा मांडे तो तेवुं अप्रासुक लूण ते वासणमां के तेना हाथमांज रहेवा देवुं. अगर ओचितुं लेवाइ जाय अने ह्यु गृहस्थ बहु दुर रहेलो नहि होय तो ते लूण लइने तरतज मुनिए ते गृहस्थने वत्तावुं के “हे आयुष्मन् या वेहेन, आ तमे जाणतां छां दीयुंछे के अजाणतां

णो पडिगाहेज्जा। से आहच्च पडिगाहिते सिया, तंच णातिदूरगाए जाणे-
ज्जा से त्त—मायाए तत्थ गच्छेज्जा (२) पुव्वामेव आलोएज्जा, “ आउ-
सो—त्ति वा भइणि—त्ति वा, इमं ते किं जाणता दिञ्चं उदाहु अजा-
णता ? ” सो य भणेज्जा “ णो खलु मे जाणता दिञ्चं, अजाणता दिञ्चं
। कामं खलु आउसो इदाणि णिसिरामि । तं भुंजह च णं, परिभाएह च
णं । ” तं परेहिं समणुन्नायं समणुसिट्ठं ततो संजयामेव भुंजेज्जवा पीए-
ज्ज वा । जं च णो संचाएति भोत्तए वा पायए वा, साहम्मिया तत्थ व-
संति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया तेसिं अणुप्पदायव्वं ।
सिया णो जत्थ साहम्मिया जहेव बहुपरियावन्ने कीरति तहेव कायव्वं
सिया । (६३१)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामगियं । (६३२)

....

दोषेण” त्वारे गृहस्थ बोले के “ये जाणतां नथी दीधुं किंतु अजाणे दीधुं छे. पण
हवे आपने खुशीथी आपुंछुं. माटे भले खाओ के वापरो.” आ रीते जो गृहस्थ
रजा आपेतो मुनिए यतनापूर्वक ते [अचित्त] लूण खावुं पीवुं, अने जे बहु होवाथी
पोताथी न वापरी शक्या ते त्यां नजीकमां रहेनार बीजा साधर्मिमुनियोने आपी
आववुं अगर त्यां बीजा साधर्मिक मुनिओ न हंय तो जेमे बहुपर्यापन्न^१ आहार
माटे विधि करायछे तेम करवी [अर्थात् यतनापूर्वक परठवी आववुं.] [६३१?]

ए वओ मुनि अने आर्याओनां आचार छे [६३२]

—=०=—

[एकादश उद्देशः]

भिक्षागा^१ णामेगे एव माहंसु समाणे^२ वा वसमाणे वा गामाणु-
गामं दूर्द्धजमाणं मणुण्णं भोयणजातं लभित्ता; “से भिक्षू गिलाई, से
हंदह^३ णं तस्साहरह^४ सेय भिक्षू णो भुंजेज्जा, तुमं चेव णं भुंजेज्जासि”
सेगतितो “ भोक्खामि त्ति ” कट्टु पलिउंचिय^५ पलिउंचीय आलोएज्जा
तंजहा;-इमे पिंडे; इमे लोए^६, इमे तित्ताए, इमे कडुए, इमे कसाए, इमे अंबिले
इमे महुरे, णो खलु एत्तो किंचि गिलाणस्स सदति त्ति; माइट्ठणं संफासे
णो एवं करेज्जा तहेव^७ तं आलोएज्जा जहेव तं गिलाणस्स सयति, तंजहा;-

१ भिक्षाटाः २ समानान् सांभोगिकान् वा शब्दादसांभोगिकांश्च
गृहीत यूयं ४ तस्य आहरत तस्मै प्रयच्छत ५ गोपित्वा गोपित्वा ६ रूक्षः
७ तथावस्थितं

अगीआरमो उद्देश.

[मळेला आहार माटेनी वे शिक्षाओ, तथा सातपिंडेपणाओ^१ अने
सात पाणेपणाओ.^१]

भिक्षार्थी मुनिओ पोताना संभोगी^२ के त्यां वसनारा के ग्रामानुग्राम फरनारा
मुनिने एवुं कहे के “आपणामां अमुक मुनि पांदो छे, माटे तेना सारं तमे रुई
भोजन मळे तो लावीने तेने आपणां; अने ते मुनि जो ते नहि खाय तो ते हमे
खाइ जजो.” आवे वखते जो ते आहार ला नार मुनि ते आहार पंते खावा

१ आहार लेवानी पतिज्ञाओ २ पाणी लेवानी प्रतिज्ञाओ ३ साये घेयी
जमनार (दिकामांना सच्चर्या असंभोगिक पण साये लीभा छे.)

तित्तयं तित्तएत्ति वा, कडुयं कडुएत्ति वा, कसायं कसाएत्ति वा, अंबिलं
अंबिले त्ति वा, महुरं महुरेत्ति वा [६३३]

भिक्षवागा णामेगे एवमाहंसु समाणे वा वससाणे वा गामाणु-
गामं दूर्इज्जाणाणे मणुत्रं भोयणजातं लमित्ता; “से भिक्षू गिलाइ, से
हंडह णं तस्साहरह से य भिक्षू णो सुंजेज्जा, आहरेज्जा सि णं”
“णो खलु मे अंतराए, आहरिस्सामि ” इच्चेयाइ आयतणाइं उवाति-
क्कम्म^१ । [६३४]

अह भिक्षू जाणेज्जा सत्त पिंडेषणाओ सत्त पाणेसणाओ । त-

१ दद्या दाहरेद्वेतिशेषः ।

इच्छीने तेना म टे मांदा मुनिने ऊंधु चतुं समयजावे; जेमके, “आ लावेळुं भोजन
छे पण ते लूळुंळुं, या तीळुं, कडक, कसायेळुं, खाळुं, के मीटुं छे जेथी ते मांदा
माणसने लायकनुं नथी,” तो ते मुनि दोषपात्र थाय छे. माटे एका कडापि नहि
करवुं, किंतु जेम ते आहार मांदा मुनिने काम आवतो होय तेम तेने जगाववुं.
[६३३]

भिक्षार्थी मुनिओ पोताना संभोगी के त्यां वसनारा के ग्रामानुग्राम फरता
मुनिने आवुं कहे के आपणामां अमुक मुनि मांदो छे तेना माटे तेने रुंडु भोजन
लावी आपगो. अने जो मांदो मुनि ते ना, खाय तो ते अकारा पासं लावशो
भावुं सांभली लावनार मुनि बोले के मने कइ विन्न नहि नइशे तो हुं लावी आ-
पीक. आम कही ते मुनि आहार लावी मांदावे वतावे अने जो ते नहि खाय तो
ते पोते खावा इच्छी बीजाओने जो वतावया नहि जाय तो ते दोषपात्र थाय छे,
माटे तेम पण न करवुं. [६३४]

हे मुनिने सात पिंडेषणाओ अने सात पानेषणाओ जाणवानी छे. त्यां
पहेली पिंडेषणाओ के—चोखो हाथ अन चोखुं पात्र, चोखा हाथ अने चोखा

त्य खलु इमा पठना पिंडेसणा—असंसट्टे हत्थे असंसट्टे मत्ते; तहप्प—
गारेण असंसट्टेण हत्थेण वा मत्तएण वा, असणं वा पाणं वा खाइमं वा
साइमं वा, सयं वा णं जाएज्जा, परोवा से दिज्जा; फासुयं जाव पडिगाहे-
ब्जा इति पठमा पिंडेसणा । [६३५]

अहावरा दोच्चा पिंडेसणा;—संसट्टे हत्थे संसट्टे मत्तए; तहेव
दोच्चा पिंडेसणा इति दोच्चा पिंडेसणा । [६३६]

अहावरा तच्चा पिंडेसणा;—इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दा-
हिणं वा उदीणं वा संतेगतिया सद्धा भवंति; गाहावती वा जाव कम्मकरी
वा, तेसिं च णं अण्णतरेसु विरूवखूवेसु भायणजातेसु उवणिक्खित्तपुच्चे^१
सिया, तंजहा;—थालंसि वा, पिठरंसि वा, सरगांसि^२ वा, परगांसि^३ वा,
वरगांसि^४ वा । अहपुण एवं जाणेज्जा—असंसट्टे हत्थे संसट्टे मत्ते, संसट्टे
हत्थे असंसट्टे मत्ते—सेय पडिगाहधारी सिया पाणिपडिगाहिए वा— से

१ अशनादि इतिशेषः २ सूर्पादौ ३ छब्बिकादौ ४ सहर्घ्यपात्रे

पात्रधीज मळतां आहारपाणी पोते मागी लेवां अथवा बीजो आपवा मांडे ते ग्रहण
करवां. ए पहेली पिंडेपणा. [६३५]

बीजी पिंडेपणा आ के खरडेले हाथ अने खरडेले पात्र. आवी रीतेज
आहारपाणी ग्रहण करवा. ए बीजी पिंडेपणा. [६३६]

बीजी पिंडेपणा आ छे. आ पृथ्वीपर चारे वाजु केटलाएक गृहस्थयी मांडी
चाकर लगीना श्रद्धालु जीव होयछे, तेआने त्यां धाळ, हाळां, सूपडां, छाव, के
पहुं मूलां वासणमां आहारपाणी पडेलां होय छे, जो एवुं जणाय के तेना हाथ

पुष्यामेव आलोएज्जा, “आउसो त्ति वा, भग्गिणि त्ति वा, एतेणं तुमं असंसद्वेण हत्थेण संसद्वेण मत्तेण, संसद्वेण वा हत्थेण असंसद्वेण मत्तेण अस्सिं पडिग्गहंगांसि वा पाणिसि वा णिहट्ट उवित्तु दलयाहि” तहप्पगारं भोयणजायं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा, फासुयं जाव पडिग्गाहेज्जा तच्चा पिंडेसणा । (६३३)

अहावरा चउत्था पिंडेसणा;—से भिक्खू वा भिक्खूणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुअं वा जाव चाउलमलयं वा—अस्सिं खलु पडिग्गाहितंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाते^१—तहप्पगारं पिधुं वा सयं वा जाएज्जा जाव पडिग्गाहेज्जा । चउत्था पिंडेसणा [६३८]

अहावरा पंचमा पिंडेसणा; से भिक्खू वा भिक्खूणी वा जाव

१ अल्पं तुषादि त्यजनीयं

चोखा छे अने घासण खरडेलां छे, तो आवे वखते पात्रधारी अथवा करपात्री मुनिए शरुआतमांज आहुं कहेहुं के “ हे आयुष्मन् अथवा वेहेन, तमो चोखा हाथ अने खरडेला पात्रवेडे अथवा खरडेला हाथ अने चोखा पात्रवेडे आ आहार पात्रमां के हाथमां आपवाहुं करो. ” अने आ रीते मळेलो आहारज ग्रहण करवो. ए त्रीजी पिंडेपणा. [६३७]

चोथी पिंडेपणा—मुनि के आर्याए जे पाँवां के चोखानी भूकी एवी जणाय के जे लीधारी धोडोज पश्चात्कर्म नामनो दोष थगे तथा तमांनी धोडीज छल घगेरे छांडवी पडवे तवां पाँवां के चोखानी भूकी विगेरंज ग्रहण करवां. ए चोथी पिंडेपणा. [६३८]

पांचमी पिंडेपणा—मुनि के आर्याए जे भोजन ग्रहस्वे पोते स्वावा माटे

समाणे उग्गाहितमेव भोयण जातं जाणेज्जा, तंजहाः—सरावंसि वा, डिंडि-
मांसि^१ वा कोसगंसि^२ वा अहपुण एवं जाणेज्जा—बहुपरियावन्ने पाणिसु उद्-
गलेवे—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सयं वा णं
जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा । पंचमा पिंडेसणा । [६३९]

अहावरा छट्ठा पिंडेसणाः—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उग्गाहि-
यमेव भोयणजायं जाणेज्जा जंच सयट्ठाए पग्गाहियं जंच परट्ठाए पग्गाहियं
पायपरियावन्नं पाणिपरियावन्नं फासुर्यं जाव पडिगाहेज्जा । छट्ठा पिंडेसणा।
[६४०]

अहावरा सत्तमा पिंडेसणाः—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जाव
समाणे उज्झियधम्मियं भोयणजायं जाणेज्जा—जंचन्ने बहवे दुपय—तउ
पय—समण—माहण—अतिहि—किवण—वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं
उज्झियधम्मियं भोयणजायं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से डिज्जा जाव

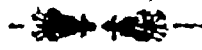
१ डिंडिमं कांस्यं भाजनं २ मगघप्रसिद्धभाजनविशेषः

प्याला, थाळी, के कोपक नामना वासणमां खुल्लुं धारेलुं होय ते ते घृइस्थना हाय
परनी भीनाश सूकाद गपली होय ताज ते ग्रहण करुं. १ सात्तमी पिंडेपणा.
[६३९]

छठी पिंडेपणा—मुनि के आर्याए जे भोजन घृइस्थे पोता पाटे के बीजाने
देवा पाटे पात्र के हाथमां खुल्लुं धारेलुं जे भोजन जणाय तेज सेवुं, ५ छठी
पिंडेपणा. [६४०]

सातमी पिंडेपणा—मुनी के आर्याए जे भोजन फेंकी देवा योग्य जणाय
अने नेने बीना मत्तुप्प के मानवरो भयवा तो श्रमण ब्राह्मणादिक देवा न इच्छे

शय्याख्य मेकादश मध्ययनम्



(प्रथम उद्देशः)

जे भिक्खू वा भिक्खुणी वा ३ भिकंखेज्जा उवस्सयं एस्सिए,
से अणुपविसे गामं वा नगरं वा जाव रायहाणिं वा । (६४५)

सेज्जंपुण उवस्सयं जाणेज्जा सअंडं सपाणं जाव ससंताणयं तह-
प्पगारे उवस्सए गो ठाणं^१ वा सेज्जं^२ वा निसीहियं^३ वा चेतेज्जा^४ । (६४६)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वां सेज्जंपुण उवस्सयं जाणेज्जा अप्पंडं

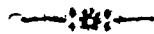
१ कायेत्सर्गं २ संस्तारकं ३ स्वाध्यायं ४ चिंतयेत् कुर्यात्.

अध्ययनं अंगारम्.

शय्या.



पेलो उद्देशः



(बसतिना विचित्र दोषोर्तुं वर्णन.)

जे भिक्षुक अथवा आर्याने उपाश्रय [मकान] मेळ्वानी जरूर पडे त्यारे
तेणे गाम नगर के राजधानिमां जंतु. [६४५]

जे मकान इंडां, जंतुओ, अने कीडीओवाळुं जणाय तेवा मकानभां स्थान
शय्या के घटक नहि करवी. [६४६]

भिक्षुक अथवा आर्याए जे मकानमां इंडां, जंतुओ अने कीडीओ घण

अप्पपाणं जाव अप्पसताणायं तहप्पगारे उवस्सए पडिल्लेहेत्ता पमज्जेत्ता ततो संजयामेघ ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतोज्जा । [६४७]

से ज्जं पुणं उवस्सयं जाणेज्जा अस्सिपडियाए^५ एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूताइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं वेएति तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरगडे वा अपुरिसंतरगडे वा जाव आसेविते वा णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतोज्जा । एवं बहवे साहम्मिया एगा साहम्मिणी बहवे साहम्मिणीओ । [६४८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुणं उवस्सयं जाणेज्जा

५ एतान् मुनीन् प्रतिज्ञाय.

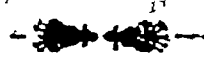
थोडां ? जणाय तेवा उपाश्रयमां जौइ तपासी प्रमार्जन करी तयारधाद यतनापूर्वक त्यां स्थान शय्या के बैठक करवी. [६४७]

बळी जे उपाश्रय मुनिओना भाटेज बंधावेलो के राखेलो जणाय, जेमके, ते एक मुकरर समानधर्मी साधुना भाटे जीवहिंसापूर्वक बंधायो होय या वेचातो लइ राख्यो होय अथवा भाडे राखेलो होय या झूटावी लइ राखेलो होय या मालेकनी रजा शिवाय राखेलो होय या ते तैयार थइ रहेतां तरत वीजा माणसनी बती मुनिना सामे जइ जणावेलो होय तेवो उपाश्रय अगर तेज देनार धणीए चणेलो हाय या वीजा पुरुषे चणेलो होय तेमज ते देनारे नहि वापरलो होय या वापरलो होय तोपण तेमां मुनिए तथा आर्याए स्थान शय्या के बैठक नहि करवी. एज रीते घणा मुनिओने या एक आर्या के वणी आर्याओने उद्देशीने करेला मकानमां पण नहि रहेवुं. [६४८]

मुनि अथवा आर्याए जे मकान घणाएक (बुद्धमती) श्रमण, ब्राह्मण, व-

? नहि जेवा only few

शय्याख्य मेकादश मध्ययनम्



(प्रथम उद्देशः)

जे भिक्खू वा भिक्खुणी वा ३ भिकंखेज्जा उवस्सयं एस्सिए, से अणुपविसे गामं वा नगरं वा जाव रायहाणिं वा । (६४५)

सेज्जंपुण उवस्सयं जाणेज्जा सअंडं सपाणं जाव ससंताणयं तह-
प्पगारे उवस्सए णो ठाणं^१ वा सेज्जं^२ वा निसीहियं^३ वा चैतेज्जा^४ । (६४६)

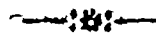
से भिक्खू वा भिक्खुणी वां सेज्जंपुण उवस्सयं जाणेज्जा अप्पंडं

१ कायेत्सर्गं २ संस्तारकं ३ स्वाध्यायं ४ चिंतयेत् कुर्यात्.

अध्ययन अर्थान्तु.

इत्या.

पेलो उद्देशः



(वसतिना विचित्र दोषोत्तुं वर्णन.)

जे भिक्षुक अथवा आर्याने उपाश्रय [मकान] मेळ्वनानी जरूर पडे त्यां
सेणे गाम नगर के राजधानिमां जंतु. [६४५.]

जे मकान इंडां, जंतुओ, अने कीडीओवाळुं जणाय तेवा मकानभां स्थान
शय्या के घटक नहि करवी. [६४६]

भिक्षुक अथवा आर्या जे मकानमां इंडां, जंतुओ अने कीडीओ घण

अप्पपाणं जाव अप्पसताणायं तहप्पगारे उवस्सए प्रडिल्लेहेत्ता पमज्जेत्ता ततो संजयामेघ ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतोज्जा । (६४७)

से ज्जं पुण उवस्सयं जाणैज्जा अस्सिपडियाए^५ एगं साहम्मियं समुद्धिस्स पाणाइं भूताइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्धिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठं वेएति तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरगडे वा अपुरिसंतरगडे वा जाव आसेविते वा णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतोज्जा । एवं बहवे साहम्मिया एगा साहम्मिणी बहवे साहम्मिणीओ । [६४८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणैज्जा

५ एतान् मुनीन् प्रतिज्ञाय.

थोडां^१ जणाय तेवा उपाश्रयमां जेइ तपासी प्रमार्जन करी त्पारधाद यतनापूर्वक त्यां स्थान शय्या के बैठक करवी. [६४७]

बळी जे उपाश्रय मुनिओना माटेज बंधावेलो के राखेलो जणाय, जेमके, ते एक मुकरर समानधर्मी साधुना माटे जीवहिंसापूर्वक बंधायो होय या बेचातो लड़ राख्यो होय अथवा भाडे राखेलो होय या झूटावी लड़ राखेलो होय या मालेकनी रजा शिवाय राखेओ होय या ते तैयार थइ रहैतां तरत बीजा याणसनी वती मुनिना सामे जइ जणावेलो होय तेवो उपाश्रय अगर तेज देनार धणीए चणेओ हाय या बीजा पुरुषे चणेओ होय तेमज ते देनारे नहि वापरलो होय या वापरलो होय तोषण तेमां मुनिए तथा आर्याए स्थान शय्या के बैठक नहि करवी. एज रीते घणा मुनिओने या एक आर्या के घणी आर्याओने चदेनीने करेला मकानमां पण नहि रहेवुं. [६४८]

मुनि अथवा आर्याए जे मकान घणापूक (वृद्धमती) श्रमण, ब्राह्मण, व-

अस्संजए भिक्खुपडियाए क्विणवणीमए पगाणिय पगाणिय समुद्धिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं जाव वेएई तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरगडे जाव अणासेविए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतैज्जा अहपुण एवं जाणेज्जा पुरिसंतरगडे जाव आसेविते पडिलेहिच्चा पमज्जिच्चा ततो संजया-मेव ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतैज्जा । (६४९)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जंपुण उवस्सयं जाणेज्जा अ-स्संजए भिक्खुपडियाए^१ कट्टेए^२ वा उक्कंपिए वा छन्ने वा लित्ते वा घट्टे वा मट्टे वा संसट्टे वा संपधूमिए वा, तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरगडे जाव अणासेविए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतैज्जा अह-पुण एव जाणेज्जा पुरिसंतरगडे जाव आसेविते, पडिलेहिच्चा पमज्जिच्चा ततो संजयामेव जाव चेतैज्जा । (६५०)

१ उपाश्रयं कुर्यात् सचैवं भूतःस्यादितिशेषः २ काष्ठादिभिःसं-स्कृतः

टेमारुं, याचक, के भाटचारणोना माटे करेलुं के राखेलुं जणाय अने ते मकान ते देनार पुरुपेज करेलुं होय अने हजु वपरायेलुं पण न होय तो तेवा मकानमा रहे वुं नहिं, अने जो ते देनार पुरुपथी वीजा पुरुपे करेल होय अने वपरायेल पण होय तो मुनि अथवा आर्याए यतनापूर्वक तेमां रहेवुं. [६४९]

जे उपाश्रय मुनिना माटे असंयति गृहस्थोए सुधराव्यो होय, समराव्यो होय, लीपाव्यो होय, माफ कराव्यो होय के मुगंधित कराव्यो होय तेवो उपाश्रय जो ते देनार पुरुपेज तेम करेलो होय अने सुधराव्या धाद वपरायो पण न होय तो तेमां मुनि तथा आर्याए स्थान शय्या के वेठक नहि करवी, अने जो ते देनार पुरुपथी वीजा पुरुपे, करेलो होय अने वपरायेलो पण होय तो यतनापूर्वक त्यां वसवुं. [६५०]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खुपडियए खुद्धियाओ दुवारिओ महल्लिआओ कुज्जा, जहा
पिंडेसणारु, जाव संथारगं संथरेज्जा बहिया णिणक्खु तहप्पगारे उवस्सए
अपुरिसंतरगडे जाव अणासेविते णो ठाणं वा सेज्जं वा गिसीहियं वा चेत-
ज्जा । अहमुण एवं जाणेज्जा—पुरिसंतरगडे जाव आसेविते—पडिलेहिच्चा
पमज्जित्ता ततो संजयामेव जाव चेतैज्जा । (६५१)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा
अस्संजए भिक्खुपडियाए उदगपसूयाणि कंदाणि वा, मूल्याणि वा, पत्ता-
णि वा, पुप्फाणि वा, वीयाणि वा, हरियाणि वा, ठाणातो ठाणं साहरति,
बहिया वा णिणक्खु^१—तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरगडे जाव णो ठा-
णं वा सेज्जं वा गिसीहियं वा चेतैज्जा । अह पुण एवं जाणेज्जा, पु-
रिसंतरगडे जाव चेतैज्जा । (६५२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण जाणेज्जा—अस्संजए

१ निरसारयति

जे मकानमाना नाना ओरडाओने मुनिना माटे असंयति गृहस्थ मोहोटां क-
रावे अगर मोहोटाने नाना करावे अथवा मुनिने माटे अंडर वेठक करे अथवा
बाहेर करे तो तेवो उपाश्रय जो ते देनार पुरुषेज तेम करेलो अने हजु वापरेलो न
होय तो त्यां नहि वसवुं, पण जो ते बीजा पुरुषे करेलो अने वापरेलो जणाय तो
त्यां यतनपूर्वक वसवुं [६५१]

जे मकानमांथी गृहस्थ साधुना माटे कंद, मूळ, पत्र, पुष्प, फळ, बीज, के
घास वगेरे छील्लोतरिने एक ठेकाणेथी बीजे ठेकाणे लइ जाय अथवा बाहेर कदाडे
तेवो उपाश्रय जो ते देनार पुरुषे तेम करेलो जणाय तो त्यां नहि रहेवुं, पण जो
बीजा पुरुषे तेम करेलो जणाय तो त्यां रहेवुं. [६५२]

जे मकानमांथी गृहस्थ साधुना माटे बाजोट, पाट, नीसरणी के उखळ

भिक्रखुपडियाए पीठं वा, फलंगं वा, णिस्सेणिं वा, उदूहलं वा, ठाणातो
ठाणं साहरति, बहिया वा णिणक्खु,—तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसिंतरगडे
जाव णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतैज्जा । अहपुण एवं जाणे-
ज्जा पुरिसिंतरगडे जाव चेतैज्जा । (६५३)

से भिक्रखू वा भिक्रखुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं ज्जणेज्जा, तं
जहा;—खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि
वा, अण्णतरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्रवजायंसि, णणत्थ आगाढा—गा-
ढेहिं कारणेहिं^२, ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतैज्जा । (६५४)

से आहच्च चेतिते सिया, णो तत्थ सीओदगवियडेण वा उसिणो-
दगवियडेण वा हत्थाणि वा, पादाणि वा, अच्छीणि वा, दंताणि वा,
मुहं वा, उच्छेलेज्ज वा पहोएज्ज वा; णो तत्थ ऊसढं^२ पगरेज्जा, तंज-
हा;—उच्चारं वा, पासवणं वा, खेलं वा, सिंघाणं वा, वंतं वा, पित्तं वा,

१ तथाविधात् प्रयोजनादित्यर्थः २ उत्सृष्टं

उथलावीने एक ठेकाणैथी वीजे ठेकाणे राखे अधवा बाहेर कदाडी भेले तेवो उपा-
श्रय जो लेनार धणीएज तेम करेल होय तो त्यां नहि वसवुं पण जो पुरुपांतरकृत
होय तो यतनापूर्वक त्यां रहेवुं [६५३]

मुनिए के आर्याए थांभलनी टोच पर रहेला मकानमां मांचडाओ उपर
के माळ उपर अधवा वीजी भों उपर अधवा अगाशीमां के वीजा कोइ पण आ-
काशवर्ती मकानमां जरुरी कारणो गिवाय रहेवुं नहिं [६५४]

कदाच त्यां रहेवुं पड त्यारे त्यां थंडा के गरम पाणीथी हत्थ, पग, दांभ
के मुख धोवां करवां नहि. तंमज त्यां खरचु पाणी के लघुनीत [पिशाच] तथ,
श्लेष्म [वडखा], वमन, पित्त, परु, लोही के कोइ पण शरीर संबधी अशुचि
करवी नहि, केमके तेम करतां केवलज्ञानिए दूषण वर्णव्यां छे, जे माटे त्यां तेम

पूतिं वा, सोणियं वा, अन्नतरं वा सरीरावयवं। केवली बूया “आयाण-मेयं” से तत्थ ऊसठं पगरेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा। से तत्थ पयलेमाणे पवडेमाणे वा हत्थं वा जाव सीसं वा अन्नतरं वा कायंसि इंदियजातं लूसेज्जा पाणाणि वा अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज वा। अह भिक्खूणं पुच्चोवदिट्ठा एस पइच्चा जाव जं तहप्पगारे उवस्सए अंतलिक्खजाते णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतोज्जा। (६५५)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुंण उवस्सयं जाणेज्जा—सइत्थियं सखुडुं^१ सपसुभत्तपाणं तहप्पंगारे सांगारिए उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतोज्जा। आयाण—मेयं भिक्खुस्स गाहावतिकुलेण सद्धिं संवसमाणस्स। अलसए^२ वा विसूइया वा छड्डी वा णं उच्चाहिज्जा अन्नतरे वा से दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा असंजए कलुणवाडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेलेण वा, घएण वा, णवणीतेण वा, वसाए वा,

१ सबालं क्षुद्रजंतुसहितं वा २ हस्तपादादिस्तभः श्वपथुर्वा

करतां कदाच मुनि स्वलित थइ नीचे पढी जाय तो तेना हाथपग के माथुं अथवा कोइ पण इंद्रियो भांगी नाश पाये अने हेठे आवेला जीव जंतुओनो पण नाश थाय. माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेणे आकाशवर्ती मकानमां निवास न करवो [६५५]

जे मकानमां घालवच्चां के स्त्रीओ रहेती होय अथवा कूतरा विलाडा विंगेरे क्षुद्र जंतुओ रहेतां होय अथवा जानवरो रहेतां होय तथा तेमनां खानपान त्यां रखातां होय तेवा गृहस्थना परिचयवाला मकानमां वास न करवो. कारण के तेवा गृहस्थना घरमां बसतां बहु दोष संभवे छे. त्यां रहेला मुनिने त्यां पढेलेो दोष ए के कदाच जो सोजा, विशुचिका, उल्टी, के कोइ पण रोग के शूल विंगेरे पीढा उत्पन्न थगे तो त्यां रहेतां असंयाति गृहस्थो तरत करुणा लावनिं ते मुनिना शरीरनं तेल, घृत, माखण के चरवीं मसठे के चोपडे, अथवा तो सुगंधि द्रव्यां बडे,

भिक्रुपडियाए पीठं वा, फलगं वा, णिस्सेणिं वा, उदूहलं वा, ठाणातो
ठाणं साहरति, बहिया वा णिणक्खु,—तहप्पगारे उवरसए अपुरिसंतरगडे
जाव णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतोज्जा । अहपुण एवं जाणे-
ज्जा पुरिसंतरगडे जाव चेतोज्जा । (६५३)

से भिक्रु वा भिक्रुणी वा से ज्जं पुण उवरसयं ज्जाणेज्जा, तं
जहा;—खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि
वा, अण्णतरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि, णणत्थ आगाढा—गा-
ढेहिं कारणेहिं^२, ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतोज्जा । (६५४)

से आहच्च चेतिते सिया, णो तत्थ सीओदगवियडेण वा उसिणो-
दगवियडेण वा हत्थाणि वा, पादाणि वा, अच्छीणि वा, दंताणि वा,
मुहं वा, उच्छेलेज्ज वा प्होएज्ज वा; णो तत्थ ऊसढं^२ पगरेज्जा, तंज-
हा;—उच्चारं वा, पासवणं वा, खेलं वा, सिंघाणं वा, वंतं वा, पित्तं वा,

१ तथाविधात् प्रयोजनादित्यर्थः २ उत्सृष्टं

उथलावीने एक ठेकाणेथी वीजे ठेकाणे राखे अथवा वाहेर कडाडी मेले तेवो उपा-
श्रय जो लेनार धणीएज तेम करेल होय तो त्यां नहि वसवुं पण जो पुरुषांतरकृत
होय तो यतनापूर्वक त्यां रहेवुं [६५३]

मुनिए के आर्याए थांभलनी टोच पर रहेला मकानमां मांचडाओ उपर
के माल उपर; अथवा वीजी भों उपर अथवा अगाशीमां के वीजा कोइ पण आ-
काशवर्ती मकानमां जरुरी कारणो शिवाय रहेवुं नहि [६५४]

कदाच त्यां रहेवुं पड त्यारे त्यां थंडा के गरम पाणीथी हत्थ, पग, दांत
के मुख धोवां करवां नहि. तेमज त्यां खरचु पाणी के लघुनीत [पिशाव] तथा
श्लेष्म [षडखा], वमन, पित्त, परु, लोही के कोइ पण शरीर संबधी अशुचि-
करवी नहि, केमके तेम करतां केवलज्ञानिए दूषण वर्णव्यां छे, जे मांट त्यां तेम

पूतिं वा, सोणियं वा, अन्नतरं वा सरीरावयवं । केवली बूया “ आयाण-मेयं ” से तत्थ ऊसठं पगरेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा । से तत्थ पयलेमाणे पवडेमाणे वा हत्थं वा जाव सीसं वा अन्नतरं वा कायंसि इंदियजातं लूसेज्ज पाणाणि वा अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज वा । अह भिक्खुणं पुच्चोवदिट्ठा एस पइच्चा जाव जं तहप्पगारे उवस्सए अंतलिक्खजाते णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतोज्जा । (६५५)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुंण उवस्सयं जाणेज्जा—सइत्थियं संखुट्ठं^१ सपसुभत्तपाणं तहप्पंगारे सांगारिए उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतोज्जा । आयाण—मेयं भिक्खुस्स गाहावतिकुलेण सद्धिं संवसमाणस्स । अलसए^२ वा विसूइया वा छड्डी वा णं उच्चाहिज्जा अन्नतरे वा से दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा असंजए कलुणवाडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेल्लेण वा, घणुण वा, णवणीतेण वा, वसाए वा,

१ सबालं क्षुद्रजंतुसहितं वा २ हस्तपादादिस्तभः श्वपथुर्वा

करतां कदाच मुनि स्वल्पित थइ नीचे पडी जाय तो तेना हाथपग के माथुं अथवा कोइ पण इंद्रियो भांगी नाश पाये अने हेठे आवेला जीव जंतुओनो पण नाश धाय, माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेणे आकागवर्त्ती मकानमां निवास न करवो [६५५]

जे मकानमां बालवच्चां के स्त्रीओ रहेती होय अथवा कूतरा विलाडा विंगेरे क्षुद्र जंतुओ रहेतां होय अथवा जानवरो रहेतां होय तथा तेपनां खानपान त्यां रखातां होय तेवा गृहस्थना परिचयवाला मकानमां वास न करवो. कारण के तेवा गृहस्थना घरमां बसतां बहु दोष संभवे छे. त्यां रहेला मुनिने त्यां पढेलो दोष ए के कूदाच जो सोजा, त्रिशुचिका, उलटी, के कोइ पणं राग के शूल विंगेरे पीडा उत्पन्न थये तो त्यां रहेतां असंयाति गृहस्थां तरत करुणा लावनि ते मुनिना शरीरने तेल, घृत, माखण के चरवी मसळे के चोपडे, अथवा तो गुग्गुंधि द्रव्यो बडे,

अवभंगेज्ज वा मक्खिज्ज वा सिणाणेण^१ वा कक्केण^२ वा लोदेण^३ वा वन्नेण^४
 वा चुण्णेण वा पउमेण^५ वा आधंसेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा;
 सीओदग्गवियडेण वा उसिणोदग्गवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पच्छोलेज्ज
 वा प्होएज्ज वा सिणाविज्ज वा सिंचेज्ज वा दारुणा वा दारुपरिणामं कट्ठु
 अगणिकायं उज्जालेज्ज वा पयालिज्ज वा उज्जलित्ता कायं आयावेज्ज पया-
 वेज्ज वा अह भिक्खुणं पुव्वोवदिट्ठ्वा एस पतिन्ना जं तहप्पगारे सागारिए
 उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतैज्जा । (६५६)

अर्थाणं—मेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए वसमाणस्स;—इहस्ख-
 लु गाहावती वा जाव कम्मकरी वा अन्नमन्नं उक्कोसंति वा वयंति वा रुं-
 भंति वा उद्वंति वा, अह भिक्खुणं उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा:—एते
 खलु अन्नमन्नं उक्कोसंतु वा, मा वा उक्कोसंतु जाव मा वा उद्वंतु । अह
 भिक्खुणं पुव्वोवदिट्ठ्वा एस पइन्ना जाव जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए
 णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतैज्जा । (६५७)

१ (सुगंधिद्रव्यसमुदयः) २ [कषायद्रव्यक्वाथः] ३ लौघं प्रतिंतं
 ४ कंपिल्लकादि ५ पद्मं प्रतीतं

या उकाळेला क्वाथ जळवेडे, या लोद्ववेडे या चूर्णवेडे या पद्मक्वडे घशसे के खर-
 डगे; अथवा थंडा के गरम पाणीयो छांटके, थोशे, नवरावशे, सींचके, अथवा ला-
 कडाने लाकडा साथ घसी अग्नि सळगावी शरीरने तपावशे. माटे साधुने एवी
 भलामण छे के तेणे तेवी तरेहना गृहस्थना घरे निवास न करवो [६५६]

स्मां वसतां वली वीजो आ दोप छे. त्वां रेहतां गृहस्थयी चाकर लगीना
 लोको अरसपरस बोलाधाली करे या मारामारी विगेरे बखेडो करे त्यारे बे देसी
 साधुनुं दिल उंचुं याय जेमके “एओ भले लड्या करो अथवा एओ लडोभां”
 से माटे साधुने ए भलामण छे के तेणे तेवा प्रकारमा गृहस्थना घरे निवास न
 करवो [६५७]

आयाण—मेयं भिक्खुस्स गाहावतीहिं सद्धिं संवसमाणस्सः—इहख-
लु गाहावती अप्पणो सअट्ठाए अगणिकायं उज्जालेज्ज वा पज्जालेज्ज वा वि-
ज्जविज्ज वा, अह भिक्खू उच्चावयं मण णियच्छेज्जाः— एते खलु अगणिकायं
उज्जालेंतुवा, मा वा उज्जालेंतु, जाव मा वा विज्जवेतु अह भिक्खुणं पु-
व्वावदिट्ठा जाव जं तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं
वा चेतैज्जा । (६५८)

आयाण—मेयं भिक्खुस्स गाहावतीहिं सद्धिं संवसमाणस्सः—इह-
खलु गाहावतिस्स कुंडले वा, गुणं^१ वा, मणी वा, मोत्तिए वा, हिरन्ने
वा, कडगाणि वा, तुडियाणि^२ वा, तिसरगाणि वा, पालंबाणि वा, हारे वा,
अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा, रयणावली वा
तरुणियं वा कुमारिं अलंकियविभूसियं पेहाए, अह भिक्खू उच्चावयं मणं
णियच्छेज्जा, “ एरिसिया वा सा, णोवा एरिसिया ” इति वा णं वूया-
इति वा णं मणं साएज्जा । अह भिक्खुणं पुव्वावदिट्ठा जाव जं तहप्पगारे
उवस्सए णो ठाणं वा जाव चेतैज्जा । (६५९)

१ रसना—मेखलामंडन मितियावत् २ अंगदानि

बळी त्यां त्रीजो ए दोष छे के त्यां गृहस्थ पोताना माटे अग्नि धखावीने
वाळे के वधारे त्यारे मुनिनुं कदाच ढिल उंचुं नीचुं थाय के आ गृहस्थो भले
अग्नि धखावो, माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेणे तेवी जातना मक्कानमां नहि
रहेवुं [६५८]

मुनिने गृहस्थ साथे वसतां चोथो आ दोष छे;—गृहस्थेने त्यां कुंडल,
कंदोरा, माणि, मोती, सुवर्ण, कडा, वाजुबंध, गंठा, सांकळ, हार, अर्घहार, एका-
वळी, मुत्तावळी, रत्नावळी, विगेरे आभूषणो जोइ अयवा तेना शणगारपी गो-
भित युवान कुमारिओ जोइ मुनिना मनने विरक्त थाय के मारे घरे पण वहुं आ-
वुंज हतुं या मारे त्यां आवुं न हतुं. माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेणे
आवे स्थळे न रहेवुं [६५९]

आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावतिहिं सद्धिं संवसमाणस्सः—इह गाहावतिणीओ वा, गाहावतिधूयाओ वा. गाहावतिसुप्हाओ वा, गाहावतिघातीओ वा गाहावतिदासीओ ।, गाहावतिकम्मकरीओ वा, तासिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवतिः—“ जे इमे भवति समणा भगवतो जाव उवरता-मेहुणालो धम्मातो, णो खलु एतेसिं कप्पइ मेहुणधम्मं परियारणाए आउट्टिचाए, जा य खलु एतेसिं सद्धिं मेहुणधम्मं परियारणाए आउट्टेज्जा, पुत्तं खलु सा लभेज्जा ओर्यास्सि तेयस्सि वच्चस्सि ^१ जसस्सि संपहारियं ^२ आलोयं दरिसिणिज्जं.” एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तासिं च णं अण्णयरी सद्धिया तं तवस्सि भिक्खुं मेहुणधम्मपरियारणाए आउट्टवेज्जा ^३ । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं तहप्पगारे सागरिए उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतोज्जा । (६६०)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं । (६६१)

.....

१ रुपवंतं २ संग्रामशूरं ३ अभिमुखं कुर्यात्

गृहस्थ साथे वसतां पांचमो आ दोष छे, गृहस्थना घरे तेनी स्त्री ओ, अथवा पुत्रीओ अथवा बहुओ, अथवा दाइओ अथवा दासीओ एक वीजामां आवुं बोले छे के “जे आ स्त्री संभोगथी निवर्त्तेला श्रमण भगवंत होय छे तेओने स्त्रीओ साथे मैथुन करवुं निषिद्ध छे, पण जो कोइ स्त्री (एमने डगावीने) एमना साथे संभोग करे तो तेणीने बलवान् तेजस्वी रुपवान् यशस्वी अने विजयी पुत्रनी प्राप्ति थाय.” आवुं बोल्वुं सांभळीने कोइ पुत्रनी वांछा धरनारी भोळी स्त्री ते तपस्वि मुनिने डगावीने तेने पोताना पाशपां पाडे. माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेणे एवा स्थळे नाहि रहेवुं [६६०]

ए सर्व मुनि अने आर्यावुं सदाचरण छे (६६१)

[द्वितीय उद्देशः]

गाहावर्द्धं णोसंगे सुद्धसमायारा भवन्ति, भिक्खू य असिणाणाए भोयममायारे^१ से तरांधे दुग्गंधे पडिकूले पडिलोये यावि भवति । जं पुव्वकम्मं तं पच्छाकम्मं, जं पच्छाकम्मं तं पुव्वकम्मं ते भिक्खुपडियाए बट्टसाणे करेज्जा वा नो करेज्जा वा । अह भिक्खूणं पुव्वोवडिट्ठो जाव जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा जाव चेतोज्जा । (६६२)

आयाण मेयं भिक्खुरस गाहावतिहिं सद्धिं संवसमाणरसः—इह-
खलु गाहावतिस्त अप्पणो सअट्ठुए विरुवखुवे भोयणजाए उवखडिए

१ काथिकव्यापारान्, कार्यवशात्.

बीजो उद्देशः.

सुनिने गृहस्थ माथि वसतां यता कोपो तथा तेणे क्या क्या त्यळे न रहेतुं.

गृहस्थ माथे सुनिने वसतां छट्टो ता दोष रह्यो छे. घणापक गृहस्थो पैचाचारणे पाळनारा होम छे. अने सुनि तो ग्यान रहित होवापी तथा (वाग्ग्य योके लपुभोदिर्, एण गुवि कर्म करता होवापी) अपूर्ण होववाया अने दुर्गाथि प्रभाववाया दोष छे. जेदी ते गृहस्थने जगा अलजगणा यह पडे छे. एदी गृह-
स्थने जे ते मां जगवान् दोष ते ते सुनिनी मागे छेलेने दल्लु पडे छे अथवा जे एदी कर्मान् दोष छे ते पर्याय जगे ते छे. मादि सुनिने एदी मन्थरण छे को तेणे तेरा त्यळे गृहस्थीय न रहेतुं. [६६२]

यथा गृहस्थे सादे वसतां भावयो आ दोष रसः—गृहस्थने मां पैचाना

सिया, अह भिक्खुपडियाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडेज्ज वा उवकरेज्ज वा, तं च भिक्खू अभिक्खेज्जा भोत्तए वा पीत्तए वा वियट्ठित्तए^१ वा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठ जाव जं नो तहप्पगारे उवस्सए ठाणं चेतैज्जा । (६६३)

आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावतिणा सद्धिं संवरुमाणस्सः—इह-खलु गाहावतिस्स अप्पणो सयद्वाए विरुवख्खाइं दारुयाइं भिन्नपुव्वाइं भवंति, अह पच्छा भिक्खुपडियाए विरुवख्खाइं दारुयाइं भिदेज्ज वा किणेज्ज वा पभिच्चेज्ज वा दारुणा वा दारुपरिणामं कट्ठु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा पज्जालेज्ज वा तत्थ भिक्खू अभिक्खेज्ज वा आतावेत्तए वा पयावेत्तए वा वियडित्तए वा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठ जाव जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं चेतैज्जा । [६६४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चारपासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे रा-

१ तत्रैव विवर्चितुं आसितुं.

माटे जूदी जूदी जातनुं भोजन तैयार थएलुं होय छे. अने जो मुनि तेमने त्यां रहे तो मुनिना माटे पण ते गृहस्थ आहार पाणी तैयार करावे. अने वखते मुनि तं आहार प्राणी खाना पीवा के वापरवानी इच्छा पग करे. एदला माटे तेने भय.मग छे के तेणे तेवा स्यळे मूळधीज न रहेवुं. [६६३]

गृहथो साथ वसतां आठमो आ दोष छे,—गृहस्थने त्यां पेताना माटे घणाएक लाकडांओ कापी फाडी राखेला होय छे. अने जो तेमने त्यां मुनि जइ रहे तो पछी तेना सारं तेओ लाकडां फाडे या वेचातां लावे या ऊधारे लावे अने वळी लाकडा साथे लाकडुं घसीने अग्नि धखावे अने तेवे वखते कदाच मुनिने अग्नि पासे तापना करवानी इच्छा उत्पन्न थाय. माटे मुनिने ए भयामण छे के तेणे तेवा स्यळे रहेवुं नाई. [६३४]

गृहस्थ साथे वसतां मुनिने नवमो आ दोष छे. ग्रहस्थने त्यां वसता

ओ वा वियाले वा गाहावतिकुलस्स दुवारवाहं अवंगुणेज्जा^१, तेणे य
 तस्संधियारी अणुपविसेज्जा, तस्स भिक्खुस्स णो कप्पति एवं वदित्तए—
 “ अयं तेणे पविसइ वा, णो वा पविसइ, उवलियति वा, णो वा उव-
 लियति, आयवति वा, णो वा आयवति, वदति वा, णोवा वदति, तेण
 हडं अण्णेण हडं, तस्स हडं अण्णस्स हडं, अयं तेणे, अयं उवयरए,
 अयं हंता, अयं एत्थ मकाली, ” तं तवस्सिं भिक्खुं अतेगं तेणं—ति सं-
 कति । अह भिक्खुं पुत्रोवदिद्वा जाव णो चेतोज्जा । (६६५)

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा से ज्जां पुण उवस्सयं जाणेज्जा,
 तंजहाः—तणपुंजेसु वा पलालपुंजेसु वा सअंडे जाव ससंताणए, तइप्पगारे
 उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेएज्जा । (६६६)

१ उद्घाटयेत्.

मुनि के आर्या लघुनीत के वडी नीत करवा माटे राष्ट्रिए अथवा सांज सवारै गृह-
 स्थना घरनो दरवाजा उघाडे ते वसते कदाच कोइ चार अंदर भराइ वेजे तो
 हवे मुनिथी तो आहुं बोली शक्या नहि के “आ चार पेजे छे के छुपाए छे या
 दोही आवे छे के बोले छे, अथवा तेणे चोर्युं के बीजाए चोर्युं, ते ग्रहयनुं चोरा-
 युं के बीजा कोइनुं चोरायुं, आ रयो चोर, आ रयो तेनो मद्दगार, आ रयो
 गारजार, अने एणे अही राघलुं कीहुं इत्यादि.” एथी करीने पालळथी ते ग्रहय
 ते तपस्विनेज चार करी माने छे. माटे मुनिने एही भलामण छे के तेणे ग्रहस्थना
 साथे नहि रहवुं. (६६५)

मुनिने के आर्याने जे मकान घास तथा पराळना जथ्यामां आबहुं हांवाथी
 घीणा टंडा तथा जीवजंतुसहित रहवुं जणाय तेदा मकानमां तेषणे नहि रहवुं
 [६६६]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा से ज्जां पुण उवस्तयं जाणेज्जा—तण-
पुंजेसुवा पल्लपुंजे सु अप्पेडे^१ जाव चेतेज्जा । [६६७]

से आगंतरेसु वा आराजागारेसु वा गाहावतिकुलेसु वा परियाव-
सहेसु वा अभिक्खणं अभिक्खण साहम्मिएहिं ओवयमाणेहिं णो ओवण-
ज्जा^२ । [६६८]

से आगंतरेसु वा जाव परियावसहेसु वा जे भयंतारो उउवहियं-
वासावासियं वा कप्पं उवातिणित्ता तत्थेव मुज्जो भुज्जो संबसंति, अय-
माउसो कालाइक्कंतकिरिया भवति । (६६९)

से आगंतरेसु वा जाव परियावसहेसु वा जे भयंतारो उउवहियं
वा वासावासियं वा कप्पं उवातिणावेत्ता तं दुगुणात्ति गुणण अपरिहरित्ता

अल्पशब्दोऽभाववचनः २ अवपतेत् ३ ऋतुबद्धं शीतोष्णकाल-
योर्मासकल्पं.

अने जे मकान धान्य के परालना जय्यमां आवेलुं छतां जीवजंतु महिन
चणाय त्यां निवास करवो. [६६७]

बली मुसाफरखाना, बंगला, घरों, तथा घटों के ज्यां वारंवार वीजा
राखुओ आवा पडता होय त्यां पण मुनिए नहिं जवुं. [६६८]

जे मुनि भगवंतो तेवा मुसाफरखाना, बंगला, या घरों के मटोयां एक म-
हिनो अथवा वर्षाणुना चार महिना रखा वाद फरी वारंवार त्यां आधी वसे छे,
ते हे आहुणन्, कालातिक्रान्तक्रिया नामे दोषवाली बसती जाणथी. (६६९)

जे मुनि भगवंतो तेवा मुसाफरखाना के मटोयां एक महिनो अथवा वर्षाण-
नुना चार महिना रही पाछा ते गुजारला कालयो वयणा^१ वयणा बसतहुं अन्त

? जेठको वयन एक गामयां रहल होय तेथी वयणा के वयणा वयन
विस्थावाड ने गामयां अन्तय.

तत्थेव भुज्जो भुज्जो संवसंति अय—माउसो इतरा उवट्टाणकिरिया याधि भवति । [६७०]

इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगतिया सट्ठा भवंति, तंजहा, गाहावती वा, जाव कम्मकरीओ वा । तेलिं च णं आयाग्गोप्रे णो सुणिसंते ^१ भवति । तं सद्धहमाणेहिं तं पत्तियमाणेहिं तं रोयमाणेहिं बहवे समण—साहण—अतिहि—क्खिण—वणीमए समुट्ठिस्स त—त्थ तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेइआइं ^२ भवंति, तंजहाः—आएग्गणाणि ^३ वा, आयतणाणि ^४ वा, देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाणि वा, पणिय-

१ सुण्टुनिशांतःश्रुतः २ सहांति—कृतानि इति शेष. ३ लोहका रशाळाः ४ देवकुलपार्श्वपवरकाणि.

नहि पाडतां तरतज न्यां फळा शंवार वसे छे, ए दे आयुज्जन् उयस्थानक्रिया नामे दोषवाळी वसति जाण्थी. (६७०)

आ जवत्तां नारे वासु केउलाएऊ वृद्धय तथा स्त्रीओ भोळ्ळ अने श्रद्धाळु होय छे. तेओनें खुनिना आचारनी पाडीं मरिठि होती नर्या. मात्र मुनिने दान आपवासां कलफळ छे एवी श्रद्धा अने रची यनीने तेओ मणा शमण, ब्राह्मण, अतिथि, दीन. नस भाउ चाणोने गहेवा गांठ सोहोवा मकानो इणांय छे जेवा के केदारना कारखानाओ. देवाळ्यानी वाजुना ओरटाओ, देवाळ्या, सभाओ. प्रपा-जा, ^१ दुवानो. कवार्ग, यानजाळ्याओ, ^२ इणना कारखानाओ. दर्भना कारखाना-ओ. वाजोना कारखानाओ, ^३ ककना कारखानाओ, वरणाविला कारखानाओ.

१ पार्श्वीनां पश्य. पार्श्वी संख्यवता अर्थे तेषां जग्या. २ माटीपावयो
Hilltop - for building carriage. ३ कारखाना अटकाने रथिळी—दर्भनि तेषी वादसं एउंय पार्श्वीना मोस म्हेदवसां वरणी जार्थ अर्थे मरुडम रथयो अन्-क्यासां दाग्गतां.

गिहाणि वा, पणियसालाओ वा, जाणगिहाणि वा, जाणसालाओ, सुधा-
कम्मंताणि^१ वा, उब्भकम्मंताणि वा, बहुकम्मंताणि^२ वा, बहुकम्मंताणि
वा, वणकम्मंताणि वा, इंगालकम्मंताणि वा, कट्टकम्मंताणि वा, सुमाण-
कम्मंताणि वा, संतिकम्मंताणि वा, सुण्णागाएकम्मंताणि वा, गिरिकम्मंताणि
वा, कंदराकम्मंताणि वा सेल्लोवट्टाणकम्मंताणि^३ वा, भवणगिहाणि^४ वा, जे
भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा तेहिं ओव-
यमाणेहिं ओवयंति अय—माउसो अभिक्कंतकिरिया^५ वि भवति ।
(६७१)

इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगतिया
सद्धा भवंति—जाव तं रोयमाणेहिं बहवे समण—माहण—अतिहि—किवण
—वणीमए समुदिरस तत्थ तत्थ अगारीहिं आगाराइं चेइयाइं भवंति; तं-
जहाः—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा । जे भयंतारो तहप्पगा-

१ सुधाकर्मात्तानि सुधागृहाणि २ बाधकर्मात्तानि ३ पापाणम-
डपगृहाणि ४ द्वावपि शब्दावेकार्थौ ५ अल्प दोषाचेयं

अंगारना (अग्निना) कारखानाओ, काष्टना कारखानाओ, स्मशानगृह, शांतिगृह, शून्यघरो,
पर्वतना मथाळापर वंधिला घरो, गुफाओ, तथा पापाणना मंडपो दिगरे स्थळो—
आवी जातना स्थळोमां ते श्रमण ब्राह्मणादिक आवी गया पछी जे मुनिभगवंतो
तेमां उतरे छे ते हे आयुष्यमन्, अभिक्कांतक्रिया नामे दोषवाळी वसति^१ जाणवी
[६७१]

आ जगत्मां चारे वाजु केट्टाएक थद्धाळु लोको होय छे तओ थद्धा थरी
घणा एक श्रमण ब्राह्मण अतिथि दीन तथा वंदिजनोना माटे जगाए जमाए उपर
जणावेलां जूदी जूदी जातनां घरो चणावे छे. तत्रा घरोमां हजु अन्य श्रमणब्राह्म-

१ आ वसति थोडा दोषवाळी होवायी मुनि सेवे छे.

राइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा तेहिं अणोवयमाणेहिं ओव-
यंति, अय माउसो, अणभिक्रंतकिरिया वि भवति । [६७२]

इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगइआ
सड्ढा भवंति, तंजहाः—गाहावई वा जाव कम्मकरी वा । तेसिं च णं एव
वुत्तपुव्वं भवति—“ जे इमे भवंति सयणा भगवंतो सीलमंता जाव उवर-
या मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एणसिं कप्पति आहाकम्मिए उवस्सए
वत्थए^१; से जाणि इमाणि अम्हं अप्पणो अट्टाए चेइयाइं भवंति, तंजहाः
—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा, सव्वाणि ताणि समणाण णिसि-
रामो । अवियाइं वयं पच्छा अप्पणो सयंटाए चेतिसामो, तंजहाः—आए-
सणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा । ” एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णि-
सम्म जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा
उवागच्छंति, उवागच्छत्ता इतरातरेहिं पाहुडेहिं^२ वट्टंति, अय—माउसो,
वज्जकिरिया वि भवति । (६७३)

१ वसितुं २ प्राभृतेषु दत्तेषु गृहेषु.

णादिक नदि आदी गएत्ता छां जे मुनि भगवंतो उत्तरे ते हे आयुप्पन् अनभिक्रां-
त्तिक्रिया नामे दोषवाळी वसति जाणवी [६७२]

आ जगत्तां जे वाजु केटल्याएक श्रद्धालु जीवो होय छे तेओ आम बोले
छे—“जेओ आ मंगुन—कर्मवी नियतीने शीलवंत धड शयन भगवंत वणत्ता होय
छे तेओने तेजोनाज माटे करेत्ता मज्जनमां उतरवुं तिदिदु छे. माटे जे आपणं
आपणा माटे वनायेत्तां घरो छे ते तेमने आर्पा देहुं; अने आपणे पाछा आपणा
माटे नवां वनावी लेहुं.” आबो अनाज सांभळी जे युधि-भगवानो तेवा घरो
तरफ जाय छे अने त्यां रडे छे, ते हे आयुप्पन्, वज्जक्रिया नामनी दोषवाळी
वसति जाणवी. [६७३]

इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवन्ति । तेषिं च णं आचारयोयरे णा सुणिसंते भवइ, जाव तं रोयमाणेहिं बहवे—समण—माहण—आतिहि—किवण—वणीमए पगणिय प-गणिय पमुदिसस तत्थ तत्थ अगारिहिं अगाराइं चेइयाइं भवन्ति, तंजहाः—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा । जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति इतरातरेहिं पाहुडेहिं व-ट्टंति, अय—माउसो, महावज्जकिरिया वि भवइ । (६७४)

इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवन्ति, जाव तं रोयमाणेहिं बहवे समणजाए समुदिसस तत्थ तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेइयाइं भवन्ति, तं जहाः—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा । जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भ-वणगिहाणि वा उवागच्छंति इतरातरेहिं पाहुडेहिं वट्टंति, अय—माउसो सावज्जकिरिया वि भवइ । (६७५)

आ जगत्तमां चारे वाजु केडलाएकक श्रद्धाळु जीवो होय छे. तेमने मुनिना आचारनी कर्षा माद्विति नथी होती तोपण श्रद्धा धरने वणा शरण ब्राह्मण अतिथि दीन तथा चंदिजलेले घाटे छूडुं छूडुं निर्धार कराने यत्तानो चणी राखे छे तेवा मकानो तरफ जे मुनिओ जइने रहे छे ते हे आयुष्मन्, परावर्ष्याक्रिया नामना दोषवर्षी वरति जाणवी [६७४]

आ जगत्तमां चारे वाजु केडलाएक भोळ्य श्रद्धाळु जीवो होय छे, तेओ वणा एक मुनिओना उदने करी तोपना सारं मकानो चणावी राखे छे. तेओ यत्तानोमां जे मुनिओ जइने उतरे ते हे आयुष्मन् सावधक्रिया नामे दोषवर्षी वरति जाणवी. [६७५]

इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगइया सङ्गा भवति, तंजहाः—माहावर्ह वा जाव कम्मकरी वा । तेसिं च णं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवति, जाव तं रोयमाणेहिं एकं समणजायं समुदिसस तत्थ तत्थ अगारिहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तंजहाः—आए-सणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा महया पुढविकायसमारंभेणं एवं महया आउ- तेउ—वाउ—वणस्सइ—तसकायसमारंभेणं, महया संरंभेणं महया आरंभेणं, महया विस्खरूवेहिं पावकम्मेहिं, तंजहाः—छायणओ, लेवण-ओ, संथारदुवारपिहणओ, सीतोदए वा परिद्ववियपुच्चे भवति, अगणिकाए वा उज्जालियपुच्चे भवति । जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, इतरातरेहिं पाहुडेहिं वट्टंति, दुपवखं ते कम्मं सेवंति, अय—माउसो, महासावज्जकिरिया वि भवइ । (६७६)

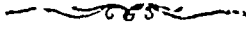
इहखलु पाईणं वा जाव तं रोयमाणेहिं अप्पणो सयट्टाए तत्थ तत्थ अगारिहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तंजहाः—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा महया पुढविकायसमारंभेणं जाव अगणिकाए वा उ-ज्जालियपुच्चे भवति, जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भ-

एज रीते जे मकान एकला नेज मुनिने उदेशे गृहस्थे छकायना जीवोनी दिक्षा करीने तथा लीपण गुंषण जळ लंटेन थग्निज्वालन विगरे अनेक पाप कर्म करीने तैवार करेलुं होय त्यां जइ मुनि रहे छे तेओ देखाता मायु छाता परंपाये गृहस्थ भेवा होवार्था द्विपत्नी काम करे छे. माटे ते महासायय नामना दोषवाळी बसति थाय छे. [६७६]

आ जगदमां चारे बाजुण गृहेता थद्धानु जनेने अनेक पाप करी पोताना स्वप माटे लणेल्ला कृग्गवानः के पत्तनेमां जे मुनि—भगवानो जइने रहे छे तेओ

वणागिहाणि वा उवागच्छंति इतरातरोहिं पाहुडेहिं वदन्ति, एगपक्खं ते कम्मं सेवन्ति, अय-माउसो अप्पसावज्जा किरिया वि भवति । (६७७)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामगियं । (६७८)



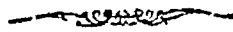
[तृतीय उद्देशः]

“ से^१ य णो सुलभे फासुए उच्छे^२ अहेसणिज्जे । णो य खलु सुद्धे इधेहिं पाहुडेहिं^३ तंजहाः—छायणओ, लेवणओ, संथारदुवार-

१ गृहस्थं प्रति मुनिवाक्य मेतत् २ छादनादिदोषरहितः ३ पापोपादानकर्माभिः

साधुपणा रुप एक पक्षना कामनेज करनारा छे. तेमनी वसतिने अल्पक्रिया (क्रियादोष रहित) वसति जाणवी. [६७७]

(ए नव जातनी वसतिओयां अभिक्रान्तक्रिया नामनी वसति अने अल्प-क्रिया नामनी वसति मुनिने उतरवा योग्य छे) वाकीनी वसति अयोग्य छे ए सर्व मुनि तथा आर्याना आचार छे. [६७८]



[त्रीजो उद्देशः]

(मुनिए क्या स्थले रहेवुं—क्या स्थले न रहेवुं.)

(जो कोइ गृहस्थ मुनिने कहे के अर्धां आहार पाणी मुळभ छे माटे रहे-वानी कृपा करो तो मुनिए आ प्रमाणे तेने कहेवुंः—) “सचछे मुळभ छतां पण

पिहणओ, पिंडवायेसणाओ । सेय भिक्खू चरियारए ठाणरए निसीहियारए
सेज्जा—संथार—पिंडवातेसणारए. ” संति भिक्खुणो १ एव मक्खवाइणो उ-
ज्जुअडा णियागपडिवत्ता अभायं कुच्चमाणा वियाहिया । (६७९)

संतैगइआ २ पाहुडिया ३ उक्खित्तपुव्वा भवति, एवं णिक्खित्त-
पुव्वा भवति, परिभाइय पुव्वा भवति, परिभुत्तपुव्वा भवति, परिट्ठावियपुव्वा
भवति । एवं वियागरेमाणे सभियाए वियागरेति ? हंता, भवति । (६८०)

१ भिक्षवः २ संति केचन ये एवंभूतां छलनां कुर्य्यथा ३
दानार्थं कल्पिता वसतिः

निर्दोष जग्गा मळवी मुञ्जेळ छे. कारण के तेमां मुनिने माटे छत करी ह्यो वा-
लीपुं गुंथुं ह्यो या वेउकनो फेरफार कर्यो ह्यो या दरवाना का अमाउ लया
मोटा कर्या ह्यो वळी कटाच त्यां रवेतां मुनि ते जग्गाना मालेकना धरेया काश-
तर द्दोषने शकवा आहारपाणी न ल्ये त्यारे ते मालेक कोपाय मान पण थाथ; इत्या-
दि अनेक दोष संभवे छे. अने कटाच ए दृषणोथी महिन मकान मळे तोपण मुनि-
ना खपणे अनुकूल मकान मळवुं मुञ्जेळज छे कारण के तेथोने तो वरने फर-
वानुं होय छे, वरते स्थिर वेसवानुं होय छे, वरते अभ्यास करवानुं होय छे,
वरते सुवानुं होय छे. अने वरते गोचरीए जवानुं होय छे. माटे ए वधी वाकन्यां
सरळ पडवुं मकान मळवुं दुर्लभज छे. ” आ रीते केउकएक सरळ मुमुक्षु मुनिओ
निष्कारउपण वसतिना दोष कही वनावे छे. [६७९]

धर्मीएक वेळा केउकएक मुञ्जेओ मुनिना माटेज मकान वांथीने मुनि आ-
माउ थावी छळना करे छे, जेवके आ मकान तो जपे वधारा सारंग वांथुं छे,
रहनुं छे, वेउकनुं छे. के वापरुं छे. माटे मुनिए एवी छळनार्थी भूयनुं नाहि. जे
मुनि उपर प्रमाणे वसतिना दोषो मुठम्योने कही वनावे छे ते ग्यार्याणोने कथुं
उद्धरण नरो, नथी. [६८०]

से ^१ भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
 खुड्डियाओ, खुड्डुदारियाओ, नीयाओ, संनिरुद्धाओ भवंति—तहप्पगारे
 उवस्सए राओ वा वियाले वा णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा पुरा ह-
 त्थेण पच्छा पाएण ततो संजतामेव णिक्खयेज्ज वा पविसेज्ज वा । ^२केव-
 ली बूया “ आयाण मेयं । ” जे तत्थ समणेण वा माहणेण वा छत्तए
 वा, मत्तए वा, दंडए वा, लड्डिआ वा, भिसिया ^३ वा, चेले वा, चिल्लि—
 मिली ^४ वा, चम्मए वा, चम्मकोसए ^५ वा, चम्मच्छेदणए वा, दुब्बद्धे दु-
 ण्णिक्खित्ते अणिकंपे चलाचले; भिक्खू च राओ वा चियाले वा णिक्ख-
 ममाणे वा पविसमाणे वा पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा । से तत्थ पयलेमा-
 णे वा पवडेमाणे वा हत्थं वा पायं वा जाव इंदियजायं वा लूसेज्ज वा
 पाणाणि पा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा जाव व-
 वरोवेज्ज वा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं तहप्पगारे उवर ए

१ कार्यं वशात् चरकादिभिः सह संवासे विधि रयं यथा से भिक्खू
 वेत्यादि. २ अन्यथेति अध्याहार्यं । ३ (कमंडलुः) ४ यवनिका ५
 पार्णित्रं

कारणयोगे मुम्निए चरक तापस विगेरेओना साथे एकज मकानमां रहेतां ते
 मकान जो घणुं नातुं नीतुं के सांकडुं होय तो तेवा मकानमां रातविराते नीक-
 लतां के पेसतां पहेलां हाथ आगळ करी पछी पग आगळ धरीने यतना पूर्वक नीकळतुं
 के पेसतुं. एम कर्या शिवाय केवलज्जानिओ कहे छे के दोपपात्र धवाय छे कारण
 के त्यां रहेला चरक तापसादिकोना ब्राह्मणोना छत्र, पात्र, दंड, लाकडी, कमंडलु
 वत्त, पडदा, चामडां, पगरलां, के चर्म कापवाना इयीआरो आम तेम रखडता प-
 डेला होय छे. अने सावु जो वातविराते त्यांथी उपर जणावेली रीत वापर्या शिवाय
 आव जाव करे तो त्यां पडी के आखडीने हाथपग के कोइ पण गरीगनो अवयव

पुरा हृत्थेणं पच्छा पाएणं ततो संजयामेव णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा
(६८१)

से आगंतारेसु वा अणुवीइ उवस्सयं जाएज्जा । जे तत्थ ईसरे
जे तत्थ समाहिट्ठए, ते उवस्सयं अणुणवेज्जा:—“ कामं ^१ खलु आ-
उसो, अहालंदं अहापरिणातं वसिस्सामो, जाव ^२ आउसंतो, जाव आ-
उसंतरस उवस्सए, जाव साहम्मियाए, तावता उवस्सयं गिहिस्सामो; तेण
परं विहरिस्सामो । (६८२)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा तस्स णामगो-
थं पुच्चासेव जाणेज्जा । तओ पच्छा तस्स गिहे णिमंतेमाणस्स अणिमंते-

१ तवेच्छया २ अत्र यावच्छब्दो नातिदेशे किंतु परिमाणार्थे ताव-
ता संबद्धश्चास्ति.

खोइ वेशे तथा तेय धनां जीवजंतुनी पण विराधना थय माटे मुनिने ए भलायण
छे के तेण एवे भ्रमगे पेहेला हाथ आगळ करी पछी एग आगळ धरवा. [६८१]

मुनिए मुसाफरखाना, बंगला के बरो मागी लेखामां घणुंसावचेत रहेवुं. तेथोनो
जे मालिक अथवा कवजेदार मुत्तयार होय तेनी आपमाणे रजा लेवी “हे आयुष्मन्
जो तमारी इच्छा हो. तो तमारी रजाना अनुसारे अमे अत्रे एक माम के चार
माम रद्दीशुं, अगर एटलो घन्वत आपनी अहिं स्थिरता दशे तो ज्यां मनी आप
अहिं दशो अथवा ज्यां मुधी आपने कजने आ मकान ह्ये त्यां मुपीज अमे एणं
रहीगुं. (कदाच गृहस्य पृष्ठे के तमे वेटलाजण अहिं रहेशो तो मुनीए संख्या
नियम न पाडयो किंतु आ ममाणे कहेवुं—) जेस्सा मुनीओ आवणं पटला रद्दीशुं
[६८२]

मुनि अथवा प्राणीण जेना मकानमां रहेवुं ते धनीना नायठाम पेहेलेगीज
जाणी लेवां. अने न्यार बाद तेना परधी नियंत्रण छनां के न छनां भ्रशुद्ध आरा-

माणस्त वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइपं वा अकासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । [६८३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—स-सागारियं सागणियं सउदयं णो पण्णस्स णिक्खमणपवेत्तणए णो पण्णस्स वायण जाव चिंताए—तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा निसी-हियं वा चेतैज्जा । [६८४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—गाहावइकुलस्स मज्झ मज्झेणं गंतु पएपएपडिबद्धं णो पण्णस्स णिक्खमण जाव चिंताए तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतैज्जा । [६८५]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुणं उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मरीओ वा अण्णमण्ण—मक्कोसंति वा जाव उद्वेति वा, णो पण्णस्स जाव चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा जाव चेतैज्जा । [६८६]

रपाणी ग्रहण नहि करवां, [६८३]

मुनि अथवा आर्याए जे मकान, अग्नि तथा पाणीना प्रचारवाळुं जणाय अने तेथीं तेमां नीकळवुं पेसवुं के वांचवा भणवातुं करवुं मुक्केली भरेलुं जणाय तो त्यां नहि रहेवुं. [६८४]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थना घरती अंदरथीं जयातुं द्योय ने तेथीं नीकळवा पेगवानी तथा भणवा गणवानी अटचण पडती मालम पडे तो त्यां नहि रहेवुं. [६८५]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थो के चाकरडीओ अरसपरस वोला चाली के मरामारी करना जणाय तवा मकानमां पण नीकळवा—पेगवानी तथा भणवा गणवानी अटचण पडती होवारी नहि रहेवुं. [६८६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा, इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेह्णेण वा वा घएण वा णवण्णिण्ण वा वसाए वा अउभगेति वा मक्खेति वा णो पण्णस्स जाव चिंताए—तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा जाव चेतेज्जा । [६८७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इहखलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा कक्केण वा लोहेण वा वण्णेण वा चुण्णेण वा पउमेण वा आघंसंति वा पघंसंति वा उव्वट्ठिंति वा णो पण्णस्स णिक्खमण जाव चिंताए—तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा जाव चेतेज्जा । [६८८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इहखलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सीओदगवियडेण

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थो के चाकरडीओ अरसपरसना शरीरने तेल, घृत, माखण, के चरबी मशळता होय के चौपडता होय तेवा मकानमां उपर मुजबनी अडचण पडती होवाथी नदि रहेवुं. [६८७]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थ के चाकरडीओ एक एकना शरीरने खुशबोदार चीजो, कसायली^१ चीजोना क्वाथ, लोद्र, वर्णक, चुर्ण के पन्नक विगेरे साबुना गुण धरावनार चीजो वसता मशळता के मेल उतारता होय त्यां पण नीकळवा पेसवामां तथ भणवा गणवामां अडचण पडती होवाथी निवास न करवो. [६८८]

मुनिए अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थो के चाकरडी एक—बीजाना शरीरने थंडा के गरम पाणीथी छंइत्तु होय, धोता होय, पखाळता होय, के

वा उसिगौदगवियडैण वा उच्छोल्लंति वा पध्मेवैति वा सिंचंति वा सिणा
वैति वा णो प णस्स जाव णो ठाणं वा जाव चेतैज्जा । [६८९]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा इह-
खल्लं गाहायई वा जाव कम्मकरीओ वा णिणिणा ठिता णिणिणा उवलीणा
मेहुणधम्मं विणवैति^१ रहस्सियं वा मंतं मंतैति णो पण्णस्स जाव णो
ठाणं वा जाव चेतैज्जा । [६९०]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मे ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा आ-
इण्णसंलेखं^२, णो पण्णस्स ज्जव चिं णए जाव णो ठाणं वा से ज्जं वा
निसीहिचं वा चेतैज्जा । [६९१]

१ कथयंति. २ चित्राकं



नवरावता होय त्यां पण जवा आववानी तथा भणवा गणवानी अडचण रहेली
होवाथी उत्तरवुं नहि. [६८९]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थो अथवा चाकर—चाकरडीओ
नत्र थडेने खुल्ला के छाना मयुन करवा वावतनी वातो करता जणाय अथवा
धीजी कंड पण छूपी अकार्य संबधी गुप्त वात करता जणाय त्यां पण भण-
वागणवामां पडती अडचण तथा पोताना मनमां उत्पन्न यती कामवासना विंगरे अ-
नेक दोषनो संभव होवाथी नहि रहेवुं. [६९०]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां विरूप चित्रो पाडेली होय तेवा मका-
नमां पण पूर्वानुभूत कामक्रिडाना स्मरणादिकनो संभव होवाथी नहि रहेवुं.
[६९१]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा संथारं^१ एसित्तए :— ।
(६९२)

से ज्जं पुण संथारयं जाणेज्जा सअंडं जाव संताणगं तहप्पगारं
संथारगं लाभे संते णो पडिग्गाहेज्जा । (६९३)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण संथारयं जाणेज्जा अ—
प्पंडं जाव संताणगं गरुयंतहप्पगारं लाभे संते णो पडिग्गाहेज्जा ।
(६९४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारयं जाणेज्जा अप्पंडं
जाव संताणगं लहुयं अप्पडिहारियं^२ तहप्पगारं सेज्जासंथारयं लाभे संते
णो पडिग्गाहेज्जा । [६९५]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अ—
प्पंडं जाव संताणगं लहुयं पडिहारियं णो अहावद्धं—तहप्पगारं लाभे
ने णो पडिग्गाहेज्जा । (६९६)

१ फलकादि २ अप्रतिहारकं गृहस्थेनपुनरनादीयमानं

संस्तारक एटले सूवानी शय्या ते केवी लेवी ?

मुनि तथा आर्याने ज्यारे संस्तारक (सूवानी शय्यानी) जरूर पडे त्यारं
तेमणे आ रीते वर्तवुं, [६९२]

जे संस्तारक झीणा इडां के जीवजंतु सहित जणाय ते न लेवुं, [६९३]

जे संस्तारक जीवजंतु रहित छतां मोहोडं जणाय ते पण न लेवुं, [३९४]

जे संस्तारक जीवजंतु रहित तथा नानुं छतां पण गृहस्थ ते पाहुं राखवा
ना पाडतो होय तो ते पण न लेवुं, [६९५]

जे संस्तारक निर्जीव नानुं ने गृहस्थे पाहुं लेवा कवूल करेलुं होवा छतां
बरोबर गोठवायेलुं न होय ते पण नहि लेवुं, [६९६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण संधारयं जाणेज्जा—अ-
प्पडं जाव संताणगं लहुये पडिहारियं अहावडं—तहप्पगारं संधारगं जाव
स्सामे सते पडिगाहेज्जा । (६९७)

इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म^१ । अह भिक्खू जाणेज्जा इ-
माहिं चड्ढिं पडिमाहिं संधारगं एसित्तए; तत्थ खलु इमा पढमा पडिमाः
—से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा उदिसिय उदिसिय संधारगं जाएज्जा,
तंजहा; इक्कडं वा, कटिणं^२ वा, जंतुयं^३ वा, परगं^४ वा, मोरगं वा, तणं
वा, कुसं वा, कुच्चं^५ वा, पव्वगं वा; पिप्पलगं वा, पलालगं वा;^६ से

१ संस्तारको ग्राह्यइतिशेषः २ वंशकटादि. ३ जंतुकं तृणविश्ले-
पोत्तन्नं ४ येन तृणेन पुष्पाणि ग्रथ्यन्ते ५ येन कूर्चकाः क्रियन्ते ६ एतेच
जलप्रधानदेशे सार्द्रभूम्यंतरणार्थं मनुज्ञाताः

मात्र जे संस्तारक निर्जीव नानुं शृहस्ये पाहुं लेवा कवूल करेलुं अने चरा-
चर गाठवेलुं होय ते मळे तो मुनि के आर्याए ग्रहण करवुं. [६९७]

(संस्तारकनी चार प्रतिज्ञाओ)

मुनिए उपर मुजवे दोषो टाळीने आ चार प्रतिज्ञाओवडे संस्तारक लेवा
शाखवुं त्यां पहेली प्रतिज्ञा आः—मुनि अथवा आर्याए इक्कडनुं पाथरणुं, सादडी,
जंतुक नामना वासनुं पाथरणुं, फूल गुंधवाना वासनुं पाथरणुं; मोरनां पीछाहुं
पाथरणुं, तृणनुं पाथरणुं, दर्भनुं पाथरणुं, शर नामना रोपानुं पाथरणुं, गांठोनुं पा-
थरणुं, पीपळना पाननुं पाथरणुं, के पराळनुं पाथरणुं, इत्यादिक पाथरणाओ. मंथी
गमे ते एकनुं मुकरर नाम लदने मागणी करवी. शरुआतमांज मुनिए कहेयुं के
“हे आयुप्पन्, अथवा वेहेन, आ संस्तारकोमांधी अमुक संस्तारक मने आपसो ?

आ पाथरणाओ जळभरपुर देशमां लीली ज.म.न दांकवाने मुनि ग्रहण
करे छे.

पुव्वामेव आलोएज्जा “ आउसो त्ति वा, भगिणी ति वा, दाहिसि मे एत्तो
अण्णयरं संथारगं ? ” तहप्पगारं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा
फासुयं एसणिज्जं लाभे संते पडिग्गाहेज्जा । पढमा पडिमा । (६९८)

अहावरा दोच्चा पडिमा:—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पैहाए पे-
हाए संथारगं जाएज्ज, तंजहा; गाहावई वा जाव कम्मकरी वा; पु-
व्वामेव आलोएज्जा “ आउसो त्ति वा भगिणि ति वा, दाहिसि मे एत्तो
अण्णयरं संथारगं ? ” तहप्पगारं संथारगं सयं वा णं जाएज्जा परो वा
से देज्जा फासुयं एसणिज्जं जाव पडिग्गाहेज्जा । दोच्चा पडिमा: ॥
(६९९)

अहावरा तच्चा पडिमा:—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सु—
वस्सए संवसेज्जा, जे तत्थ अहासमण्णागते, तंजहा; इक्कडे वा जाव
पलाले वा; तस्स लाभे संवसेज्जा; तस्स अलाभे उक्कुडुए वा निसज्जि.
ए वा विहरेज्जा तच्चा पडिमा । (७००)

ए रीते पोते मागी लेवुं, या वीजाए आपवानुं करतां ग्रहण करवुं, ए पेहेली प्रतिज्ञा,
[६९८]

वीजी प्रतिज्ञा आ प्रमाणे छे:—मुनि अथवा आर्याए गृहस्थ के तेना चाकर
नफर पासे पोताने जोइतुं संस्तारक पोताने दष्टिगोचर थाय तौज ते मागवुं. तेणे
शरूआतमांज कहेवुं के “ हे आयुष्मन् अथवा वेहेन, आ संस्तारकोमांधी मने सं-
स्तारक आपशो ? ” ए रीते तेवी जातनुं संस्तारक जाते मागी लेवुं अथवा गृह-
स्थ पोते आपवा मांडे तो निर्दोष जाणी ग्रहण करवुं. ए वीजी प्रतिज्ञा. [६९९]

त्रीजी प्रतिज्ञा आ प्रमाणे:—मुनि अथवा आर्याए पोते जेना मकानमांनि-
वास कर्यो होय तेने त्यांधीज जो कई संस्तारक मळी आवे तो ते ग्रहण करवुं
अने जो नहिं मळे तो (आखी रात) उत्कुट्टक आसने? अथवा पलांठी वाळी
बेशी करीने गुजारवी. ए त्रीजी प्रतिज्ञा. [७००]

? वे घुटणपर उत्तरत बेशीने.

अहावरा चउत्था पडिमाः—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उहा -
थड—मेव संथारगं जाणज्जा, तंजहा, पुढाविसिलं वा, कट्टुसिलं वा अहा-
संथडमेव; तस्स लाभे संवसेज्जा; अलाभे उक्कुडए वा निसज्जिए वा
विहरेज्जा । चउत्था पडिमा । (७०१)

इच्छेयाणं चउएहं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे तं चेव
जाव अन्नोन्नसमाहीए एवं च णं विहरंति । (७०२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खवेज्जा संथारं पच्छप्पिणितए,
से ज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा सअंडं जाव संताणगं तहप्पगारं संथारगं
णो पच्छप्पिणेज्जा । [७०३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खवेज्जा संथारगं पच्छप्पिणितए;
से ज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा अप्पंडं जाव संताणगं, तहप्पगारं संथार

चोथी प्रतिज्ञा आ प्रमाणेः—मुनि अथवा आर्याए जे पत्थर के काष्ठलुं सं-
स्तारक यथायोग्य पणे पाथरेलुंज मळी आवे तेनापर रहेवुं. अगर तेव नहि मळे
तो (आखी रात) उत्तरत आसने के पलांठी वाली केशीने गुजारवी. ए चोथी
प्रतिज्ञा. [७०१]

ए चारे प्रतिज्ञाओमांनी कोइ पण प्रतिज्ञाने स्वीकार करता मुनिए बीजा
मुनिने कोइ बखते पण धिकारवुं नहिं. कारण के तेओ सर्वे परस्परती सदाधिथी
जिनाज्ञामां रही सरस्वापणे रहेला छे. [७०२]

मुनि अथवा आर्याए ज्यारे लीबेलुं संस्तारक गृहस्थने पाळुं आपवुं पडे
त्यारे जो ते संस्तारक इंडां के झीणा जीवजंतुवाळुं जणाय तो ते पाळुं नहिं आ-
पवुं. [७०३]

किंतु ज्यारे ते इंडा के जीवजंतु रहित जणाय. त्यारे जोइ तपागी प्रमार्जन

पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय आयाविय आयाविय विणिधू-
णिय विणिधूणिय तओ संजयामेव पच्चप्पिणेज्जा । [७०४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं
दूइज्जसाणे पुच्चामेव णं पणस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेज्जा । के-
वली बूया “आयाण मेयं” । अपडिलेहियाए उच्चारपासवणभूमिंए
भिक्खू वा भिक्खुणी वा, राओ वा वियालेवा उच्चारपासवणं परिद्वेमाणे
पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा । से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वां
पायंवा जाघ लूसिज्जा, पाणाणि वा जाघ ववरोवेज्जा । अह भिक्खूणं पु-
व्वोवादिट्ठा जाव जं पुच्चामेव पणस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ।
[७०५]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा सेज्जासंथारगभूमिं पं

१ अन्यथेतियोज्जं

करी तडकामां तपावी तपावी (यतनार्थी) झाटकी झूटकीने त्पारथाद यतना पूर्वक
गृहस्थने पाळुं आपवुं. [७०४]

मुनिए के आर्याए कोइ पण स्यले रहेतां के ग्रामानुग्रामं फरतां शरुआंतमा
त्यां स्वरचुपाणीनी भूमि जोइ तपाशी राखवी. नहि तो ते दोप पात्र थाय छे
एस केवळज्ञानीए जणाव्युं छे, कारण वगर तपाशेली जग्यामां मुनि के आर्या रात-
विरात वडीनीत के लघुनीत छांडता थका पढे के आरखडे तो हाथपग के इंद्रियने,
पण भंग थइ जाय तथा जीवजंतुनी विराधना थाय. माटे मुनिने एवी थलापण
छे के तेमणे प्रथमधीज ने जगा जोइ तपाशी राखवी. [७०५]

मुनि अथवा आर्याए सुवा माटे अगाउथी जमीन तपाशी राखवी अने एवे.

डिलोहियए, णणत्थ आयरिण वा उव्वज्झाएण वा जाव गणावच्छेइएण वा वुट्ठेण वा सेहेण वा गिलाणेण वा आएसेण^१ वा अंतेण^२ वा मज्झेण वा समेण वा विसमेण वा पवाएण वा णिव्वाएण वा तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय बहुफासुयं सेज्जासंथारगं संथ-
रेज्जा । [७०६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुफासुयं सेज्जासंथारगं संथारित्ता अभिकंखेज्जा बहुफासुए सेज्जासंथारए दुरुहित्तए । [७०७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुफासुए सेज्जासंथारए दुरुहमाणे से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय पमज्जिय ततो संजया-
मेव बहुफासुए सेज्जासंथारगे दुरुहित्ता तओ संजयामेव बहुफासुए सेज्जा-
संथारए सएज्जा । [७०८]

१ प्राघूर्णकेन वा २ इतः सप्तम्यर्थं तृतीया.

प्रसंगे आचार्य, उपाध्याय, गणावच्छेदक, तथा वृद्ध, बाळ, विमार के प्राहुणा मुनिना माटे रखायली जगा छोडी बाकीनी बीनी जगामां छेडे के वच्चमां सर-
खी जमीनमां के खरवचढीमां बहु पवनवाळीमां के पवन विनानीमां मुनिए यतना पुर्वक जोइ तपासी पुंजी प्रमाजीने निर्जीव शय्या पाथरवी. [७०६]

मुनि के आर्याए उपर जणाव्या मुजव निर्जीव शय्या पाथरीने तेवी शय्या-
मां आळोटवा चहावुं. [७०७]

मुनि अथवा आर्याए शय्या पर सूती वरवते शरुआतर्माज मस्तकधी पग
ळीना शरीरने प्रमाजा प्रमाजीने यतना पुर्वक ते शय्या उपर शयन करवुं
[७०८]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा बहुफासुए सेज्जासंथारए सयमाणे णो
अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं पाएण पाये काएण कायं आसाएज्जा । से-
अणासायमाणे तओ संजयामेव बहुफासुए सेज्जासंथारए सएज्जा । (७०९)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा ऊससमाणे वा णीससमाणे वा का-
समाणे वा छीयमाणे वा जंभायमाणे वा उड्डुए वा वातणिसग्गे वा करे-
माणे पुव्वामेव आसयं^१ वा पोसयं^२ वा पाणिणा परिपिहित्ता तओ संज-
यामेव ऊससेज्जु वा जाव वायणिसग्गं वा करेज्जा । (७१०)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा, समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वे-
गया सेज्जा भवेज्जा, पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भ-
वेज्जा ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्पससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा,
सदंसससगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्पदंसमसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, स-

१ आस्यं मुखं २ पोप्यं अधिष्ठानं

मुनि अथवा आर्याए शय्यामां शयन करतां कोइ कोइना हाथ पग के श-
रीरने अडकवुं नहि. अने वगर अटके यतना पूर्वक तेवी शय्यामां सूवुं. [७०९]

मुनि अथवा आर्याए सूवा वाइ श्वासोश्वास लेतां खांसी करतां,
छींकतां, जंभा के उद्गार करतां या वातोत्सर्ग करतां पोताना मुख के अधिष्ठान-
ने हाथयी दांभी यतना पूर्वक ते करवां. [७१०]

मुनि अथवा आर्याने सूवा माटे कोइ वखते सरखी जगा मळे कोइ वखते
खरवचडी मळे, कोइ वखते पवनवाळी मळे कोइ वखते वंधीआर मळे, कोइ
वखते कचरावाळी मळे कोइ वखते साफ करेली मळे, कोइ वखते दांसमच्छरवाळी
मळे कोइ वखते दांसमच्छररहित मळे, कोइ वखते पडेली खडेली मळे कोइ वखते

परिसाडां वेग्या सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेग्या सेज्जा भवेज्जा, सउवसग्गा
वेग्या सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेग्या सेज्जा भवेज्जा, तहप्पगाराहिं सेज्जाहिं
सविज्जेमाणाहिं पग्गहिततरां १ विहारं विहरैज्जा, णो किंचिवि गिलाएज्जा ।

[७११]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सब्बद्वेहिं
सहिते सदा जएज्जासि त्तिं वेमि । [७१२]

१ प्रगृहीततरं सुष्ठु गृहीतं.

आवाद मळे, कोइ वखते भय भरेलीं मळे, कोइ वखते निर्धय मळे, एम विचिल
प्रकारनी जगाओ मळतां मुनि तथा आर्याए सर्वने सारवी रीते ग्रहण करी समभा
वपणे वर्त्तवुं. कंड पण नरम गरम न थवुं. (७११)

एज मुनि अने आर्याना आचारनी पूर्णता छे के तेमणे सर्व कार्यामां हभे-
शां उत्साही थइ रहेवुं, एम हुं कहुं छुं.



ईर्याख्यं द्वादशमध्ययनं.

(प्रथम उद्देशः)

“ अब्भुवगते खलु वासावासे, अभिपवुद्धे^१, बहवे पाणा अ-
मिसंभूया, बहवे बीया अहुणुब्भिन्ना, अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया
जाव संताणगा, अण्णोक्कंता पंथा, णो त्रिण्णाया मग्गा, ” सेवं णच्चा णो
गामाणुगामं दूर्इज्जेज्जा, तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा । (७ १३

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण जाणेज्जा गामं वा जाव
रायहाणिं वा—इमंसि खलु गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा णो महती

१ पयोधर इतिशेषः

अध्ययन वारमुं.

ईर्या. १

पहेलो उद्देश.

मुनि अथवा आर्या एवं जाणे के “ वरसादनी रतु आवी चूकी छे, वर-
भाद वरस्योछे, घणा जीवजंतु उत्पन्न थयाछे, घणा अंकुर फूट्यांछे, रस्ताओ तेओ
चडे भराइ गया छे, अने तेओना पर वधु आवजाव थती अटकी पहवाथी तेओ
पूरेपूरा मालम पण पडी शकता नथी ” तो तेमणे गामोगाम फरवालुं बंध करी
चर्पाकालना (चार महिना) लगी एक मुकामे निवास करवो. [७१३]

जे गाम के शहेरमां मुनिने योग्य मोहोदी भणवा करवाने अनुकूल पडती

१ फरवुं के चालवुं हालवुं.

विहारभूमी^१, णो महती विचारभूमी^२, णो सुलभे पीठ-फलग-सेज्जा-संधारए, णो सुलभे फासुए उंच्छे^३ अहेसणिज्जे, बहवे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया उवागमिस्संति य, अच्चा-इण्णा वित्ती, णो पण्णस्स णिक्खमणपवेसाए जाव धम्माणुओगचिंताए,-से वं णच्चा तहप्पगारं गामं वा णगरं वा जाव रायहाणिं वा णो वासावासं उवाहिएज्जा । (७१४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण जाणेज्जा गामं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गामंसि वा रायहाणिंसि वा महती विहारभूमी महती विचारभूमी, सुलभे जत्थ पीठफलग सेज्जा-संधारए, सुलभे फासुए उंच्छे अहेसणिज्जे, णो जत्थ बहवे समण जाव उवागया उवागमिस्संति य, अप्पाइण्णा वित्ती, जाव रायहाणिंसि वा ततो संजयामेव वासावासं उवाहिएज्जा । (७१५)

१ स्वाध्यायभूमिः २ बहिर्गमनभूमिः ३ एषणीयः

जगा न होय अथवा खरच्चु पाणीनी सवल पडती जगा न होय अथवा मुनिने जोइता पट वाजोठ के दर्भादिकना पाथरणां के शुद्ध आहारपाणी मळी शकतां न होय अथवा ज्यां घणाज भिक्षुको आवी वसेला होय के आवता होय जेथी मुनिने भणवा गणवामां तइ पण अडचण ३डे तेवा गाम के शहेरमां वर्षाकाळ गुजारवा माटे निवास नहि करवो. [७१४]

जे गाम के शहेरमां भणवा गणवाने तथा खरच्चु पाणीने अनुकूल पडती विशाळ जगा मळी आवे तथा जोइती वस्तु के आहार पाणी मळवा सुलभ पडे अने झाझा भिक्षुको पण आवेला के आववाना न होय तेवे स्थळे मुनिए वर्षाकाळ गुजारवो. [७१५]

अहपुण एवं जाणेज्जा,—चत्तारि मासा वासाणं वीईकंता, हेमं-
ताण य पंचदस रायकप्पे परिवुसिते, अतरा से मग्गा बहुपाणा जाव सं-
ताणगा; णो जत्थ बह्वे समण जाव उवागया उवागभिरसंतिय—सेवं
णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । (७१६)

अहपुण एवं जाणेज्जा,—चत्तारि मासा वासाणं वीईकंता, हेमंता-
ण य पंचदस रायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गा अप्पंडा जाव संताण-
गा, बह्वे जत्थ समण जाव उवागभिरसंति य, सेवं णच्चा तओ संजया-
मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । (७१७)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे पुरओ
जुगमायं^१ पेहमाणे दट्ठण तसे पाणे दहट्ठु^२ पायं रीएज्जा, साहट्ठु^३ पायं
रीएज्जा, उक्खिप्प पायं रीएज्जा, तिरिच्छं वा कट्ठु पादं रीएज्जा^४, सति

१ युगमात्रं चतुर्हस्त प्रमाणं. २ उधृत्य. ३ संहृत्य. ४ अयं
चान्य मार्गाभावे त्रिधिः सतित्तस्मिन् तेनैवगच्छेत्.

ज्यारे एम ज्जाय के वर्षाकालना चार मास वही गया छे तेमज हेमं
स्तुना पंदर दिवस पण पसार थया छे, छतां हजु एक गामथी बीजे गाम जवना
रस्ताओ जीव तथा वनस्पतिथी भरपूरज छे अने तेमना पर हजु घणा लोको चा
लता थया नथी तो तेम जणातां मुनिए ते वखते पण ग्रामानुग्राम फरवानुं शरु
नहि करवुं [७१६]

पण जो ए वखते रस्ताओ अल्प जीवजंतु अने अल्प वनस्पतिवाळा थयेला
होय अने तेमनापर लेकोनी पण पूरती आवजाव थवा लागी होय तो तेवुं जापी
यतना पूर्वक मुनिए ग्रामानुग्राम फरवुं. [७१७]

मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम फरतां पोतानी आगलनो चार हाथ जे-
दलो रस्तो जोतां जोतां चालुं. तेम चालनां ते रस्तामां हस्ता फरता जीवजंतु दे-

परक्कमे संजतामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा, तओ संजयामेव
गामाणुगामं दूईज्जेज्जा । (७१८)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से
पाणाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा उदए वा मट्टिया वा अविद्धत्ये,
सई परक्कमे णो उज्जुय गच्छेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूईज्जे-
ज्जा । (७१९)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से
वरूवरूवाणि पच्चंतिकाणि दस्सुगायतणाणि मिलक्खुणि दुस्सन्नप्पाणि दु-
प्पणवणिज्जाणि अकालपडिबाहेीणि अकालपरिभोईणि, सति लोढे^१ वि-
याराए संथरमाणेहिं^२ जणवएहिं णो विहारवत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए।
केवली बूया 'आयाण मेयं' ते णं बाला "अयं तेणे, अयं उवचरए,

१ लष्टे श्रेष्टे २ अन्येषु आर्यदेशेषु सत्सु.

खव.मां आणे अने वीजो र तो मळी आवतो होय तो ते जीवजंतुवाळो रस्तो छो-
डी वीजे रस्तेज चालवुं. पण जो वीजो रस्तो नहि मळे तो पोतानां पण जीवजंतु
थी आगळ या पाळळ या पडखे संभाळी संभाळीने मुक्कां अने ए रीते चालवुं.
[७१८]

मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम फरतां वच्चे रस्ताम नाना जीवजंतु, व-
नस्पतिना वीज, वनस्पति, या लीली घाटी आपवी पडे तो वीजो रस्तो मळतां
छतां ते रस्ते न चालवुं. किंतु वीजेज रस्ते यतना पूर्वक चालवुं. [७१९]

मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम फरतां वचगाले के देशना सीमाडे वसेल्या
हठीला, जड, अकाळचारी अने अक्राणभक्षी जूदी जूदी जातना हूंढारा
वथा म्लेच्छादिक अनार्य लोकोना विभागे.मां वीजा सारा देशो विहार करवाने
अनुकूळ मळी आवतां छतां नहि करवुं. कारण के तेम करतां केवणज्ञानिओ बहु

अथं तओ आगए ” ति कट्टु तं भिक्खुं अक्कोसेज्ज वा जाव उवद्धवेज्ज वा, वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंच्छणं अर्च्छिदेज्ज वा अर्ब्भिदेज्ज वा अव-
हरेज्ज वा परिभवेज्ज वा, । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा पतिण्णा जाव जं णो
तहप्पगाराणि विरूवरूवाणि पच्चंतियाणे दस्सुगायतणाणि जाव विहार-
वतियाए णो पवज्जेज्जा गमणाए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दुइज्जेज्जा
(७२०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दुइज्जमाणे अंतरा से
अरायाणि वा गणरायाणि वा जुवरायाणि वा दोरज्जाणि वा वेरज्जाणि वा
विरूद्धरज्जाणि वा सति लाढे विहाराए संथरमाणेहिं जणवएहिं णो विहार-
वतियाए पवज्जेज्ज गमणाए । केवली बूया “आयाण मेयं ” ते णं बाल
“अयं तेणे, ” तंचेव जाव णो विहारवतियाए पवज्जेज्ज गमणाए, तओ
संजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्ज । (७२१)

दोष बतावे छे. जे माटे मुनिए त्यां जतां त्यांना अनार्य लोको ते मुनिने चोर के
जासुस ठेरावी तेने अनेक उपद्रव करे या तेना वस्त्रपात्र लूटीं ले या चोरी ले. माटे
मुनिने ए भलामण छे के तेणे तेवा प्रांतमां जवानुंज नहि करवुं. [७२८]

वळी जे प्रांतोमां कोइ राजाज नहि होय या अनेक जण राज्य कर्त्ता थइ
पडया होय या राज्यकर्त्ता बहु लघुवयनो या वे राज्य चालतां होय या एक वी-
जानां विरोधी राज्य थइ पडयां होय तेवा प्रांतोमां, वीजा सारा देशो विहार क-
रवाने अनुकूल मळी आवतां छतां विहार नहि करवो, कारण के केवळज्ञानिए
तेम करवुं निषिद्ध कर्तुं छे जे माटे मुनिए तेना स्थळे जतां त्यांना लोको तेने
चोर के जासुस ठेरावी अनेक अडचणो पाडणे. माटे मुनिने एवी भलामण छे के
तेणे तेवा प्रांतोमां नहि जनां वीजा सारा प्रांतोमां संभाळ पूर्वक फरता रहेवुं.
[७२१]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सियाः--
 से ज्जं पुण विहं^१ जाणेज्जा एगाहेण वा दुयोहेणावा तियोहेण वा चउयाहेण
 वा पंचाहेण वा पाउणेज्ज वा, णो पाउणेज्ज वा, तहप्पगारं विहं अणेगाह-
 गमणिज्जं सति लाढे जाव णो विहारवत्तियाए पवज्जेज्ज गमणाए । केव-
 ल्ळी बूया 'आयाण मेयं' । अंतरा से वासांसि वा पाणेसु वा बीएसु वा
 हरिएसु वा उदएसु वा मट्टियाए वा भविद्धत्थाए । अह भिक्खूणं पुच्चो-
 वदिट्ठा जाव जं तहप्पगारं अणेगाहगमणिज्जं जाव णो गमणाए, ततो
 संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा गमणाए । (७२२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से णा-
 वासंतारिमं उदयं सिया, से ज्जं पुण णात्रं जाणेज्जा—असंजए भिक्खुपडियाए

१ अनेकाहगमनीयः पंथाः ।

मुनि अथवा आर्यानि ग्रामानुग्राम फरतां वच्चे कोइ मोहोइं मेदान् उल्लंघत्ता
 नुं आवी पडे के जेनो छेडो आखो एक दिवस के वे त्रण चार या पांच दिवस
 चाल्याथीज मळी शके या नहि पण मळी शके, तेवा बहु लांबा रस्ते वीजो दुंको
 रस्तो मळी आवतां छतां नहि चालवुं. कारण के तेवे लांबे रस्ते चालतां केवलज्ञा-
 निए अनेक दोष वतान्या छे. जे माटे त्यां लांबो वखत चालवानुं हेतां वच्चे क-
 दाच वरसाद् आवी पंड तो ते रस्तामां जीवजंतु, वनस्पति, पाणी तथा लीली मा-
 टी भराइ जाय छे. माटे मुनिए तेवे मार्गे नहि चाळवुं. [७२२]

मुनिए वहाण पर क्यारे चढवुं ?

मुनि के आर्यानि एक ग्रामथी वीजे ग्राम जतां वच्चे कदाच वहाणथीज त-
 री शकाय एट्ठुं पाणी आडे आवे तो तेमणे आ पमाषे वर्त्तवुं;—जे वहाण अ-
 सयमी गृहस्थे सावुना माटेज वेचातुं लइ राखुं होय या उछीतुं लइ राखुं होय.

किणेज्ज, वां पामिच्चेज्ज वां, णावाए वा णावांपरिणामं कट्ठु^१ थंलाओ वा णावं
जलंसि ओगाहेज्जा, जलाओ वा णावं थलंसि उक्केसेज्जा, पुण्णं वा णावं
उस्सिच्चेज्जा, सण्णं वा णावं उप्पीलावेज्जा, तहप्पगारं णावं उट्ठुगामिणिं वा
अहेगामिणिं वा तिरियगामिणिं वा परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए अप्प-
तरो^२ वा भुज्जतरो^३ वा णो दुरुहेज्ज गमणाए। [७२३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुब्बामेव तिरिच्छसंपातिमं णावं जा-
णेज्जा, जाणित्ता से त-मायाए^४ एगंत मवक्कमित्ता भंडगं पडिलेहेज्जा,
पडिलेहित्ता एगओ भोयणभंडगं करेज्जा, करित्ता ससीसोवरियं कायं पाए
य-पमज्जेज्जा, पमज्जित्ता सागारियभत्तं पच्चक्खाएज्जा, पच्चक्खाइत्ता एगं
पायं जले किच्चा^५ एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव णावं दुरुहेज्जा
। [७२४]

१ कुर्यादित्यर्थः २-३-इमे मार्गविशेषणे ४ ज्ञात्वा. ५ कृत्वा.

या अदलवदल करी राख्युं होय या स्थळ्थी जळमां के जळ्थी स्थळमां लावेळुं
होय या भरेळुं हेतां खाली कर्णुं होय या खूची गएळुं हेतां ऊपडावी राख्युं होय
तेवा जूदी जूदी दिशा तरफं जता वहाणं परं चार गाड या वे गाऊ ज्ञाज्ञा
या थोडा रस्ता लगी पण चडवुं नहि. [७२३]

किंतु जे वहाणने गृहस्थो पोताना माटे ते पाणीना आरपार लइ जवाना
होय तेवा वहाणनी मुनि के आर्षाए शरुआतमां तपास करवी. तपास करतां ते
मालम पड्याथी मुनिए एकांत स्थळमां आवी पोताना उपकरण पात जोइ तपाशी
लेवां. ते तपाशी लइ एक तरफ पगथी धरी माथा लगीना शरीरने प्रमार्जित कर
वुं. ते कर्षा वाढ सागारी अणसण ग्रहण करवुं. ते ग्रहण करीने पळी एक पग पा
णीमां धरतां एक पग स्थळमां [एटले पाणीना ऊपर] धरतां वहाण पर चडवुं.
[७२४]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा णावं दुरुहमाणे णो णावाए पुरओ दु-
रुहेज्जा, णो णावाए अग्गओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मज्झतो दुरुहेज्जा. णो
बाहाओ पणिज्जिय पणिब्भिय, अंगुलीए उवदंसिय उवदंसिय उण्णामिय
उण्णामिय णिज्झाएज्जा । [७२५]

से णं परो^१ णावागतो णावागयं वएज्जा “ आउसंतो समणा,
एयं तुमं णावं उक्कसाहि वा वोक्कसाहि वा खिवाहि वा, रज्जुए वा गहाय
आगसाहि ” णो से—यं परिन्नं परियाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।
[७२६]

से णं परो णावागतो णावागयं वएज्जा “ आउसंतो समणा, णो
संचाएसि णावं उक्कसित्तए वा वोक्कसित्तए वा खिवित्तए वा रज्जुयाए वा
गहाय आकसित्तए, आहर^२ एतं णावाए रज्जुयं, सयं चेव णं वयं नावं

१ नाविकः २ आनय.

मुनि अथवा आर्याए वहाणपर चडतां वहाणना मोखरे जइ न वेशवुं तथा
सर्वथी अगाउ चडी न वेशवुं तथा वहाणना वच्चोवच पण चडी न वेशवुं, तेमज
शरूआतमां वहाणना वाहेर उभा होतां वहाणना पडखाओले पकडी आंगळीओ
वडे ताकी ताकीने या उंचा उंचा थइने तेना अंदर जोवातुं पण नाहि करवुं.
[७२५]

वहाणपर चडेला मुनिने वहाणवारा लोको एम कहे के “ आयुप्पन् श्रमण
तमे आ वहाणने (अमुक दिशा तरफ) खेंचो या वाळो या एमांना सामानने द-
रिआमां के नीचे फेंको या दोरडांओ खेंचो.” तो मुनिए ते वात करवा कबुल
नाहि थवुं किंतु अवोल रही धर्मध्यान कर्या करवुं. [७२६]

वहाणपर चडेला मुनिने वहाणवाळा लोको एम कहे के “ हे आयुप्पन्
श्रमण, तमे आ वहाणने खेंचवा करवामां तथा एमांना सामानने फेंकी दोरडाओ

उक्कसिस्सामो वा जाव रज्जुए वा गहाय आकसिस्सामो, ” णो से—यं परि-
च्चं पिरयाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा । (७२७)

से णं परो णावागओ णावागयं वएज्जा “ आउसंतो समणा, एयं
ता तुमं णावं अलित्तेण वा पीढेण वा वंसेण वा वलएण वा अवल्लएण
वा वाहेहि; ” णो से यं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।
(७२८)

से णं परो णावागओ णावागयं वदेज्जा “ आउसंतो समणा, एयं
ता तुमं णावाए उदयं हत्थेण वा पाएण वा मत्तेण वा पडिग्गहेण वा
णावाउस्सिच्चणेण वा उस्सिच्चाहि ” णो से—यं परिणं परिजाणेज्जा ।
(७२९)

से णं परो णावागतो णावागतं वएज्जा “ आउसंतो समणा,

ताणवाना कामभां अशक्त छे तो अमुक दोरडुं मने लावी आपो अमे पोते वहाण-
ने वाळवा करवानुं करता रहीशुं.” आवुं सांभळी मुनिए तेम पण कब्बुल नहि क-
रवुं किंतु मौन रही धर्म ध्यान ध्याया करवुं. [७२७]

वहाणपर चडेला मुनिने वहाणवाळा लो ो एवुं कहे के “ हे आयुष्मन्
श्रमण, आ वहाणने तमे आ पाटीआना अलताओ के हलेसांओवडे या वांस के
बळावडे या अवल्लक नामना हथियार वडे आगळ चलावो.” तो आ वात पण मु-
निए न स्वीकारवी. किंतु मौन रखा करवुं. [७२८]

वहाणपर चडेला मुनिने वहाणवाळा लोको एम कहे के “ हे आयुष्मन्
श्रमण, आ वहाणना अंदर भरता पाणीने तमे तमारा हाथयी या पगयी या वास-
णयी के पात्रयी या वहाण मांढेना पाणी कहाडवाना हथियारयी वहार काढता
रहे ” तो आ वात पण मुनिए न स्वीकारवी किंतु मौन धरी रहेवुं. [७२९]

वहाणपर चडेला मुनिने वहाणवाळा लोको एम कहे के हे “आयुष्मन् श्रमण

एतं तो तुमं णावाए उत्तिंग^१ हत्थेण वा पाएण वा^२ बाहुणा वा ऊरुणा
वा उदरेण वा सीसेण वा काएण वा णावाउरिस्सिचणेण वा चेलेण वा म-
ट्टियाए वा कुसपत्तएण वा कुरुविंदेण वा पिहेहि ” णो से—यं परिण्णं परि-
जाण्णज्जा । (७३०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावाए उत्तिंगेण उदयं आसवमाणं
पेहाए उवरुवरि णावं कज्जलावेमाणं^२ पेहाए णो परं उवसंकमित्तु एवं बू-
या “ आउसंतो गाहावइ, एयं ते णावाए उदयं उत्तिंगेण आसवति, उ-
वरुवरि वा णावा कज्जलावेति ” एतप्पगारं मणं वा वायं वा णो पुरओ
कट्ठु विहरेज्जा । अप्पुस्सुए^३ अबहिलेस्से एगंतिगएणं अप्पाणं विपोसेज्ज
समाहीए, तओ संजयामेव णावासंतारिमे उदए अहारियं^४ रीएज्जा ।
(७३१)

१ रंधं २ म्हाव्यमाना मित्यर्थः ३ अविमनस्कः ४ यथार्य भव-
ति तथा

आ बहाणमां पढेला अमुक् छिद्रने तमे तमारा हाथ, पग, बाहु, जंघा, उदर,
मस्तक, के आखा शरीर बडे या बहाणमां रहेला उलिचण नामना हथियारबडे
या वस्त्र, माटी, कमळ पत्र के कुरुविंद नामना घासबडे ढांकी राखो.” तो मुनिए
आ वात पण नहि स्वीकारवी. [७३०]

मुनि अथवा आर्याए बहाणमां छिद्र पढयार्थी पाणी भरार्तुं जोइ तथा उपरा
उपरी बहाणने बुद्धतुं जोइ वांजाने ए वात जणाववी नहि अने पोते पण पोताना
मनमां ए वावतना संकल्पविकल्प धरवा नहिं. किंतु शांत पणे स्वस्वरूपमां रमता
रही एकांत प्रदेशमां रहीने समाधिस्थ रहेवुं. ए रीते ब्रह्मणर्था पार पमाता जळ-
मार्गमां यथासुंदरताए प्रवर्त्तता रहेवुं. [७३१]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामगियं जं सव्व-
द्वेहिं सहिते सदा जएज्जासि ति वेमि । (७३२)

[द्वितीय उद्देशः]

से णं परो णावागओ णावागयं वदेज्जाः—“ आउसंतो समणा,
एयं ता तुमं छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं वा गिण्हाहि, एयाणि तुमं
विरूवरूवाणि सत्थजायाणि धारेहि, एयं ता तुमं दासगं वा दारिगं वा
पज्जेहि^१, ” णो सेत्तं परिणं^२ परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।
(७३३)

१ षायय २ प्रार्थनामित्यर्थः

एज खरेखर मुनि अने आर्योना आचारनी संपूर्णता छे के तेमणे वधी
आवतोमां संभाळ पूर्वक वर्त्तुं. [७३२]

बीजो उद्देश.

(वहाणपर चडेवा तथा पाणीमांधी पसार थवा विगेरे विधि.)

वहाणपर चडेला मुनिने बीजा वहाणपर चडेला लोक एवुं कहे के “ हे
आयुप्पान् श्रमण ओ छत्रं या चर्म कापत्रातुं हथियार पकड, तथा आ जूदी
जूदी जातना हथियारो धरी राख, अथवा आ वाळक के वाळिकाने (दूध विगेरे)
पीवराव ” आ हुकेम स्वीकारवा नहि किंतु मौन रखा करवुं. [७३३]

से णं परो णावागओ णावागयं वदेज्जा:—“ एस णं समणे णावाए भंडभारिए^३ भवति, से णं बाहाए गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह, ” एतप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से य च्चिवरधारी सिया खिप्पामेव च्चिवराणि उव्वेड्ढेज्ज वा णिव्वेड्ढेज्ज वा उप्पोसं^४ वा करेज्जा । [७३४]

अह पुण एवं जाणेज्जा:—अभिकंतकूरकम्मा खलु बाला बाहाहिं गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिवेज्जा, से पुव्वामेव वएज्जा “ आउसंतो गाहावती, मा मेत्तो बाहाए गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह; सयं च्चैव णं अहं णावातो उदगंसि ओगाहिरसामि. ” से णेत्रं वयंतं परो सहसा बलसा बाहाहिं गहाय उदगंसि पक्खिवेज्जा, तं णो सुमणे सिया णो दुम्मणे सिया, णो उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा, णो तेसिं बालाणं धाताए वहाए समुद्वेज्जा, अप्पुसुर जाव समाहीए ततो संजयामेव उदगंसिपवज्जेज्जा । (७३५)

१ भंडवत् भारवान् भंडेन वा भारवान् २ शिरोवेष्टनं.

वहाणपर चडेला मुनि तरफ दहागमानो कोइ बोले के “ आ साधु वहाण उपर बहु बोजो करे छे, माटे एने बाहुथी पकडीने पाणीमां फेंकी द्यो, “ आवां वाक्यो सांभळीने वखधारी मुनिए तरतज पोताना भारवाळां वखो उतारीने हलकां वखो वींटी लेवां. तथा माथापर पण वख वींटी लेवुं. [७३४]

एवामां ते क्रूर कर्मी अजाण मनुष्यो मुनिने बाहुथी पकडी पाणीमां नाखवा तैयार थाय तो तेना नाखवा अगाउज मुनिर कहेवुं के “ हे आधुष्मन् गृहस्थो तमारे मने पकडीने पाणीयां नाखवानी कशी जरूर नहीं. हुं जातेज वहाणथी पाणीमां झीपलावुं छुं, ” आवुं बोलतां छतां जलदी ते माणसो मुनिने बाहुथी पकडीने फेंकी द्ये तो मुनिए मनमां कशो पग गग के द्वेष न लाववो तथा संकल्पविकल्प न करवा, तेमज ते अजाण पुरुषोने नाश करवा के मारवा कदापि नहिं छठवुं. शांत पणे पाणीमां जइ पडवुं. [७३५].

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो हत्थेण हत्थं पाएण पायं काएण कायं आसाएज्जा^१, से अणासादए अणासायमाणे तओ संजयामेव उदगंसि पवज्जेज्जा । [७३६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो उम्मग्गणिम्म गिचं करेज्जा, मा मेयं उदगं कण्णेषुवा अच्छीसु वा णक्कंसि वा मुहंसि वा परियावज्जेज्जा, तओ संजयामेव उदगंसि पवज्जेज्जा । [७३७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे दोब्बलियं^२ पाउणेज्जा, खिप्पामेव उवधिं विंगिचेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णो चैव णं सातिज्जेज्जा अह पुण एवं जाणेज्जा, पारए सिया उदगाओ तीरं पाउपित्तए तओ संजयामेव उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा काएण उदगतीरे चिट्ठेज्जा । [७३८]

१ संस्पृशेत्. २ श्रमं

मुनि अथवा आर्या पाणीमां तणातां हाथ साथे हाथ, पग साथे पग, अने शरीरना कोइ पण अवयव साथे वीजो अवयव लगाइवो नहि ए रीते यत्नपूर्वक तणाता रहेवुं. [७३६]

मुनि अथवा आर्या पाणीमां तणाता, इवकीओ नहि मारवी, जेथी करीने कान, आंख, नासिका, तथा मुखमां पाणी जहनं विनाश न पावे. [७३७]

मुनि अथवा आर्या पाणीमां तरतां धाकी जाय त्यारे तेमणे तरतज पोताने भारी पडता वस्त्रो छोडी देवां. ते वस्त्रोपर मूर्च्छित नहि रहेवुं. पछी ज्यारे कांठे मास थाय त्यारे पाणीथी शरीर भीजावलुं होय त्यां लणी कांठापरज वेशी रहेवुं. [७३८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउळ्लं वा ससिणिद्धं वा कायं णो
 आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा संलिहेज्ज पिछेहेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज
 वा आयावेज्ज पयावेज्ज वा । अह पुण एवं जाणेज्जा, विगतोदए भे
 काए वोच्छिण्णसिणेहे, तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज
 वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । [७३९]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो परेहिं
 सद्धिं परिजविया^१ परिजविया गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । तओ संजयामेव
 गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । (७४०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से
 जंघासंतरिमे उदए सिया, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पादे य पम-
 ज्जेज्जा, से पुव्वामेव पमज्जित्ता एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले
 किच्चा तओ संजयामेव जंघासंतरिमे उदए अहारियं रीएज्जा । (७४१)

१ भृश मुल्लापं कुर्वन्

मुनि अथवा आर्याए पाणीथी भिजायल्ल शरीरने घमवुं छांटवुं के दाववुं
 नहि तेमज तपाववुं करवुं पण नहि. (किंतु पोतानी मेळे पाणीने पडवा देवुं)
 अने ज्यारे शरीरपरथी सघळी भिनास बढी जाय त्यारेज शरीरने घमवुं छांटवुं
 के दाववुं तथा तपाववुं. अने त्यार वाइ ग्रामानुग्राम फरवानुं शरु करवुं. [७३९]

मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम फरता मार्गमां कळेला गृहस्थो साथे बहु
 वक्त्रकारो करतां नहि चालवुं. किंतु संभाळ पूर्वकज चालता रवेवुं [७४०]

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम फरतां वचगाले जंघा प्रमाण पाणी
 उतरवानुं आवे त्यारे तेमणे आखा शरीरने प्रमार्जन करी एक पग जळमां धर-
 तां अने एक पग स्थळमां धरतां संभाळपूर्वक रूढी रीति ते जळमांथी पसार थवुं
 [७४१].

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघासंतारिमे उदगे अहारियं रीय-
माणे णो हत्थेण वा हत्थं पादेण वा पादं काएण वा कायं आसाएज्जा ।
से अणासादए अणासादमाणे तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहा-
रियं रीएज्जा । (७४२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीयमाणे
णो साचावडियाए णो परिदाहवडियाए महति महालयंसि^१ उदगंसि कायं
वित्तोसेज्जा । तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा ।
अहपुण एवं जाणेज्जा पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ
संजयामेव उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा काएण उदगतीरे चिट्ठेज्जा ।
(७४३)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा कायं ससिणिद्धं
वा कायं णो आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा । अहपुण एवं जाणेज्जा, विगतो-
दए मे काए छिण्णसिणेहे, तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्जं
चा । तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । [७४४]

१ वक्षस्थळादिप्रमाणे

मुनि अथवा आर्याए आवे वखते हाथ साथे हाथ, पग साथे पग, तथा
शरीर साथे शरीर लगावत्रां नहि. [७४२]

मुनि अथवा आर्याए जंघाप्रमाणमां पाणीमांथी पसार थतां शरीरने थंडक
मेळववा माटे के वळतरा मडाववा ऊंडा पाणीमां झोकाववुं नहिं. किंतु जंघा-प्रमा-
णना पाणीमांथीज चाल्या जवुं. अने ज्यारे कांठो प्राप्त थाय त्यारे शरीरपर
पाणीनी भिनाश होय त्यां लगी त्यांज थोभी रहेवुं. [७४३]

मुनि अथवा आर्याए ए वखते शरीरने घसवुं के तपाववुं नहिं. पण ज्यारे
भिनाश पोतानी मेळे उडी गएली जणाय त्यारे शरीरने छांठी हुंटी तडके तपावी
करने ग्रामानुग्राम फरवाहुं शक् करवुं. [७४४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे णो मट्टियामएहिं पाएहिं हरियाणी छिंदिय छिंदिय त्रिकुज्जि त्रिफालिय उम्मग्गेणं हरियवधाए गच्छेज्जा; “जहेयं पाएहिं मट्टियं खिप्पामेव हरिताणि अवहरंतु.” माइट्ठणं संफासे । णो एवं करेद्धा । से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूईज्जेज्जा । (७४५)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से वण्णियाणि वा फलिहाणि वा पगाराणि वा तोरणाणि वा अग्गलाणि वा अग्गलपासणाणि वा गड्डाओ वा दरीओ वा सति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा । केवली बूया ‘आयाण मेयं ।’ से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा । (७४६)

से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा रुक्खाणि वा गुच्छाणि वा गुम्माणि वा लयाओ वा वल्लीओ वा तणाणि वा गहणाणि वा हरियाणि

मुनि अथवा आर्याए व्रतानुष्ठान फरवानुं करतां चीखळ्थी खरडायला. पोताना पगोने साफ करवाना इरादार्था मार्गथी आघापाछा जइ लीलोतरीने तोडतां तोडतां दावतां दावतां के उखेडतां उखेडतां नहि चालवुं. जो तेम करे तो दोषपात्र थवानो, माटे एम नहि करवुं. किंतु शरुआतमांज तेमणे थोडी लीलोतरीवाळो रस्तो शोधवो अने तेना वडे ग्रामानुग्राम फरवुं. [७४५]

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम फरतां वचगाळे किल्ल, खाइ, कोट, तोरणो, आगळीओ, आगळीअेना पडखाओ, खाडाओ, के कोतरो ओळंगवाना आवी पडे तो वीजो रस्तो मळतां ते रस्ते पसार नहि थवुं. केमके केवळज्ञानिए तेमां दोष जणाव्या छे. जे माटे तेवे रस्ते चालतां कदाच पडी आखडी पण जवाय, (७४६)

(वीजो रस्तो न मळतां जो तेवेज रस्ते जवुं पडे तो) त्यां पडतां के

वा अवलंबिय अवलंबिय उत्तरेज्जा, जे तत्थ पाडिपहिया उवागच्छंति ते पाणी जाएज्जा, तओ संजयामेव अवलंबिय अवलंबिय उत्तरेज्जा, तओ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । [७४७]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से जवसाणि^१ वा सगडाणि वा रहाणी वा सच्चक्काणि वा परचक्काणि वा से णं^२ वा विरूवरूवं संणिविट्ठं पेहाए सति परक्कमे संजयामेव णो उज्जुयं गच्छेज्जा । (७४८)

से णं परो सेणागतो वदेज्जा, “आउसंतो एसणं समणो सेणाए अभिनिवारियं कस्सेइ, से णं बाहाए गहाय आगसाह. ” से णं परो बाहाहिं गहाय आगंसेज्जा, तं णो सुमणे सिया जात्र समाहीए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । (७४९)

१ गोधूमादिधान्यानि. २ स्कंधावारनिवेशादिकं

आखडतां ब्राड, गुच्छ, गुल्म, लताओ, वेलाओ, घास, बूटाओ, के गमे ते लीलो-त्रीने पकडी पकडीने उतरवुं, अथवा तो त्यां जे वटेमार्गु आबी पडे तेना हाथनी मदद मागवी अने तेना हाथ पकडी पकडीने ते विपम रस्तो पसार करी ग्रामानुग्राम फरवुं. [७४७]

मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम फरतां वच्चे धान्यनी वजारो, गाडीओ, रथो, लक्कर के जूदी जूदी सेनाओ; पडाव नांखी पडेली जोइने बीजो रस्तो मळतां ते रस्ते नहि चालवुं. [७४८]

कदाच बीजो रस्तो न मळतां तेज रस्ते मुनिने चालवुं पडे तेवे वरवते कोइ सैन्यनो माणस एतुं कहे के “आयुष्यन् सैनिको, आ साधु आपणा लक्करनी हीलचाल जोवाने जासुस तरीके आवेलो छे मांटे एने थक्का मारी कहाडी ये-लो” आवुं कही तेम करवा मांटे तोपण मुनिए कसो हर्षणोक न लावयो, किंतु समाधिधी वच्चेता रहेवुं. [७४९]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा, ते णं पाडिपहिचा एवं वदेज्जा “ आउसंतो समगा, केवतिए एस गामे रायहाणी वा ? केवइया एत्थ आसा, हत्थी, गामपिंडोलगा, मणुस्ता, परिवसंति ? से बहुभत्ते बहुउदए बहुजणे बहुजवसे ? से अप्पुदए अप्पभत्ते अप्पजणे अप्पत्तसे ? एय—प्पगाराणि पसिणाणि पुट्टो णो आइ—क्खेज्जा; एतप्पगाराणि पसिणाणि णो पुच्छेज्जा । (७५०)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामगियं ।
(७५१)



१ ग्रामभिक्षाचराः

मुनि अथवा आर्याने मार्गे चालतां वच्चे वटेमार्गुओ मळे अने तेआ एवुं पूछवा मांडे के “हे आयुष्मन् श्रमण आ गाम के शहेर केवडुं मोडुं छे? तेमज अहीं केटला घोडा, हाथी, भिखारी, के मनुष्यो रहे छे? तथा एमां भात पाणी माणसो, अने धान्य घणां छे के थोडां छे? आवा प्रश्नो सांभळी तेनो कशो जवाव नहि वाळवो. तेमज मुनिए पोते पण एवा प्रश्न कोइने नहि पूछवा.
[७५०]

ए सखळो मुनि अने आर्याओनो संपूर्ण आचार छे. [७५१]



[तृतीय उद्देशः]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूतिज्जमाणे अंतरा से चप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, जाव दरीओ वा, कूडागास-
णि^१ वा, पासादाणि वा, णूमगिहाणि^२ वा, रुक्खगिहाणि वा, पच्चयगि-
हाणि^३ वा, रुक्खं वा चेतियकडं^४, धूमं वा चेतियकडं, आएसणाणि वा,
जाव भवणगिहाणि वा, णो बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय अंगुलीयाए
उदिसिय उदिसिय उण्णमिय उण्णमिय णिज्झाएज्जा । ततो संजयामेव
गामाणुगामं दूइज्जेजा । (७५२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से कच्छा
णि^५ वा दत्रियाणि^६ वा णूमाणि^७ वा वलवाणि^८ वा गहणाणि^९ वा

१ पर्वतोपरिगृहाणि २ भूमिगृहाणि ३ गुहाः ४ वृक्षस्याधो-
व्यंतरादिस्थानकं ५ नद्यासन्ननिम्नप्रदेशाः ६ अट्टव्यांवासाथर्यारजर-
क्षितभूमयः ७ गर्त्तादीनि ८ नद्यावेष्टितभूभागाः ९ रण्यक्षेत्राणि

त्रीजो उद्देश.

(विहार करवानी विधि.)

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम फरतां वच्चे आवता किल्ला, खाइ,
कोट, गुफाओ, टेकरीओपर रहेला घरो, भोंयराओ, झाडोथी शोभतां घरो, पर्वत
उपर बांधेला घरो, शाढ नीचेना ज्यंतरादिकना स्थानको व्यंतरादिकना स्तूपो
(घुमट्टो), मुसाफर शाळाओ, तथा हरेक जातनां घरो हाये पकडी पकडीने के
आंगळीओ घडे ताकी ताकीने या ऊंचुं नीचुं धहने जोवां नहि. किंतु रुडी रीते
संभाळथी घर्त्तुं. [७५२]

एज प्रमाणे मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम चलतां वच्चे आधी पडतां
नदीना नजदीकना नीचा प्रदेशो, घाराना जंगडो, खाडाओ, नदीधी बाँययन्दी

गहण विदुग्गाणि वा वण्णि वा वणपव्वयाणि वा पव्वतविदुग्गाणि वा पव्वतगिहाणि वा अगडाणि वा तलागाणि वा दहाणि वा णदीओ वा वावीओ^१ वा पुक्खरणीओ वा दीहियाओ वा गुंजालियाओ^२ वा सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा, णो बाहाओ पणिञ्झिय जाव णिञ्झाएज्जा । केवली बूया 'आयाण मेयं'^३ जे तत्थ भिगा वा पसू वा, पक्खी वा, सिरीसिवा वा, सीहा वा, जळचरा वा, थळचरा वा खचरा वा सत्ता ते उच्चसेज्ज वा वित्तसेज्ज वा वाडं वा सरणं वा कखेज्जा "वारे ति मे अयं समणे ।" अह भिक्खूणं पुव्वोवद्धिद्वा पतिष्णा जं णो बाहाओ पणिञ्झिय पणिञ्झिय जाव णिञ्झाएज्जा । तओ संजयामेव आयरिय उवज्झाएहिं सद्धिं गाम्माणुगामं दूइज्जेज्जा । (७५३)

१ कमळरहिताः वाप्यः २ दीर्घा गंभीराः कुटिलाः श्लक्षणाः वाप्यः

टेकरीओ, ऊजड टेकरीओ, जंगलो, झाडीया भरेला पर्वतो, पर्वतोपरना किलाओ, पर्वतपरना घरो, कूवा, तळावो, द्रहो, नदीओ, वावडीओ, पुष्करिणीओ (फूलो-वाळो वावडीओ) दीर्घिकाओ; (रसवानी वाडीओ) गुंजाळिकाओ, (ऊंडी कुंडा-ळावाळी वावडीओ) सरोवरो, सरोवरोची हरो, इत्यादिक स्थळोने हाथ पकडी पकडीने के आंगळीओ वेडे ताकी ताकीने जोवां नहिं कारण के केवळ ज्ञानीए तेभ करतां दोष बताव्या छे, जे घाटे तेभ करतां त्यां जे हरिणादिक पशुओ तथा पाक्षीओ, सर्पो, सिंहो विंगरे जळजर जंतुओ, स्थळचर जंतुओ, तथा आकाशचारी जंतुओ रहेला होय ते भय पायीं दोडमदोडा करवा येंडे अथवा "अमाने आ श्रमण पाळा वाळे छे" एम धारी तेओ पाळा गीच झाडीमां आशरो ल्ये. एल्ले घाटे मुनिओने एवी भलामण छे के तेजणे तेभ नहिं करवुं. जंतु संघाळ पुर्वक आचार्य के उपाध्याय साथे ग्रामेग्राव फर्या करवुं. [७५३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरियउवञ्जाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो आयरियउवञ्जायस्स हत्थेण वा हत्थं जाव अणासायमाणे तओ संजयामेव आयरियउवञ्जाएहिं सद्धिं जाव दूइज्जेज्जा । [७५४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरियउवञ्जाएहिं सद्धिं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया से एवं वदेज्जा “आउसंतो समणा के तुब्भे? कओ वा एह? कहिं वा गच्छिहिह?” जे तत्थ आयरिए उवञ्जाए वा से भासेज्ज वा वियागरेज्ज वा । आयरियोवञ्जायस्स भासमाणस्स वा वियागरेमाणस्स वा णो अंतराभासं करेज्जा । तओ संजयामेव अहारातिणियाए दूइजेज्जा । (७५५)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहारातिणियं गामाणुगामं दूइज्जयाणे णो अहारातिणियस्स हत्थेण हत्थं जाव अणासायमाणे ततो संजयामेव अहारातिणियं गामाणुगामं दूइजेज्जा । (७५६)

मुनि अथवा आर्याए आचार्य के उपाध्याय साथे विचरतां तेमना हाथपग साथे पोताना हाथपग नहिं अफळावतां तेनी साथे विनयपूर्वक गामे गाम फरवुं. [७५४]

मुनि अथवा आर्याने आचार्य के उपाध्याय साथे फरतां वच्चे कोइ बडे-मार्गु एवं पुछे के “हे आयुष्मन् श्रमणो तमे कोण छो? अने क्यांथी आदो छो? अथवा क्यां जाओ छो?” त्यारे तेना जवाव मुनिरन आपतां आचार्य के उपाध्याये वाळवो, अने तेमणे जवाव वाळतां मुनिए वच्चगां कशुं वोळवुं करवुं नहिं किंतु संभाळ साथे विनययी नम्र थइ वर्त्तन. [७५५]

मुनि अथवा आ-ए ग्रामाह्वरमे पोताथी अतिक गुणवळा मुनि साथे विचरतां तेना हाथपग विगेगे अवयवोने अडकी अडचण आपवी नहिं. [७५६]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अहारातिणियं दूर्इज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जाः— “ आउसंतो समणा, के तुब्धे ? ” जे तत्थ सब्वरातिणिए से भासेज्ज वा वागरेज्ज वा । अहारातिणियस्स भासमाणस्स वियागरमाणस्स वा णो अंतराभासं भासेज्जा । ततो संजयामेव ग्गमाणुगामं दूर्इजेज्जा । [७५७]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूर्इज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया आगच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जाः— “ आउसंतो समणा, अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह, तंजहां, मणुस्सं वा गोणं वा महिसं वा पसुं वा पक्खिं वा सिरीसिवं वा जलचरं वा, आइक्खह दंसेह. ” तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिष्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा, णो जाणंति वएज्जा । तओ संजयामेव गामाणुगामं दूर्इजेज्जा (७५८)।

मुनि अथवा आचार पीतार्थी अधिक गुणवान् शत्रु साथे ग्रामग्राह्यं फरतां वच्चे कोइ वटेमारु मळे अने ते पुळे के “ हे आयुष्मन् श्रमणो, तमे कौण छो ? ” तो आनो जवाब अधिक गुणवाळा मुनिए वळवो अने तेनी वच्चे बीजा मुनिओए कशुं न वोलवुं. किंतु संभाळ—पूर्वक वक्त्यां करवुं. [७५७]

मुनि अथवा आचाराने ग्रामानुग्राह्यं फरतां वच्चे कोइ वटेमारु मळे अने ते पुळे के हे आयुष्मन् श्रमणो, तमे आ रस्तापर जो कोइ मनुष्य, वळद, पाडुं अन्य जानवर, पक्षि, सर्प के जळचर जंतु जोरुं होय तो कहो अने वतावो ” त्यारे मुनि के आचार ते वावत तेमने कइ पण कहेरुं के वतावुं नहि. अने तेमना ते सवालने कशी रीते पण स्वीकार न करतां मौन धरीं रहेरुं. अथवा तो खरुं जाणतां छतां पण “ जाणुं छुं एम न वोलवुं ” अने संभाळपूर्वक ग्रामानुग्राह्यं फरतां रहेरुं. [७५८]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूर्इज्जमाणे अंतरा से पा-
डिपहिया आगच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जाः—“ आउसंतो स-
मणा, अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह उदगपसूयाणि कंदाणि वा मूलाणि
वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुष्पाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरिताणि
वा, उदगं वा संगिहियं, अर्गणि चा संगिक्खित्तं, सेसं तं चेव, से आइक्ख
ह, जाव, दूर्इजेज्जा । (७५९)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूर्इज्जमाणे अंतरा से पा-
डिपहिया उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जाः—“ आउसंतो स-
मणा, अवियाहं एत्तो पडिपहे पासह जवसाणि वा जावसेणं वा विरूवरूवं
संगिविट्ठं; से आइक्खह, जाव दूर्इजेज्जा । [७६०]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूर्इज्जमाणे अंतरा से पा-
डिपहिया जाव “ आउसंतो समणा, केवतिए एत्तो गामे वा जाव रायहा-

एज रीते मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम करतां वच्चे कोइ वटेमार्गु मळे
अने ते पूछे के “हे आयुष्मन् भ्रमणो, तमे आ रम्ते जो कंद, मूळ, पान, फूल
फल, बीज, दनस्पति, पाणीनो जथ्यो, के अग्नि जोइ होय तो अपने कहो अने
वतावो ” त्यारे मुनि के आर्याए ते वावत तेमने कंइ पण कहेंवुं करवुं नहि अने
तेमना ते सवालनो कशी रीते स्वीकार न करतां मौन धरी रहेवुं अथवा जाणतां
छतां “जाणुं हूं एम न वोळवुं” [७५९]

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम जतां वच्चे कोइ वटेमार्गुओ मळे, अने
नेओ एवं पूछे के “हे आयुष्मन् भ्रमणो, आ मार्गपर तमे धान्य, के पडाव, नाखी
पहेलुं जूदुं जूदुं लउकर देखता हो तो कहो अने वतावो.” आवे वखते पण मुनि-
ए उपर गमाणेज मौन रहेवुं अथवा “हूं जाणुं हूं एम न वोळवुं. (७६०)

एज रीते मुनि तथा आर्याने ग्रामानुग्राम जतां कोइ वटेमार्गुओ एवं पूछे
के हे आयुष्मन् भ्रमणो, “अधीही हेव कयुं गाम के शहेर आवसे” त्यारे पण मुनिए

णी वा, से आइक्खह जाव दूईज्जेज्जा । [७६१]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया जाव " आउसंतो समणा, केवलिए एत्तो गामस्स वा णगरस्स वा जाव रायहाणीए वा मग्गे, से आइक्खह, तहेव जाव " दूईज्जेज्जा । [७६२]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से गोणं वियाल पडिपहे पेहाए जाव चित्तचैल्लडं वियालं पडिपहे पेहाए णो तैसिं भीतो उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, दुग्गं वा, अणुपविसेज्जा, णो रुक्खांसि दुरुहेज्जा, णो महति महालयांसि उदयांसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा सरणं वा सत्थं वा कंखेज्जा । अप्पसुए जाव समाहीए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूईज्जेज्जा । [७६३]

१ जिनकल्पिन माश्रित्य सूत्रद्वयमेतद्विज्ञेयं २ सार्थं

उपर प्रमाणेज मौन रहेवुं अथवा "हुं जाणुं छुं एम न बोळवुं. [७६१]

वळी मुनि के आर्याने मार्गे जतां कोइ वटेमार्गु एवुं पूछे के "हे आयुप्पन् श्रमणो, अहीथी माप्र शहेर के राजधानीनो कयो रस्तो जाय छे ते जणावो " तो ते पण मुनिए नहि जणावयो. (७६२)

मुनि तथा आर्याए ग्रामानुग्राम जतां वच्चे मार्गमां विक्राळ बळद या विक्राळ वाचने उभेलो जोइने तेमनाथी वी जइने अवळें मार्गे नहि पेशवुं, आडपर नहि चडवुं, उंडा पाणीमां नहि पडवुं, तेमज वाड विगेरे आशरानि के साथने पण नहि वांच्छवुं. किंतु थीरपणे सणाधिथी संयमथी सभाळ पूर्वक त्यांथी ग्रामानुग्राम चाल्या जवुं. [७६३]

१ आ सूत्र जिन कल्पिना माटेवुं छे एम टीकाकारे जणाव्युं छे.

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं^१ सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा, इमंसि खलु विहंसि बहवे आमो-
सगा उवकरणपाडियाए संपिडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उस्मगं चैव
जाव समाहीए ततो संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । (७६४)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से
आमोसगा संपिडिया गच्छेज्जा तेणं आमोसगा एवं वदेज्जा:—“ आउसंतो
समणा, आहर एयं वत्थं वा पायं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा, देहि,
णिक्खिवाहि; ” तं णो देज्जा, णिक्खिवाजेज्जा, णो वंदिय वंदिय जाएज्जा, णो
अंजलिं कट्ठु जाएज्जा, णो कलुणपाडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जाएज्जा,
तुसिणीयभावेण वा से णं आमोसगा “ सयं करणिज्जं ” ति कट्ठु अक्को-
संति वा, जाव उवद्वंति वा वत्थं वा, पायं वा, कंबलं वा, पायपुच्छणं

१ अनेकदिवसगम्यमार्गः

मुनि^१ अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम फरतां वच्चे लांनो मार्ग उल्लंघवानो आ
वी पडे अने त्यां एवुं मालम पडे के आ मार्गमां घणा लुंटाखओ वस्त्रादि उपकरण
लुंटावा मटे एकटा थइ आयवाना छे तोपण तेमनाथी वीने अवळे मार्गे या चाल-
तो मार्ग छोडी घीजा मार्गे नहि चालवुं किंतु तेज रस्ते धीरपणे समाधिधी चाल्या
जहुं. [७६४]

मुनि अथवा आर्याने मार्गे चालतां वच्चे लुंटाखओ मटे अने तेओ एवुं क-
हे के “ हे आयुष्मन् साधुओ, आ वस्त्र, पात्र, कंबल, के पण प्रमार्जवानुं उपकर-
ण अमारा आगळ धरो, अमने आयो, अथवा तमे तमारा कवजामांथी छोडी घा-
त्यारे ते मुनिए ते तेमने आपवां नहि किंतु पोताना कवजामांथी छोडी देवां, अने
तेओए ते उपाडी लेतां मुनिए तेओने मलाम भरी भरीने के दाय जोडीने के क-
रणीने ते पाछां नहि मागवां किंतु धर्मकथन पुर्वक यागवां, अथवा मान धरी र-
हेवुं. कदाच ते लुंटाखओ तेमना दृष्ट रीत्याजने अनुमरीने मुनिने धमकाये अथवा

? आ सूत्र पण जिनकल्पिते पाटे छे.

वा अच्छिदेज्ज वा जाव परिद्वेज्ज वा; तं णं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया “आउसंतो गाहावई, एते खलु मे आमोसगा उवकरणपडियाए ‘सयं करणिज्जं’ ति कट्टु अक्को-संति वा जाव परिद्वेति वा । एतप्पगारं मणं वा वयं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए जाव समाहीए ततो संजयामेव गामाणुगामं दूईज्जेज्जा । [७६५]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सच्चद्वे हिं सहिते सया जएज्जासि ति वेमि । [७६६]



हेरान करे के वस्त्रादि उपकरण लूटील्ये तो ते वात मुनिए गाममां के दरबारमां पसराववी नहि. तेमज कोइ गृहस्थ पासे जइ तेने एवुं पणं नहि कहेवुं के “हे आयुष्मन् गृहस्थ, आ लूटारुओ वस्त्रादिवस्तु लूटवा पोताना दुष्ट रीवाजने अनुसरीने मने धमकावे छे, हेरान करे छे के लूटे छे.” वळी आवी रीते मनथी के शरीरथी पण कशी हीलचाल न करवी. किंतु धीरपणे समाधियी यत्ना पूर्वक ग्रामानुग्राम फरत। रहेवुं. (७६५)

एज मुनि अने आर्याना आचारनी संपुर्णता छे के तेमणे धधी वावतोमां सावधानीथी वर्त्तता रहेवुं एम हुं कहुंछुं. [७६६]



भाषाजातं नाम त्रयोदश मध्ययनम् ।

[प्रमथ उद्देशः]

सै भिक्खु वा भिक्खुणी वा इमाइ वइ^१ आथाराई सौच्चा णिस-
म्म इमाइं अणायारियपुव्वाइं जाणेज्जाः— जे कोहा वायं विउंजंति, जे
माणं वा, जे मायाए वा, जे लोभा वा, वायं विउंजंति, जाणओ वा फ-
रुसं वयंति, अजाणओ वा फहस वयंति; सब्व मेतं सावज्जं वज्जेज्जा
विवेग मायाए । (७६७)

१ वाचि

अध्ययन तेरंमुं.

भाषाजात.

पहेलो उद्देश.

(भाषाना सोल विभाग तथा चार प्रकारो)

मुनि अथवा आर्याए पोताने जे रीते बोलबुं जेइए ते रीते जाणीने जे
रीतो खराव अने सत्पुरुषोए नहि वापरेली छे तेवी रीतो परिहार करवी. जेवी
केः—क्रोधथी बोलाता वाक्यो, मानथी बोलाता वाक्यो, कपटथी बोलाता वाक्यो
लोभथी बोलाता वाक्यो, जाणी वृसीने बोलाता वाक्यो, अजाणपणे बोलाता क-
ठोर वाक्यो, इत्यदिक् सर्वे दोषभरेला वाक्यो मुनिए विवेक राखीने वर्जन कर
वां. [७६७]

ध्रुवं^१ वेयं जाणेज्जा, अध्रुवं वा; असणं वा पाणं वा खाइसं वा वा साइसं वा लभिय, णो लभिय; भुंजिय, णो भुंजिय; अदुवा आगते, अदुवा णो आगते; अदुवा एति, अदुवा णो एति; अदुवा एहिति, अदुवा णो एहिति; एत्थवि आगते, एत्थवि णो आगते; एत्थवि एति, एत्थवि णो एति; एत्थवि एहिति, एत्थवि णो एहिति । [७६८]

अणुवीइ णिट्टाभासी^२ समियाए संजए भासं भाषेज्जा; तंजहा, ए-गवयणं, (१) दुवयणं (२) बहुवयणं; (३) इत्थिवयणं, (४) पुरिसवयणं,

१ साधुना नैवं सावधारणं वचो वाच्यं यथा २ सावधारणभाषी.

मुनिने कोइए कंइ पूछतां (जो पाकी खबर नहि होयतो) मुनिए एवं नकी ठेरावीने नहि बोलवुं के अ, नकी एसज छे या एम नथीज, अथवा अमुक साधु नकी आहारपाणी लावशे के नहिज लावी सकशे, या त्यां खाइनेज आवशे या नहिज खाइ आवशे, अथवा ते आव्योज छे के नथीज आव्यो, या आवेज छे के नथीज आवतो; या आवशेज के नहि आवशे, या अंही आवेलोज छे के नथीज आवेलो, या अंही आवेज छे के नथीज आवतो, या अंही आवशेज के नहिज आवशे, इत्यादि [७६८]

किंतु काम पढतां विचार करीनेज पछी नकीयणे, बोलतां सावधान रहिने भाषासमिति साचवीने भाषा बोलवी ते भाषामां बोलता वाक्योना सोळ भाग रहेला छे, जेओ आ प्रमाणे छे:—

एक वचन,^१ द्विवचन,^२ बहुवचन,^३ स्त्रीजातिवचन,^४ पुरुषजातिवचन,^५ न-पुंसक जातिवचन,^६ अध्यात्म वाक्य,^७ उत्कर्ष वाक्य,^८ अणुकर्ष वाक्य,^९ उत्कर्ष-

१ घोडे २ संस्कृतमां अथौ ३ घोडाओ ४ गाय ५ बल्लद ६ घर ७ पेटमां होय ते खोली जवानुं वाक्य जेमके "जळ पा" ने बदले "रु पा" ८ रूपवती स्त्री ९ कुरूपवती स्त्री

(५) णपुंसगवयणं, (६) अङ्गत्थवयणं, (७) उवणीतवयणं, (८) अवणी-
तवयणं, (९) उवणीयावणीयवयणं, (१०) अवणीय—उवणीयवयणं
(११) तीयवयणं, (१२) पडुप्पन्नवयणं, (१३) अणागतवयणं, (१४) प-
च्चक्खवयणं, (१५) परोक्खवयणं । (१६) [७६९]

से एगवयणं वदिस्सामीति एगवयणं वदेज्जा, जाव, परोक्ख-वयणं व
दिस्सामीति परोक्खवयणं वदेज्जा । इत्थी वे—स, पुगिस वे- स, णपुंसग
वे—स, एवं वा वेयं, अण्णहा वा वेयं, अणुवीइ गिट्ठाभासी समियाए सं
जए भासं भासेज्जा, इच्चेयाइं आयतणाइं^१ उवातिकम्म । [७७०]

अहं भिक्खुं णं जाणेज्जा चत्तारि भासाजायाइं; तंजहा, सच्चमेगं
पढमं भासज्जायं, बीयं मोसं, तइयं सच्चाभेसं, जं णेव सच्चं णेव भोसं
“ असच्चाभोसं ” णाम तं चउत्थं भासज्जातं । [७७१]

१ दोषस्थानानि.

पकर्ष वाक्य,^१ अपकर्षोत्कर्ष वाक्य,^२ भूतकाल वचन,^३ वर्तमानकाल वचन,^४ अ-
नागतकाल वचन,^५ प्रत्यय वचन ; अने परोक्ष वचन. ७ [७६९]

मुनिए एक वचन ज्यां कहेवानुं होय न्यां एकवचन वापरुं. एम परोक्ष
वचनना ठेकाणे परोक्षवचन वापरुं. वळी आ व्हीज छे के पुरवज छे के नपुं-
सकेजे छे अथवा आ वावत आमज छे के तैवज छे ए मयहुं तपासी नकी
कर्या वाद भाषासमिति साचवी नकी पणे बोलहुं. अने सचवी जातना वचनदोष
परिहार करवा. [७७०]

मुनिए नीचे लखेला भाषाना चार प्रकारे जाणवा जे.एणः—पेहेकी सत्य
भाषा, धीजी असत्य भाषा, त्रीजी मिश्र भाषा अने चौथी मत्तणमत्तणगहन व्य-
चहार भाषा. [७७१]

१ रूपवती किंतु दुःशीला २ कुट्या फंतु सुजीला ३ धरुं ४ वाय छे
५ यथे ६ आ ७ ते.

से बेमि जे अतीता जेय पडुप्पन्ना जे य अणांगता अरहंता भ-
गवंतो, सञ्चे ते एयाणि चेव चत्तारि भासज्जायाइं भासिसु वा भासंति
वा भासिस्संति वा, पण्णविसु वा पण्णव्वंति वा पण्णविस्संति वा । सव्वाइं
च णं एयाणि वण्णमंताणि गंधमंताणि रसवंताणि फासमंताणि चओवचइ-
याइं विपरिणामधम्माइं भवंतीति समक्खायाइं । [७७२]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा^१, पुव्वं भासा अभासा, मासमाणा
भासा भासा, भासासमयवितिकंता भासिया भासा अभासा । [७७३]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जाय भासा सच्चा, जायभासा मोसा,
जाय भासा सच्चामोसा, जाय भासा असच्चामोसा, तहप्पगारं भासं साव-
ज्जं सकिरिय^२ कक्कसं^३ कडुचं^४ णिहुरं^५ फूसं^६ अण्हयकरिं^७ छेदकरिं

१ एवं जानीयादिति शेषः २ अनर्थदंडप्रवृत्त्युपेतां. ३ चर्चिताक्षरां.
४ चित्तोद्देगकरिं. ५ हक्काप्रधानां. ६ मर्यादोद्घटनपरां. ७ आश्रवकरिं.

हुं कहुं छुं के थइ गएला, वर्त्तमान, अने थनारा तीर्थकरो भाषाना एण
चार प्रकार कही बतावे छे. ए चारे भेदोमां वपराती भाषाना पुद्गलो वर्ण-गंध
रस-अने स्पर्शवाळा छे, तथा वधवट अने फेरफारने पामता पण कहेला छे.
[७७२]

मुनि अथवा आर्याए जाणवानुं छे के वोल्या अगाडनी भाषा (अथोत
भाषाना पुद्गलो) ते अभाषा छे वोल्या पछीनी भाषा पण अभाषाज छे मात्र
घोलाती भाषाज भाषा जाणवीं. [७७३]

मुनि अथवा आर्याए पापप्रवृत्ति फेलावनारी, निदिताक्षरवाळीं, मामा घ-
णीनादिलमां कचवाट उपजावनारी, धमकी भरेली, सामा धणीना मर्मने खुल्लुं
करनारी, कर्मबंध करावनारी, कोइपण जीवना अंगोपांगनो छेद करावनारी, परि-

परितावणकरिं उवद्वकरिं भूतोवघाइयं, अभिकंख णो भास भासेज्जा ।

[७७४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतमाणे, आमंतिते वा अप-
डिसुणमाणे णो एवं वदेज्जाः—होले—ति वा, गोले—ति वा, वसले ति वा,
कुपक्खे ति वा, घडदासे ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति
वा, माई ति वा, मुसावादी ति वा, एयाइं तुमं, इतियाइं ते जणगा ।
एतप्पगारं भासं सावज्जं जाव अभिकंख णो भासेज्जा । [७७५]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अप-
डिसुणमाणे एवं वदेज्जाः—अमुगेति वा, आउसो ति वा, आउसंतो ति
वा, सावगेति वा, उपासगेति वा, घम्मिएति वा घम्मपियेति वा । एयप्पगारं
भासं असावज्जं जाव अभूतोवघातियं अभिकंख भासेज्जा । [७७६]

ताप उपजावनारी, कोइने उपद्रव करनारी या जीवघात करावनारी—सत्य भाषा
या मृषा भाषा या व्यवहार भाषा जाणी वृक्षीने कदापि नहि बोलवी. [७७४]

मुनि अथवा आर्याए कोइ पण पुरुषने बोलावतां अथवा बोलाव्या छ-
तां नहि सांभळतो होतां तेने एम न कहेवुं के अरे होल, अरे गोल (गुलाम),
अरे वृपल (चांढाळ), अरे कुपल, अरे घडदास, अरे कूतरा, अरे चोर, अरे व्य-
भीचारी अरे कपटी, अरे जूठा, इत्यादि; अथवा तुं आवो छे या तारां मायाप
जावां छे इत्यादि आवी रीतनी दोषित भाषा मुनिए नहि बोलवी. [७७५]

किंतु कोइ पण पुरुषने मुनि अथवा आर्याए बोलावतां अथवा बोलाव्या
छतां तेणे नहि सांभळतां आ प्रमाणे तेने बोलावतुं—हे अशुक, हे आयुष्मन्, हे
आयुष्मन्ते, हे श्रावक, हे उपासक, हे धार्मिक, हे धर्मिय, इत्यादि. आवी तरे-
ह्ये निर्दोष भाषा धारणी. [७७६]

जाव, महुमेही महुमेहीति वा, हत्थच्छिण्णे हत्थच्छिण्णे त्ति वा, एवं पा
द-णक्क-कण्ण-उट्ठ-च्छिण्णे त्ति वा । जेया वन्ने तहप्पगारा तहप्पगा-
राहिं भासाहिं बूइया बूइया कुप्पंति माणवा, तेयावि तहप्पगाराहिं भासा
हिं अभिकंख णो भासेज्जा । [७८२]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, जहावेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा त-
हावि ताइं एवं वदेज्जा: ओयंसी ओयंसीति वा, तेयंसी तेयंसीति वा,
वच्चंसी वच्चंसीति वा, जसंसी जसंसिति वा अभिख्वं अभिख्वेति वा,
पडिख्वं पडिख्वेति वा, पासादियं पासादियेति वा, दरिसणिज्जं दरिसणी-
एति वा । जेयावण्णे तहप्पगारा एयप्पगाराहिं भासाहिं बूइया बूइया णो
कुप्पंति मा णवा, तेयावि तहप्पगारा एयप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख
भासेज्जा । तहप्पगारं भासं असाबज्जं जाव भासेज्जा । [७८३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगतियाइं रूवाइं पासेज्जा, तंज-

मेही, छिन्नहस्त^१ ने छिन्नहरत, एज रीते छिन्नपाद, छिन्ननास, छिन्नकर्ण, तथा
छिन्नओष्ठ कहीने बोलाववुं नहि. मतलब के जे मनुष्यो जे शब्दोवडे बोलाव्याथी
नाखुश थता होय ते मनुष्योने ते ते शब्दोवडे चारुने नहि बोलाववुं. [७८२]

मुनि अथवा आर्याए तेवां रुपो जोइने पण तेओमां रहेला कोइ पण गुणने
ग्रहण करीने काम प्रसंगे तेवने रुडां-नामोथी बोलाववुं, जेमके पराक्रमीने पराक्र-
मी, तेजस्वीने तेजस्वी, वक्काने वक्ता, यशस्वीने यशस्वी, सुरुपने सुरुप, मनोहरने
मनोहर, रमणीयने रमणीय, अने देखवालायकने देखवा लायक कहीने बोलाववुं
अने ए रीते वीजा पण जे मनुष्यो जे शब्दोवडे बोलाव्याथी नाखुश थता नहि
होय तेवा निर्दोष शब्दोवडे तेमने बोलाववुं. [७८३]

मुनि अथवा आर्याए कोट, किल्ला, के घर विगरे देखीने एवं कहेवुं नहि के

१ जेना हाथ कपायला होय ते छिन्नहस्त कहेवाय.

हा, वप्पाणि वा, जाव, भवणगिहाणि वा, तहावि ताइं णो एवं वदेज्जा,
तंजहा, सुकडे इ वा, सुट्ठु कडे इ वा, साहु कडे इ वा, कल्लाणे इ वा,
करणिज्जे इ वा । एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा ।
[७८४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहावे त्याइं खुवाइं पासेज्जा, तंज
हा, वप्पाणि वा जाव, भवणगिहाणि वा, तहावि ताइं एवं वदेज्जा, तंज-
हा, आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, पासाइयं
पासादिए ति वा, दरिसणीयं दरिसणीए ति वा, अभिरुवं अभिरुवेति-
वा, पडिरुवं पडिरुवे ति वा एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा ।
[७८५]

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा असण वा पाणं वा खाइयं वा
साइयं वा उवक्खडियं पेहाए, तहावि तं णो एवं वदेज्जा, तंजहाः—सुकडे
ति वा, सुट्ठुकडे ति वा, साहुकडे ति वा, कल्लाणे ति वा, करणिज्जे ति
वा । एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा । [७८६]

ए खडा वनेला छे या खुव वनाव्या छे, या फायदाकारक छे या करवा लायक
छे कारण के एतुं बोलवुं सावध (सदोष) छे. [७८४]

किंतु मुनि अथवा आर्याए कोट, किल्ला, के घर विंगरे देखीने काम पढतां
एतु बोलवुं के ए हिंसाथी करेला छे, या पापथी करेलां छे, या बहु भेहेनते क-
रेलां छे, या रमणीय छे; या देखवा त्रयक छे; या सरखी बाधणीवालां के जो-
भीतां छे; ए रीते निगद्य (निर्दोष) भाषा बोलवी. [७८५]

एन रीते मुनि अथवा आर्या आहारपाणी तयार करेलां जोइ एतुं न बो-
लवुं के ए सारां कर्षां छे या ग्दी रीते कर्षां छे या फायदाकारक छे; या करवा
लायक छे कारण के एतु बोलवुं ए दोष भरेलुं छे. [७८६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अरुणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवखडियं पेहाए एवं वदेज्जा, तंजहा, आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, भदं भदएति वा, ऊसठं ऊसठे ति वा, रसिचं रसिए ति वा, मणुण्णं मणुण्णे ति वा । एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा । [७८७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, मणुस्सं वा गोणं वा, महिसं वा, मिगं वा, पसुं वा, पक्खि वा, जलयरं वा,—से चं परिवूढकायं—पेहाए णो एवं वदेज्जा—थुल्ले ति वा, पमेतिले ^१ ति वा, वट्टे ति वा, बज्जे ति वा, पाइमे ति वा । एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा । [७८८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं जाव जलयरं वा से चं परिवूढकायं पेहाए एवं वदेज्जा;—परिवूढकाए ति वा, उदन्वितकाए ति वा

१ प्रमेदुरः

किंतु मुनि अथवा आर्याए आहारपाणी तैयार थएलां जोइ काम पढतां एवुं बोलवुं के ए हिंसाथी के पापथी करेलां छे, या मेहेनतथी करेलां छे, बळी ते जो खडां होय तो खडां कहेवां; ताजां होय तो ताजां कहेवां, रसवालां होय तो रसिक कहेवां अने मनोहर होय तो मनोहर कहेवां एम निर्दोष भाषा वापरवी. [७८७]

मुनि अथवा आर्याए मनुष्य, या वळद, या पाटा, या हरिण, या कोइपण जातना जानवर, या छशि, या सर्प, या जळचारी जंतुने युवावस्था प्राप्त थएला देखी एवुं नहि बोलवुं के आ जाडाछे, अथवा आतंवी छे, अथवा गोक छे, अथवा मारवा लायक छे, अथवा पकडवा लायक छे, आवी रीतनी भाषा पाप भरेली छे माटे नहि बोलवी. [७८८]

मुनि अथवा आर्याए मनुष्य के यावत् जळचारी जंतुने अवस्थावत थएला देखी काम पढतां एवुं बोलवुं के आ शरीरे मोहेद्य थएला छे, या शरीरे सुधरे

उवचितमंससोणिए ति वा, बहुपडियुण्णइंदिए ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा । (७८९)

रो भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए णो एवं वदेज्जा, तंजहा, गाओ दोज्जा ति वा, दम्मा इ वा गोहरा, वाहिमा ति वा रहजोग्गा ति वा । एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा । (७९०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए एवं वदेज्जा, तंजहा;—जुवं गवे ति वा, धेणू ति वा, रसवति ति वा; हस्से ति वा, महल्लए ति वा, महव्वए ति, संवाहणे ति वा । एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासेज्जा (७९१)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतु मुज्जाणाइं पव्वयाइं वणाणि वा, रुक्खा महल्ला पेहाए णो एवं वदेज्जा, तंजहा;—पासायजोग्गा

लाछे, या लोहीमांसे सुभरेला छे, या लगभग संपूर्ण अंगत्राळा घया छे, आवी रीतनी भापा निर्दोष छे माटे ते बोलवी. [७८९]

मुनि अथवा आर्याए जूदी जूदी तरेदनी गायो अथवा वळदो जोडने एवं नहि बोलवुं क आ गायो दोहवा लायक छे, अथवा आ वाळरडाओ खेडवा लायक छे, अथवा गाडीमां जोडवा लायक छे, आवी रीतनी भापा पाप भरेली छे, माटे नहि वापरवी. [७९०]

मुनि अथवा आर्याए जूदी जूदी तरेदनी गायो अथवा वळदो जोडने काम पडतां एवं बोलवुं के आ वळद सुवान छे, अथवा आ गाव दूधवाळी के रसवाळी छे, या आ वळद नानो छे, या मोदोदो छे, या भार उपाडवा समर्थ छे, आवी रीतनी भापा निर्दोष छे, माटे बोलवी. [७९१]

मुनि अथवा आर्याए, चाग पर्वत के दनमां जइ न्यां रहैया मोदोदो झाडोने जोइ एवं नहि बोलवुं के आ झाडो इवेलीना कामना छे या दरवाजाना कामना

ति वा, तोरणजोगा ति वा, गिहजोगा ति वा, फलिहजोगा ति वा,
अगल-णावा-उदगदोणि-पीठ-चंगवेर-णंगल-कुलिय-जंतलट्टि-
णालि-गंडी-आसण-सयण-जाण-उवरसय-जोगा ति वा । एयप्प-
गारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा । (७९२)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा तहेव गंतु मुज्जाणाईं त्वय्याणि व-
णाणिय, रुक्खा महल्ला पेहाए एवं वदेज्जा, तंजहा, जातिमंता ति वा,
दीहवट्टा ति वा, महालया ति वा, पयायसाला ति वा, विडिमसाला^१ ति
वा, पासादिया ति वा, जाव पडिरुवा ति वा । एयप्पगारं भासं असावज्जं
जाव अभिकंख भासेज्जा । (७९३)

से भिक्खु वा भिक्खुणी बहुसंभूता वणफला पेहाए तंहावि ते

१ चतुर्षु दिक्षु चतुःशाखावंति "

छे, या घ ना कायना छे, या वांकडा करवाना कामना छे, या अगलाना कामना
छे, या वहाण के मडवाना कामना छे, या पाट के वाजोठना कामना छे, या हळ
कुरिया के यंतलट्टिना^१ कामना छे, या पनाळ के गंडीना (कुंडीना) कामना छे
या वेशवाना, सूवाना, चडवाना के रहेवाना सामानना कामना छे, आवी रीतनी
भाषा पाप भेल छे, माटे नहि बोलवी. [७९२]

मुनि अथवा आर्याए वाग, पर्वत, के वनयां जइ मोहोटा झाड जोइने
काम पडतां एवं केहेवुं के आ-झाडो सारी जातना छे, या उंचा अने गोळ छे,
या मोहोटा विस्तारवाळा छे, या बहु शाखावाळा छे चोमेर सरखी नीकळेरी
चार शाखावाळा छे, या रमणीय छे, आवी रीतनी भाषा निर्दोष छे माटे काम प-
डतां बोलवी. [७९३]

मुनि अथवा आर्याए वनयां घणां फळो पाकेलां जोइने एवं न बोलवुं के

१ गाडानी ऊंघ वगेरेना.

णो एवं वदेज्जा, तंजहा;—पक्का ति वा, पायखज्जा ति वा, वेलोचिया ति वा, टाला^१ ति वा, वेहिया^२ ति वा । एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा । [७९४]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा बहुसंभूतफला अंबा पेहाए एवं वदेज्जा, तंजहा:—असंथडा^३ ति वा, बहुणिवट्टिमफला ति वा, बहुसंभूया ति वा, भूतरूवा ति वा । एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा । [७९५]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए न-हावि ताओ णो एवं वदेज्जा, तंजहा:— पक्का ति वा, नीलिया ति वा, छवी इ वा, लाइर्मा इ वा, भज्जिमा इ वा, बहुखज्जा इ वा । एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा । [७९६]

१ कोमलानि २ द्विधाकर्तुयोग्यानि ३ असमर्थाः

आ फळो पाकेलां छे अथवा पचावीने खावा लायक छे, अथवा हमणाज फोडवा लायक छे अथवा कोमल छे अथवा वे कटका करवा लायक छे, आवा रीतनी भाषा पाप भरेली छे, माटे नहि बोलवी. [७९४]

मुनि अथवा आर्याए आंवानां झाड बहु फूलेलां जोइ काम पडतां एवुं बोलवुं के आ झाडो भार झीली शकतां नथी, या बहु फूलेलां छे या एओमां घणां फळो तैयार थएलां छे, या एओमां फळोतुं रूप बंधायुं छे. आवी रीतनी निर्दोष भाषा काम पडतां बोलवी. [७९५]

मुनि अथवा आर्याए धान्य बहु पाकेलां जोइ एवुं नहि बोलवुं के ए पाकेलां छे अथवा काचां छे, घट्ट छे, या सुकवा योग्य छे, या भुंजवा योग्य छे, आवी रीतनी भाषा पाप भरेली छ माटे नहि बोलवी. [७९६]

द.स्त्रेणाख्यं चतुर्दश मध्ययनम्.

[प्रथम उद्देशः]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं एसित्तए । से
ज्जां पुण वत्थं जाणेज्जा, तंजहा,—जंगियं^१ वा, भंगियं^२ वा, साणयं^३
वा, पोत्तयं^४ वा, खोमियं^५ वा, तूलकडं वा, तहप्पगारं वत्थं^६
[८०२]

जे णिग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे, से एगं

१ ऊर्णानिष्पन्नं २ लालानिष्पन्नं, ३ सणनिष्पन्नं ४ पत्रनिष्पन्नं
५ कार्पासिकं ६ धारयेदितिशेषः

अध्ययन चौदमं.

वस्त्रेषणा.

पहेलो उद्देश.

(मुनिए वस्त्रो केवां अन्ने केम लेवां?)

मुनि अथवा आर्याए कपडां तपासं पूर्वक लेवां. जेवां के—ऊननां, रेशमी,
शणना, पाननां, कपासना, अर्क तूलनां, अने एवी तरेहनी वीजी जातौनां
[८०२]

जे मुनि युवान बळवान निरोगी अने मजबूत बांधावाळो^१ होय तेणे ए-

१ दुर्बळ दृढ के हलका संहननवाळो होय ते पोतानी समाधि प्रमाणे वे
क वधु वस्त्रो पण धारे. जिनकल्पि तो पोतानी प्रतिज्ञा प्रमाणेज वर्त्ते—तेने अप
दार नथी.

वत्यं धारेज्जा, णो बित्थियं । जा णिगंग्थी सा चत्तारि संघाडीओ धारेज्जा;
—एगं दुहत्थवित्थारं, दो तिहत्थवित्थाराओ, एगं चउहत्थवित्थारं । एएहिं
वत्येहिं अविज्जमाणेहिं अह पच्छा एगमेगं संसीविज्जा । (८०३)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयणमेराए वत्थपडियाए
नो अभिसंधारेज्जा गमणाए । (८०४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण वत्यं जाणेज्जा, अस्सं-
पडियाए^७ एगं साहम्मियं समुदिस पाणाइं, (जहा पिंडेसणाइ) ।
(८०५)

एवं—बहवे साहम्मिया, एगं साहम्मिणिं, बहवे साहम्मिणीओ,
बहवे समणमाहणा, तहेव पुरिसंतरकडं [जहा पिंडेसणाए]
(८०६)

१ अस्वप्रत्ययं, निर्भयनिमित्तं.

कज वत्त पहेरुं; बीजुं नहि पहेरुं. आर्याए चार सांडीओ राखवीः—एक वे
हाथनी, वे त्रग हाथनी, अने एक चार हाथनी. अने ए मुजव कदाच वत्त न मले
तो ते बीजा साथे सांधी पूरां करवां. [८०३]

मुनि अथवा आर्याए वे गाऊशी लंवे कपडा मागवा माटे जवानो इरादो
न करवो. [८०४]

मुनि अथवा आर्याए जे वत्त गृहस्थे एकज मुनिने माटे तैयार करेलुं होय
ते नहि लेवुं. (अहिं वधारे विशेष पिंडेपणा नामना अध्ययन प्रमाणे समजवो.)
[८०५]

एज रीते घणा मुनि, एक आर्या, घणी आर्याओ, तथा घणा धरण द्वा-
रानोना माटे तैयार करेलुं वत्तो विषे पुणे पिंडेपणा नामना अध्ययनमां केलेलुं
आवीज किमना सूत्र प्रमाणे समजां लेवुं. [८०६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, अस्सं-
जए भिक्खूपाडियाए कीतं वा, रत्तं वा, धट्ठं वा, मट्ठं वा, संसट्ठं वा, सं-
पधूमितं वा तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । अहपुण
एवं जाणेज्जा, पुरिसंतरकडं जाव पडिग्गाहेज्जा । (८०७)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जाइं पुण वत्थाइं जाणेज्जा वि-
रूवरूवाइं महद्धणमोच्छाइ, तंजहा;—आजिणाणि वा, सहिणाणि ^१ वा, स-
हिणकल्लाणाणि वा, आयाणि ^२ वा, कायकाणि ^३ वा, खोमियाणि वा, दु-
गुल्लाणि ^४ वा, पट्टाणि वा, मलयाणि वा, पतुण्णाणि ^५ वा, अंसुयाणि वा, ^६
चीणंसुयाणि वा, देसरागाणि वा, अमिलाणि वा, गज्जलाणि वा, फालि-
याणि वा, कायहाणि वा, कंबलगाणि वा, पावरणाणि वा, अण्णयराणि

१ श्लक्ष्णानि. २ अजारोमनिष्पन्नानि ३ इंद्रनीलवर्णकपासोद्भ-
वानि ४ दुकूलानि ५ वल्कलोद्भवानि ६ देशप्रासिद्धानि अतःपरं सर्वाणि

मुनि अथवा आर्याए जे कपडां गृहस्थे साधुना माटे खरीदी लावेलां, या
घोड राखेलां, या रंगी तैयार करेलां, या साफ करेलां, या सुधारेलां, या धूप आ
धी सुगंधित करी राखेलां होय तेवां ब्रह्म तेज माणसे तेम करेलां होय तो तेना
पासेथी नहि लेवां, पण जो बीजा माणसे तेम करेलां होय तो लई शकाय.
[८०७]

मुनि अथवा आर्याए नीचे जणावेली जूदी जूदी किशमनां बहु मूल्यवान
वस्त्रा नहि लेवां:—चामडानां कपडां, सुंवाळां कपडां, सुंवाळां अने शोभितां
कपडां, वफरीना वाळथी वनेलां आशमानी रंगना रुथी वनेलां, सफेद रत्तां, बं-
गाळी रुनां वनेलां, पट्टसूत्रना वनेलां, मळय सूत्रनां वनेलां, छालना वनेलां, अं-
शुक, ^१ चीनांशुक, देशराग, आमिल, गज्जळ, फालिक, कायह, तथा उत्तनां अ-

१ अंशुकथी कायह ल्यानी जातो देशोना नामोथी लखेली छे.

तहप्पगाराइं वत्थाइं म्हणद्धणमोह्हाइं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।
[८०८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जाइं पुण्ण आइणपाउरणाणि
वत्थाणि जाणेज्जा, तंजहा; उद्दाणि^१ वा, पेसाणि वा पेसलेसाणि वा, कि-
ण्हमिगाइणगाणि वा, णीलमिगाइणगाणि वा, गोरमिगाइणगाणि वा, क-
णगाणि वा, कणगकंताणि वा, कणगपट्टाणि वा, कणगखइयाणि वा, क-
णगफुसियाणि वा, वग्धाणि वा, विवग्धाणि वा, आभरणाणि वा, आभर-
णविचित्ताणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि आइणपाउरणाणि वत्था-
णि लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । [८०९]

इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म अह भिक्खू जाणेज्जा चउहिं
पडिमाहिं वत्थं एसित्तए । [८१०]

१ मत्स्यचर्मनिष्पन्नानि

ने मलमलनां कपडां तथा एवी तरेहनां चीज पण सर्वे बहुमूल्यवान् कपडां मुनि
ए नहि लेवां. [८०८]

मुनि अथवा आर्याए नीचे जणावेलां चामडाना वत्तो न लेवां:-उद्र जात-
ना मत्स्यना चामडानां, पेग नामना जानवरना चामडानां तथा पशमना वनेला
काळा-नीला-तथा धोळा हरणना चामडानां, सोना जेवी कातिवाळा तारथी या
सोनाना पाटथी या किनखावथी या जरीथी भरंला चामडानां, वाघना चामडानां
या वाघना चामडाथी मटेलां, या आभूषण रूप या आभूषणथी जडेलां, तथा एवी
जातना चीजा चामडानां कपडां मुनिए पहेरवां नहि. [८०९]

उपर जणावेला द्रोपो टाळीने मुनिए नीचे लखी चार प्रतिज्ञाओथी वत्त
लेवां. [८१०]

तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदिसिय वत्थं जाएज्जा, तंजहा, जंगियं वा, भंगिपं वा, साणयं वा, पेत्तयं वा, खोमियं वा, तूलकडं वा, तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा परो वा णं देज्जा, फासुयं एसणीयं लाभे संते पडिगाहेज्जा । पढमा पडिमा । (८११)

अहावरा दोच्चा पडिमा.—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए पेहाए वत्थं जाएज्जा, तंजहा, गाहावती वा, जाव, कम्मकरी वा,—से पुव्वामेव आलोएज्जा, “ आउसो च्चि ” वा, भगिणी च्चि ” वा, “ दाहिसि मे एत्तो अण्णतरं वत्थं ? ” तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा, जाव फासुयं एसणीयं लाभे संते पडिग्गाहेज्जा दोच्चा पडिमा । ८१२

अहावरा तच्चा पडिमा:—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तंजहा, अंतारेज्जागं वा, उत्तरिज्जागं वा तहप्पगारं वत्थं सयं

त्यां पहेली प्रतिज्ञा आ प्रमाणे छे: मुनि अथवा आर्याए उननां, रेशमनां, शगनां, पाननां, कपाशनां, के तूलनां कपडांमांलुं अमुक जातनुंज कपडुं लेवानी धरणा करवी. अने तेवुं कपडुं पोते मागतां अथवा गृहस्थे आपवा मांडतां निर्दोष होय तो ग्रहण करवुं. ए पहेली प्रतिज्ञा. [८११]

बीजी प्रतिज्ञा:—मुनि अथवा आर्याए पोताने खप लागतुं वस्त्र गृहस्थना घरे जोड़ने ते मागवुं. ते आ रीते के शरुआतमांज गृहस्थना घरमां रहेता माणमो तरफ जोड़ने कहेवुं के हे आयुप्पन् अथवा हे वेहेन, मने आ वमारा वस्त्रोमांथी एकाद वस्त्र आपसो? आवी रीते मागतां अथवा गृहस्थे पोतानीं बेळ तेवुं वस्त्र आपतां निर्दोष जाणीने ते वस्त्र ग्रहण करवुं. ए बीजी प्रतिज्ञा. [८१२]

त्रीजी प्रतिज्ञा:—मुनि अथवा आर्याए जे वस्त्र गृहस्थे अंदर पहेरीने वापरेलुं या उपर पहेरीने वापरेलुं होय तेवुं वस्त्र पोते मागी लेवुं, या गृहस्थे आपवा मांड-

वा णं जाएज्जा, जाव पडिगाहेज्जा । तच्चा पडिमा । (८१३)

अहावरा चउत्था पडिमा:—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झि-
चधम्मियं वत्थं जाएज्जा । जंचण्णे बहवे समण—माहण—अतिहि—कि-
वण—वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झियधम्मियं वत्थं सयं वा णं
जाएज्जा, परो चा से देज्जा फासुयं जाव पडिगाहेज्जा । चउत्था पडिमा ।
(८१४)

इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं जहा पिंडेसणाए । (७१५)

सिया णं तीए एसणाए एसमाणं परो वदेज्जा “आउसंतो समणा
एज्जाहिं तुमं मासेण वा, दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा सुचतरे वा,
तो ते वयं आउसो अण्णयरं वत्थं दासामो,” तहप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा
णिसम्म से पुच्चासेव आलोएज्जा “आउसो त्ति वा, भइणि त्ति वा, णो
खलु मे कप्पति, एयप्पगारे संगारे वयणे पडिसुणेत्तए । अभिकंखंसि मे

तां निर्दोष जणातां ग्रहण करवुं. ए त्रीजी प्रतिज्ञा. [८१३]

चोथी प्रतिज्ञा:—मुनि अथवा आर्याए फेंकी देवा लायक वस्त्रो मागवां
एटले के जे वस्त्रो बीजा कोइ पण श्रमण, ब्राह्मण, मुसाफर, रांक, के भि
खारी चाहे नहि तेवां पोते मागी लेवां या गृहस्थे पोतानी मेळे आपतां नि-
र्दोष जणातां ग्रहण करवां. ए चोथी प्रतिज्ञा. [८१४]

ए चारे प्रतिज्ञाओ माटे वधु खुलसो पिंडेपणा नामना अध्ययनर्था धारवो.
[८१५]

कदाच उपरनी प्रतिज्ञाओने अनुसरिने जोइतां वस्त्र लेवा जतां मुनिने कोइ
गृहस्थ एवुं कहे के हे आयुष्मन् श्रमण, तमो एक मास रतीने अथवा दस दिवस
रहीने अथवा पांच दिवस रहीने अथवा आधती काले अथवा परम दहाडे अत्रे
आवजो तो तमोने अमे कोइ पण वस्त्र आपीशुं” अवा बोल सांभळी मुनिए क-
हेवुं जोइए के “हे आयुष्मन् अथवा वेहेन, मारार्थी आवी रीतनुं बोलवुं कबूल

दातुं, इयाणिमेव दलयाहि.” से णेवं वदंतं परो वदेज्जा “आउसंतो समणा अणुगच्छाडि तो ते वयं अण्णयरं वत्थं दासामो, ” से पुव्वामेव आलोएज्जा, “आउसो त्ति वा भइणि त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ एय-प्पगारे सगारे पडिसुणेए । अभिकंखंसि मे दातुं, इमाणिमेव दलया-हि ।” से सेव वदंतं परो णेत्ता वदेज्जा “आउसो त्ति वा भयणी त्ति वा, आहरेयं^१ वत्थं, समणस्स दास्सामो; अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं भूयाइं जीवाइं सताइं समारब्भ समुद्धिस्स जाव चेइस्सामो.” एयप्पगारं णिग्घोसंसोच्चा णिसम्म तहप्पगारं वत्थं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । (८१६)

सिया णं परो णेत्ता वएज्जा “आउसो त्ति वा, भइणी त्ति वा, आहरेयं वत्थं, सिणाणेणवा जाव आघंसित्ता वा पघंसित्ता वा समणस्स

१ आहररवैतत्

करी शकाय तेम नथी माटे जो देवा चाहाता हो तो हमणांज आपो आम क्हाथी गृहस्थ कदाच कहे के हे आयुष्मन् श्रमण त्यारे मारी पाछल चाल्या आवो तो तमने कोइ पण जोइतुं वत्त आपीशुं.” त्यारे मुनिए जवाव आपवो जोइए के हे आयुष्मन् अथवा वेहेन मारार्थी एवा वोल कबूल थइ शके तेम नथी. माटे जो देवा चहाता हो तो हमणाज घो.” आवी रीते मुनिए क्हाथी गृहस्थ पोताना घरमां रहेला माणसने कहे के “हे आयुष्मन् अथवा वेहेन, पेहेलुं वत्त लइ आव, आपणे ते वत्त आ साधुने आपीशुं; अने आपणे आपणा माटे पाछुं बनावी लेशुं.” आवा वोल सांभळी मुनिए तेवी जातनां वत्त सदोप धारीने ग्रहण करवां नहि. [८१६]

कदाच मुनिने तेडी जनार गृहस्थ पोताना घरना माणसोने आवुं कहे के “हे आयुष्मन् अथवा वेहेन, पेळुं वत्त लइ आवो, एने आपणे स्नानादिक्रमां वप-

णं दास्सामो. ” एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोए
ज्जा, आउसो त्ति वा, भयणी त्ति वा, मा एयं तुमं वत्थं सिणाणेण^१ वा
जाव पघंसाहि वा । अभिकंखसि मे दातुं, एमेव दलयाहि । ” से णेवं
वदंतस्स परो सिणाणेण वा जाव पघंसित्ता दलएज्जा, तहप्पगारं वत्थं
अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा । [८१७]

से णं परो णेत्ता वदेज्जा “ आउसो त्ति वा भइणी त्ति वा, आहर
एतं वत्थं, सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेणवा उच्छोलेत्ता वा प-
घोवेत्ता वा समणस्स दास्सामो ” एयप्पगारं णिग्घोस—तहेव, णवरं, “ मा
एयं तुमं वत्थं सीओदगवियडेण वा, उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेहि
वा पघोवेहि वा । अभिकंखांसि—सेसं तहेव, जाव णो पडिगाहेज्जा ।
[८१८]

से णं परो णेत्ता वदेज्जा,—“ आउसो त्ति वा, भयणीत्ति वा, आ-

१ सुगंधिद्रव्येण

गता सुगंधी द्रव्यो बडे घसी के वासी करिने साधुने आपीशुं^१ आवा शब्दो सां-
भळीने मुनिए पेहेलेथीज कहेवुं के “ हे आयुष्मन् अथवा वहेन, ए वत्तने तमे ते-
वा सुगंधि द्रव्यो बडे घसता के वासता नहि. जो देवा चाहता हो तो घस्या के वा
स्या बगर एमज आपो. तेम छतां गृहस्थ घसी के वासीने आपे तो तेवुं वत्त अ-
योग्य गणीने लेवुं नहि. [८१७]

कदाच मुनिने तेडी जनार गृहस्थ पोताना घरना माणसोने एवुं कहे के हे
आयुष्मन् अथवा वहेन, पेहुं वत्त लइ आवो, आपणे तेने थंडा या गरम पाणीथी
छांटीने अथवा धोइने आ साधुने आपीशुं. आवा वोले सांभळी मुनिए तेम
करवा ग्रहस्थने ना पाडवी; अने कहेवुं के जो तमे मने देवा चाहाता होतो एमने
एमज आपो. तेम कदा छता गृहस्थ माने नहि तो ते वत्त ग्रहण न करवुं.
[८१८]

कदाच मुनिने तेडी जनार गृहस्थ वेर जइ पोताना माणसोने कहे के “ हे

हरेतं वत्थं, कंदाणि वा हरियाणि वा विसोधेत्ता समणस्स दासामो. ” एय-
प्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म जाव, “ भइणी चि वा, मा एयाणि तुमं
कंदाणि वा जाव विसोहेहि, णो खलु मे कप्पति एत्तप्पगारे वत्थे पडि-
ग्गाहित्तए । ” से सेवं वदंतस्स परो कंदाणि वा जाव विसोहेत्ता दलएज्जा
तहप्पगारं वत्थं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । (८१९)

सिया से परो णेत्ता वत्थं णिसिरेज्जा^१ से पुव्वामेव आलोएज्जा
“आउसो च्चि वा भइणी चि वा तुमंचेवणं संतियं^२ वत्थं अंतोमंतेण प-
डिलेहिस्सामि. ” केवली बूया ‘आयाण-मेयं;’-वत्थंतेण ओबद्धे सिया
कुंडले वा, गुणे वा, हिरण्णे^३ वा, सुवण्णे वा, मणी वा, जाव, रयणा-
वली वा, पाणे वा, बीए वा, हरिए वा । अह भिक्खूणं पुव्वोवादिट्ठा
जाव जं पुव्वामेव वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा । (८२०)

१ दद्यात् २ त्वदीय मेव ३ रूप्यं

आद्यु म् अथवा वेहेन, पेहुं वस्त्र लघो आपणे एना ऊपर अडेला कंद के लीलो
तरी ऊतारी साफ करीने ए वस्त्र साद्युने आपीशुं. ” आवा बोलो सांभळीने तेम
करवा गृहस्थने ना पाडवी. ना पाड्या छतां गृहस्थ माने नहि तो ते वस्त्र ग्रहण
न करवुं. (८१९)

कदाच मुनिने तेडी जनार गृहस्थ मुनिने कोइ पण वस्त्र आपवा माडे ते
मुनिए शरुआतमांज कहेवुं के “हे आयुष्मन् अथवा वेहेन हुं एकवार तपारा व-
स्त्रने चारे वाजु तपाशी लउं, पछी ग्रहण करीश. जो तपास्या वगरज ते वस्त्र
मुनि ग्रहण करे तो केवळ ज्ञानिओए तेमां दोष वताव्या छे. कारण के ते वस्त्रना
छडामां कदाच कुंडळ, सांकळ, रूपुं, सोनुं, मणि के रत्ननी माळा विगेरे पण वां-
धेला होय (अने ते कंइ मुनिने लेवा योग्य नथी.) तथा वळी ते वस्त्र साथे जी-
वजंतु के धान्य या लीलेतरी वळगेलां होय, माटे मुनिने खास एज भलामण छे
के तेणे शरुआतमांज वस्त्रने चारे वाजु तपाशी पछी ग्रहण करवुं. (८२०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से जं पुण वत्थं जाणेज्जा सअंडं
जाव संताणगं, तहप्पगारं वत्थं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा ।
[८२१]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से जं पुण वत्थं जाणेज्जा अप्पंडं
जाव संताणगं अलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं रोइज्जंतं ण रोच्चइ; तह-
प्पगारं वत्थं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । [८२२]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से जं पुण वत्थं जाणेज्जा, अप्पंडं
जाव संताणगं अलंथिरं धुवं धारणिज्जं रोइज्जंतं रुच्चइ तहप्पगारं वत्थं
फासुयं जाव पडिग्गाहेज्जा ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “ णो णवए मे वत्थे ” ति कट्टु
णो बहुदेसिए ग सिणाणेण वा जाव पवंसेज्जा । [८२३]

मुनि अथवा आर्याए जे वस्त्र, इंडां के जीवजंतुथी भरेलुं जणाय अने जे
पोताना वरनुं पण न होय तथा जे झाझुं टकी शके नहि तथा जे थोडा वखत सू-
धी ज वापरवा मळतुं होय तथा जे धरवा लायक न होय तथा कोइ पण रीते
पसंद पडतुं पण न होय तेवा अयोग्य वस्त्रने ग्रहण न करतुं. [८२१]

मुनि अथवा आर्याए जे वस्त्र इंडां के जीवजंतुथी रहित, पोताना खपना
वा, टकाउ, हमेगना माटे मळतुं, अने धरवा लायक तथा पसंद पडतुं होय ते-
वा निर्दोष वस्त्रने ग्रहण करतुं. [८२२]

मुनि अथवा आर्याए “ मारुं वस्त्र ननुं नथी अर्थात् जुनुं थड गएलुं छे ”
एम धारिने तेने जरा झाझेरा सुगंधी द्रव्योवी घसतुं के मसळतुं नहि,
[८२३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “ णो णवए मे वत्थे ” त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीतोदगवियडेण वा जाव पधोवेज्जा । (८२४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “ दुब्भिगंधे मे वत्थे ” त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, तहेव, सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा, (आलावओ) । (८२५)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्ज वत्थं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससणिद्धा ए, जाव संताणाए आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा । (८२६)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा तहप्पगारं वत्थं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि^१ वा, उसुयालंसि^२

१ उंबरे वा. २ उदूषले वा.

एज प्रमाणे जूना थएला वस्त्रेने जरा झाझेरा थंडा के गरम पाणीथी धोवुं पण नहि.^१ [८२४]

मुनि अथवा आर्याए “ मारुं वस्त्र मेरुं थएल छे ” एम धारिने जरा झाझेरा खुगंधि द्रव्योथी तेने घसवुं मसळवुं नहि तथा थंडा के गरम पाणीथी तेने धोवुं करवुं नहि. [८२५]

मुनि अथवा आर्याने ज्यारे कोइ पण वस्त्रेने तडके सुकववानी जरूर पढे त्यारे ते वस्त्रो तेमणे तरतनी सूकेली, या भीजेली या जीवजंतुवाळी जमीन पर न सुकाववां, [८२६]

एज प्रमाणे ते वस्त्रो लाकडानी स्थूणी उपर या दरवाजा पर या उखल

१ मच्छ निर्गत अर्थात् जिनकल्पि साधुना माटे आ सूत्र छे. गच्छमां इहेला मुनिए तो यतनोंपूर्वक वस्त्र धोवां पण खरां एम टीकाकार जणावे छे.

वा, कामजलंसि^१ वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे
दुन्निक्खत्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा णो पयावेज्ज वा ।
[८२७]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा
पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं कुलियंसि^२ वा, भित्तिसि^३ वा, सेलंसि
वा, अण्णतरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए जाव णो आयावेज्ज वा
पयावेज्ज वा । [८२८]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा
पयावेत्तए वा, तहप्पगारे वत्थे खंधंसि वा, चंचंसि वा, मालंसि वा, पासा-
यंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णयरे वा, अंतलिक्खजाए जाव णो आ-
यावेज्ज वा पयावेज्ज वा । [८२९]

से—त्त—मादाय एगंत मवक्कमेज्जा ; अहे ज्ञामथंडिलंसि वा,
जाव, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय पमज्जिय पम-

१ स्नानपीठे वा. २ भित्तौ ३ नदीतटे

उपर या स्नान करवाना वाजोठ उपर या एवीज किशमनी कोइ जमीनयी
उंची रहेती वस्तु उपर आमतेम लटकतां टांगीने नहि सूक्खवां [८२७]

वळी ते वस्त्रो भीतउपर या नदीना तट उपर या पापणो उपर अथवा
एवीज किशमना हरेक जमीनयी उंचा रहेता पदार्थ पर पण नहि सुक्खवां
[८२७]

वळी ते वस्त्रो कोइ पण चीजोना ढगला उपर या मांचा उपर या माळ
उपर या घर उपर या हवेली उपर अथवा एवी जातना बीजा कोइ पण उंचा
पदार्थो उपर पण नहि सूक्खवां. [८२९]

किंतु ते वस्त्रो लड्ढेने एकांत स्थळमां जवुं, अने त्यां जीवजंतुरहित स्थळ

वा परिहरित्तए वा ; ” थिरं वा णं सतं णो पल्लिच्छिदिय पल्लिच्छिदिय प-
रिट्ठवेज्जा; तहप्पगारं ससंधितं^२ वत्थं तरस चेत्र णिसिरेज्जा; णो अर्चणं
साइज्जेज्जा । [८३४)

से एगतिओ तहप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म “ जे भयंतोरो
तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं मुहुत्तगं जाइत्ता जाव एगा-
हेण वा दुयाहेण वा तियाहेण वा चउचाहेण वा पंचाहेण वा विप्पवसिय
विप्पवसिय उवागच्छंति, तहप्पगाराणि वत्थाणि णो अप्पणो गेहंति अण-
मणस्स अणुवयंति, तं चेत्र, जाव, णो सातिज्जंति, बहुवयणेण भासि-
यव्वं (८३५)

से हंता “ अहमवि मुहुत्तं परिहारियं वत्थं जाइत्ता जाव एगाहेण
वा दु-ति-चउ-पंचाहेण वा विप्पवस्सिय विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि,
अवियाइं एयं गमेव सिया ” माइट्ठणं संपासे । णो एवं करेज्जा ।
(८३६)

१ उपहतं

डीने परठवुं^१ नहि किंतु एवी जातुं वस्त्र पाछुं आपनार मुनिनेज सोंपवुं
[८३४]

एज प्रमाणे घणा मुनिओ पासेथी घणा मुनिओ वस्त्र भागी बीजे गाम
एक वे, त्रण चार के पांच दिवस रही पाछा अवी वस्त्र पाछा आपवा मांडे तो
घणा मुनिओए ते वस्त्र जो कंड पण वगडेलां होय तो लेवां नहि-किंतु तेमनेव
सोंपवां. [८३५]

आकी बात सांभळीने कोइ मुनि एवं विचारे के “ हुं पण कोइ मुनि पासे-
थी उधारं वस्त्र भागी बीजे गाम जइ आवुं के जेथी ए वस्त्र वगडी जवारीं मे-
ज मळसे, ” तो ते मुनि दोष पात्र थाय छे. माटे तेम नहि विचारवुं. [८३६]

? छोडी देवुं नहि

वा, कामजलंसि^१ वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे
दुन्निक्खत्ते अणिकंप्पे चलाचले णो आयावेज्ज वा णो पयावेज्ज वा ।
[८२७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा
पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं कुलियंसि^२ वा, भित्तिंसि^३ वा, सेलंसि
वा, अण्णतरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए जाव णो आयावेज्ज वा
पयावेज्ज वा । [८२८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा
पयावेत्तए वा, तहप्पगारे वत्थे खंधंसि वा, चंचंसि वा, मालंसि वा, पासा-
यंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णयरे वा, अंतलिक्खजाए जाव णो आ-
यावेज्ज वा पयावेज्ज वा । [८२९]

से—त्त—मादाय एगंत मवक्कमेज्जा ; अहे ज्ञामथंडिलंसि वा,
जाव, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय पमज्जिय पम-

१ स्नानपीठे वा. २ भित्तौ ३ नदीतटे

उपर या स्नान करवाना वाजोठ उपर या एवीज किशमनी कोइ जमीनयी
उंची रहेती वस्तु उपर आमतेम लटकतां टांगीने नहि सूक्कवां [८२७]

वळी ते वत्तो भीतउपर या नदीना तट उपर या पापणो उपर अथवा
एवीज किशमना हरेक जमीनयी उंचा रहेता पदार्थ पर पण नहि सुक्कवां
[८२७]

वळी ते वत्तो कोइ पण चीजोना ढगला उपर या मांचा उपर या माळ
उपर या घर उपर या हवेली उपर अथवा एवी जातना बीजा कोइ पण उंचा
पदार्थो उपर पण नहि सूक्कवां. [८२९]

किंतु ते वत्तो लडने एकांत स्थळमां जवुं, अने त्यां जीवजंतुरहित स्थळ

ज्जिय ततो संजयामेव वत्थं आयवेज्ज वा पयवेज्ज वा । (८३०)
 एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुगीए वा सामग्गियं ।
 (८३१)

(द्वितीय उद्देशः)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहेसणिज्जाइं^१ वत्थाइं जाएज्जा
 अहापरिग्गहाइं वत्थाइं धारेज्जा, णो धोएज्जा, णो रइज्जा, णो धोयरत्ता
 इं वत्थाइं धारेज्जा, अण्णलिउंचमाणे^२ गामंतरेसु ओमचेलिए । एयं खलु
 वत्थधारिस्स सामग्गियं^३ । (८३२)

१ अपरिकर्माणि २ अगोपयन् ३ एतच्च सूत्रं जिनकल्पिकोद्देशेन
 द्रष्टव्यं, वस्त्रधारित्व विशेषणात् गच्छांतर्गतेपि चाविरुद्धं ।

जोइ तपाशी पुंजी प्रमार्जीं यत्न पूर्वक ते वत्तो सूकववां. [८३०]
 एज खरेखर मुनि अने आर्याओना आचारनी संपूर्णता छे. [८३१]

बीजो उद्देश

(वस्त्र संवधी वधु आज्ञाओ)

मुनि अथवा आर्याए वस्त्रोने सुधारवां करवां नहि, किंतु जेवां मळे सेवांज
 पहेरवां; तथा धोवां के रंगवां पण नहि, अने जो धोएलां के रंगेला श्रेय तो पहेर-
 वां नहि. अने ग्रामांतरे जतां पोतानां वत्तो संताडवां नहि. ए वस्त्रधारि मुनिनो
 आचार छे. १ [८३२]

आ सूत्र जिनकल्पि मुनिना माटे छे अने वस्त्रधारि एवा विशेषणथी स्थ-
 विर कल्पिना माटे पण घटी शके छे. (वृत्ति.)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पवि-
सिउकामे सव्वं चीवर मायाए गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए १ णिक्खमेज्ज
वा पविसेज्ज वा । एवं बहिया विचारभूमीं विहारभूमीं वा गामाणुगामं
दूइजेज्जा । अह पुण एवं जाणेज्जा तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए
जहा पिंडेसणाए, णवरं, सव्वं चीवर—मायाए । (८३३)

से एगइओ मुहुत्तगं मुहुत्तगं पडिहारियं वीयं वत्थं जाएज्जा, जाव
एगाहेण वा दुयाहेण वा तिचाहेण वा चउयाहेण पंचाहेण वा विप्पवसिय
उवागच्छेज्जा । तहप्पगारं वत्थं णो अप्पणा गिण्हेज्जा १, णो अप्पमण्ण—
स्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थपरिणामं करेज्जा, णो परं
उवसंकमित्तु-एवं वदेज्जा “ आउसंतो समणा, अभिक्खसि वत्थं धारेत्तए

मूहुर्तादिकालोद्देशेन । १ वस्त्ररवामी

मुनि अथवा आर्याए भिक्षा लेवा जतां या खरत्तु पाणी जतां या ग्रामा-
नुग्राम विहार करतां सघळां वत्त साये लेवां. अने जो थोडो के घणो वरसाद व-
सतो जणाय पिंडेणना नामना अध्ययनमां कत्तां मुजव वत्तवुं. [८३३]

कोइ मुनि पासेथी कोइ मुनि, वे घडी या एक वे व्रण चार के पांच दि-
वस सूधी वापरवा माडे उधारं वत्त मागी तेठलो वरखत वीजे गाम एकलो रहीं
आधी पाछो आवतां ते वत्त पाछुं आपवा माडे तो (जो ते वत्त ते मुनिए त्यां
एकला रत्थाथी सूत्तां करतां घगाडयुं होय तो) ते तेवुं पेहेला मुनिए पोता सारुं
लेवुंज नहि, तथा लइने वीजाने देवुं नहि, तथा उधारं देरवी राखवुं नहि के छ-
णा तुंज वापर पछी मने वीजुं देजे, तथा तेना बदले वीजुं वत्त बदलवामां लेवुं
नहि, तथा वीजा मुनिने पण एम नहि कहवुं के आ वत्त तमाने जोइतुं होय तो
ल्यो;” वटी ते वत्त लावो वरखत चाली शके तेवुं मजवूत होय तो तेने तांडी फ-

वा परिहरित्त्वा वा ; ” थिरं वा णं सतं णो पल्लिच्छदिय पल्लिच्छदिय परिद्वेज्जा; तहप्पगारं ससंधितं^२ वत्थं तरस चेत्र णिसिरेज्जा; णो अत्ताणं साइज्जेज्जा । [८३४]

से एगतिओ तहप्पगारं णिग्घोसें सोच्चा णिसम्म “ जे भयंतारो तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं मुहुत्तगं जाइत्ता जाव एगाहेण वा दुयाहेण वा तियाहेण वा चउयाहेण वा पंचाहेण वा विप्पवसिय विप्पवसिय उवागच्छंति, तहप्पगाराणि वत्थाणि णो अप्पणो गेण्हंति अण्णमण्णस्स अणुवयंति, तं चेत्र, जाव, णो सातिज्जंति, बहुवयणेण भासियव्वं (८३५)

से हंता “ अहमवि मुहुत्तं परिहारियं वत्थं जाइत्ता जाव एगाहेण वा दु—ति—चउ—पंचाहेण वा विप्पवस्सिय विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि, अवियाइं एयं गमेव सिया ” माइद्वणं संपासे । णो एवं करेज्जा । (८३६)

१ उपहतं

डीने परठवुं^१ नहि किंतु एवी जातुं वस्त्र पाछुं आपनार मुनिनेज सोंपवुं. [८३४]

एज प्रमाणे घणा मुनिओ पासेथी घणा मुनिओ वस्त्र मागी वीजे गाम एक वे, त्रण चार के पांच दिवस रही पाछा अवी वस्त्र पाछा आपदा मांडे तो घणा मुनिओए ते वस्त्र जो कंड पण वगडेलां होय तो लेवां नहि—किंतु तेमनेज सोंपवां. [८३५]

आकी वात सांभळीने कोइ मुनि एवुं विचारे के “ हुं पण कोइ मुनि पासेथी उधारं वस्त्र मागी वीजे गाम जइ आवुं के जेयी ए वस्त्र वगडी जवार्थी मनेज मळशे, ” तो ते मुनि दोष पात्र थाय छे. माटे तेम नहि विचारवुं. [८३६]

१ छोडी देवुं नहि

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं वत्थाइं विवण्णाइं करे-
ज्जा; णो विवण्णाइं वण्णमंताइं करेज्जा; “अण्णं वा वत्थं लभिस्सामि
त्ति” कट्टु अण्णमण्णरस देज्जा; णो पामिच्चं कुज्जा; णो वत्थेण वत्थपरि
णामं करेज्जा; णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा, “आउसंतो समणा, अ-
भिकरंवासि मे वत्थं धारित्तए वा परिहरित्तए वा;” थिरं वा ण संतं णो
पलिच्छिदिय पलिच्छिदिय परिह्वेज्जा, जहाचेयं वत्थं पावगं-परो मम्मइ
। परं चणं अदत्तहारिं^१ पडिपहे पेहाए तरस वत्थस्स णिदाणे णो तेसिं-
भीओ उम्मग्गेण गच्छेज्जा । जाव अप्पुस्सुए जाव ततो संजयामेव गामा
णुगामं दूइज्जेज्जा । [८३७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामे दूइज्जेज्जा अंतरासे वि-
हं^२ सिया । से जं पुण विहं जाणेज्जा ‘ इमंसि खलु विहंसि वहवै आ

१ अदत्तहारिणं तस्करं. २ अट्ठीप्रायः पंथाः ।

मुनि अथवा आर्याए शोभीतां वस्त्रेणे (चोरोना प्रययी) कुशोभीतां न
करवां; कुशोभीतां वस्त्रेणे मुशोभित न करवा “वदलामं हुं वीजं वस्त्र मेळ-
वांण” एग विचारी एक वीजाने वस्त्रे-आपवां नहि; वळी वस्त्रे उधारे पण आ-
एवां नहि; तथा एक वस्त्र आरी वीजुं वस्त्र लेवुं नहि; तथा वीजा मुनिने ते वस्त्र
लेवानुं पृच्छवुं नहि, तथा वस्त्र मज्जुत्त छतां “ए वस्त्र वीजाओने सारुं नथी दे-
न्वानुं” एग विचारी तेना कट्ठा करी परठवुं नहि. वळी रस्ते जतां चोरोने
देखी आडे मार्गे नहि चलवुं, दिंतु धीरजयी यत्तनापूर्वक चाल्या जइं. [८३७]

मुनि अथवा आर्याने ग्रामाहुग्राम जतां वच्चे मोहोइं गेदान आवी पडतां
अने त्यां एवुं जणाय के आ मेदानमां घणा लूंटाराओ वटेमारुओना कपडा लतां

१ मुख्यत्वे ते तेषां वस्त्रे लोकांज नहि.

मोसगा वत्थपडियाए संपिंडिया, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेण गच्छेज्जा।
जाव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । (८३८)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से
आमोसगा पडियागच्छेज्जा, ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा “ आउसंतो स-
मणा, आहरेत्तं वत्थं, देहि निक्खिवाहि, ” जहा इरियाए^१ णाणत्तं व-
त्थपडियाए । [८३९]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामगियं ।
(८४०)

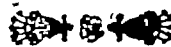


१ ईर्याध्ययनवत् नानात्वं बोध्यं ।

लूंटया माटे भराइ देठा छे. तो तेमनाधी घीही जइने आडे मार्गे नहि जवुं किंतु
धीरजयी तेज रस्ते चाल्या जवुं. [८३८]

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम जतां वच्चे लूंटाराओ आवी मळे अने
तेओ कहे के ‘आयुप्पमन् तपस्वी, आ वस्स लाव, दे, के छोटी दे’ तो जेम इ-
र्याध्ययनमां कहेलुं छे तेम वर्तवुं. [८३९]

ए मुनि अथवा आर्याना आचारनी संपूर्णता छे. [८४०]



पात्रेषणाख्यं पंचदश मध्ययनम्.

[प्रथम उद्देशः]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं एसित्तए । से-
ज्जं पुण पायं जाणेज्जा तंजहा,—अलाउपायं वा, दाहपायं वा, मट्टियापायं
वा तहप्पगारं पायं जे णिग्गंथे तरुणे जाव थिरसंघयणे से एगं पायं घा-
रेज्जा, १ णो बीयं । [८४१]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयणमेराए पायपडियाए
णो अभिसंधारेज्ज गमणाए । [८४२]

१ जिनकल्पिकादिः

अध्ययन पंदरमुं.

पात्रेषणा.

पहेलो उद्देश.

(पात्र केषां अने श्री रीते लेवां ?)

मुनि अथवा आर्याए ज्यारे पात्र जोइतुं होय त्यारे तुंवीतुं पात्र अथवा
मार्जितुं पात्र अथवा एवीज तरेहेतुं धीजुं कोइ पण पात्र लेवुं. अने जे मुनि युवान
अने मजवूत धंधावाळो होय तेणे मात्र एकज पात्र राखवुं. १ [८४१]

मुनि अथवा आर्याए पात्र लेवा माटे वे. गाऊनी हदयी वाहेर न जवुं-
[८४२]

१ आ नियम पण जिनकल्पि साधुने माटे छे, एम टीकाकार ज पात्रे

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जंपुण पायं जाणेज्जा, अस्सिप-
डियाए एगं साहम्मियं समुद्धिस्स पागाइं; जहा पिंडेसणाए चत्तारि आला
वगा । पंचमे बहवे समणमाहणा पगणिते तहेव । [८४३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अस्संजए भिक्खुपडियाए बहवे
समणमाहण (वत्थेसणा लावओ) [८४४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जाइं पुण पादाइं जाणेज्जा वि-
ख्वरूवाइं महद्धणमुल्लाइं, तंजहा, अयपादाणि वा, तंबपादाणि वा, सीस-
ग-हिरण्ण-सुवण्ण-रीरिया-हारपुड^१ पायाणि वा, मणि-काय-कंस-
संख-सिंग दंत-चेल-सेल-पायाणि वा, चम्मपायाणि वा, अण्णयराणि
वा तहप्पगाराइं विख्वरूवाइं महद्धणमोल्लाइं पायाइं अफासुयाइं जाव
णो पडिग्गाहेज्जा । [८४५]

१ लोहपात्रं.

मुनि अथवा आर्याए जे पात्र गृहस्थे एकज मुनिने माटे उद्देशाने तैयार
कर्युं होय ते नहि लेवुं. अहीं पिंडेपणा ना.ना अध्ययन प्रमाणे चार आलापक
बोली जना. [८४३]

तेमज अनेक भ्रमण-ब्राह्मण माटेनो आलापक वस्त्रैपणा मुजव जाणवो
[८४४]

मुनि अथवा आर्याए जे पात्रो बहु मूल्यवाळा जणाय जेवा के लोढानां,
त्रांवाना, सीसानां, रुपानां, सोनानां, पीतळनां, पोलोदनां, मणिनां, काचनां,
कांसानां, शंखनां, शींगडानां, दांतनां, कपडानां, पत्थरनां, चामडानां, के एरो
कोइ पण त्तेइनां बहु मूल्यवान पात्रो होय ते तेमणे ग्रहण करवां नहि. [८४५]

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा से उजाइं पुण प्रादाइं जाणेज्जा वि-
खुवखुवाइं महच्छणबंधणाणि वा, अयबंधणाणि वा, जाव चम्मबंधणाणि
वा तहप्पगाराइं महच्छणबंधणाइं अफासुयाइं णो पडिग्गाहेज्जा । इच्छेया-
इं आयतणाइं उवातिकम्म । [८४६]

अह भिक्खू जाणेज्जा चउहिं पडिमाहिं पादं एत्थिए । तस्य
खलु इमा पढमा पडिमाः—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदिसिय उदिसिय
पायं जाएज्जा, तंजहा, लाउयपायं वा, दारुपायं वा, मट्टियापायं वा, त-
हप्पगारं पायं सयं वा णं जाएज्जा, जाव पडिग्गाहेज्जा । पढमा पडिमा ।
[८४७]

अहावरा दोच्चा पडिमाः—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए पेहा
ए पायं जाएज्जा, तंजहा, गाहावई वा जाव कम्मकरी वा, से पुव्वामेव
आलोएज्जा “ आउसो ति वा, भइणी ति वा, दाहिलि मे एत्तो अण्ण-

वळीजे पात्रो उपर लोढा के चामड के कोइ पण तेवी चीजना बहु मूल्य-
वान पहा लगाडेला होये ते पण ग्रहण नहि करवां. ए रीते पापना स्वक्यी अ-
लगा रहीं वर्त्तवुं. [८४६]

मुनिए चार प्रतिज्ञाओतीं पात्र गवेषवाजवुं. ते चार प्रतिज्ञाओनांनी पेहेली
प्रतिज्ञा आ प्रमाणेः—मुनि अथवा आर्या अमुक जातवुं नाम लइ तेज पात्र मागे;—
देवुं के तुंवीपात्र, काष्टपात्र, मृत्तिकापात्र, बगेरे, अने ते माग्यायी या पोतानी
मेळे आपे तो ते ग्रहण करे. ए पेहेली प्रतिज्ञा. [८४७]

धीजी प्रतिज्ञा आ प्रमाणेः—मुनि अथवा आर्या अमुक जातवुं पात्र गृह-
स्थना परे जाया वादज मागे अने ते मुनव गृहस्थ के चाकरटीने शरुआतमां
जोइ करे के “ हे आरुम्मन् या वहेन, आ तुंवीपात्र, काष्टपात्र के मृत्तिकापात्र बगे-

यरं पादं, तंजहा, लाउयपादं वा ” जाव तहप्पगारं पायं सयं वा णं जा-
एज्जा, परो वा से देज्जा जाव पडिगाहेज्जा । दोच्चा पडिमा ।
(८४८)

अहावरा तच्चा पडिमा;—से भिक्खु वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण
पादं जाणेज्जा संगतियं वा वेजयंतियं वा, तहप्पगारं पायं सयं वा जाव
पडिगाहेज्जा । तच्चा पडिमा । (८४९)

अहावरा चउत्था पडिमा;—से भिक्खु वा भिक्खुणी वा उच्चियघ
मियं पादं जाएज्जा; जं च—ण्णे बहवे समणमाहणा जात्र वर्षीमगा णा-
वकंखंति, तहप्पगारं पादं सयं वाणं जाव पडिगाहेज्जा । चउत्था पडि-
मा । (८५०)

इच्चेयार्षं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं (जहा पिंडेसणाए)
[८५१]

रेमांतुं अमुक पात्र मने आपणो ? ” ए रीते माग्ग्याथी या पोतानी मेळे गृहस्थ के
चाकर ते आपे तो ग्रहण करे. ए वीजी प्रतिज्ञा. [८४८]

त्रीजी प्रतिज्ञा आ प्रमाणे;—मुनि अथवा आर्या, गृहस्थे वापरेंतुं या गृह-
स्थना वपराता वे जण पात्रोमांतुं एक पात्र माग्ग्याथी या पोतानी मेळे गृहस्थे आ-
पतां ग्रहण करे. ए त्रीजी प्रतिज्ञा. [८४९]

चोथी प्रतिज्ञा आ प्रमाणे;—मुनि अथवा आर्या जे पात्र फेंकी देवा जेवुं
होय अने तेथी जेने वीजा कोइ (बौद्ध) भिक्षुक ब्राह्मण के भीखारी लोक ले
नहि तेवुं पात्र माग्ग्याथी या पोतानी मेळे गृहस्थे आपता ग्रहण करे. ए चोथी प्र-
तिज्ञा. [८५०]

ए चार प्रतिज्ञाओमांनी कोइ पण प्रतिज्ञाने अंगीकार करनार मुनिए उ-
त्कष न करवो के “ के हुं उग्रतपनो करनार छुं ; या, वीजो साधु एम करी शके
नहि. ” किंतु “ जिनाज्ञो पाळनार सर्व साधु महापुरुषज छे ” एम जाणी शुद्ध
संयम पाळवो. [८५१]

से णं एताए एसणाए एसमाणं परो पासित्ता वदेज्जा “ आउसं-
तो समणा एज्जासि तुमं मासेण वा ” (जहा वत्थेसणाए.)
(८५२)

से णं परो णेत्ता वदेज्जा, “ आउसों ति वा भइणी ति वा आहरे
यं पादं, तेह्णेण वा, घण्ण वा, णचणीएण वा, वसाए वा, अब्भंघत्ता वा
तहेव, सिणाणाइ तहेव, सीतोदगंकंदादि तहेव । (८५३)

से णं परो णेत्ता वदेज्जा “ आउसंतो समणा, मुहुत्तगं मुहुत्तगं
अत्याहि जाव, ताव अम्हे असणं वा उवकरेसु वा उवक्खडेसु वा, तो
ते वयं आउसो सणाणं संभोयणं पडिग्गहगं दास्सामो. तुच्छए पडिग्गहए
दिण्णे समणस्स णो सुट्टु साट्टु भवति. ” से पुच्चामेव आलोएज्जा “आ-

आ रीतनी तजवीजथी मुनिने पात्र मागता जोइ गृहस्थ कोहे “हे आ-
युष्मन् श्रमण, तयो एक महिनो र्हीने आवजो” इत्यादि सांभळी मुनिए जेम
पिंदैपणाध्ययनमां वहुंछे तेम करवुं. [८५२]

मुनि के आर्याने तेही जनार गृहस्थ कोहे के “हे आयुष्मन् श्रमण, या
बेहेनं, पेहेलुं पात्र लाव; के जेथी तेने तेल, घी, माखण के चरवी चोदही या
सुगंधि चीजो बडे सुवासित करी या उना के तादा पाणीथी धोइ या कंद के वनं
स्पतियी स्वच्छ करी मुनिने आपगुं.” आवां घोल सांभळी मुनिए तरत ते वा
घत मनाइ पाठवी अने कहेवुं के जो आपवा चाहता हो तो एमज आपो.” तेम
कयां छतां गृहस्थ नाहि माने तो ते पात्र मुनिए के आर्याए ल्हुं नाहि. [८५३]

तेही जनार गृहस्थ कोहे के “हे आयुष्मन् श्रमण, तये घोहीवार उभा
रहो, तेदलामां अमे आ रसोइपाणी तयार करी लेगुं; अने तयारे हे आयुष्मन्
तमोने रसोइपाणी सहित पात्र आपीगुं, वेमके रवाली पात्र साधुने आप्याथी सा-

१ कारण के अमार पांस चीजुं बघतु पात्र नथी (टीका)

उसो ति वा भङ्गी ति वा, णो खलु मे कप्पइ आधाकम्मिए असणे
 वा षणे वा खाइमे वा साइमे वा, भोत्तए वा पायए वा । मा उवकरोहि
 मा उवक्खडेहि ; अभिकंखासि मे दातुं, एमेव दलयाहि ” से सेवं बंदतं
 रम परो असणं वा जाव उवकरेत्ता उवक्खडेत्ता सपाणं सभोयण पडिग्गह
 गं दलएज्जा, तहप्पमारं पडिग्गहं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा ।
 (८५४)

सिया सेवं परो णेत्ता पडिग्गहगं णिसिरेज्जा, से पुव्वामेव आल्ले-
 एज्जा “ आउसो ति वा भङ्गी ति वा तुमं चैव णं संतियं अंतोअंतेण
 पडिलेहिरपाभि (८५५)

केवली बूया आयाण—मेयं । अंतो पडिग्गहांसि पाणाणि वा धी-
 याणि वा हरियाणि वा जाव अह भिक्खुणं पुव्वोवदिट्ठा एस पतिग्गा जं
 पुव्वामेव पडिग्गहगं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा । (८५६)

रुं न देखाय” आवे प्रसंगे साधुए जोइ तपासी कहेवुं के “हे आयुष्मन् अथवा
 वेहेन, मने मारा माटे करेलां रसोइपाणी काम लागवाना नथी. माटे मारा माटे ते
 तैयार करता ना. जो पात्र देवा चाहता हो तो एमज खाली आपो.” आम कहा
 छतां गृहस्थ आहारपाणी तैयार करी ते सहित पात्र आपवा मांडे तो ते अयोग्य
 जाणी ग्रहण करवुं नहि. [८५४]

तेडी जनार गृहस्थ पात्र आपवा मांडे त्यारे मुनिए शरुआतमां जोइ करी
 कहेवुं के के “हे आयुष्मन् या अहेन, आ पात्र तमारं छतांज हुं चारे बाजुथी
 जोइने लइश. [८५५]

जो जोया वगर मुनि पात्र ले तो केवळब्रानी कहे छे के एयी कर्मबंध
 धाय. कारण के कटाच ते पात्रना अंदर जीवजंतु के धनस्पति (लीलफूल) पण
 आवी जा. ते माटे मुनिने उपर मुजव भलामण छे के तेणे शरुआतमांज पात्र-
 ने बची बाजु जोइ तपासी ग्रहण करवुं. [८५६]

सअंडादि सव्ये आलावगा जहा वत्येसणाए; णाणत्तं,—तेल्लेण
वा घएण वा णवणीएण वा वसाए वा सिणाणादि जाव अण्णयरंसि वा
तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय पडिलोहिय पमज्जिय तओ संजयामेव
आमउजेज्ज वा । [८५७]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामगियं जं
सव्वट्ठोहें सहितेहिं सया जएज्जासि त्ति बेमि । [८५८]

[द्वितीय उद्देशः]

से निखुं वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पवि-

सअंडादि सर्व आलापक वस्त्रैवणा मुजव जाणवा मात्र ए विशेष छे के
जो तेल, घी, माखण, के चरवी विगेरेथी खरडेल पात्र जणाय तो निर्जीव स्थं-
डिल भूमिमां जइ जोइ पुंजी प्रयार्जी यतना पुर्वक तेने घसी नाखवुं.
[८५७]

एज खरेखर मुनि अथवा आर्याना आचारनी संपूर्णता छे के वधी वाव-
तोमां सदा यतना पुर्वक वर्त्तवुं. एम हुं कहुं छुं. [८५८]

वीजो उद्देश.

पात्र विषे वधु आज्ञाओ.

मुनि अथवा आर्याए आहार लेवा माटे गृहस्थना घरे जतां गरुआनमांज

? वस्त्रैवणा नामना चौदमां अध्ययनमांनी कल्म ८२? थी ८३० स्त्री-
नी कल्मो प्रमाणे अदि पण सर्व हकीकत जाणी लेदी.

समाणे पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहंगं, अवहट्ठु पाणे, पमज्जिय रयं ततो संजयामेव, गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा । (८५९)

केवली बूया 'आयाण मेयं.' अंतोपडिग्गहंसि पाणे वा, बीए व, एए वा परियावज्जेज्जा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठु एस पतिण्णा, जं पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहं, उवहट्ठु पाणे, पमज्जिय रयं, ततो संजया-मेव गाहावइ कुलं पिंडवायपडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा । [८६०]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ—जाव—समाणे सिया. से परो अभिहट्ठु अंतो पडिग्गहंगांसि सीओदगं परिभाएत्ता णीहट्ठु^१ दलएज्जा तहप्पगारं पडिग्गहगं^२ परहत्थंसि वा परपादंसि वा अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । [८६१]

१ निस्सार्य. २ (अत्र मूलसूत्र पुस्तके “ तहप्पगारं पडिग्गहगं ” इति लिखितं लभ्यते परं टीकाकारेण तथा प्रकारं शीतोदक मिति व्याख्यातत्वात् तहप्पगारं सीओदगं ” इति शुद्ध पाठः संभाव्यते. न ज्ञायते बालावबोधकारः कथं वृत्तिं नानुसृतः!)

पात्रने जोइ तपाशी, जीवजंतु दूर करी, रज प्रमार्जी यतनापूर्वक आहार लेवा जवुं आववुं. [८५९]

जो पात्र जोया प्रमार्जी विना आहार लेवा जाय तो केवळज्ञानी कहे छे के तेथी कर्मबंध धाय छे. जे माटे कदाच ते पात्रनी अंदर जीवजंतु, लीरुफूल के रज पण रहेली होय माटे मुनिने ऊपर मुजव भलामण छे के तेणे शरुआतमांज पात्रने जोइ तपाशी पुंजीप्रमार्जी यतना पूर्वक आहार लेवा जवुं आववुं. [८६०]

मुनि अथवा आर्या गृहरथना घरे आहारपाणी लेवा गएला होय, अने कदाच त्यां ते गृहस्थ पोताना पात्रमां टाहुं पाणी नाखीने ते मुनिने आपवा मांडे तो ते गृहस्थना हाथमां के पात्रमां रहेलुं तेंवुं टाहुं पाणी अयोग्य जाणीने ग्रहण करूं नहे. [८६१]

सेय आहच्च^१ पडिगाहिए सिया^२ से खिप्पामेव उदग्गसि साह-
रेज्जा, सपडिगाह—मायाए च णं परिट्टवेज्जा, ससणिद्धाए चणं भूमीए
णियमेज्जा । (८६२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा ससणिद्धं वा पडिगाहं
णो आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा । (८६३)

अह पुण एवं जाणेज्जा,—वियडोदए मे पडिग्गहे छिण्णसिणेहे,
तहप्पगारं पडिग्गहं ततो संजयामेव आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा ।
(८६४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ. पविसिउकामे सपडिग्गह-
मायाए गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा । एवं
चहिया विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइजेज्जा । (८६५)

१ कदाचित् २ प्रथमं तस्य दातु रुदकमाजने प्राक्षिपेत् तदनि-
च्छायां शेषसूत्रं.

कदाच ते भूलवृक्ष्यां लेवाइ जाव तो तरतज (ते देनार धणीनि त्यां पाछुं
आपी आवहुं पण जो ते लेवानी ते ना पाडे तौ) वीजा बूवा विगेरेना सरखी
जातना पाणीमां तेने नाखी देवुं; तेम न वने तो पात्र सहित परखी देवुं; अथवा
भीनाशवाळी जमीनयां ढोळी आवहुं, [८६२]

मुनि अथवा आर्याए पाणी भीजेहुं के भीनाशवाळुं पात्र मशळुं
के सूकवहुं नहि. [८६३]

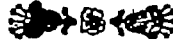
किंतु ज्यारे एवुं जणाय के भारा पात्र उपरहुं पाणी के भीनाश दूर थ-
यां छे, त्यारे ते मशळुं के सूकवहुं [८६४]

मुनि अथवा आर्याए गृहस्थना घेर आहार लेवा जतां पात्रो सहित, जहुं
आवहुं अने एज रीते बाहेर विहारभूमिमां गामोगाम फरतां पण पात्रो सहित फ-
रवुं. [८६५]

तिव्वदेसियादि जहा बीयाए वत्थेसणाए. णवरं, एत्थ षडिग्गहतो।

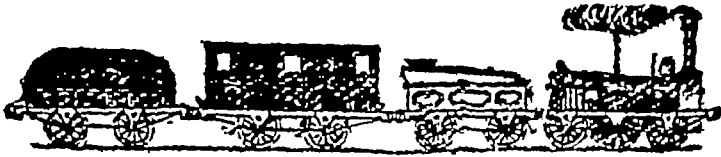
(८६६)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्व-
द्वेहिं सहितेहिं सया जएज्जा सि, ति बोमि । (८६७)



मुनिए पात्र लेवा जतां जो थोडो या घणो वरसाद वरसतो होय तो जेम-
पिंहेषणामां विधि बतावी छे तेम वर्त्तवुं. [८६६]

एज खरेखर मुनि तथा आर्याना आचारनी संपूर्णता छे के तेओए सर्व
वावतमां सदा यत्नवंत रहेवुं; एम हुं कहुं छुं. [८६७]



अवग्रह—प्रतिमाख्यं षोडश मध्ययनम्.

[प्रथम उद्देशः]

“ समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते अपसू परदत्त-
भोगी पायं कम्मं णो करिस्सामी ति, समुद्गाए, सव्वं भंते अदिण्णादाणं
पच्चक्खामि ” । [८६८]

से अणुपविसित्ता गामं वा जाव रायहाणिं वा णेव सयं अदिच्चं
गिण्हेज्जा; णेव—ण्णेणं अदिच्चं गिण्हावेज्जा; णेव—ण्णेणं अदिण्णं गिण्ह-

अध्ययन सोळमं

अवग्रह—प्रतिमा.

पहेलो उद्देश.

(रहेवानुं मकान केवुं पसंद करवुं.)

‘हुं श्रमण छुं माटे हुं घर, दौलत, पुत्र, परिवार, तथा चतुष्पदादिक
सवे वस्तुनी ममता छोडीने भिक्षावृत्तिथी वीजा पासेयी जे कइ मळ्छे तेनाबडे
निर्वाह करतो थको पापकर्म नहि करीश. आ रीते सावध थइ हुं एवी प्रतिज्ञा
छउं छुं के हे पूज्य, मारे सर्व जातनी वीजाए नहि आपेली वस्तु ग्रहण करवी
नहि.’ [८६८]

आवा प्रतिज्ञावंत मुनिए माघ के शहरमां जइ पेटे जाते, वीजाए नहि
आपेली वस्तु लेवी नहि; वीजाने कहिने लेवराववी नहि, तथा जे लेतो होय तेने

तं समणुजाणेज्जा । जेहि वि सद्धिं संपव्वइए, तेसिंपि वाइं भिक्खू, छ-
त्तयं^१ वा मत्तयं वा दंडगं वा जाव चम्मच्छेदणगं वा, तेसिं पुव्वामेव
उग्गहं अणुण्णविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो गिण्हेज्ज वा पगिण्हे-
ज्ज वा; तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुण्णविय पडिलेहिय पमज्जिय गिण्हे-
ज्ज वा पगिण्हेज्ज वा । [८६९]

से आगंतरेसु वा (४) अणुवीइ उग्गहं जाएज्जाः—जे तत्थ
ईसरे जे तत्थ समाहिट्ठाए, ते उग्गहं अणुण्णवेज्जा, “कामं खलु आ-
उसो, अहालंदं^१ अहापरिणातं^२ वसामो । जाव आउसंतस्स उग्गहे,

१ वर्षाकल्पादि, यदिवा कारणिकः क्वचित् कुंकुणदेशादा वति-
वृष्टि संभवात् छत्रकमपि गृह्णीयात्. [टीका] २ यावन्मात्रं कालं. ३
यावन्मात्रं क्षेत्रं.

भलुं मानवुं नहि किं बहुना जओनी साथे दीक्षा लीधेलीं होय. तेओनां पण छत्र-
क,^१ मात्रक, दंडक, के चर्मछेदनक तेमनी रजा लीधा शिवाय तथा जोया प्रमा-
ज्या शिवाय नहि लेत्रां, किंतु, तेओनी रजा लइ जोइ प्रमार्जीने ते ग्रहण करवां.
[८६९]

मुनिए ज्यारे मुसाफरखाना के घर विगेरे स्थळे पोताने रहेवानीं जग्या
मागवी होय त्यारे पहेलां “आ जग्या मने योग्य छे?” एम विचार करीने पछीं
त्यां जे मालेक के मुखी होय तेओनी आ प्रमाणे रजा लेधीः—“हे आयुण्णन्,
जो आपनी मरजी होय तो जेटला वखत लगी जेटली जरा वापरवा आपशीं
तेटला वखत लगी तेटली जग्यामां अमे रहीशुं. अने ज्यां लगी. हे आयुण्णन्, तमारीं

१ वर्षाकल्प नामनुं कपडुं अथवा कांक्रण विगेरे देशोमां बहु वरसाद होत्रा-
धी कदाच मुनिने ते कारणे छत्र पण राखवुं पडे (टीका)

जाव साहम्मियाए, ताव उग्गहं गिण्हिरसामो, तेणपरं विहारिस्सामो । ”
(८७०)

से किंपुण तत्थो—ग्गहंसि पवोग्गहियंसि ? जे तत्थ साहम्मिया संभोतिया १ समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेण सयमेसियए असणे वा (४) तेण ते साहम्मिया संभोइया उवणिमंतेज्जा; णो चैव णं परवडियाए उ-गिज्झिय उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा । (८७१)

से आमंतारेसु वा (४) जाव से किंपुण तत्थोग्गहंसि पवोग्गहियंसि ; जे तत्थ साहम्मिया अण्णसंभोइया समणुत्ता उवागच्छेज्जा, जे तेणं सयमेसियए पीढे वा फलए वा सेज्जासंधारए वा, तेण ते साहम्मिए अण्णसंभोइए समणुन्ने उवणिमंतेज्जा; णो चैवणं परवडियाए उगिज्झिय उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा । (८७२)

१ एकसामाचारीप्रविष्टाः

परवानगी छे त्यां लगी जेटला अमारा समानधर्मी साधु आवणे तेओ साथे रहीशुं त्यारवाद चाल्या जशुं. ” [८७०]

रहेवानी जग्या मेळव्या बाद त्यां जे सदाचारवंत सांभोगिक (साथे वेशी जमनारा) साधुओ आवे तो तेओने मुनिए पोते लावेला आहारपाणीथी निर्मंत्रित करवा, पण बीजाए लावेला आहारपाणीथी बहु बहु खेंचीने निर्मंत्रण न करवुं. [८७१]

रहेवानी जग्या मेळव्या बाद त्यां जे सदाचारवंत समानधर्मी पण असांभोगिक (साथे नदि जमी शकनार) साधुओ आवे तो तेओने मुनिए पोते लावेला वाजोड, पाट, के शय्याना पाधरणाथी निर्मंत्रित करवा; पण बीजाए लावेलाथी बहु बहु खेंचीने निर्मंत्रण न करवुं. [८७२]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जपुणं उग्गहं जाणेज्जा गाहाइ-
कुलस्स मज्झेमज्झण गंतुं पंथेपडिबद्धं वा, णो पणस्स—जाव से एवं
गच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो उग्गहं उगिण्हेज्ज वा [२] (८७९)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जंपुण उग्गहं जाणेज्जा—इहखलु
गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमणं अक्कोसंति वा—तहेव ते-
ह्हादि—सिणाणादि—सीओदगवियडादि—णगिणादि य—जहा सेज्जाए आ-
लावगा । णवरं उ गहवत्तवता । (८८०)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जंपुण उग्गहं जाणेज्जा आइण्ण-
संलेक्खं णो पणस्स जाव चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो उग्गहं
उगिण्हेज्ज वा [२] (८८१)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स [२] सामगियं । (८८२)



मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थोच्चा समुदायमांथी थइने दाखल
थइ शकतुं होय अने तेना लीधे प्राज्ञ पुरुषने नीकलवा पेशवामां अगवड भरेलुं
होय तेवुं मकान न लेवुं [८७९]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां घरधणी के चाकरडीओ अरसपरस
लढता होय, तेज मुजव ज्यां तैलादिकथी अभ्यंगन करता होय, नहाता होय,
अथवा नम्र थइ रहेता होय तेवा मकानमां रहेवुं नहि. [८८०]

मुनि अथवा आर्याए जे मकान चित्रामणथी भरपूर होय अने तेथी धर्म-
ध्यानने अनुकूल न होय तेवा मकानमां रहेवुं नहि. [८८१]

एज मुनि अथवा आर्याना आचारनी संपूर्णता छे के सर्व वावत्तेमां सावधान
रहेवुं. [८८२]

[द्वितीय उद्देशः]

से आगंतारेसु वा [३] अणुवीइ उग्गहं जाएज्जा—जे तत्थ ईसरे समाहिट्ठाए ते उग्गहं अणुण्णावित्ता, “कामं खलु आउसो, अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो. आउस्संतस्स उग्गहे, जाव साह-मियाए, ताव उग्गहं उग्गिण्हिस्सामो; तेणपरं विहरिस्सामो ” । (८८३)

से किंपुण तत्थ उग्गहंसि पवोग्गाहियांसि? जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा, दंडए वा छत्तए वा जाव चम्मच्छेदणए वा, तं णो अंतोहितो बाहिं णिणेज्जा; बहियाओ वा णो अंतो पवेसेज्जा; णो सुत्तं वा णं पडिबोहेज्जा; णो तेसिं किंचिवि अप्पतियं^१ पडिणीयं करेज्जा । (८८४)

१ मनसःपीडां

बीजो उद्देश.

(रहेवानुं मकन पसंद करवानी रीत तथा ते धावतनी सात प्रतिज्ञाओ)

मुनिए मुसाफरखाना विगेरे स्थळे विमर्ग-पूर्वक^१ अवग्रह (मुकाम) माग-तां ते स्थळना मालेक अथवा मुखीनी आ प्रमाणे रजा लेवी:—“हे आयुष्मन्, जेवुं स्थळ अने जेवी तेना मालेकनी रजा होय ते प्रमाणे असे रहिए छीए. माटे ज्यां सूधी तमो अहीं छो अथवा ज्यां लगीं तमारी रजा छे त्यां लगीं अने जेटल्या अमारा संघाती आवशे ते प्रमाणे अवग्रह (मुकाम) लेशुं; त्यार वाद चाल्या जशुं.” [८८३]

अवग्रह (मुकाम) लींघा वाद शुं करवुं? त्यां जे श्रमगो के ब्राह्मणोना दंड, छत्र, के चम्मच्छेदक शस्त्र पड्यां होय ते अंदरधी वाहेर न लाववां; वाहे-रधी अंदर न मोकलवां; तेओ सूतेला होय तो तेमने जगाडवा नहि; तथा तेमने कंड अणुगमतुं के प्रतिकूल नहि करवुं. [८८४]

१ निश्चयपूर्वक Having reflected on his fitness.

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जपुणं उग्गहं जाणेज्जा गाहाइ-
कुलस्स मज्झेमज्झण गंतुं पंथेपडिबद्धं वा, णो पणस्स—जाव से एवं
णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो उग्गहं उगिण्हेज्ज वा [२] (८७९)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जांपुण उग्गहं जाणेज्जा—इहखलु
गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमणं अक्कोसंति वा—तहेव ते-
ल्लादि—सिणाणादि—सीओदुगवियडादि—णगिणादि य—जहा सेज्जाए आ-
लावगा । णवरं उ गहवत्तवता । (८८०)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्जांपुण उग्गहं जाणेज्जा आइण्ण-
संलेक्खं णो पणस्स जाव चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो उग्गहं
उगिण्हेज्ज वा [२] (८८१)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स [२] सामग्गियं । (८८२)



मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थोना समुदायमांथी थइने दाखल
थइ शकातुं होय अने तेना लीधे प्राज्ञ पुरुषने नीकलवा पेशवामां अगवड भरेलुं
होय तेवुं मकान न लेवुं [८७९]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां घरधणी के चाकरडीओ अरसपरस
लढता होय, तेज मुजव ज्यां तैलादिकथी अभ्यंगन करता होय, नहाता होय,
अथवा नम्र थइ रहेता होय तेवा मकानमां रहेवुं नहि. [८८०]

मुनि अथवा आर्याए जे मकान चित्रामणथी भरपूर होय अने नेथी धर्म-
ध्यानने अनुकूल न होय तेवा मकानमां रहेवुं नहि. [८८१]

एज मुनि अथवा आर्याना आचारनी संपूर्णता छे के सर्व वावत्तेमां सावधान
रहेवुं. [८८२]

[द्वितीय उद्देशः]

से आगंतारेसु वा [३] अणुवीइ उग्गहं जाएज्जा—जे तत्थ ईसरें समाहिट्ठाए ते उग्गहं अणुण्णावित्ता, “कामं खलु आउसो, अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो. आउस्संतस्स उग्गहे, जाव साहम्मियाए, ताव उग्गहं उग्गिण्हिस्सामो; तेणपरं विहरिस्सामो ” । (८८३)

से किंपुण तत्थ उग्गहंसि पवोग्गहियांसि? जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा, दंडए वा छत्तए वा जाव चम्मच्छेदणए वा, तं णो अंतोहितो बाहिं णीणेज्जा; बहियाओ वा णो अंतो पवोसैज्जा; णो सुत्तं वा णं पडिबोहेज्जा; णो तेसिं किंचिवि अप्पतियं^१ पडिणीयं करेज्जा । (८८४)

१ मनसःपीडां

बीजो उद्देश.

(रहेवानुं मकन पसंद करवानी रीत तथा ते वावतनी सात प्रतिज्ञाओ)

मुनिए मुसाफरखाना विगेरे स्थळे विमर्श—पूर्वक^१ अवग्रह (मुकाम) मागतां ते स्थळना मालेक अथवा मुखीनी आ प्रमाणे रजा लेवी:—“हे आयुष्मन्, जेवुं स्थळ अने जेवी तेना मालेकनी रजा होय ते प्रमाणे अमे रहिए छीए. माटे ज्यां सूधी तमो अहीं छो अथवा ज्यां लगी तमारी रजा छे त्यां लगी अने जेटला अमारा संघाती आवशे ते प्रमाणे अवग्रह (मुकाम) लेशुं; त्पार वाद चाल्या जशुं.” [८८३]

अवग्रह (मुकाम) लीधा वाद शुं करवुं? त्यां जे श्रमगो के ब्राह्मणोना दंड, छत्र, के चम्मच्छेदक शस्त्र पडयां होय ते अंदरथी बाहेर न लाववां; बाहेरथी अंदर न भोकलवां; तेओ सूतेला होय तो तेमने जगाडवा नहि; तथा तेमने कंड अणगमतुं के प्रतिकूल नहि करवुं. [८८४]

१ निश्चयपूर्वक Having reflected on his fitness.

से भिक्खू वा [२] अभिकंखेज्जा अंबवणं उवागि छत्तएः जे तत्थ ईसरे जे तत्थ समाहिट्ठाए, ते उग्गहं अणुजाणावेज्जा “ कामंखलु जाव विहरिस्सामो ” (८८५)

ते किंपुण तत्थोग्गहांसि पवोग्गहियंमि? अह भिक्खू इच्छेज्जा अंबं भोत्तए वा, से ज्जं पुण अंबं जाणेज्जा सअंडं ज्जं संसताणं तहप्प-गारं अंबं अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा । (८८६)

से भिक्खू वा [२] सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा अप्पंडं जाव संता-णं अतिरिच्छच्छिण्णं अवोच्छिणं अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा । (८८७)

से भिक्खू वा [२] सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा अप्पंडं जाव संता-णं तिरिच्छच्छिण्णं वोच्छिणं फासुयं जाव पडिगाहेज्जा । (८८८)

साधु अथवा साध्वीए आंवाना वनमां (मुकाम लेवा) जतां तेना मालेक के मुखीनी पण उपर मुजवज रजा लेवी. [८८५]

आंवाना वनमां मुकाम लीया वादं गुं करवुं? त्यां जो साधु आंवाना फळ खावा इच्छे तो जे आंवानुं फळ (केरी) इंडा तथा कीडीओथी भरेलुं होय तेवुं अयोग्य फळ नहि लेवुं. [८८६] *

साधु अथवा साध्वीए जे आंवानुं फळ इंडा तथा कीडीओथी रहित छतां कोपेलुं के कटका पाडेलुं न होय ते अयोग्य जाणी लेवुं नहि. [८८७] *

साधु अथवा साध्वीए जे आंवानुं फळ इंडा तथा कीडीओथी रहित छतां आडुं अवळुं कोपेलुं होय के तेना जूदा जूदा कटका करेला होय तेवुं फळ योग्य जाणीने लेवुं. [८८८] *

१. कारणयोगे टिका. * कलम ८८५ थी ८९९ सुत्री आंवा गेलडी वसण वीरे ज्जां आवे त्यां ते अचित्त होय तोज वापरवानो भावार्थ छे.

से भिक्खू वा [२] अभिकंखेज्जा अंबभित्तय^१ वा अंबपोसि^२ वा अंबचोयगं^३ वा अंबसालगं^४ वा अंबदालगं^५ वा, भोत्तए वा पायए वा सेज्जं पुण जाणेज्जा अंबभित्तगं वा जाव अंबदालगं वा सअंडं जाव संताणं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । (८८९)

से भिक्खू वा (२) सेज्जं पुण जाणेज्जा अंबभित्तगं वा अप्पंडं जाव संताणं अतिरिच्छच्छिण्णं वा अवोच्छिण्णं वा अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । (८९०)

से भिक्खू वा (२) सेज्जं पुण जाणेज्जा अंबभित्तगं वा अप्पंडं जाव संताणं तिरिच्छच्छिण्णं वोच्छिण्णं फासुयं जाव पडिग्गाहेज्जा । (८९१)

१ आम्राद्धं २ आम्रफालीं ३ आमृच्छुं ४ रसं ५ सूक्ष्म-
खंडानि.

सायु अथवा साध्वीए आंवाना फळना अर्धकटका, अथवा फाळ, अथवा छाल, अथवा रस, अथवा झीणा कटका खावा पीवाना होय तो जे कटका विगेरे इंडां के कीडीओथी भरेला होय ते अयोग्य जाणीने नहि ले । [८८९]

सायु अथवा साध्वीए आंवाना फळना अर्ध कटका विगेरे, इंडां के कीडी-ओथी रहित छतां आडा अवळा कापेला के छूटा पाडेला न होय तो अयोग्य जाणी नहि लेवां. [८९०]

किंतु जो ते आंवाना अर्ध कटका विगेरे, इंडां के कीडीओथी रहित छतां कापेला कूपेला के छूटा पाडेला होय तो लेवां. [८९१]

से भिक्खू वा (२) अभिकंखेज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्तए; जे तत्थ ईसरे, जाव, उग्गहंसि । (८९२)

अह भिक्खू इच्छेज्जा उच्छुं भोत्तए वा पायए वा, से ज्जं उच्छु जाणेज्जा सअंडं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । अतिरिच्छच्छिण्णं तहेव । ति-रिच्छच्छिण्णं तहेव । (८९३)

से भिक्खू वा (२) सेज्जं पुण अभिकंखेज्जा अंतरुच्छुयं^१ वा, उच्छुगांडियं वा, उच्छुचोयगं वा, उच्छुसालगं वा, उच्छुदालगं वा, सअंडं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । [८९४]

से भिक्खू वा [२] से ज्जं पुण जाणेज्जा अंतरुच्छुयं वा जाव डालगं वा सअंडं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । [८९५]

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण जाणेज्जा अंतरुच्छुयं वा जाव डालगं वा अप्पंडं जाव णो पडिग्गाहेज्जा अतिरिच्छच्छिण्णं । (८९६)

तिरिच्छच्छिण्णं तहेव पडिग्गाहेज्जा । [८९७]

१ पर्वमव्यं ।

साधु अथवा साध्वीए सेलडीना वनमां मुकाम वरतां तेना मालेक के सु-खीनी रजा लइ रहेवुं. [८९७] *

त्यां-जो सेलडी साधुने खावी पीवी पडे तो जे सेलडी इंडां के कीडीओ-थी भरेली होय के कापेली कूपेली न होय ते नहि लेवीं किंतु इंडां-कीडिओथी रहित छतां कापेली के छूटी पाडेली होय ते लेवीं. [८९३] *

एज मुजव सेलडीनी गांठो, गंडेरी, फालियां, रस, के कटका पण इंडां-कीडीवाळां के कापकूप विनाना होय ते न लेवां [८९४-८९५-८९६]

किंतु इंडां कीडीओथी रहित छतां कापेलां कूपेलां होय ते लेवां. [८९७]

* जुओ फुटनोट कलम ८८५ नीं.

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणवणं उवागच्छित्त
ए । तिण्णिआलावगा तहेव । णवरं ल्हसुणं । (८९८)

से भिक्खु वा [२] अभिकंखेज्जा ल्हसुणं वा, ल्हसुणकंदं वा,
ल्हसुणत्रोयमं वा, ल्हसुणणालग वा, भोत्तरु वा पायए वा, से ज्जं पुण
जागेज्जा ल्हसुणं वा, जाव, ल्हसुण बीयं वा सअंडं जाव णो पडिगाहेज्जा
। एवं अतिरिच्छच्छिण्णेवि । तिरिच्छच्छिणे पडिगाहेज्जा १ । (८९९)

से भिक्खु वा [२] आगंतारेसु वा [४] जाव; उग्गाहियंसि, जे
तत्थ गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिम्म २ ।
९००)

अह भिक्खु जाणेज्जा इमाहिं सत्तहिं पडिमाहिं उग्गहं उगिण्हित्तए
। [९०१]

१ आम्रादिसूत्राणा मवकाशो निशीथषोडशोद्देशका दवगंतव्यः

२ अवग्रहंगृहीतुं जानीयादितिशेषः

सायु अथवा साध्वीए लसणना वनमां जतां पण एज मुजव वर्त्तवुं
[८९८] *

सायु अथवा साध्वीए लसण, लसणनुं कंद, लसणनी फाळ, के लसणनी
नाळ खावा पीवा इच्छतां ते जो इडां-कीडीओथी भरेलां के कापकूप वगरनां
होय तो न लेवां किंतु इडां-कीडीओथी रहित छतां कापेला कूपेला होय तो लेवां.
[८९९] *

सायु अथवा साध्वीए मुशाफरशाळा विगेरे स्थळोमां निवास कर्या वाद
त्यां गृहस्थोनी कर्मजनक प्रवृत्तिथी दूर रही वर्त्तवुं [९००]

पहेली प्रतिज्ञाः-मुशाफरखाना विगेरे स्थळोमां मुकाम मागी तेना मालेकनी
रजा लगी रहीशुं. ए पहेली प्रतिज्ञा. [९०१]

तत्थ खलु इमा पढमापडिमाः—से आगंतारेसु वा [४] अणुवीइ उग्गहं जाएज्जा, जाव, विहरिस्सामो । पढमा पडिमा । (९०२)

अहावरा दोच्चा पडिमा ^१ :—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति, “अहं च खलु अण्णैसिं भिक्खूणं अट्ठाए उग्गहं गिण्हिस्सामि; अण्णैसिं भिक्खूणं उग्गहिए उग्गहे उवत्थिस्सामि ” । दोच्चा पडिमा । (९०३)

अहावरा तच्चा पडिमा ^२ :—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति, “ अहं

१ द्वितीया प्रतिमा सामान्येन इयंतुगच्छांतर्गतानां संभोगिकाना मसंभोगिकानां चोद्युक्तविहारिणां. यत स्तेन्योन्यार्थं याचंत इति. २ तृतीया—एषा त्वाहालंदिकानां यतस्ते सूत्रार्थावशेष माचार्यादभिकांक्षंते, आचार्यार्थं याचंते

वीजी प्रतिज्ञाः^१—कोइ साधु एवो ठराव करे के “ हुं वीजा साधुओने माटे अवग्रह मागीश. अने वीजाओए लीधेला अवग्रहमां रहीश. ” ए वीजी प्रतिज्ञा. [९०३]

त्रीजा प्रतिज्ञाः^२—कोइ साधु एवो ठराव करे के “ हुं वीजा साधुओना अर्थे अवग्रह (मुकाम) लइश; पण वीजाओना लीधेला अवग्रहमां रहीश नहि. “ ए त्रीजी प्रतिज्ञा. [९०४]

चोथी प्रतिज्ञाः^३—कोइ साधु एवो ठराव करे के “ हुं वीजा माटे अवग्रह

१ वीजी प्रतिज्ञा; गच्छमां रहेल सांभोगिक या असांभोगिक उद्युक्त विहारवाळाने होय; कारण के तेओ एक वीजा माटे मागे छे. जुओ फुटनोट कलम ८५५ नी

२ त्रीजी प्रतिज्ञा, अहालंदिक मुनिने होय; जे माटे तेओ सूत्रार्थनो अवशेष आचार्य पासेथी चाहे छे तेमज आचार्य माटे याचे छे.

३ चोथी प्रतिज्ञा, गच्छमां रहेला अभ्युद्यत विहारि मुनिओ जेओ जिन-कल्पीआदिकना माटे तैयारी करता होय तेमजे होय.

च खलु अण्णोसिं भिक्खूणं अट्टाए उग्गहं गिण्हिस्सामि; अण्णोसिं च उग्ग-
हिए उग्गहे णो उवल्लिस्सामि । तच्चा पडिमा । (९०४)

अहावरा चउत्था पडिमा^१:—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति, “अ-
हं च खलु अण्णोसिं भिक्खूणं अट्टाए उग्गहं णो उगिण्हिस्सामि; अण्णोसिं
च उग्गहे उग्गाहिए उवल्लिस्सामि ।” चउत्था पडिमा । (९०५)

अहावरा पंचमा पडिमा^२:—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति “अ-
हं च खलु अप्पणो अट्टाए उग्गहं उगिण्हिस्सामि, णो दोण्हं, णो तिण्हं,
णो चउण्हं, णो पंचण्हं । पंचमा पडिमा. । (९०६)

अहावरा छट्ठा पडिमा^३:—से भिक्खू वा (३) जस्सेव उग्गहे

१ चतुर्थी, इयंतु गच्छएवाभ्युद्यतत्रिहारिणां जिनकल्पाद्यर्थं परिकर्म
कुर्वतां. २ पंचमी—इयंतु जिनकल्पिकस्य. ३ षष्ठी, एषापि जिनकल्पि-
कादे:

नहि लइश; पण वीजाओना लीधेला अवग्रहमां रहीश. ” ए चोथी प्रतिज्ञा.
[९०५]

* मुनिए अवग्रह (मुकाय) लेतां आए सात प्रतिज्ञाओ जाणवी जोइए:-
[९०१]

पांचमी प्रतिज्ञा^१:—कोइ साधु अथवा साध्वी एवो ठराव करे के “हुं फक्त
मारा माटेज अवग्रह लइश; शिवाय वे, त्रण, चार, के पांचना माटे नहि लइश.”
ए पांचमी प्रतिज्ञा. [९०६]

छट्टी प्रतिज्ञा^२:—कोइ साधु अथवा साध्वी कोइना अवग्रहमां रही जो

१ पांचमी जिनकल्पिने होय.

२ छट्टी जिनकल्पि विगेरेने होय.

* ३२७ मा पानामां ९०? कलमंतु भापांतर रही जवाथी अही दाखल
करेळुं छे. माटे वांचनारे तेनो संबंघ मेळवी लेवो.

उवल्लिएज्जा, जे तत्थ अहासमग्गागते, तंजहा, इक्कडे जाव पलाले वा, तस्स लाभे संबसेज्जा; तस्स अलाभे उक्कुडुए वा णेसज्जिए वा विहरेज्जा । उट्ठु पाडिमा । (९०७)

सत्तमा पाडिमा;—त्ते भिक्खू वा [२] अहासंथडमेव उग्गहं जा-
एज्जा; तंजहा, पुढविसिलं वा, फडसिलं वा, अहासथडमेव, तस्स लाभे
संबसेज्जा; तस्स अलाभे उक्कुडुओ वा णेसज्जिओ वा विहरेज्जा । स-
त्तमा पाडिमा । (९०८)

इच्छेतासिं सत्तर्हं पडिमाणं अण्णपरं, जहा पिंडेसणाए ।
९०९)

सुयं मे आउसं, तणं भगवया एव मक्खायं; इह खलु थेरोहिं
भगवंतेहिं पंचविहे उग्गहे पण्णत्ते;—तंजहा, देविंदोग्गहे, रायोग्गहे, गा-

त्यांज इक्कडे के पराळ^१ विगेरे शय्या मळे तो सुए; नहि तो उत्कडुक आसने
अथवा बेशीने रात्रि कहाडे. ए छठी प्रतिज्ञा. [९०७]

सातमी प्रतिज्ञा;—साधु अथवा साध्वी अमुक प्रकारनोज अवग्रह मागे,
जेवो के, पत्थरना तळवाळो या, काष्टना तळवाळो विगेरे, अने तेवोज जो
मळे तो त्यां सुए, नहिं. तो बीजी तरेह्णो मळतां उत्कडुक आसने अथवा
बेशीने रात्रि कहाडे ए सातमी प्रतिज्ञा. [९०८]

ए सात प्रतिज्ञाओमांथी गमे ते प्रतिज्ञाथी वर्तवुं. सा स्थळे आत्तोत्कर्ष-
वर्जनादिक पिंडैषणा मुजव जाणवो. [९०९]

हे आशुष्मन्, में सांभळ्युं छे: ते भगवाने आ रीते कहुं छे—स्यविर भग-
वंतोए पांच प्रकारनो अवग्रह कह्यो छे, जेमके,—देवेंद्रनो अवग्रह, राजानो^२ अव-

१ जव, गहं विगेरेतुं पराळ.

२ राज शब्दे चक्रवर्ति राजा इहां लेवो.

हावइउग्गहे, सागारियउग्गहे, साहम्मियउग्गहे । (९१०)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स [२] सामग्गियं ९११)

[प्रथमा चूला समाप्ता]

ग्रह, गाथापतिनो^१ अवग्रह, सागारिकनो^२ अवग्रह, साधम्मिकनो अवग्रह, (९१०)

एज वधी साधु अथवा साध्वीना आचारनी संपूर्णता छे के तर्ब वावतम
ब्रजवीजथी रहेवुं. [९११]

(पहेली चूला पूर्ण धइ)

१ गाथापति शब्दे जे जग्यानो राजा होय छे सेनो. २ सागारिक
शब्दथी पहस्य सेनो.

द्वितीया चूला

स्थाननाम सप्तदश मध्ययनम्.

(एकदेशं)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेइ ठाणं ठाइत्तए; से अणुपविसेज्जा गामं वा, णगरं वा, जाव सण्णिवेसं वा । से अणुपविसित्ता गामं वा, जाव सण्णिवेसं वा, से ज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा सअंडं जाव समक्कडासंताणयं, तं तहप्पगारं ठाणं अफासुयं अणेसणिज्जं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । एवं सेज्जागभेणं पेयव्वं । जाव उदयपसूयाइत्ति ।

[११२]

बीजी चूलीका.

अध्ययन सत्तरम्.

स्थान.

पहेलो उदेश.

(उभा रहेवा भाटे जग्या केवी पसंद करवी ?)

सायु अथवा साध्वीए उभा रहेवा भाटेनी जग्या मेळवया सारु गाम नगर के सन्निवेशमां जतां जे स्थान इंडां-मकोडी विगेरियां भरेलुं जणाथ तेहुं स्थान मळतां छतां अयोग्य गणी नहीं लेहुं ए रीते सघळुं शक्याध्ययन माफक जाणवुं. यावत् जे स्थान पाणीची पेदा थतां कंदादिकथी व्याप्त होय तेहुं स्थान पण नहिं होवुं. [११२]

इच्छेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म अह भिक्खू इच्छेज्जा चउहिं
पडिमाहिं ठाणं ठाइत्तए । (११३)

तत्थिमा पढमा पडिमा:—“ अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा; अवलंबे
ज्जा काएण, विपरिकम्मादी १; सवियारं २ ठाणं ठाइस्सामि ” । पढमा
पडिमा. (११४)

अहावरा दोच्चा पडिमा:—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा; अवलंबे—
ज्जा काएण । विपरिकम्माइ; णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि । दोच्चा
पडिमा । (११५)

अहावरा तच्चा पडिमा:—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा; अवलंबेज्जा णो
काएण; विपरिकम्माइ; णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि ति । तच्चा
पडिमा । (११६)

१ आकुंचनप्रसारणादि २ पादविहरणं.

ए उपर वतावेला कर्मजनक स्थानोथी दूर रही साधुए चार प्रतिज्ञाओथी
उथा रहेवानुं सुकरर करवुं. [११३]

त्यां पहेली प्रतिज्ञा आ प्रमाणे:—अचित्त स्थळमां रहेवुं अचित्त वस्तुनुं अ-
वलंबन करवुं, हाथ पगनुं आकुंचन-प्रसारण करवुं, तथा थोडुं फरवानुं राखवुं.
ए पहेली प्रतिज्ञा. [११४]

दीजी प्रतिज्ञा:—अचित्त स्थळमां रहेवुं; अचित्त वस्तुनुं अवलंबन करवुं;
हाथ पगनुं आकुंचन-प्रसारण करवुं; किंतु फरवानुं बंध राखवुं. ए दीजी प्रतिज्ञा
[११५]

त्रीजी प्रतिज्ञा:—अचित्त स्थळमां रहेवुं; अवलंबन कंठ पण न करवुं; हीय
पगनुं आकुंचन-प्रसारण करवुं; अने फरवानुं बंध राखवुं. ए त्रीजी प्रतिज्ञा.
[११६]

अहावरा चउत्था पडिमाः—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा, णो अवलंबेज्जा काएण, णो विपरिकम्मादी, णो सविचारं ठाणं ठाइस्सामि, वोसट्ठकाए वोसट्ठकेसमंसुलोमणहे संगिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामि त्ति; चउत्था पडिमा । (९१७)

इच्चेयासिं चउण्हं पडिमाणं जाव पग्गहियतरायं विहरेज्जा । णो तत्थ किंचिवि वदेज्जा । (९१८)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव जएज्जासि त्ति बेमि । (९१९)

ठाप्पसच्छिक्कयं समत्तं पढमं.

चोथी प्रतिज्ञाः—अचित्तं स्थळमां न रहेवुं, अचित्तं वस्तुवुं पण अवलंबनं न करवुं, हाय पगवुं आकुंचनं के प्रसारणं न करवुं, तेमज्ज हरवुं फरवुं पण नहि; किंतु शरीरं तथा केशं, स्तंशु, १ लोमं २ अने नखेने (मुकरं वलतं सुधीं) वोसरात्रीने एट्ठे के मारा नर्या एयं गणीने निःप्रकपपणं रहेवुं, ए चोथी प्रतिज्ञा. [९१७]

ए चार प्रतिज्ञाओयांथी गमे ते प्रतिज्ञा धारीने वर्त्तवुं—कदाच कोइ ए प्रतिज्ञाओं नहि धारे तेनो अदर्षणादं न करवो. [९१८]

ए-सुषकी सायु तथा साध्वीना आचरनीं संपूर्णत्वां छे के तेमणे सर्वं वा-पतोमां सावधानपणे वर्त्तवुं. [९१९]

१ दादी Beard २ रूवाडा कं इत्यां चाल्या विना perfectly no tion

निषीधिका^१ नामक स्रष्टादश मध्ययनम्.

[एकोद्देशं]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा णिसीहियं गमणाए; से पुण णिसीहियं जाणेज्जा सअंडं सपाणं जाव मक्कडासंताणयं, तहप्पगारं णिसीहियं अणेसणिज्जां लाभे संते णो चेतिस्सामि । [९२०]

से भिक्खू वा (२) अभिक्खइ णिसीहियं गमणाए से जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा अप्पंडं अप्पपाणं जाव मक्कडासंताणयं, तहप्पगारं णिसीहियं फासुयं एसणिज्जं लाभे संते चेतिस्सामि एवं सेज्जागमेणं णेयच्चं जाव उदयपसूयाए ति । [९२१]

१ स्वाध्याय भूमिः

अध्ययन अटारमुं.

निषीधिका,^१

पहेलो उद्देश.

(अभ्यास करवा माटे जग्या केवी पसंद करवी ?)

साधु अथवा साध्वीए स्वाध्याय करवा माटे [पोतानो उपाश्रय छोडी] वीजी जग्याए जतां ते जग्या जीवजंतुवाळी जणाय तो मळतां छतां अयोग्य गणी नहि लेवी. [९२०]

साधु अथवा साध्वीए स्वाध्याय करवा माटे (पोतानो उपाश्रय छोडी) वीजी जग्याए जतां ते जग्या जीवजंतुथी रहित जणाय ने ते मळे तो योग्य जाणाने लेवी. ए रीते सगळी विना शक्या नामना अध्ययनना मुजब लेवी. (९२१)

? अभ्यास करवा माटे वीजी जग्या.

जे तत्थ दुवग्गा वा, तिवग्गा वा, चउवग्गा वा, पंचवग्गा वा, अभिसंधारेइ णिसीहियं गमणाए, ते णो अण्णमण्णस्स कायं आलिंगेज्ज वा विलिंगेज्ज वा चुंबेज्ज वा दंतेहिं वा णहेहिं वा अच्छिंदेज्ज वा ।

[९२२]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामगियं जं सवहेहिं सहिए समिए सदा जएज्जा सेयमिणं मण्णेज्जासित्ति वेमि. [९२३]

(णिसीहियासत्तिकयं समत्तं विइयं)

जो त्यां ववे, त्रण त्रण, चार चार, के पांच पांच साधुओ तेवी स्वाध्याय भूमिमां जाय तो त्यां तेमणे एक वीजाना शरीरने आलिंगन के स्पर्श अथवा दंत के नखथी छेदन नहिं करवुं. [९२२]

ए सघळी साधु तथा साध्वीना आचारनी संपूर्णता छे के तेमणे सर्व घा-
वतोमां सावधान रही हमेशा उग्रमवंत थइ रहेवुं. अने एज कल्याण कर्ता छे एम
मानवुं. [९२३]

उच्चार-प्रश्रवणं नाम एकोनविंश मध्ययनम्

[एकोदेशं]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चारपासवणकिरियाए उच्चाहिज्ज-
भाणे सयस्स पायपुंच्छणस्स १ असतीए तओ पच्छा साहम्मियं जाए-
ज्जा । (९२४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण थंडिलं जागेज्जा सअंडं
सपाणं जाव मक्कडासंताणयं, तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं
वोसिरेज्जा । (९२५)

१ पादपुच्छेनं समाध्यादिकमिति.

अध्ययन ओगणीशमुं.

उच्चार प्रश्रवण. १

पहेलो उदेश.

(स्थंडिल माटे कैवी जग्ग्या पसंद करवी?)

साधु अथवा साध्वीए खरचुपाणीनी पीडा यतां पोतानां मात्रकमां २ ते
कादां; पण जो पोतपासे मात्रक न होय तो पछी वीजा साधुना पासेथी मागी
छइ नेमां करवां. [९२४]

साधु अथवा साध्वीए जे जग्ग्या जीव जहुंवाळी जगाय त्यां खरचुपाणी
करवां नहि. [९२५]

१ खरचुपाणी—झाडो पेगाव, २ झाडो पेगाव करवां माटे राखेलुं भाज-
न-सरावेलुं (Broom-Jacobi)

से भिक्खू वा [२] से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा अप्पपाणं अप्पवीर्यं जाव मक्कडासंताणयं, तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा । (९२६)

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा:—अरिंसपडियाए एगं साहम्मियं समुद्धिस्स, अरिंसपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्धिस्स, अरिंसपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्धिस्स, अरिंसपडियाए बहवे समणमाहण वणीमगा पगाणिय पगाणिय समुद्धिस्स पाणाइं (४) जाव उद्देसियं चेतति, तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं जाव बहिया णीहडं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा । (९२७)

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा बहवे समणमाहण—किवण—वणीमग—अतिही समुद्धिस्स पाणाइं (४) जाव उद्देसि-

साधु अथवा साध्वीए जे जग्या निर्जीवने निर्जीज जणाय त्यां खरचुपाणी करवां. [९२६]

साधु अथवा साध्वीने जे जग्या एवी जणाय के आ जग्या एक अमुक साधुना माटे वनावेली छे या एक अमुक साध्वीना माटे वनावेली छे या घणी साध्वीओना माटे वनावेली छे अथवा घणा श्रमण ब्राह्मण के भीखारीओमांनार दरेकना माटे पृथक् पृथक् ठेरावी ठेरावीने घणा जीव जंतुनी हिंसा पूर्वक वनाववामां आवी छे, ए रीते जे जग्या औद्देशिकदोषदुष्ट जणाय तेवी जग्या पुरुषांतरस्वीकृत अथवा अस्वीकृत छतां तेमां तेमणे खरचुपाणी करवां नहि. [९२७]

साधु अथवा साध्वीए जे जग्या घणा श्रमण, ब्राह्मण, कृपण, भिखारी, तथा मुसाफरोना माटे सामान्यपणे करवामां आवेली जणाय, तेवी जग्या अपुरु-

१ आधा कर्मीं दोषथी दुपित-साधु माटे नीपजावेळ.

यं चेत्येति, तहप्पगारं थंडिलं अपुरिसंतरकडं जाव बहिया अणीहडं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि ^१ थंडिलंसि णो उच्चरपासवणं वोसिरेज्जा । [१२८]

अह पुण एवं जाणेज्जा पुरिसंतरकडं जाव बहियाणीहडं वा, अण्णयरंसि तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चरपासवणं वोसिरेज्जा । (१२९)

से भिक्खू वा [२] से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा अरिसपडिया-ए कयं वा, कारियं वा, पामिच्चियं वा, छण्णं वा, घट्टं वा, लित्तं वा, मट्टं वा, सपधूवित्तं वा, अण्णयरंसि तहप्पगारंसि ^२ थंडिलंसि णो उच्चरपासवणं वोसिरेज्जा । (१३०)

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा गाहावइ पुत्ता वा, कंदाणि वा मूलाणि वा जाव हरियाणि वा अंतातो बाहिं णीहरित्तं, बाहाओ वा अंतो साहरन्ति, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चरपासवणं वोसिरेज्जा । [१३१]

१ यावंतिके २ उत्तरगुणाशुद्धे

पांतरकूठ अथवा वगर वपराएल होतां तेमां खरच्चुपाणी करवां नहि. [१२८]

पण जो तेवी जग्ग्या पुरुपांतरकूठ अथवा वपरायेल जणाय तो तेमां खर-चुपाणी करवां. [१२९]

साधु अथवा साध्वीए, जे जग्ग्या तेयना माटे ज करेली होय या करावेली होय, या भाडे राखेली होय, या छजावेली होय, या समरावेली होय, या लीपावेली होय, या टेकरी भांगी सरखी करावेली होय, या धुप आपीने मुगंधित करेली होय तेवी जग्ग्यामां खरच्चुपाणी करवां नहि. [१३०]

साधु अथवा साध्वीने जे जग्ग्या एवी जणाय के आ जग्ग्यामां गृहस्थो के गृहस्थोना पुत्रो कंद मूळ बीज के लीलेनरी अंदरथी बाटेर लावे छे या बाटेर.. अंदर लावे छे, तेवी जग्ग्यामां तेमणे खरच्चुपाणी करवां नहि. (१३१)

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—खंधंसि वा पीढंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, अटंसि वा, पाशयंसि वा,—अण्णयरंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणे वोसिरेज्जा । (९३२)

से भिक्खू वा [२] सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा अणंतं रहियाए पुढवीए, ससणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए पुढवीए, मट्टियामक्कडाए, चित्तमंताए, सिलाए चित्तमंताए, लेलुए चित्तमंताए, कोलावासांसि^१ वा दारुयंसि वा, जीवपइट्टियंसि वा, जात्र मक्कडासंतोणयंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा । (९३३)

से भिक्खू वा [२] सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा गाहावइपुत्ता वा, कंदाणी वा जात्र बीयाणि वा परिसाडेंसु वा परिसाडेंति वा परिसाडिस्संति वा—अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणे वोसिरेज्जा । (९३४)

१ घुणवासे.

साधु अथवा साध्वीए धांभला, वाजोठ, मांचा, माळ, अगासी, मासाद के तेवी जातना जग्याओपर खरचुपाणी करवां नहि. [९३२]

साधु अथवा आर्याए सचित्तमाटीवाळी जमीनमां, लीलीपाटीवाळी जमीनमा काची माटीवाळी जमीनमां, सचित्तशिळामां, सचित्तपत्थरमां, फीडावाळा लाकडापर अथवा एवी जातना जीव जंतुसाहित स्थळमां खरचुपाणी नहि करवां. [९३३]

साधु अथवा साध्वीए जे जग्यामां गृहस्थ के गृहस्थपुत्रोए कंद, मूळ, के धाज भरीं हतां या भरे छे या भरले तेवी जातना स्थळमां खरचुपाणी नहि करवां. [९३४]

से भिक्खू वा (२) सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा—इहखलु गाहावइ गाहाहावइपुत्ता वा, सालीणि वा, वीहीणि वा, मुग्गाणि वा, मासाणि वा, कुलत्थाणि, जवाणि वा, जवजवाणि वा, पतिरिसु^१ वा पतिरिति^२ वा पतिरिस्संति^३ वा—अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा । (९३५)

से भिक्खू वा [२] सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा—आमोयाणि^४ वा घसाणि^५ वा, भिलुपाणि^६ वा, विज्जुलाणि^७ वा, खाणुयाणि वा, कडयाणि वा,^८ पगडाणि^९ वा, दरीणि वा, पदुग्गाणि^{१०} वा, समाणि वा विसमाणि वा—अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा । [९३६]

१ उत्सवंतः २ वपति ३ वप्स्यंति. ४ आमोकानि कचत्ररपुज्जाः
५ घसा वृहत्योभूमिराजयः ६ श्लक्षणाभूमिराजयः ७ पिच्छलानि ८ इक्षु
योतिकादिदंडकः ९ प्रगर्त्ता महागर्त्ता १० कुडयप्राकारादीनि.

साधु अथवा साध्वीए जे स्थळमां गृहस्थ या गृहस्थपुत्रोए भात, जव, मग, अडद, कुलत्थी^१, जव, तथा जवजव घाव्या होय चावता होय के वाववांना होय तेवा स्थळे खरजुपाणी नहि करवां. [९३५]

साधु अथवा साध्वीए, कचराना ढगलामां, वडु फाटेली जमीनमा, थोडी फाटेली जमीनमां, कादवमां, ज्यां थंभलाओ होय त्यां, ज्यां सेलडी के जारना सांघा पड्या होय त्यां गर्त्ताओमां, २ गुफाआमां, अथवा कोदकिल्लामां तेओ सपाट या खरवचडा छतां त्यां खरजुपाणी नहि करवां. [९३६]

१ कळथी कठोळनी जात २ खाडावाळी जग्याओ.

पंकायपणेसु वा उग्घाययणेसु वा सेयणवहांसि वा—अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा । (९४३)

से भिक्खू वा [२] सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा—णवियासु वा मट्टियखाणियासु, णवियासु वा गोप्पलेहियासु गवादणीसु वा, खणीसु वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा । (९४४)

से भिक्खू वा सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा:—डागवच्चांसि वा, सागवच्चांसि वा, मूलगवच्चांसि वा, हत्थंकरवच्चंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा । (९४५)

से भिक्खू वा [२] सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा—असणवणांसि वा, सणवणांसि वा, धायईवणांसि वा, केयईवणांसि वा, अंबवणांसि वा, असो-गवणांसि वा, णागवणांसि वा, पुण्णागवणांसि वा, चुण्णागवणांसि वा, अण्णयेरेसु वा तहप्पगारेसु पत्तोवएसु वा, पुप्फोवएसु वा, फलोवएसु वा, बीओवएसु वा, हरिओवएसु वा, णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा । [९४६]

१ डालप्रधानशाकं तद्वति.

वंशपरंपरायी चालता आवेला पूजनीय स्थळोमां, के पाणी सींचवानी नीक विगेरे स्थळोमां खरचु पाणी नहि करवां [९४७]

साधु अथवा साध्वीए माटीनी नवी खाणोमां, गायोने घरवाना नवा गौ-चर स्थळोमां, के खाणोमां खरचु पाणी नहि करवां [९४४]

साधु अथवा साध्वीए दाळवाळा स्थळोमां, शाकवाळा स्थळोमां, के मूळा-दि कंदवाळा स्थळोमां खरचु पाणी नहि करवां [९४५]

साधु अथवा साध्वीए वीयांना वनमां, सणना वनमां, धाउडाना वनमां, केतकीना वनमां, आंवाना वनमां, अशोकना वनमां, नागना वनमां, पुन्नागना वनमां, चूर्णकना वनमां, अथवा एवी जातना धीजां पत्र पुष्प फळ बीज तथा स्त्रीलोतरी सहित स्थळोमां खरचु पाणी नहि करवां [९४६]

से भिक्खू वा (२) सयपाययं वा परपाययं वा गहाय सेत्तमायाए
एगंत मवक्कमेज्जा अणावायंसि असंलोइयंसि अप्पपाणंसि जाव मक्कडासं-
ताणयंसि अहारामंसि वा उवस्सयंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा; वोसिरित्ता
सेत्तमादाय एगंतमवक्कमेज्जा अणावायंसि जाव मक्कडासंताणयंसि अहारामं
सि वा ज्झामथंडिलंसि वा अण्णयरंसि वा तहप्पगारंभि थंडिलंसि अचित्तं-
सि ततो संजयामेव उच्चारपासवणं परिट्ठवेज्जा । (९४७)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव ज-
एज्जासि त्ति बेमि । (९४८)

उच्चारपासवणसत्तिकयं समत्तं तइयं

साधु अथवा साध्वीए पोतानुं अथवा वीजानुं पात्र लइ एकांत स्थळमां
ज्यां कोइ आवे नहि तथा ज्यां कोइ देखे नहि तेवा निजीव स्थळमां खरचुपाणी
करवां—करीने ते पात्र लइ आराम के बळेला स्थळमां अथवा एवी जातना अन्य
अचित्त स्थळमां यतना पूर्वक परठवन्ना. [९४७]

आ वधुं साधु अथवा साध्वीना आचारहुं संपूर्णपणुं छे के तेमणे सर्व
वावतोमां सावधानपणायी वर्त्तवुं. [९४८]



शब्दनामकं विंशतितम मध्ययनम्.

[एकोद्देशं]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मुइंगसद्दाणि वा, नंदीमुइंग सद्दाणि वा, ज्झल्लरिसद्दाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि विरूवरूवाणि वितताइं सद्दाइं कण्णसोयपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए । (९४९)

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा, वीणा सद्दाणि वा, विपंचीसद्दाणि वा, वच्चीसगसद्दाणि वा, तुणयसद्दाणि वा, पणयसद्दाणि वा, तुंबवीणियसद्दाणि वा, दुकुलसद्दाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाणि सद्दाणि तताइं कण्णसोयपडियाए णो अभिसं-

अव्ययन वीशमं.

शब्द.

पहेल्लो उद्देश.

(सुनिए शब्दमां मोहित न थवुं.)

साधु अथवा साध्वीए मृदंग, नांदीमृदंग, तथा झालर विमेरेना वितत^१ शब्दो सांभळवा जवुं नहि. [९४९].

साधु अथवा साध्वीए वीणा, विपंची, वच्चीशक, तुनक, पणव, तुंबवीणा,

? आ कलमथी ९५२ मुधीगां चार जातनां वार्जात्रो गणावेला छे. वितत-
धशेष विस्तारना अवाजवाळां

धारेज्जा गमणाए । (९५०)

से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति, तंजहा, तालसदाणि वा, कंसतालसदाणि वा, लत्तिय^१ सदाणि वा, गोहिय^२ सदाणि वा, किरिकिरिय^३ सदाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं तालसदाइं कण्णसोवपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए । [९५१]

से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति, तंजहा, संखसदाणि वा, वेणुसदाणि वा, वंससदाणि वा, खरमुहीसदाणि वा, पिरिपिरियसदाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सदाइं झुसिराइं कण्णसोयपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए । [९५२]

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति, तंजहा, वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, जाव सराणि वा, सरपंतियाणि वा, सरस्सरपंति-

१ लत्तिका कंशिका. २ गोहिका भांडानांकक्षा. ३ किरिकिरिया वंशादिकंबिका.

दुकुल विगेरेना तत्^१ शब्दो सांभळवा जतुं नहि. [९५०]

सायु अथवा साध्वीए ताल, कंसताल, कंशिका, किरिकिरिका विगेरेना ताल,^२ शब्दो सांभळवा जतुं नहि. [९५१]

सायु अथवा साध्वीए संख, वेणु, वंग, खरमुखी, पिरिपिरिका विगेरेना झुपिर^३ शब्दो सांभळवा जतुं नहि. [९५२]

सायु अथवा साध्वीए, खेतरोना क्यारटां, खाइ, तळाव, विगेरे स्यळोरां

१ सामान्य विस्तारना अजाजवाळां २ ताल पडता अजाजवाळा. ३ पोकळ अजाजवाळां

याणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सदाइं कण्णसोयपडि-
याए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए । (९५३)

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति, तंजहा, क-
च्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पच्च
याणि वा, पच्चयदुग्गाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं
सदाइं कण्णसोयपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए । (९५४)

से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति, तंजहा, गा-
माणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणिओ वा, आसमपट्टणसांणि
वेसाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं सदाइं णो अभिसंधारेज्जा गमणा
ए । [९५५]

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति, तंजहा, आरा-
माणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुल्लाणि वा,
सभाणि वा, प्वाणि वा, अण्णरइं वा तहप्पगाराइं सदाइं णो अभिसं-

यता शब्दो सांभळवा त्यां नहि जवुं .१ [९५३]

सावु अथवा साध्वीए, जळवहुल प्रदेश, वनस्पतिनी, घटा, घीच शाडी,
वन, वनदुर्ग, पर्वत, पर्वतदुर्ग इत्यादि स्थळोमां यता शब्दो सांभळवा त्यां नहि
जवुं. [९५४]

सावु अथवा साध्वीए गाम, नगर, निगम, राजधानी, आश्रम, पा-
टण, के सन्निवेश विगेरे स्थळोमां यता शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९५५]

सावु अथवा साध्वीए, आराम, उद्यान, वन; वनखंड, देवळ, सभा, पा,

? (मूळ पक्षमां एम छे के क्यारडां, खाइ, तळान, विगेरे शब्दो सांभळवा
नहि जवुं. एम अगाड पण जाणवुं)

धारेज्जा गमणाए । (९५६)

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति, तंजहा, अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं सदाइं णो अभिसंधारेज्जा गमणाए । (९५७)

से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति, तंजहा, तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउम्मुहाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं सदाइं णो अभिसंधारेज्जा गमणाए । (९५८)

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति, तंजहा, म—हिसट्टाणकरणाणि वा, वसभट्टाणकरणाणि वा, अरसट्टाणकरणाणि वा, ह—त्थिट्टाणकरणाणि वा, जात्र, कविंजलट्टाणकरणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं सदाइं णो अभिसंधारेज्जा गमणाए । (९५९)

नीयशाळा,^१ विगेरे स्थळोमां थता शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९६६]

सावु अथवा साध्वीए, अगासी, भमती, ^२ दरवाजा, के गोपुर & विगेरे स्थळोमां थता शब्दो सांभळवा नहि जवुं [९६७]

सावु अथवा साध्वीए, त्रिक (त्रिखुण), चोक, चौवाटं, के चोमुख विगेरे स्थळे थता शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९६८]

सावु अथवा साध्वीए, मट्ठिपस्थान, वृषभस्थान, अश्रगाळा, दायीस्थान, तथा कर्पिजळ विगेरे पत्तीओना स्थानमां थता शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९६९]

१ पाणीनां परव मुळमां पवणाणि वा शब्द छ तंतुं संस्कृत प्रपा थाय छे तेपरथी पानीयशाळा अर्थ कयो छे (Wells Jacobi) २ फरती चालीओ pathways ३ अहेरना दरवाजा town-gates.

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सदाइं सुणेति, तंजहा, महि-
सजुद्धाणि वा, वसमजुद्धाणि वा, अस्सजुद्धाणि, वा, हत्थिजुद्धाणि वा,
जात्र कर्विजलजुद्धाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं, णो अभिसंधारेज्ज
गमणाए । [९६०]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सदाइं सुणे ति तंजहा,
पुव्वद्वाणाणि वा,^१ हयजूहियद्वाणाणि वा, गयजूहियद्वाणाणि वा, अण्णय-
राइं वा तहप्पगाराइं णो अभिसंधारेज्ज गमणाए । [९६१]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जात्र सुणेति, तंजहा,—अक्खाइयद्वाणा-
णि वा^२, माणुस्माणियद्वाणाणि वा, महयाहयणट्ट गीय—वाइय—तंति—त-
ल—ताल—तुडिय—पडुप्प वाइयद्वाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं
णा अभिसंधारेज्ज गमणाए । [९६२]

१ पूर्वभिति द्वंद्वं वधूवरादिकं तत्स्थानं वेदिकादि तत्र श्राव्यगे-
यादिशब्दश्रवणप्रतिज्ञया न गच्छेत् । २ आख्यायिकास्थानानि वा ।

सायु अथवा साध्वीए पाडा, वळद, घोडा, हाथी, के कर्पिजल पक्षि वि-
गेरेना युद्ध थता सांभळी त्यां सांभळवा नहि जवुं. [९६०]

सायु अथवा साध्वीए वर कन्यानी चोरीना स्थाने, अथवा हाथी के घो-
डाओ ज्यां रहेता होय ते स्थाने शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९६१]

सायु अथवा साध्वीए, वार्त्ताओ थती होय तेवा स्थळे, तोल माप थता
होय तेवा स्थळे, तथा ज्यां महोटां नाच गीत के वीणा—ताल मृदंगादिकना वा-
दित्र थता हाय ते स्थाने शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९६२]

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जाव सुणेति, तंजहा,—कलहाणि व, डिंवाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, अण्णय-
राइं वा तहप्पगाराइं णो अभिसंधारेज्ज गमणाए । (९६३)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जाव सदाइं सुणेति खुद्धियं दारियं
परिभुयं^१ मंडियालंकिय—नित्तुसमाणियं^२ पेहाए, एगं पुरिसं वा वहाए
णीणिज्जमाण पेहाए अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं णो अभिसंधारेज्ज गम-
णाए । (९६४)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरुवरूवाइ महासवाइं^३
एवं जाणेज्जा, तंजहा, बहुसगडाणि वा, बहुहरहाणि वा, बहुमिलक्खूणि
वा, बहु पच्चंताणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरुवरूवाइं महास-
वाइं कण्णसोयपाडियाए णो अभिसंधारेज्ज गमणाए । (९६५)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा विरुवरूवाइं महुरसवाइं एवं जाणे-
ज्जा, तंजहा, इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, उहराणि वा, मज्झि-

१ परिवृतां. २ नीयमानां अश्वादिना. ३ महाश्रवस्थानानि

स्थणे अथवा ज्यां वे राज्य के विरुद्ध राज्य होय तेवा स्थले शब्दो सांभळवा
नहि जवुं. [९६३]

साधु अथवा साध्वीए सारी रीते शणगारेल नानी छोकीरिने घणा जणोए
वींदायली अने घोडापर चडावीने लइ जवाती जोइ, अथवा कोइ पुरुषने वध क-
रवा लइ जवातो जोइ त्यां सांभळवा नहि जवुं. [९६४]

साधु अथवा साध्वीए अनेक प्रकारना महा आश्रवना स्थान, जेओमां घणां
गाडां, घणा रथ, घणा म्लेच्छ, के घणा आजुवाजुना लोक एकटां थयां होय
तेवा स्थानोमां कानथी शब्द सांभळवाने नहि जवुं. [९६५]

साधु अथवा साध्वीए अनेक प्रकारना महोत्सवो के जेमां स्त्री, पुरुष,
वृद्ध, बाल, तथा जुवानो शणगार सर्जी गाता होय, बजावता होय, नाचना होय,

माणि वा, आभरणविभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चं-
ताणि वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि वा, त्रिपुलं असणपाण-
खाइमसाइमं परिभुंजंताणि वा, परिभाइंताणि वा, विच्छड्डयमाणाणि वा,
विग्गोवयमाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महुरसवाइं
कण्णसोयपडियाए णो अभिसंधारेज्ज गमणाए । (९६६)

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहिं सदेहिं, णो परलोइ-
एहिं^१ सदेहिं, णो सुतेहिं सदेहिं, णो असुतेहिं सदेहिं, णो दिट्ठेहिं सदेहिं,
णो अदिट्ठेहिं सदेहिं, णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा णो गिज्जेज्जा, णो मु-
ज्जेज्जा, णो अज्झेवज्जेज्जा । (९६७)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव जए-
ज्जासि त्ति वेमि । (९६८)

सदसत्तिकंयं चउत्थं.

१ पारापतादिकृतैः

हसता होय, रमता होय, मोह पामता होय, तथा घणुं अनानपान
खादिमखादिमरूप आहार जमता होय, अरसपरस देता लेता होय, छांडता होय,
के साचवी राखता होय तेवा महोत्सवोना स्थळे शब्द सांभळवा नहिं जवुं.
(९६६)

सावु अथवा साध्वीए स्वजातिना शब्दोवडे अथवा विजातीयना शब्दोवडे,
सांभळेला शब्दोवडे अथवा घमर सांभळेला शब्दोवडे, तेमज दीटेला शब्दोवडे
अथवा अणदीटेला शब्दोवडे, आसक्त, रक्त, गृद्ध मोहित, के तन्मय न धवुं.
(९६७)

एज ते सावु अथवा साध्वीनो परिपूर्ण आचार छे के तेमणे बधी वापतो-
मां सदा यत्नवंत रहेवुं. (९६८)

रुपाख्य मेकविंशतितम मध्ययनम्.

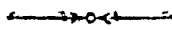
[एकोद्देशं]

से भिक्खू वा (२) अहावेगयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा, गंथि-
माणि^१ वा, वेढिमाणि^२ वा, पूरिमाणि^३ वा, संघाइमाणि^४ वा, कट्टकम्मा
णि वा^५, पोत्थकम्माणि वा, चिंतकम्माणि वा, मणिकम्माणि वा, दंतक-
म्माणि वा, मालकम्माणि वा, पत्तच्छेज्जाकम्माणि वा, विविधाणि वा वे-
ढिमाइं, अण्णयराइं तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं चक्खुदंसणपडियाए णो
अभिसंधोरज्ज गमणाए । (९६९)

१ ग्रथितपुष्पादिनिर्मितस्वस्तिकादीनि २ वस्त्रादिनिर्वर्तितपुत्तलि-
कादीनि. ३ यान्यंतः पुरुषाद्याकृतीनि. ४ चोलकादीनि ५ रथादीनि.

अध्ययन एकवीसमुं.

रुप



पहेलो उद्देश.

(रुप जोइ मोहित न धवुं.)

साधु अथवा साध्वीए फूल्यी रचेल स्वास्तिकादिक,^१ वस्त्रवडे रचेल पुत-
लीओ, पुतळांओ, कपडांओ, लाकडकाम, पुस्तको, चित्रकाम, मणिकाम, दांतकाम,
मालाओ, कोतरकाम, विंगेर अनेक कशवना कामो आंरुथी जोवाना इरादे नदि
जवुं. [९६९.]

१ सार्धांशाना आकारमां गुंधेला फुलेना गोटा-तोग.

एवं होयव्वं जहासदपडियाए सव्या वाइत्तवज्जा रूवपडियावि ।

[९७०]

[रूवसत्तिकयं पंचमं]

ए प्रमाणे शब्दाध्ययननी माफकज रूपाध्ययननी विना जाणी लेवी.

[९७०]



परक्रियाख्यं द्वाविंश मध्ययनम्

[एकोद्देशं]

परकिरियं अब्भत्थिअं^१ संसेसियं^२ णो तं सातिए,^३ णो तं निय-
मे^४ । (९७१)

से^५ से^६ परो पाए आमज्जेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे ।
से से परो पायाइं संवाहेज्ज वा, पल्लिमहेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं

१ आख्यात्मिकीं आत्मनि क्रियमाणां २ संश्लेषिकीं ३ स्वादयेत्
अभिलषेत् ४ नियमयेत्—कारयेत् वाचा कायेनच. ५ तस्य ६ स परः

अध्ययन वाचीसमुं.

परक्रिया.

पहेलो उद्देश

वीजानी क्रियामां मुनीए कैम वर्त्तवुं.

मुनिना शरीरने कोइ ग्रहस्थ कर्मबंधजनक क्रिया करे तो ते मुनिए इच्छवुं
नहि अने नियमवुं^१ पण नहि. [९७१]

[दाखल्य तरीके] कोइ ग्रहस्थ^२ मुनिना पण साफ करे चापें, दावें, अ-
हके, रंगे, तेल्, घी, के घरवीथी मसले के चोपडे, लोदर क्षार लोट के भुकावडे

? इहां टीकाकार तथा बालावबोधकर्ता “ नियमवुं ” ए पदना अर्थ एवो
करे छे के इच्छवुं नहि ते मनवडे चदावुं नहि अने नियमवुं नहि ते वचन तथा
कायावडे करानवुं नहि. परंतु इंग्रेजी भाषांतर कर्ता एम अर्थ करे छे के इच्छवुं
नहि अने “ नियमवुं ” एटले अटकाववुं पण नहि, check २ धर्मश्रद्धाधी [टीका]

नियमे । से से परो पादाइं फुसेज्ज वा, रएज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे । से से परो पादाइं तेह्णेण वा, घएण वा, वसाए वा, मक्खेज्ज वा, भिल्लिजेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे । से से परो पादाइं लोहेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वच्चेण वा, उल्लोलेज्ज वा, उवल्लिवेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे । से से परो पादाइं, सीतोदगवियडेण वा, उसिणोदगवियडेण वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे । से से परो पादाइं अण्णयरेण विलेवणजातेण आल्लिपेज्ज वा, विल्लिपेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे । से से परो पादाइं अण्णयरेण धूवज्जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा णो तं सातिए, णो तं नियमे । से से परो पादाओ खाणुं वा कंटयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे । से से परो पादाओ पयं वा सोणियं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे ।

(९७२)

से से परो कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । से से परो कायं संवाहेज्ज वा, पल्लिमदेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे । से से परो कायं तेह्णेण वा घएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगे ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे । से से परो

ऊंवेटे^१ के लीपे, ^२ ठंडा के गरम पाणीथी छांटे के धुवे, गमे ते जातना विलपन-वडे लीपे, गमे ते जातना धूपथी धूपित करे, अथवा पगमाथी खाली के कांटा क-हाडी चोखुं करे अथवा परु के लोंडी कद्दाडी चोखुं करे ता तैने इच्छुं पण नहि अने नियमवुं पण नहि. [९७२]

एज्ज रीते मुनिना शरीर, शरीरमां रहेला व्रण (चाटां), गड गूमडां, अर्ग,

१ घसे rubs २ लेपकरे sbaupees.

कायं लोद्रेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा, उल्लोलेज्ज वा, उ-
व्वलेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । से से परो कायं सीओदग-
वियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा प्होएज्ज वा, णो तं
सातिए, णो तं नियमे । से से परो कायं अण्णयरेणं विलेवणजातेणं
आलिंपेज्ज वा त्रिलिंपेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । से से परो
कायं अण्णयरेणं धूवणजातेण धूवेज्ज वा, पधूव्वेज्ज वा, णो तं सातिए णो
तं नियमे । (९७३)

से से परो कायंसि वणं आमज्जेज्ज-वा, पमज्जेज्ज वा, णो तं
सातिए णो तं नियमे । से से परो कायंसि वणं संवाहेज्ज वा पलिमहेज्ज
वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । से से परो कायंसि वणं तेह्णेण वा घ-
एण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलंगेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नि-
यमे । से से परो कायंसि वणं लोद्रेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा
उल्लोडेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । से से परो
कायंसि वणं सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा,
पधोवेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे । से से परो कायंसि वणं
अण्णयरेणं सत्थजातेणं अर्च्छिदेज्ज वा विच्छिदेज्ज वा णो तं सातिए,
णो तं नियमे । से से परो अण्णयरेणं सत्थजातेणं अर्च्छिदित्ता, पूयं वा
सोणियं वा, णीहरेज्ज वा त्रिसोहेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे ।
(९७४)

से से परो कायंसि गंडं वा, असतिथं वा, पुलुयं वा, भगंदलंवा,
आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे । से से परो का-

यंसि गंडं वा, अरतियं वा, पुलयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा पल्लिमहे-
ज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । से से परो कायंसि गंडं वा जाव
भगंदलं वा तेह्णेण वा घण्ण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा, णो
तं सातिए णो तं नियमे । से से परो कायंसि गंडं वा जाव भगंदलं वा
लोहेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोडेज्ज वा उव्वलेज्ज
वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । से से परो कायंसि गंडं वा जाव भगं-
दलं वा, सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा
पधोवेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । से से परो कायंसि गंडं वा
जाव भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थजाएणं अच्चिदेज्ज विच्चिदेज्ज वा, से
से परो अण्णयरेण सत्थजाएणं अच्चिदित्ता वा पूयं वा सोणियं वा णीह-
रेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे (१७५)

से से परो कायाओ सेयं वा जल्लं वा णीहरेज्ज वा विसोधेज्ज
वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । (१७६)

से से परो अच्चिमलं वा, कण्णमलं वा, णहमलं वा, णीहरेज्ज
वा विसोहेज्ज वा णो तं सातिए ० (१७७)

से से परो दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं, दीहा-
इं कक्खरोमाइं दीहाइं वत्थिरोमाइं, कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, णो तं साति-
ए ० [१७८]

बली कोइ गृहस्थ मुनिना शरीरनो मळ उत्तारे के तेने साफ करे के आक्षि-
मळ कर्णमळ अथवा नखमळ उत्तारे के साफ करे तो ते पण इच्छुं के नियम-
वुं नहि. (१७६-१७७)

बली कोइ मुनिना घाळ, रोम, भवां, कांखना रोम, तथा गुह्य प्रदेशना
रोम लांवां देखी कापे के मुधारे तो ते पण इच्छुं के नियमवुं नहि. [१७८]

से से परो सीसाओ लिदखं वा जूयं वा णीहरेनु वा विसोहेज्ज
वा, णो तं सातिए ० [१७९]

से से परो अंकंसि पलियंकंसि वा तुयदावेज्जा, पादाइं आमज्जेज्ज
वा पमज्जेज्ज वा—एवं हेट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो । से से परो अंकं-
सि वा पलियंकंसि वा तुयदावेच्चा हारं वा, अद्धहारं वा, उरच्छं वा, गेवेयं
वा, मउडं वा, पालंबं वा, सुवण्णसुत्तं वा, आविधेज्ज वा, पिणिधेज्ज वा
णौ तं सातिए ० [१८०]

से से परो आरामंसि वा उज्जाणंसि वा णीहरित्ता वा विसोहित्ता वा
पायाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, णो तं सातिए ० [१८१]

एवं णेतव्वा अण्णमण्णकिरियावि । [१८२]

से से परो सुद्धेणं वतिबलेणं^१ तेइच्छं^२ आउट्टे, से से परो असु
द्धेणं वतिबलेणं तेइच्छं आउट्टे, से से परो गिलाणस्स सचित्ताइं कंदाणि

१ वाग्बलेन—मंत्रादिसामर्थ्येन २ चिकित्सां.

वळी कोइ मुनिना माथामांथी लीख के जू काढे के शोधे तो ते पण इच्छ
वुं के नियमवुं नहि. [१७९]

वळी कोइ मुनिने खोळामां के पलंग पर मुवादी पण विगेरेनी पूर्वोक्त
क्रिया करे अथवा हार, अर्धहार, उरस्थ^१ आभरण, ग्रैवाभरण^२, मुगट, प्रलंब
[माळा] के सुवर्ण सुत्र (सोनानो दोरो) पढेरावे तो ते पण इच्छवुं के नियमवुं नहि
[१८०]

एज रीते कोइ मुनिने आराम के उद्यानमां लइ जइ पण विगेरेनी पूर्वोक्त
क्रिया करे तो त्यां पण तेमज समयवुं. [१८१]

आज रीते अन्धोन्ध क्रिया (मुनिओमां एकवीजा तरफथी करेली क्रिया)
वात्रत पण समजी लेवुं. [१८२]

कोइ गृहस्थ शुद्ध के अशुद्ध वचनवळ (मंत्र) थी, अथवा कंद, मुळ, छाल,

१ छातीए लटकतां २ गळामां पढेरानां आभरण.

वा मूलाणि वा तयाणि वा हरियाणि वा, खण्णेण वा कट्टेण वा कट्टवेण वा, तेइच्छं आउट्टेज्जा, णो तं सातिए । [१८३]

कट्टु वेयणा, ^१ पाणभूतजीवसत्ता वेयणं वेदति । (१८४)

एयं खलु तरस भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सब्बट्टे-
हिं सहिते समिते सदाजए, सेय मिणं मण्णेज्जासि ति वेमि. [१८५]

(परकिरियासत्तिकयं समत्तं छट्टं)

१ कृत्वा वेदनाः (परेषां)

के लीलोतरी कहाडी के कढावी ल्यावी मांदा मुनिनी चिकित्सा करे तो ते पण इच्छुं के नियमवुं नहि. [१८३]

कारण के दरेक प्राण-भूत-जीव-सत्व [पूर्व] बीजाने उपजावेल वेदनो ह्मणा पोते भोगवे छे. (एम विचारवुं) [१८४]

एज खरेखर साधु तथा साध्वीना आचारनी सपूर्णता छे के तेमणे सर्व चावतोमां यत्नवंत रहेवुं, अने एज श्रेय मानवुं, एम हुं कहुं छुं. [१८५]

अन्योन्यक्रियाख्यं त्रयोविंशतितम मध्ययनम्.

[एकोद्देशं]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णमण्णकिरियं अब्भत्थियं^१ सं-
सेइयं^२, नो तं सातिए, नो तं नियमे । (९८६)

से से अण्णमण्णो पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा णो तं सातिए,
णो तं नियमे । [९८७]

सेसं तं चेव. [९८८]

एयं खलु तरस भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं ।
[९८९]

(अन्नुत्तकिरियासत्तिकयं सेमत्तं सत्तमं)

आध्यात्मिकीं २ सांश्लेषिकीं.

अध्ययन त्रैवीशसुं

अन्योन्य क्रिया

उद्देश पहल्लो.

(मुनिओए अरमपरस थती क्रियायां केम वत्तुं?)

सावु अथवा साध्वीए पोतायां कराती अन्यान्य कर्मबंधजनक क्रिया पेदे
इच्छवुं के नियमवुं नहि. [९८६]

इहां पण परक्रियायां वर्णवेला पण विगेरेना दरेक आलापक लागु पाइवा
[९८७-९८८]

ए सर्व मुनि तथा आर्याना आचारनीं मंठूरणीता छे के नेमणे वधी चाच-
तोयां यत्नवेत थउ वत्तुं. [९८९]

तृतीया चूला.

भावनाख्यं चतुर्विंशतितम मध्ययनम्.

तेणं कालेण तेणं समएणं, समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे १
यावि होत्थाः—हत्थुत्तराहिं चुए—चइत्ता गब्भं वक्कंते; हत्थुत्तराहिं गब्भा-
ओ गब्भं साहरिए; हत्थुत्तराहिं जाए; हत्थुत्तराहिं सच्चओ सच्चताए मुंडे
भवित्ता अगाराओ अणगारियं पच्चइए; हत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुण्णे अ
व्वाघाए निरादरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे । साइणा
भगवं परिनिव्वुए । [९९०]

१ हस्त उच्चरो यासा मुत्तरफाल्गुनीनां ता हस्तोत्तराः ताश्च
पंचसु स्थानेषु संवृत्ता यस्य स पंचहस्तोत्तरः

श्रीजी चूलिका

अध्ययन चोवीसमुं

भावना

(महावीर चरित्र तथा पंच महाव्रतानी भावनाओ.)

ते काले ते समये श्रमण भगवान् महावीरना संबंधे पंचवार उत्तराफाल्गु
नी नक्षत्र आव्युं; ते एम के उत्तराफाल्गुनीमां गर्भयी गर्भोत्तरमां संहाराया, उत्त-
राफाल्गुनीमां जन्मया, उत्तराफाल्गुनीमां सर्व (वस्तु) थी सर्वरीते (अत्था थइ)
मुंडपणुं धरी वरवास छोडी अगगार थया, अने उत्तराफाल्गुनीमांज संपूर्ण प्रति-
पूर्ण व्याघानरहित आवरणरहित अनंत उत्कृष्ट केवलज्ञानदर्शन पास्या, मात्र
भगवान्नुं निर्वाण स्त्रानिनक्षत्रमां थयुं. [९९०]

समणे भगवं महावीरे, इमाए ओसपिणीए सुसमसुसमाए समाए
 वीतिकंताए, सुसमाए समाए वीतिकंताए, सुसमदुसमाए समाए वीतिकं-
 तारु, दुसमसुसमाए समाए बहुवीतिकंताए, पणत्तरीए वासहिं, मासेहिय
 अद्धणवयसेसेहिं, जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे अट्ठमं पक्खे आसाढसुद्धे
 —तरसणं आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं णक्खेणं जोगोवगए-
 णं, महाविजय—सिद्धत्थ—पुष्फुत्तर—पवरपुंडरीय—दिसासोवत्थिय—वद्धमा-
 णाओ महाविमाणओ, वीसं सागरोवमाइं आउयं पालइत्ता आउक्खएणं
 भवक्खएणं ठितिक्खएणं चुए; चइता इहखलु जंबुद्वीपे दीपे, भारहे वा-
 से, दाहिणइभरहे, दाहिण—माहणकुंडपुरसांणिवेसांसि, उसभदत्तस्स माहण-
 स्स कौडालसगोत्तरस्स, देवाणंदाए माहणीए जाळंधरायणसगोत्ताए सीहवभ-
 यभूएणं अप्पाणेणं कुच्चिसि गव्वं वक्कंते । (९९१)

समणे भगवं महावीरे तिणाणोवगए यावि होत्था । चइस्सामि
 ति जाणइ; चुए मिति जाणइ, चयमाणे ण जाणइ; सुहुसे णं से काले
 पणत्ते । (९९२)

श्रमण भगवान् महार्थार आ अवसपिणीना सुपमसुपमा, सुपमा, अने
 सुपमदुपमा, ए वण आरा व्यतीत यतां अने चांधा दुःस्मसुपमाना पण मात्र पंचो-
 तेरं दर्प अने साज्जनन मास चाकी रहेता उनाळाना चांधा मासे आठवा पक्षे अ
 पाद सुदी ६ नादिसे उताफाल्गुनी नभंनं पुष्योत्तर महाविमान केजेने महा-
 विजय, सिद्धार्थ, पवरपुंडरीक, तथा दिवात्तमैस्तिक्क पण कहे छे त्यांधी वीस ता
 गरंपम आयु पुरं दानी आयु भव, तथा तिथितिनो क्षय यतां चयने इहां जंबुद्वीप
 मां भरतदेशना दक्षिणार्थमां ब्राह्मणकुंडपुरस्थाने कौडालगोत्री ऋषभदत्त ब्राह्मणना
 ये जाळंधरायण गोत्रनी देवालेत्ता ब्राह्मणीनी कूले गिठ्ठना वच्यानी माक्क अत्र
 तयी. [९९१]

श्रमण भगवान् महावीर आ येकाए वण हाल सद्धि हता. तयीं दुं चवीण
 एवुं जाणता; चय्यो दुं ए पन जाणता; पण चयनी देव्य नहि जाणता. दा.ण
 पयसानी काल यणो मू स कहेल छे. [९९२]

तओणं समणे भगवं महावीरे अणुकंपतेणं देवेणं “ जीय मेयं”
 ति कट्टु, जे से वासाणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे आसोयबहुले, तस्सणं
 आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगतेणं, बासी-
 तीहिं रातिंदिएहिं वीतिकंतेहिं तेसितिमस्स रातिंदियस्स परियाए वट्टमाणे
 दाहिण-माहणकुंडपुरसंणिवेसाओ उत्तर-खत्तियकुंडपुरसंणिवेसांसि, णाया
 णं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगोतस्स तिसलाए खत्तियाणीए
 वासिट्ठसगोत्ताए असुभाणं पोग्गलाणं अवहारं करेत्ता सुभाणं पोग्गलाणं
 पक्खेवं करेत्ता कुच्छिसि गब्भं साहरिए । जे विय तिसलाए खत्तियाणी-
 ए कुच्छिसि गब्भे, तंपिय दाहिण-माहणकुंडपुरसंणिवेसांसि उसभदत्तस्स
 माहणस्स कोडालसगोत्तरस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायणसगोत्ताए
 कुच्छिसि गब्भं साहरिए । [९९३]

समणे भगवं महावीरे तिष्णाणोवगए यावि होत्थाः-साहरिज्जि-
 स्सामि त्ति जाणइ, साहरिएमित्ति जाणइ; साहरिज्जमाणे वि जाणइ सम-
 णाउसो । [९९४]

त्यारवाद श्रमण भगवान महावीरने अनुकंपावान एट्ठे भक्तिवाळा देवताए
 पीताना जीत एट्ठे हमेशना आचारने अनुसरी वर्षाक्रतुना त्रीजा मासे पांचमा
 पक्षे आसो वदि ? ३ना दिने उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे व्यासी दिन वीत्या केडे
 त्यासीमा दिने दक्षिण ब्राह्मणकुंडपुर स्थानथी उत्तरमां आवेला क्षत्रियकुंडपुर-
 स्थानमां ज्ञातवंशी काश्यपगोत्रीय सिद्धार्थ क्षत्रियना घरे वाशिष्ठगोत्रयाळी विशला
 क्षत्रियाणीनी कूत्रे अशुभ पुद्गलो अपहरी शुभ पुद्गलेनो मक्षेप करी गर्भमां दाख-
 ल करी (९९३)

आ वेळाए पण श्रमण भगवान महावीर त्रणज्ञानवंत देवाधी हे आयुष्मन्
 श्रमणो, गर्भंतरमां मारुं संहरण थणे, थयुं, तथा थाय छे, ए त्रणे काळ जाणता.
 (९९४)

तेणं कालेणं तेणं समणं तिसला खत्तियाणी, अइ अन्नया क-
याइ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धमाणं राइंदियाणं वीतिकंताणं
जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चित्तसुद्धे तस्स णं चित्तसुद्धस्स
तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं जोगोवगतेणं, समणं भगवं महावीरं आरोयारो-
यं पसूया । (९९५)

जंणं राइं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं आरोयारोयं
पसूया, तं णं राइं भवणवइ—वाणमंतर—जोइसिय—विमाणवासि—देवेहि
य देवीहि य उवयंतेहिय उप्पयंतेहि य एगो महं दिव्वे देवज्जोए देवस-
ण्णिवाते देवकहक्कहे उप्पिजलगभूतेयावि होत्था ॥ (९९६)

जं णं रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं आरोया-
रोयं पसूया, तं णं रयणिं बहवे देवा य देवीओ य एगं महं अमयवासं
च, गंधवासं च, चुण्णवासं च, पुप्फवासं च, हिरण्णवासं च, रयणवासं
च, वासिंसु । (९९७)

ते काले ते समये तिसला क्षत्रियाणीए नवमासं पूरां थया चाद साइ सात
दिन वीते छते उनाळाना पेला मासे वीजे पक्षे चैत्र सूदि १३ ना दिने उत्तरा-
फाल्गुनी मक्षत्रे श्रमण भगवान महावीरने क्षेमकुशले जन्म आप्पो. [९९५]

जे राते तिसला क्षत्रियाणीए भगवानने जन्म आप्पो ते राते भुवनपति,
वाणव्यंतर, ज्योतिषिक, तथा विमानवासि देवदेवीओना उत्तरया तथा उपडवार्थी एक
मदान दिव्य देवोनो उद्योत, देवोनो मेळाबडो, देवोनी कथंकथा (वातचीत) तथा
प्रकाश थड रत्तो हतो. [९९६]

वणी ते राते वणा देवदेवीओए एक मद्रोत्री अमृतनी वृष्टी, गंधनी वृष्टी
चूर्णनी वृष्टी, फूलनी वृष्टी, सोनारूपानी वृष्टी तथा रत्नोनी वृष्टी वर्षावी. [९९७]

जंगं रथिं तिसला खत्तियाणी समणं नगत्रं महावीरं आरोयारोयं
पसूया, तंगं रथिं भवणवइ—वाणमंतर—जोतिसिय--विमाणवासिणो देवाय
देवीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स कोतुगभूतिकम्माइं तित्थयरा-
भिसेयं च करिंसु । [१९८]

जतोणंपभितिं भगवं महावीरे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि
गब्भं आहूए, ततोणं पभितिं तं फुलं दिपुलेणं हिरण्णेणं सुवण्णेणं धणेणं
घण्णेणं माणिक्केणं सोत्तिएणं संखसिलप्पवालेणं अतीव परिवइइ । ततोणं
समणस्स भगवओ महावीरस्स अस्मापियरो एयमट्ठं जाणिचा, णिच्चत्तादसा-
हंसि चोक्कंतांसि सुविभूतांसि विपुलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावं-
ति; विपुलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेत्ता मिचणातिसयणसंब-
धिवग्गं उवणिमंतेति; उवणिमंतेत्ता वहवे समणमाहणकिवणवणमिगाभि-
च्छंडगपंडगारंतीण विच्छड्ढेति विग्गोवेति विस्साणेति दातारेसु णं दायं पज्जा-
भाएँति; विच्छडिचा विग्गोविचा विस्साणिचा दायारेसु णं दायं पज्जाभाइता
मितणाइसयणसंबंधिवग्गं भुज्जावेति; मिचणाइसयणसंबंधिवग्गं भुज्जावेत्ता
मिचणाइसयणसंबंधिवग्गेण इमेयारूवं णामधेज्जं करेति; जओणं पभिइं
इमे कुमारे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भे आहूए, ततोणं पभिइं

अने एज राते चारे जातना देवदेवीओए मळी भगवान महावीरतुं कौतु-
ककर्म, भूतिकर्म, तथा तीर्थकराभिपेक कयो. [१९८]

ज्यारथी भगवान महावीर तिसला क्षत्रियाणीनी कूखे आज्या त्यारणी ते-
गतुं कुळ घणा सोनारूपा, धनधान्य, माणेक, मौनी, तथा (उत्तम जातना) शंख
पत्थर अने परवाळार्थी बहु बहु वधवा मांडयुं तेथी भगवानना मावापे ए अर्थ
जाणीने दश दिवस व्यतिक्रांत यतां चोखाइ अने पवित्रता थतां घणुं असनगान
खादिप्रस्नादिप्ररूप आहार तैयार करावी, मित्त, ज्ञाति, खन्न तथा संबंधि वर्गने
नोदरी घणा श्रमण ब्राह्मण हूपण भिखारी आंशळ पांगळा अने दर्दांतेने आहार

इमं कुलं, विपुलेणं हिरण्णेणं, सुवण्णेणं, धण्णेणं, धणेणं, ऋणिङ्गेणं, मोरिण्णेणं, संखसिलप्पवालेणं, अतीव अतीव परिवड्ढइ—तं होउणं कुमारे “वड्ढमाणे” । (९९९)

तओणं समणे भगवं महावीरे पंचधातिपरिवुडे—तजहा; खीरधाईए, सज्जाणधाईए, मंडावणधाईए, खेळावणधाईए, अंकधाईए—अंकाओ अंकं साहारज्जमाणे रम्मे प्रणिकोट्टिमतले, गिरिकंदरसमच्छीणे व चंपयपायवे, अहाणुपुव्वीए संवड्ढइ । (१०००)

तओणं समणे भगवं महावीरे विण्णायपरिणये विणित्तवालभावे अणुस्सयाइ, उरालाई माणुस्सगाई पंचलक्खणाई कामभोगाई सदफरिस्सरस्सवगंधाई परियारेमाणे ओमं वति विहरति । (१००१)

आधी तेमज पोतानी न्यातमां वेंची करीने पछी (नोतरेला) मित्र ज्ञाति स्वजन संवंधिओने जमाडी करीने तेमनी स्वरुमां कुळनी यती वृद्धि जणावीने कुमारुं “वड्ढमान” एवं नाम आप्थुं. [९९९]

हवे श्रमण भगवान् महावीरना मांटे पांच धात्री (दाइओ) राखवामां आधी, जेवी के दूध धवाडनार धात्री, स्नान करावनार धात्री, शणगार करावनार धात्री, खेळावनार धात्री, अने खोळामां संभाळनार धात्री. ए पांच धात्रीओ परिवर्षा यका अने एकना खोळामांठी वीजाना खोळामां अता धकारम्य रत्ततळवाळा यकानमां रही गिरियुफामां (पन्नयी) वची रहेला चंपकवृक्षनी भाफक अदुक्रमे ययया लग्या. [१०००]

त्यारवाद् श्रमण भगवान् महावीरे दिसेप्पान अने अनुभववाळा होइ वा-
ल्यावस्था टळतां अनुत्सुकणणे उत्तम प्रकारना गनुष्व संसंधी शब्द-स्पर्श-रस-
रूप-गंध ए पांचे प्रकारना कामभोग भोगवनां यकां काळ व्यतिक्रम कर्यो.
[१००१]

समणे भगवं महावीरे कासावगोचे; तस्सणं इमे तिण्णि णामधे-
ज्जा एव माहिज्जंतिः—अमापिउसंतिए “ वद्धमाणे; ” सहसमुदिए “ स-
मणे; ” भीमभयभेरवं उरालं अचेलयं परीसहं सहइ चि कट्टु देवेहिं से
णामं कयं “ समणे भगवं महावीरे ” । [१००२]

समणस्स भगवओ महावीरस्स पिता कासवगोचेणं; तस्सणं तिण्णि-
णामधेज्जा एव माहिज्जंति, तंजहा—सिद्धत्थेति वा, सैज्जंसेति वा, जसंसे
ति वा । [१००३]

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मा वासिद्धसगोचा; तीसेणं
तिण्णि णामधेज्जा एव माहिज्जंति, तंजहा—तिसल्ल ति वा, विदेहदिण्णा
ति वा, पियकारिणी ति वा । [१००४]

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पिचियए सुपासे कासवगोचेणं ।
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्टे भाया णंदिवद्धणे कासवगोचेणं ।
समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठा भइणी सुदंसणा कासवगोचेणं ।

भगवान् काश्यपगोत्रीय हता. तेमना आ ऋण नाम बोलाय छे मावापे
वर्द्धमान एवं नाम पाडयुं; सहजगुणोथी श्रमण नाम पडयुं, अने भयंकर महान्
अचेल परीपड सहन करतां देवोए “श्रमण भगवान् महावीर” एवं नाम कर्तु-
(१००२)

भगवान्ना पिता काश्यप गोत्रीय; तेमना ऋण नाम छेः—सिद्धार्थ, श्रेयांस,
यशस्वी. (१००३)

भगवान्नी माता वाशिष्ठ गोत्रिणी; तेमना ऋण नाम छेः—विशला, विदेह-
दिना, प्रियकारिणी. (१००४)

भगवान्ना काका सृपार्थ, मोटा भाइ नंदिवर्धन, मोटी बेहेन सुदर्शना, ए-
वधा काश्यपगोत्रीय हता. भगवान्नी भार्या यशोदा कौंडिन्य गोत्रिणी हती. भा-

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स भज्जा जसोया गोचेण कोडिण्णा ।
 समणस्स णं भगवओ महावीरस्स धूया कासवगोत्तेणं; तीसे णं दो णामधे
 ज्जा एव माहिज्जंति, तंजहा—अणेज्जा ति वा, पियदंसणा ति वा
 समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णत्तुई कोसियगोत्तेणं; तीसे णं दो णा
 मधेज्जा एव माहिज्जंति, तंजहा—सेसवई ति वा, जसवती ति वा
 [१००५]

समणस्सेणं भगवओ महावीरस्सं अस्मापियरो पासावच्चिज्जां संम
 णोवासगां यावि होत्था; तेणं बहूइं वासाइं समणोवासगपरियामं पाल
 यित्ता छण्हं जीवनिकायाणं संरक्खणनिमित्तं आलोइत्ता निंदित्ता गरहित्त
 पडिक्कमित्ता अहारिहं उत्तरगुणपायच्छित्तं पडिवज्जित्ता कुससंधारं दुसहित्त
 भत्तं पच्चक्खाइंति; भत्तं पच्चक्खाइत्ता अपच्छिमाए सारणांतियाए सरिरसं
 लेहणाए सुसियसरीरा कालमांसे कालं किच्चा तं सरिरं विप्पजाहित्तं अ-

धान्नी पुत्री काश्यपगोत्रीनी तेना वे नाम छेः—अनवद्यां, प्रियदर्शनां. भगवान्
 दैहिर्णा कौशिक गोत्रनी तेना वे नामः—शेषवती, यशोमती. [१००५]

भगवान्ना मावाय पार्श्व संतानिय^१ श्रमणोर्ना उपासकं हता. तेओ धणा
 वर्ष श्रमणोपासकपणुं पाळी छकायना जीवनी रक्षार्थे [पापनी] आलोचना^२ करी
 निंदी गहीं पडिक्कमी यथायोग्य प्रायश्चित लइ दर्भसंस्तारकं उपर वेशी भक्त प्रत्या-
 ख्यान^३ करी छेली मरणपर्यंतनी शरीर—संलैखना^४ वडे शरीर शोषा काळसमये काळ
 करी ते शरीर छोडी अच्युत कल्पमां^५ देवपणे उत्पन्न थयां. त्यांधी आयुस्य थतां

१ पार्श्वनाथनी परंपराना २ यादगिरी ३ आहारना त्याग रूप अणसण ४
 शरीर—शोषणा. ५ वारमा देवलोकमां. (आवश्यक निर्युक्तिमां चोथा देवलोकमां
 गया एप कथुं छे.)

चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णा; तओणं आउक्खएणं टिइक्खएण चुए,
चवित्ता महाविदेहे वासे चरिमेणं ऊसासेणं सिञ्झिस्संति, बुञ्झिस्संति,
मुच्चिस्संति, परिणिव्वाइस्संति, सब्बदुक्खाणं अंतं करिस्संति । [१००६]

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे णाये णायपुत्ते
णायकुलणिव्वत्ते विदेहे ^१ विदेहदिण्णे ^२ विदेहजच्चे ^३ विदेहसुमाले ^४, ती
सं वासाइं विदेहत्ति ^५ कट्ठु अगारमज्झे वसित्ता अम्मापिउहिं कालगएहिं
देवलोग मणुपत्तेहिं समत्तपइण्णे, चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा ब
लं, चिच्चा वाहणं, चिच्चा धणधण्णकणयरयणसंतसारसावदेज्जं ^६, विच्छडे
त्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता, दायारेसुणं दायं पज्जाभात्तित्ता, संबच्छरं
दाणं दलइत्ता, जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे मग्गसिरबहुले,
तस्सणं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोव-
तेणं अभिणिक्खमणाभिप्पाए यावि होत्था । [१००७]

१ विशिष्टदेहः २ विदेहदिना त्रिशल्या तस्या अपत्यं ३ विदे-
हजायाः जाता अर्च्चा शरीरं यस्य सः यद्वा विदेहः कंदर्पः यात्यो यस्य
सः ४ विदेहे गृहवासे सुकुमालः ५ विदेहे गृहवासे ६ स्वापतेयं द्रव्यं.

चवीने महाविदेह क्षेत्रमां छेले उसासे सिद्धबुद्ध मुक्त थइ निर्वाण पामी सर्व दुःख-
नुं अंत करशे. [१००६]

ते काले ते समये जगत्ख्यात, ज्ञात (सिद्धार्थ) पुत्र, ज्ञानवंशोत्पन्न, विशि-
ष्टदेहधारी, विदेहा (त्रिशला) पुत्र, कंदर्पजेता, गृहवासयी उदास एवा श्रमण भग-
वान् महावीरे त्रीश वर्ष घरवासमां वसी, मावाप कालगत थइ देवलोक पद्मोचतां
पोतानी प्रतिज्ञा समाप्त थइ जाणी, सोनुं रुपुं, सेना वाहन, धन धान्य, कनकरत्न,
तथा दरेक कीमती द्रव्य छोडी [दानार्थे] पाधरं करी, दान दइ, सीआळाना पेला
पक्षे मागसर वादे १० ना दिने उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रना योगे दीर्घा^१ लेखानो अ-
भिप्राय कर्यो. [१००७]

- संवच्छरेण होहिति, अभिणिक्खमणं तु जिणवारिंदाणं;
तो अत्थि संपदाणं, पव्वत्ती पुव्वसूराओ । १ (१००८)
- एगा हिरण्णकोडी, अट्टेव अणूणया सयसहस्सा;
सूरोदयमादीयं, दिञ्जइ जा पायरासोत्ति । २ (१००९)
- तिण्णेव य कोडिसया, अट्टासीतिं च होंति कौडीओ,
असियं च सयसहस्सा, एयं संवच्छरे दिण्णं । ३ (१०१०)
- वेसमणकुंडलधरा, देवा लोगंतिया महिद्धीया
बोहिति य तित्थयरं, पण्णरस्ससु कम्मभूमीसु । ४ (१०११)
- बंसंमि य कप्पंमि य, बोद्धव्वा कण्हराइणो मज्जे
लोगंतिया विमाणा, अद्धसुवत्था असंखेज्जा । ५ (१०१२)
- एते देवणिक्काया, भगवं बोहिति जिणवरं वीरं
सव्वजगज्जीवहियं, अरहं तित्थं पव्वत्तोहि । ६ (१०१३)

[दोहरा.]

- वर्षीते लेनार छे, दीक्षा जिनवरराय
तेथी सूरज उगतां, दान प्रवृत्ति कराय । १ (१००८)
- प्रतिदिन सूर्योदय थकी, पहोर एक ज्यां थाय
एक क्रोडने आठ लाख, सोना म्होर अपाय । २ (१००९)
- वर्ष एकमां त्रणशो, अने अट्टयागी क्रोड
एंसी लाख महोरनी, संख्या पूरी जोड । ३ (१०१०)
- कुंडलधारी वैश्रमण, वळी लोकांतिक देव.
कर्मभूमि पंदर विपे, प्रतिबोधे जिनदेव । ४ (१०११)
- ब्रह्म कल्प सुरलोकमां, कृष्णरार्जीना मांहि
असंख्यात लोकांतिको—तणा विमान कहाय । ५ (१०१२)
- ए देवो जिन वीरने, समजावे ए वात
सर्व जविहित तीर्थं तुं, प्रवर्त्ताव सासान् । ६ (१०१३)

तओणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अभिणिक्खमणाभिप्पायं
जाणेत्ता भवणवइ—घाणमंतर—जोइसिय—विमाणवासिणो देवाय देवीओ
य सएहिं सएहिं रूवेहिं, सएहिं सएहिं णेवत्येहिं, सएहिं सएहिं
चिंधेहिं, सव्विद्धीए, सव्वजुत्तीए, सव्वबलंसमुदएणं, सयाइं सयाइं जाण-
विमाणाइं दुरुहंति; सयाइं सयाइं जाणविमाणाइं दुरुहित्ता अहाबादराइं
पोग्गलाइं परिसाडेंति, अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडिच्चा अहासुहुमाइं
पोग्गलाइं परियाइंति, अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइत्ता उड्डं उप्पयंति,
उड्डं उप्पइत्ता ताए उक्किट्टाए सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिच्चाए देवगइए
अहेणं उवयमाणा उवयमाणा तिरिएणं असंखेज्जाइं दीवसमुदाइं वीतिक-
ममाणा वीतिकममाणा, जेणेवं जंबूदीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिच्चा
जेणेव उत्तरखतियकुंडपुरसंणिवेसे तेणेव उवागच्छिता जेणेव उत्तरखति-
यकुंडपुरसंणिवेसस्स उचरपुरत्थिमे दिसिभाए तेणेव झत्ति वेगेण उवट्ठि-
या । [१०१४]

तओणं सक्के देविंदे देवराया सणियं सणिं जाणविमाणं ठवेत्ति, सणि-
यं सणिं विमाणं ठवेत्ता सणियं जाणविमाणाओ पच्चोत्तरति, साणेयं सणीयं

ते पछी भगवान्नो निष्क्रमणाभिप्राय जाणीने चारे निक्रायना देवो पोत
पोताना रूप, वेग, तथा चिन्हो धारण करी सघळी ऋद्धि, द्युति, तथा बळ साथे
पोतपोताना विमानोपर चडी वादर पुट्टलो पळटावी सूक्ष्म पुट्टलोमां परिणमावी
ऊंचे ऊपडी अत्यंत शीघ्रता अने चपळतावाळी दिव्य देवगतिथी नीचे उतरता
तिर्यक लोकमां असंख्याता द्वीपसमुद्र उच्छंतीने ज्यां जंबूद्वीप छे त्यां आवा क्षत्रि-
यकुंड नगरना इशान कोणमां ऊतावळा आवी पहांच्या. [१०१४]

त्यारवाद शक्र नामे देवना इंद्रे धीमे धीमे विमानने त्यां थापी, धीमे धीमे
तेमांथी ऊतरी, एकांति जइ मोहोदो विक्रिय समुद्रवात करी एक महान् मणि-

सणियं जाणविमाणाओ पञ्चोतरिच्चा एगंत मवक्कमेति, एगंत मवक्कमेत्ता
 महया वेउव्विएणं समुग्घाएण समोहणति, महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं
 समोहणित्ता, एगं महं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुक्कंतरूवं
 देवच्छंदयं विउव्वति; तरसणं देवच्छंदयस्स बहुमज्झदेसमाए एगं महं
 सापायपीढं सीहासनं णाणामणिकणयरथणभत्तिचित्तं सुभं चारुक्कंतरूवं
 विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेण्य उवागच्छति;
 तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं
 करेइ; समणं भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेत्ता समणं
 भगवं महावीरं वंदति णमंसति; वंदित्ता णमंसित्ता समणं भगवं महावीरं
 गहाय जेणेव देवच्छंदए, तेणेव उवागच्छति; उवागच्छित्ता सणियं साणि
 यं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेइ; सणियं सणियं पुरत्थाभिमुहं णि-
 सीयावेत्ता सयपागसहरसधामेहिं तेहेहिं अब्भंगेति; अब्भंगेत्ता गंधकासाइ-

सुवर्ण-तथा रत्नजडीत, शुभ, ममोहर रूपवाळुं देवच्छंदक विक्कुर्वुं (वनाव्युं) ते
 देवच्छंदकनीं वच्चोवच्च मध्यभागे एक तेवुंज रमणीय पादपीठिकासहित एक
 महान् सिंहासन विक्कुर्वुं. पछी ज्यां भगवान् हत्ता त्यां आवीने भगवानने त्रणवार
 प्रदक्षिणा करी वादी नमी भगवान्ने लइ ज्यां देवच्छंदक हत्तुं त्यां आवी धीमे
 धीथे पूर्वदिशासामे भगवान्ने सिंहासनमां वेसाडया. पछी शतपाक^२ अने सहस्र-
 पाक^३ तेलोवडे मर्दन करी गंधकापायिक^४ वस्त्रवडे लुंछीने पवित्र पाणीथी नयगवी
 लसमूल्यवाळुं थंडुं रक्तगोशीर्षिचंदन वसी तैपार करी तेसा वडे लेपन कर्तुं. त्पार-
 वाद् निश्वासना लगारेकवायुधी चलायमान धनारां, वखणायला नगर के पाटणमां
 वनेलां, चतुरजनोमां वाखणाएलां, घोडाती फीण जेवां मनहर, चतुर कारीगरोए सोना-
 धी खंचेला हंस समान स्वच्छ वे वत्तो पहरेवाव्यां. पछी द्वार, अर्धद्वार, उरस्य, एका-

^१ कमानद्वार घुमटवाळुं दिव्य आसनस्थान Divine pavillion. २-३-
 शो तथा हजार आपथीओना पाकथी थएल. ^४ मृगंभवांसित अने पीळारंगना.

इहिं उल्लोलेति; उल्लोलिता सुद्धोदणं मज्जावेइ; मज्जाविता जस्स य मुल्लं
 सयसहस्सेहिं ति पडेलमितए पसाहिणुणं सीतणुं गोसीसरत्तचंदणेणं अ-
 णुलिंपति; अणुलिंपिता इसि णिस्सासवातवोज्झं वरणगरपट्टणुगतं कुसल-
 णरपसंसितं अस्सलालापेलवं छेयायरियकणगरखचियंतकम्मं हंसलक्खणं
 पट्टजुयलं णियंसवेइ; णियंसावेचा हारं अड्डुहारं उरत्थं एगावल्लिं पालंब-
 सुतपट्ट-मउड-रयणमालाइ आविधावेति; आविधावेचा गंठिम-वेढिम-
 पूरिम-संधातिमेणं मट्ठेणं कप्परुक्खमिव समालंकेति; समालंकेचा दोच्चीप
 महयां वेउध्वियसमुग्घाणुं समोहणइ; समोहणिचा एगं महं चंदप्पभं सि-
 वियं सहस्सत्राहिणिं त्रिउव्वइः-तंजहा, ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-म-
 कर-त्रिहग-वाणर-कुंजर-रु-सरभ चमर-सदूल-सीह-वणलय- वि-
 चित्रविज्जाहरामि हुणजुगल-जंतजोग-जुतं अच्चीसहस्समालिणीयं सुणिरू-
 वितमिसिमिंसितरूव्वगसहस्सक्खलियं इंसिभिसमाणं चक्खूळ्ळोयणलेस्सं मुता-

वाळि, प्रालंब, १ सूत्रपट्ट २ मुकुट, तथा रत्नमाळादि आभरणौ पहिराव्यां. पछी
 जूदी जूदी जातनी फूलनी मा-ओथी पुष्पतरुना माफक. सणगार्या. पछी इंद्रे
 पाछां बीजीवार वैक्रि-समुद्घात करी हजार जण उपाडी शके एवी एक महान्
 चंद्रप्रभा नामे शिविका ३ विकुचीं. ए शिविकानुं वर्णन आ प्रमाणे छेः-ए शिविका
 इहामृग, ४ बळद, घोडा, नर, मगर, पक्षी, वानर, हाथी, रु, ५ सरभ, चमरीगाय,
 वाघ, सीह, वननी लताओ, तथा अनेक विद्याधरयुग्मना यंत्रयोगे करी युक्त हती
 तथा हजारो तेजराशिओथी भरपुर हती, रमणीय अने झगझगायमान हजारो चि-
 त्रागणथी भरपुर अने देडीप्यमान अने आंखथी साथे जोड न शक्या तेवी हती,
 अनेक मोतीओथी विराजित सुवर्णमय प्रतराञ्जी हती, तथा झुलती मोतीओनी माळा,
 हार, अर्द्धहार, विगेरे भूषणोथी शोभती हती, आर्तिगय देखवा लायदा हती, पत्र-

हडं मुतजालंतरोधिगतवणीयपयरलंबूणं पलंबंतमुतदामं हाग्द्वहारभूसणसमो
णयं अहियपेच्छणिज्जं पउमकयभतिचितं णाणालयभतिविरइयं नुभं चारु-
कंतरुवं णाणामणिपंचवण्ण घंटापडायपरिमंडियग्गासिहरं पासादीयं दरिसणीयं
सुरूवं । (१०१५)

सीया उवणीया जिण, वरस्स जरमरणविप्पमुक्कस्स	
उवसंतमल्लदामा, जलथलथं दिव्वकुसुमेहिं	१
सिवियाइ मज्झयारे, दिव्वं धररयणरूवचेवतियं	
सीहासणं महरिहं, सणादपीढं जिणवरस्स ।	२
आलइयमालमउडे, भासुरबोदी वराभरणधारी	
खोमयवत्थणियत्थो, जस्सय मोल्लं सयसहस्सं ।	३

लता, अशोकलतो, विगेरे अनेक लताओथी चित्रित हती, शुभ तथा मनोहरआका-
खाळी हती, अनेक प्रकारनी पंचवणीं मणिओवाळी घंटा तथा पताकावडे शोभिता
अग्रभागवाळी हती, तथा मनोहर, देखवालायक अने सुंदरआकारवाळी हति.
[१०१५]

[अर्या छंद]

जरमरणमुक्त जिनवर-माटे शिविका तिहां भळी आवी;	
जळथळज दिव्य पुप्पनी, माळाओ झूलती टावी.	१
शिविकाना वचगाळे, धाण्युं छे रन्नरप झळहळतुं;	
सिंदासन बहु कीमती, पदपीठसहित जिनवरतुं.	२
माळा मुकुट विगेरे, उत्तम भूषण धरी प्रकाशि थड ;	
लाव मूल्यना उत्तम धौमिक ^१ वत्तो पेट्ठी करी.	३

१ मसलीन-मलमलनां वत्तो.

छन्द्रेणु भतेर्ण, अञ्जवस्राणेण सोहणैण जिणो	
लेपाहं नि सुञ्जंतो, आरुहई उतमं सीयं ।	४
क्षीहासणे णिविट्ठो, सक्कीसाणाय दोहि पासोहिं	
वीयांति चामराहिं मणिरयणवितितदंडाहिं ।	५
पुव्विं उक्खिता माणुस्सेहिं सां हट्ठोमपुल्लएहिं	
पच्छा ह्वांति देवा, सुरअसुरा गरुलणागिंदा ।	६
पुरओ सुरावहंती, असुरा पुणं दाहिणंमि पासंमि	
अत्ते वहीति गरुला, णागा पुण उतरे पासे ।	७
वणसंडं यहुसुंमिय, पउमसरो वा जहा सरयकाले	
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गगणतलं सुरगणेहिं ।	८
सिद्धत्थयणं व जहा, कणियारवणं व चंपयवणं वा	
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गगणतलं सुरगणेहिं ।	९

वे उपवास करीमि, पवित्र परिणाम साथ जिनदेव,	
शुभ लेश्याए चडता, शिविका उपर चडे देव.	४
सिंहासन पर बेसो, वे पढखे शक्रमे इशान रहि	
मणिरत्नदंडयाळा चामर दोळें स्वहाथ ग्रहीं,	५
पेलां ते शिविकाने, उपाडे माणसो सहर्ष थड,	
ते पछी सुर असुर गरुड, नाग उपाडे मुसज्ज रतीं,	६
पूर्व दिशाए देवो, दक्षिणमां असुर ऊचके शिविका	
पश्चिम वाजू गरुडो, नाग रहे उतरे धरता.	७
गगन विराजे देवथीं, शोभे फूलेलुं जेम वनखंड	
अथवा शरद ऋतुमां, पद्माकार पद्म विकसंत.	८
गगन धीराजे देवथीं, शोभे सरसवनुं जेम वनखंड	
कणियर के चंपकनुं, वन शोभे पुष्प विकसंत.	९

वरपडह—मेरि—झल्लरि—संख—सयसहस्सिएहि तूरेहिं
 गगणतले धरणितले, तुरियणिणाओ परमरम्मो । १०
 ततवितयं घणसुसिरं आउज्जं चउविहं बहुविहीयं
 वायंति तत्थ देवा बहुहिं आणट्टगसएहिं ११ [१०१६]

तेणं कालेणं, तेणं ससएणं, जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे
 पक्खे मग्गसिरबहुले, तस्सणं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं सुव्वएणं
 दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं हत्थुत्तराणक्खत्तेणं जोगोवगतेणं पाईणगामि-
 णीए छायाए वियचाए पोरिसीए छट्टेणं भत्तेणं अपाणएणं एगसाडग
 मायाए चंदप्पहाए सिवियाए सहस्सवाहिणीए सदेवमणुयासुरापारिसाए
 समन्निज्जमाणे समन्निज्जमाणे उत्तरखत्तियकुंडपुरसंनिवेशस्स मज्झंमज्झेणं
 णिगच्छिता जेणेव गायसंडे उज्झाणे तेणेव उवागच्छइ; उवागच्छित्ता
 ईसिरियाणिप्पमाणं अच्चोप्पेणं भूमिभागेणं सणियं सणियं चंदप्पभं सिवियं

पडह भेरिने झालर शंखाटिक लाख वाजियां वाजां
 गगनतल धरणितलमां, अवाज पसर्या अति झाआ. १०
 तत वितत घन शुपिर ए, चारे जातितणा बहु वाजां
 नाटक साथे देवो, वजाडवा वलगिया झाआ ११ [१०१६]

ते काले ते समये शीयाळाना प्रथममासे प्रथमपक्षे मागसर वादि १०ना सु-
 व्रतनामना दिने विजयमुहुते उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रने योग आवतां पूर्वमां छाया
 वळतां छेळां पहोरमां पाणी वगरना वे अपवासे एक पोतनुं वत्त धारी सहस्रवासी-
 नी चंद्रप्रभा नामनी शिविका उपर चडी देव मनुष्य तथा अमुरोनी पर्यदाओ
 साथे चालता चालता क्षत्रियकुंडपुर संनिवेशना मध्यमां थडने ज्यां ज्ञातखंड नामे
 उद्यान हतुं त्यां भगवान आव्या, आर्वीने धीमे धीमे भूमिथी एक हाथ लंची शिवि-

स हस्तत्राहिणिं ठवेइ; ठवेता सणियं चंदप्पभाओ सिवियाओ सहस्तवा-
 हिणीओ पच्चोयरइ; पच्चोयरित्ता सणियं सणियं पुरस्थाभिमुहे सहासणे
 गिसीयेइ; आभरणालंकारं उमुयइ, तओणं वेसमणे देवे जंतुवायपडिए
 समणस्स भगवओ महावीरस्स हंसलक्खणेणं पडेणं आभरणालंकारं पडि-
 च्छइ; तओणं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं, वामेणं वामं
 पंचमुट्ठियं लोयं करेइ; तओणं सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ
 महावीरस्स जंतुवायपडिये वयरासयेणं थालेणं केसाइं पडिच्छइ; पडिच्छित्ता
 “अणुजाणेसि भंते” ति कट्टु खीरोयसायरं साहरइ तओणं समणे भगवं
 महावीरे दाहिणेणं दाहिणं, वामेण वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेत्ता सिद्धाण
 णसोक्कारं करेइ; करेत्ता “सव्वं मे अकरणिज्जं पावकम्मं” ति कट्टु सामा-
 इयं चरित्तं पडिवज्जइ, सामाइयं चरित्तं पडिवज्जेता देवपरिसं च सणुय-
 परिसं च आलेक्खाचित्तभूय भिव द्ढवेइ । [१०१७]

दिव्यो मणुस्सयोसो, तुरियणिणाओ य सक्कवयणेण

खिप्पामेव णिलुक्खो जाहे पडिवज्जइ चरित्तं

१

का स्थापी धीमे धीमे तेमांथी उतर्या, उतर्याने धीमे धीमे पूर्वाभिनुख सिंहासन पर
 वेशी आभरण-अलंकार उतारवा लाग्या, त्यारे वैश्रवण देवे गोढोहासने रही तफे-
 दवस्समां भगवानना ते आभरणालंकार ग्रहण कर्या, पछी भगवाने जमणा हाथयी
 जमणा अने डावा हाथयी डावा केसोने पंचमुट्ठियी लोच कर्या त्यारे शुकु देवेदे
 गोढोहासने रही भगवानना ते वाळ जीराना थालनां ग्रहण करीने भगवानने ज-
 णावीने खीरसमुट्ठयां पडोचाड्या, ए जमणे भगवाने लोच कर्या पछी सिद्धोने नम-
 स्कार करी “मारे कंइ पण पाप नहि करवुं” एम ठराव करी सामायिकचारित्र
 रीकार्युं ए चेळा देवे तथा मनुष्योनी पर्पदाओ चित्रामणनी माफके (गट्टवड रहि
 तपणे स्तव्य) बनी रही [१०१७]

जिनवर चारित्र लेतां, इंद्र वचनयी ततमणे सघळा

देव मनुष्य अवाजो, तेमज वाजित्र बंध रथा.

१

पडिवज्जित्त चरित्तं, अहोणिसिं सव्वयाणमूतहितं
साहट्टु लोभपुल्लया पयया देवा निसामंति. २ [१०१८]

तओणं समणस्स भगवओ महावरिस्स सामाइयं खाओवसमियं
चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जवणाणे णामं णाणे समुत्पन्ने; अड्ढाइज्जेहिं
दीवेहिं, दोहियं समुदेहिं सण्णीणं पचेदियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणसाणं
मणोगयाइं भावाइं जाणेइ ; [१०१९]

तओणं समणे भगवं महावीरे पव्वइते समाणे मित्तणाइसयण-
संबंधिवग्गं पडिविसज्जोति, पडिविसज्जित्ता तओणं इमं एयास्सुवं अभिग्गहं
आभिणिहइ “दारसवासाइं वोसट्टुकारु चत्तदेहे जे केइ उवसग्गा समुत्प-
ज्जांति, तंजहा;—दिव्वा वा, माणुस्सा वा, तेरिच्छिया वा,—ते सव्वे उव-
सग्गे समुत्पन्ने समाणे सम्मं सहिस्सामि खमिस्सामि अहियासइरसामि ।”
[१०२०]

जिनवर चारित्र केतां, हमेश सँ प्राण भूत हित कर्ता;
हर्षित पुलकित थइत्ते, सावध थइ देवता मुणता. २ [१०१८]

ए रीते भगवाने क्षायोपगमिक सामायिकचारित्र लीवापट्टी तेमने मनपर्य-
चत्रान उत्पन्न थयुं; तेथी अही द्वीप तथा वे समुद्रना पर्याप्त अने व्यक्तमनवाळा
संज्ञि पंचेद्रियोना मनोगत भाव जाणना लाग्या. [१०१९]

पट्टी प्रवर्जित थएला भगवाने मित्र, ज्ञाति, सगा, तथा संबंधिओने विसज्जि-
त करी एवो अभिज्ञह लीधो के “दार वर्ष लगी हुं कायानी सार संभाळ नहि
करतां जे कंइ देव महूप्य के तिर्यचेत्तरफथी उपसर्गो थरो, ते कथा रूठी रीते
सदीश, स्वर्गीय अने अद्वियार्जान। [१०२०]

तओणं समणे भगवं महावीरे इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिहिचा
वोसट्टकाए चत्तदेहे दिवसे मुहुत्तसेसे कुम्मारागामं समणुत्ते । [१०२१]

तओणं समणे भगवं महावीरे वोसट्टचत्तदेहे अणुत्तरेणं आल्लएणं,
अणुत्तरेणं विहारेणं, एवं संजमेण, पग्गहेणं, संवरेणं, तवेणं, बभचेरवासेणं
खंतीए, मोत्तीए, तुट्ठीए, समितीए, गुत्तीए, ठाणेणं, कम्मणेणं, सुचारियफ-
लणेव्वाणमुत्तिमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । [१०२२]

एवं वा विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुप्पज्जिसु-दिव्वा वा,
माणसा वा, तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पणे समाणे, अणा-
इले, अव्वहिते, अदीणमाणसे तिविह मणव्यणकायगुत्ते सम्य सहइ खमइ
तितिकखइ अहियासेइ । (१०२३)

तओणं समणस्स भगवओ महावीरस्स एतेणं विहारेणं विहरमा-
णस्स वारस वासा वितिक्रंता; तेरसमस्स वासस्स पारियाए वट्टमाणस्स, जे से

आवो अभिग्रह लइ शरीरनी ममतार्थी रहित थया थका एक मुहूर्त्त जेठलो
दिवस हेतां कुम्मारा गामे आवी पडोच्यां. [१०२१]

पछी भगवान उत्कृष्ट आलय, उत्कृष्ट विहार, तेमज तेवाज संयय, नियम,
संवर, तप, ब्रह्मचर्ष, क्षांति, त्याग, संतोष, समिति, गुप्ति, स्थान, कर्म, तथा रुडा
फळवाळा निर्वाण मार्गवडे पोताने भावता थका विचरवा लाग्या. [१०२२]

एय विचरतां जे कांइ देव मनुष्य तथा तिर्यचोतरफथी उपसर्ग थया ते सर्वे
भगवाने सच्छ भावमां रही अगपीडातां अदीनमन धरी मनवचनकायाए गुप्त रही
सम्यक् रीते सदा खम्या तथा अहियाश्या. [१०२३]

आवी रीते विचरतां भगवानने वार वर्ष व्यतिक्रम्या. हवे तेरमा वर्षनी
अंदर उनाळना बीजा मासे बीजे पडे वैशाख सुदि १० ना सुव्रत नामना विज-
यमुहूर्ते उत्तराफाल्गुनीन रे।गे पूर्वदिशाए छाया वळतां छेष्टे पहारे जंभिकगाम-

गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे—तरसणं वइसाहसुद्धस्स
दरुमीपक्खेणं, सुच्चएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, हत्थुत्तराहिं णक्ख-
त्तेणं जोगोवगतेणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए पोरिसीए, जंभिय-
गामस्स णगरस्स वहिया, णदीए उज्जुवालियाए उत्तरे कूले, सामागस्स
गाहावइस्स कट्टकरणांसि, वेयवत्तस्स चेइयस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीमाए,
सालरुक्खस्स अदूरसामंते, उक्कुडुयस्स गोदोहियाए आयावणाए आया-
वैमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं उडुंजाणु—अहोसिरस्स ज्ञाणकोट्टोव-
गयस्स सुक्कज्ञाणंतरियाए वट्टमाणस्स निव्वाणे कसिणे पडिपुण्णे अच्चा-
हए णिरावरणे अणंतं अणुत्तरे केवलवरणाणदंसणे सम्मुपण्णे । (१०२४)

सै भयवं अरहा जिणे जाए केवली सच्चणू सच्चभावदरिसी
सदेवमणुयासुरस लोयस्स पज्जाए जाणइ, तंजहा;—आगतिं, गतिं,
ठितिं, च्वंणं, उववायं, भुत्तं, पीयं, कडं, पडिसेवियं, आवीकम्मं, रहोक-
म्मं, लवियं, कहियं, मणोमाणासियं, सच्चलोए सच्चजीवाणं, सच्चभावाइं

नगरनी बाहेर ऋजुवालिका नदीना उत्तर किनारे श्यामाक गायापतिना कर्षण
स्थळमां व्यावृत नामना चैत्यना इशानकोणमां शाळट्टक्षनी पासे अर्धा उभा रही
गोदोहिका आसने आतापना करतां थकां तथा पाणीविगरना वे उपवासे जंघाओ
उंची राखी माथुं नीचे घाली ध्यानकोष्टमां रहेतां थकां शुक्लध्यानमां वर्त्ततां छेव-
टनुं संपूर्ण प्रतिपूर्ण अव्याहृत निरावरण अनंत उत्कृष्ट केवलज्ञान तथा केवलदर्शन
उपज्युं. [१०२४]

हवे भगवान अर्हन् जिन, केवली, सर्वज्ञ, सर्वभावदर्शी, धइ देव मनुष्य,
तथा अमुर प्रधान (आखा) लोकना पर्याय जाणवा लग्या एटले तेनी आग
ति—नाति, स्थिति—त्थवन, उपात, खाधुंपीधुं, करलुं कारवेहुं, प्रगट्टकाम, जानां-
काम, बोल्लेहुं, कहेहुं, एम आखा लोकमां सर्व जीवोना सर्वभाव जाणता देखता

जाणमाणे पासमाणे एवंवाए विहरइ । (१०२५)

जण्णं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स णेव्वाणे कसिण्णे जाव समुप्पण्णे, तण्णं दिवसं भवणवइ—वाणमंतर—जोइसिय—विमाणवासि—देयेहि य देवीहि य उच्चयंतहि य जाव उप्पिजलगभूण्णयावि हेत्था । (१०२६)

तओणं सण्णे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे अप्पाणं च लोयं च आभिसमेक्ख प्पुचं देवाणं धम्म माइक्खति; तओं पच्छा मणुस्साणं (१०२७)

तओणं सण्णे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे गोयमाइणं समणाणं गिग्गंथाणं पच्च महव्वयाइं सभावणाइं छज्जीवनिकायाइं आइक्खइ, भासइ, परूवेइ; तंजहाः- पुढविकाए जाव तसकाए । (१०२८)

पढसं भंते महव्वयं, पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं; से सुहुसं वा, वायरं वा, तसं वा, थावरं वा, णेव सयं पाणाइवायं करेज्जा [३]

यका विचरवा लाग्या.. [१०२९]

जे दीने भगवानेने केवलज्ञान दर्शन उपनां ते दिने भवनपत्यादि चारे जातना देवदेवीओ आवतां जतां आकाश देवमय तथा धोलुं धइ रहुं. [१०२६]

ए रीते उपजेलां ज्ञानदर्शनने धरनार भगवाने पोहाने तथा लोकने संपूर्णपणे जोइने पहेलां देवोने धर्म कही संभळाव्यो अने पछी मनुष्योने. [१०२७]

पछी उपजेला ज्ञानदर्शनना धरनार श्रमण भगवान महावीरे गौतमादिक श्रमण निर्ग्रथोने भावना सहित पांच महाव्रत तथा पृथिवीकाय विंगरे छ जीवनीकाय कही जणाव्या. (१०२८)

(पांच पांच भावना सहित पांच मह व्रत)

पहेलु महाव्रतः—हे भगवन् हूं सर्व प्राणातिपात त्याग करूं हूं—ते ए रीते

जावज्जीवाए तिविहंतिविहेणं मणसा वयसा कायसा । तस्स भंते पडिक्क-
मासि, निंदासि, गारिहामि, अप्पाणं वोप्पिरासि । (१०२९)

तारिसमाओ पंच आवाणाओ भवंति:—(१०३०)

तत्थिमा पढमा भावणा:—इरियासमिए से णिग्गंथे, णो अणइरि-
यासमिए त्ति; केवली बूया—अणइरियासमिते णिग्गंथे पाणाइं [४] अभि-
हणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा, उद्वेज्ज वा ।
इरियासमिए से णिग्गंथे, णो इरियाअसमिए त्ति पढमा भावणा ।
(१०३१)

अहावरा दोच्चा भावणा:—मणं परिजाणाइ से णिग्गंथे; जेय मणे
पावए सावज्जे सकिरिए अण्हयकरे छेयकरे भेयकरे अधिकरणिए पाउसिए
परिताविते पाणातिवादिते भूतोवधातिए, तहप्पगारं मणं णो पधारेज्जा ।

के मुक्ष्म के वादर, त्रस के स्थावर जीवनों यावज्जीवपर्यंत मनवचनकायाए करी
त्रिविधे पांते घात न करीश, बीजा पासे न करावीश अने करताने रुहुं न मानीश
तथा ते जीवधातने पडिक्कं छुं, निहुंछुं, गरहुंछुं अने तेवा स्रभावने वोसरावुंछुं.
(१०२९)

तेनी आ पांच भावनाओ छे:—(१०३०)

त्यां पेली भावना ए के मुनिए इर्यासमिति सहित थड वर्त्तवुं पण रत्ति
थड न वर्त्तवुं. कारण के केयळ्झानी कहे छे के इर्यासमिति रहित होय ते मुनि
प्राणादिकनो घात विगरे करतो रहे छे. माटे निर्ग्रये इर्यासमितियी वर्त्तवुं ए पेली
भावना. [१०३१]

बीजी भावना ए के निर्ग्रय मुनिए मन ओळ्खवुं. एट्टे के जे मन पाप
भरेलुं, सद्रोप, (भुंठी) क्रिया सहित, कर्म बंधकारि. छेद करनार भेद करनार,
बल्लहकारक, प्रहेष भरेलुं, परितप्त, तथा जीव-भूतवुं उपधातक होय—तेवा मनने

मणं परिजाणाति से णिग्गंथे; जेय मणे अपावते ति दोच्चा भावणा ।

(१०३२)

अहावरा तच्चा भावणाः—वतिं परिजाणाति से णिग्गंथे; जाय वती पाविया सावज्जा साकिरिया जाव भूतोवघाइया तहप्पगारं वइं णो उच्च-
रिज्जा । वइं परिजाणाइ से णिग्गंथे; जाय वइ अपाविय ति तच्चा
भावणा । (१०३३)

अहावरा चउत्था भावणाः—आयाणभंडणिक्खेवणासमिण्णं से णि-
ग्गंथे, णो अणायाणभंडणिक्खेवणासमिण्णं णिग्गंथे; केवली बूया—आयाण-
भंडणिक्खेवणाअसमिण्णं णिग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणे-
ज्ज वा जाव उद्वेज्ज वा । आयाणभंडणिक्खेवणासमिण्णं से णिग्गंथे,
णो आयाणभंडणिक्खेवणाअसमिण्णं ति चउत्था भावणा । (१०३४)

अहावरा पंचमा भावणाः—आलोइयपाणभोई से णिग्गंथे, णो

नहि धारवुं एम मन जाणीने पापरहित मन धारवुं ए वीजी भावना. (१०३२)

त्रीजी भावना ए के निर्ग्रंथे वचन ओलखवुं एटले के जे वचन पाप मरेलुं
सदोप, (भूंडी) क्रियावालुं, यावत् भूतोपघातक होय —तेवुं वचन नहि उच्चरवुं-
एम वचन जाणीने पापरहित वचन उचरवुं, ए त्रीजी भावना. (१०३३)

चोथी भावना ए के निर्ग्रंथे भंडोपकरण लेतां राखतां समिति सहित थइ
वर्चवुं पण रहितपणे न वर्चवुं, केमके केवली कहे छे के आदानभांडानिक्षेपणास-
मिति—रहित निर्ग्रंथ प्राणादिकनो घात विगेरे करतो रहे छे. माटे निर्ग्रंथे समिति-
सहित थइ वर्चवुं ए चोथी भावना. [१०३४]

पांचमी भावना ए के निर्ग्रंथे आहारपाणी जोइने वापरवा, वगर जोए न

अणालोइयपाणभोई; केवली बूया—अणालोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पाणाइं अभिहण्णेज्ज वा जाव उद्वेज्ज वा । तम्हा आलोइयपाणभोयण भोई से णिग्गंथे, णो अणालोइयपाणभोई चि पंचमा भावणा । [१०३५]

एत्तावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्ठित्ते अवट्ठित्ते आणाए आराहिए यावि भवति । [१०३६]

पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं । [१०३७]

अहावरं दोच्चं महव्वयं;—पच्चक्खाभि सव्वं मुसात्रायं वतिदोसं से कोहावा, लोहावा, भयावा, हासावा, णेव सयं मुसं भासेज्जा, नेवद्वेणं मुसं भासावेज्जा, अण्णं पि मुसं भासंतं ण ससणुजाणेज्जा, तीविहं तिविहेणं, मणसा वयसा कायसा, तरस भंते पडिक्कमाभि जाव वोसिराभि । [१०३८]

तास्सिमाओ पंच भावणाओ भवति:—[१०३९]

वापरत्ता, केसके केवली केहेछे के वगर जोए आहारपाणी वापरनार निर्ग्रय प्राणादि-कनो घात विगरे करे. माटे निर्ग्रथे आहारपाणी जोइने वापरवा, नहि के वगर जोइने, ए पांचमी भावना. [१०३५]

ए भावनाओयी महाव्रत रुडी रीते कायाए रपशित्त, पालित्त, पार पमाडेहं कीर्त्तित्त, अवास्थित्त अने आत्ता ममाणे आराधित्त थाय छे. [१०३६]

ए पेहेहं प्राणातिपात विरमण एय महाव्रत छे. [१०३७]

वीडुं महाव्रत:—“रत्तुं मृषावादरूप वचनदोष त्याग करुं हं एटले के क्रोध, लोभ, भय, के हारदुथी वाइज्जीव पर्यंत त्रिविधे त्रिविधे एटले मनवचनकाए करीने मृषायापण करुं नहि कराहुं नहि अने इतरताने अनुमोदुं नहि; तथा ते मृषा-भाषणने विदुहं अने तेवा स्वभावने दोसराहुं.” [१०३८]

तेनी आ पांच भावनाओ छे:—[१०३९]

तत्थिमा पढमा भावणाः—अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणु-
वीइभासी; केवली बूया—अणुवीइभासी से णिग्गंथे समावदेज्जा मोसं
वयणाए । अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणुवीइभासी ति पढमा
भावणा । [१०४०]

अहावरा दोच्चा भावणाः—कोहं परिजाणाइ से णिग्गंथे, णो को-
हणे सिया; केवली बूया कोहप्पत्ते कोही समावदेज्जा मोसं वयणाए ।
कोहं परिजाणाइ से णिग्गंथे, णय कोहणे सियत्ति दोच्चा भावणा ।
[१०४१]

अहावरा तच्चा भावणाः—लोभं परिजाणाइ से णिग्गंथे, णो य
लोभणे सिया; केवली बूया—लोभपत्ते लोभी समावदेज्जा मोसं वयणाए ।
लोभं परिजाणाइ से णिग्गंथे, णो य लोभणाए सियत्ति तच्चा भावणा ।
[१०४२]

त्यां पेली भावना आः—निर्ग्रंथे विमासीने^१ वोलवुं, वगरविचारेशी न वोलवुं
केमके केवली कहे छे के वगर विमासे वोलनार निर्ग्रंथ मृपा वचन बोली जाय.
माटे निर्ग्रंथे विमासीने वोलवुं, नहि के वगर विमासे. ए पेली भावना [१०४०]

वीजी भावना ए के निर्ग्रंथे क्रोधनुं स्वरूप जाणी क्रोधी न थवुं, केमके के-
वली कहे छे के क्रोध पामेल क्रोधी जीव मृपा बोली जाय. माटे निर्ग्रंथे क्रोधनुं
स्वरूप जाणी क्रोधी न थवुं. ए वीजी भावना. [१०४१]

त्रीजी भावना ए के निर्ग्रंथे लोभनुं स्वरूप जाणी लोभी न थवुं, केमके के-
वली कहे छे के लोभी जीव मृपा बोली जाय. माटे निर्ग्रंथे लोभी न थवुं ए त्रीजी
भावना. [१०४२]

अहावरा चउत्या भावणाः—नयं परिजाणइ से णिगंथे, णो भय-
नीहए सियाः केवली वृया—भयपचे नीह समावदेज्जा सोसं वयणाइ ।
नयं परिजाणइ से णिगंथे, णो स्वमीह सिया । चउत्या भावणा
[१०१३]

अहावरा पंचना भावणाः—हासं परिजाणइ से णिगंथे, णो य
हासणइ सियाः केवली वृया—हासपचे हासी समावदेज्जा सोसं वयणाइ ।
हासं परिजाणइ से णिगंथे, णो य हासणइ सिया चि पचना भावणा ।
(१०१४)

एतावताइ महच्चइ सम्मं काइण फासिए जाव आ इ आसाहिते
या चि भवति । जेचं भंते महच्चयं (१०१५)

अहावरं जइं महच्चयं—यच्चस्सति सर्वं आइण्णा दाणं से
गाने वा णारे वा असणे वा अयं वा वहं वा अणं वा थूल वा चि-

चोथी भावना ए के निप्रिये भयंहुं स्वल्प जागी भयभीह न थुं केमके
केवली केहे छे के भीह पुख मया बोली जाय. मटे भीह न थुं ए चोथी
भावना. [१०४३]

पांचमी भावना ए के हास्यं स्वल्प जागी निप्रिये हास्य करनार न थुं
केमके केवली केहे छे के हास्य करनार पुख मया बोली जाय. मटे निप्रिये हास्य
करनार न थुं ए पांचमी भावना. [१०४४]

ए भावनाओथी महावत रवी रीने कयाए कयो समित अने यावत् आत्रा
प्रमाणे आसाधित थाय छे. ए वीरुं महावत. [१०४५]

वीरुं महावतः—“सर्वे अत्ताइण नहंहुं. एउले के गाम नगर के अरण्यां
रहेहुं. थोहुं के नहंहुं. नाहुं के मोहोहुं. सविन के आवित्त अणदीधेहुं (बत्त) हुं

चमंतं वा अचित्तनंतं वा णेव सयं अदिण्णं गिण्हेज्जा, णेवण्णेहिं अदिण्णं
गेण्हेज्जा, अण्णंपि अदिण्णं गिण्हंतं ण समणुज्जाणेज्जा, जावज्जीवणए,
जाव वोसिरामि । (१०४६)

तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवन्ति:—(१०४७)

तत्थिमा पढमा भावणा अणुवीइ मिउग्गहजाती से णिग्गंथे,
णो अणुवीइमिउग्गहजाई से णिग्गंथे; केवली वूया—अणुवीइमि
ग्गहजाती से णिग्गंथे अदिण्णं गिण्हेज्जा । अणुवीइ मिउग्गहजाती से
णिग्गंथे, णो अणुवीइमितोग्गहजाइ ति पढमा भावणा । (१०४८)

अहावरा दोच्चा भावणा:—अणुग्गवियपाणभोयणभोती से णिग्गंथे
णो अणुग्गवियपाणभोयणभोई; केवली वूया—अणुग्गवियपाणभोयणभोई
से णिग्गंथे अदिण्णं भुंजेज्जा । तम्हा अणुग्गवियपाणभोयणभोई से णि-
ग्गंथे, णो अणुग्गवियपाणभोयणभोती ति दोच्चा भावणा । (१०४९)

यावज्जीव त्रिविधे एटले मन-वचन-कायाए करी लउं नहि, लेवरावुं नहि, लेना-
रने अनुमत करुं नहि तथा अदत्तादानने पडिकमुंहुं यावत् तेवा स्रभादो दोसरा-
वुंहुं." [१०४६]

तेनी आ पांच भावनाओ छे:— [१०४७]

त्यां पेहेली भावना आ के निर्ग्रथे विचारिने परिमित अवग्रह मागवो, पण
वगर विचारे अपरिमित अवग्रह न मागवो. केमके केवळी कोहे छे के वगर विचारे
अपरिमित अवग्रह मागवो निर्ग्रथ अदत्त लेनार थइ जाय. माटे विचारिने परिमित
अवग्रह मागवो. ए पेहेली भावना. [१०४८]

वीजी भावना ए के निर्ग्रथे रज. मेळवने आहारपाणी वापरवो, पण रजा
मेळव्या वगर न वापरवो. केमके केवळी कोहे छे के वगर रजा मेळवे आहारपाणी
वापरवो निर्ग्रथ अदत्त लेनार थइ पडे माटे रजा मेळवने आहारपाणी वापरवो
ए वीजी भावना.]१०४९]

अहावरा तच्चा भावणाः—णिगंथे णं उग्गहंसि उग्गहितंसि
एत्तावताव उग्गहणसीलए सिया; केवली बूया—णिगंथेणं उग्गहंसि उ-
ग्गहितंसि एत्तावताव अणोग्गहणसीले अदिण्णं गिण्हेज्जा । णिगंथेणं
उग्गहंसि उग्गहितंसि एत्तावताव उग्गहणसीलए सिय त्ति तच्चा भावणा।
(१०५०)

अहावरा चउत्था भावणाः—णिगंथेणं उग्गहंसि उग्गहियंसि अ-
भिकखणं [२] उग्गहणसीलए सिया; केवली बूया—णिगंथेणं उग्गहंसि
उग्गहियंसि अभिकखणं [२] अणोग्गहणसीले अदिण्णं गिण्हेज्जा ।
णिगंथे उग्गहंसि उग्गहियंसि अभिकखणं [२] उग्गहणसीलए सिय त्ति
चउत्था भावणा । (१०५१)

अहावरा पंचमा भावणाः—अणुवीइमितोग्गहजाती से णिगंथे
साहम्मिएसु, णो अणुवीइमितोग्गहजाती; केवली बूया—अणुवीइमि-
ग्गहजाती से णिगंथे साहम्मिएसु अदिण्णं उग्गिण्हेज्जा । अणुवीइमितो-

त्रीजी भावना ए के निर्ग्रथे अवग्रह मागतां प्रमाण सहित (काळक्षेत्रनी हदवांधी)
अवग्रह लेवो. केमके केवळी कहे छे के प्रमाण विना अवग्रह लेनार निर्ग्रथ अदत्त
लेनार थइ जाय; माटे प्रमाण सहित अवग्रह लेवो. ए त्रीजी भावना [१०५०]

चोथी भावना ए के निर्ग्रथे अवग्रह मागतां वारंवार हद वांधनार थवुं. के-
मके केवळी कहे छे के वारंवार हद नहि वांधनार पुरुष अदत्त लेनार थइ जाय.
माटे वारंवार हद वांधनार थवुं. ए चोथी भावना. [१०५१]

पांचमी भावना ए के विचारीने पोताना साधर्मिक पासेथी पण परिमित अवग्रह
मागवो. केमके केवळी कहेछे के तेम न करनार निर्ग्रथ अदत्त लेनार थइ जाय. माटे
साधर्मिक पासेथी पण विचारीने परिमित अवग्रह मागवो, नहि के वगर विचारो

गहजाती से णिगंथ साहम्मिएसु, णो अण्णुवीइमितो, गहजाती । पंचमा भावणा । (१०५२)

एत्तावताव महव्वए सम्भं जाव आणाए आराहिते आवि भवति, तच्चं भंते महव्वयं । (१०५३)

अहावरं चउत्थं महव्वयं;—पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं;—से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोगियं वा, णेव सयं मेहुणं गच्छे, तं चेव अदिण्णादाणवत्तव्वया भाणियव्वा जाव वोसिरामि । (१०५४)

तरिसमाओ पंच भावणाओ भवंति:—(१०५५)

तत्थिमा षडमा भावणा:—णो णिगंथे अभिक्खणं [२] इत्थीणं क्हं कहइत्तए सिया; केवली बूया—णिगंथे णं अभिक्खणं [२] इत्थीणं क्हं कहमाणे संतिभेदा,^१ संतिविभंगा, संतिकेवल्लिपण्णत्ताओ धम्माओ

१ शांतिभेदात्

अपरिमित, ए पांचमी भावना. [१०५२]

ए भावनाओथी महाव्वत रुडी रीते यावत् आज्ञा प्रमाणे आराधित थाय छे. ए त्रीजुं महाव्वत. [१०५३]

चोथुं महाव्वत:—“सर्वं मैथुन तजुं छुं एटले के देव धनुण्य तथा तिर्यचसवंधी मैथुन हुं यावज्जीव त्रिविधे त्रिविधे करुं नहि.” इत्यादि अदत्तादान माफक वोलवुं. [१०५४]

तेनी आ पांच भावनाओ छे:—(१०५५)

त्यां पहेली भावना ए के निर्ग्रथ वारंवार स्त्रीनी कथा कथा करवी नहि. केमके केवली कहे छे के वारंवार स्त्रीकथा करतां शांतीना भंग थयाथी निर्ग्रथ शां-

भंसेज्जा । णो णिग्गंथे अभिक्खणं [२] इत्थीणं कइं कहए सिय ति पढसा भावणा । (१०५६)

अहावरा दोच्चा भावणा:—णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइ इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिया; केवली बूया—णिग्गंथे णं मणोहराइं इंदियाइं आलोएमाणे णिज्झाएमाणे संतिभंगा संतिविभंगा जाव धम्माओ भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिय ति दोच्चा भावणा । (१०५७)

अहावरा तच्चा भावणा:—णो णिग्गंथे इत्थीणं पुच्चरयाइं पुच्चकीलियाइं सुमारिच्चाए सिया; केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं पुच्चरयाइं पुच्चकीलियाइं सरमाणे संतिभेया जाव भंसेज्जा । णो णिग्गंथे पुच्चरयाइं पुच्चकीलियाइं सारिच्चाए सिय ति तच्चा भावणा । (१०५८)

तिथी तथा केवाळिभापित धर्मथी अष्ट थाय. माटे निर्ग्रथे वारंवार स्त्रीकथाकारक न थवुं ए पेली भावना. (१०५६)

वीजी भावना ए के निर्ग्रथे स्त्रीओनी मनोहर इंद्रियो जौवी चित्तववी नहि केमके केवली कहे छे के तेम करतां शांतिभंग थवाथी धर्मअष्ट थवाय. माटे निर्ग्रथे स्त्रीओनी मनोहर इंद्रियो जौवी तपासवी नहि ए वीजी भावना. (१०५७)

त्रीजी भावना ए के निर्ग्रथे स्त्रीओ साथे पूरें रमेली रमतक्रीडाओ याद न करवी. केमके केवली कहे छे के ते याद करतां शांतिभंग थवाथी धर्मअष्ट थवाय. माटे निर्ग्रथे स्त्रीओ साथे रमेली रमतोगमतो संभारवी नहि ए त्रीजी भावना (१०५८)

अहावरा चउत्था भावणाः—णातिमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे णो पणीयरसभोयणभोई; केवली बूया—अतिमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पणीयरसभोयणभोयणभोई य त्ति संतिभेदा जाव भंसेज्जा । णो तिमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो पणीयरसभोयणभोई त्ति चउत्था भावणा (१०५९)

अहावरा पंचमा भावणाः—णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेविचाए सिया; केवली बूया—णिग्गंथेणं इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाण संतिभेया जाव भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेविचाए सिय त्ति पंचमा भावणा । (१०६०)

एचावयाव महव्वए सम्मं काएण जाव आराहिते या विभावति चउत्थं भंते महव्वयं । (१०६१)

अहावरं पंचमं भंते महव्वयंः—सव्वं परिग्गहं पच्चवखाभि; से अप्पं वा वहं वा अप्पं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा णेव रायं

चौथी भावना ए के निर्ग्रंथे अधिकखानपान न वापरवुं, तथा झरता रसवाळुं खानपान न वापरवुं, केमके केवली कहे छे के अधिक तथा झरता रसवाळुं खानपान भोगवतां शांतिभंग थवाधी धर्मभ्रष्ट थवाय. माटे आविक आहार के झरता रसवाळो आहार निर्ग्रंथे न करवो ए चौथी भावना. [१०५९]

पांचमी भावना ए के निर्ग्रंथे स्त्री, पशु, तथा नपुंसकथी घेरायल शय्या तथा आसन न सेववां. केमके केवली कहेछे के तेवा शय्या—आसन सेवतां शांति भंग थवाधी निर्ग्रंथे धर्मभ्रष्ट थाय. माटे निर्ग्रंथे स्त्रीपुंसकथी घेरायल शय्या आसन न सेववां. ए पांचमी भावना. [१०६०]

ए रीते महाव्रत रुडी रीते कायाए करी स्पशित तथा यावन् आराधित थाय छे. ए चायुं महाव्रत (१०६१)

पांचमं महाव्रतः—“सर्व परिग्रह तज्जं ह्ज्जं; एटले के थोडुं के घणुं, नानुं के

परिग्गहं गिण्हज्जा, णवण्णेण परिग्गहं गिण्हविज्जा, अण्णंपि परिग्गहं गि-
ण्हंतं ण समणुजाणेज्जा जाव वोसिरामि । (१०६२)

तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति:—(१०६३)

तत्थिमा पढमा भावणा:—सोतत्तेणं जीवे मणुण्णामणुण्णाइं सदाइं
सुणेइ, मणुण्णामणुण्णेहिं सदेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गि-
ज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्जेवज्जेज्जा, णो विणिग्घाय मावदेज्जा;
केवली बूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं सदेहिं सज्जमाणे जाव वि-
णिग्घाय मावज्जमाणेसंतिभेयासंतिविभंगासंति—केवलिपण्णत्ताओ धम्मा-
ओ भंसेज्जा । [१०६४]

ण सक्का ण सोउं सदा, सोयविसय मागता ;

रागदोसाउ जे तत्थ, तं भिक्खू परिवज्जे १ [१०६५]

मोद्धं, सच्चि, के अच्चि, हुं पोते लउं नहि, बीजाने लेवरावुं नहि अने लेताने
अनुमत करुं नहि. यावत् तेवा स्वभावने वोसरावुं छुं. [१०६२]

तेनी आ पांच भावनाओ छे. [१०६३]

त्यां पेली भावना ए के कानयी जीवे भला भुंटा शब्द सांभळतां तेमां
भासक्त, रक्त, गृद्ध, मोहित, तल्लीन के विवेक भ्रष्ट न थवुं केमके केवळी कहे छे
के तेम थतां शांति भंग थवाथी शांति तथा केवळि भाषित धर्मथी भ्रष्ट थवाय
छे. [१०६४]

काने शब्द पढतां तो, अटकावाय ना कदि;

किंतु त्यां राग द्वेषोने, परिहार करे यति. १ [१०६५]

सोयंओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणोति ० पढमा ।

[१०६६]

अहावररा दोच्चा भावणाः—चक्खुओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं
रूवाइं पासइ, मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं णो सज्जेज्जा णो रज्जेज्जा
जाव णोविणिग्घाय मावज्जेज्जा ; केवली वूयामणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं
सज्जमाणे रज्जमाणे जाव विणिग्घाय मावज्जमाणे संतिभेया संतिविंभगा
जाव भंसेज्जा । [१०६७]

ण सक्का रूव मदहुं, चक्खुविसय मागयं;

रामदोसा उ जे तत्थ, तं भिक्खु परिवज्जए. १ [१०६८]

चक्खुओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासति ० दोच्चा भा-
वणा । [१०६९]

अहावरा तच्चा भावणाः—धाणतो जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधा-

एम् कान्धी जीवे भला भूढा शब्द संभळी राग द्वेष न करवो, ए पेली
भावना [१०६६]

वीजी भावना ए के चक्षुधी जीवे भला भूढा रूप देखतां तेमां आसक्त
के यावत् निवैक भ्रष्ट न थवुं. दोसके केवली कहे छे कं तेम थतां शांति भंग
थवायी यावत् धर्म भ्रष्ट थवाय छे. [१०६७]

आखि रूप पढता तो, अटकावाय ना कदि.

किंतु त्यां राग द्वेषोन, परिहार करे यति. ? [१०६८]

एम् चक्षुधी जीवे भला भूढा रूप देखी राग द्वेष न करवो, ए वीजी
भावना. [१०६९]

वीजी भावना ए के नाकधी जीवे भली भूढी गंध सूंघतां तेमां आसक्त

इं अग्घायइ; मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, जा-
व णो विणिग्घाय मावज्जेज्जा; केवली बूया मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं. स-
ज्जमाणे रज्जमाणे जाव विणिग्घाय मावज्जमाणे संतिभेदा सतिविभंगा
जाव भंसेज्जा । (१०७०)

णो सक्का गंध मग्घाउं, णासाविसय मागयं;

रागदोसो उ जे तत्थ, तं भिक्खू परिवज्जेए. १ (१०७१)

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइ अग्घायति० तच्चा भा-
वणा । (१०७२)

अहावरा चउत्था भावणाः—जिब्भाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं
रसाइं अस्सादेति, मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं णो रज्जेज्जा, जाव णो विणि-
ग्घाय मावज्जेज्जा; केवली बूया—णिग्गंथेण मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं
सज्जमाणे जाव विणिग्घाय मावज्जमाणे संतिभेदा जाव भंसेज्जा ।
(१०७३)

के यावत् विवेक भ्रष्ट न यत्तुं. केयके केवली कहे छे के तेष धर्ता शांति भंग
धवाथी यावत् धर्म भ्रष्ट यनाय छे. [१०७०]

नाके गंध पढतां तो, अटकावाय ना कदि;

किंतु त्यां राग द्वेषाने, परिहार करे यति. १ [१०७१]

एष नाकथी जीवे भलाभूंडा गंध सूची रागद्वेष न करतो ए त्रीजी धावना
[१०७२]

चोथी भावना एके जीवथी जीवे भलाभूंडा रस चाखतां तेनां आनन्द के
विवेकभ्रष्ट न यत्तुं, केयके केवली कहे छे के तेष धर्ता शांतिभंग धवाथी धर्मभ्रष्ट
धवाय छे. [१०७३]

णो सक्कं रस मणासातुं, जीहाविसय मागयं;

रागदोसा उ जे तत्य, ते भिक्खु परिवज्जए. १ (१०७४)

जीहाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेति. चउत्था
भावणा । (१०७५)

अहावरा पंचमा भावणाः—मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेति,
मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्जेज्जा,
णो मुज्जेज्जा, णो अज्झेवज्जेज्जा, णो विणिग्घाय मावज्जेज्जा; केवली-
बूया—णिग्गथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं सज्जमाणे जाव विणिग्घाय
मावज्जमाणे संतिभेदा संतिविभंगा, संतिकेवल्लिपण्णत्ताओ घम्माओ
भंसेज्जा । (१०७६)

णो सक्का फासं ण वेदेतुं, फासं विसय मागयं

रागदोसाउ जे तत्य, ते भिक्खु परिवज्जए. १ (१०७७)

जीभे रस चढतां तो, अटकावाय ना कदि;

किंतु त्यां रागद्वेष, परिहार करे यति । [१०७४]

एम जीभयी जीवे भला भूंडा रस चाखी राम द्वेष न करवो. ए चे,यी
भावना. [१०७५]

पांचमी भावना ए के भलाभूंडा स्पश अनुभवतां तेमां आसक्त के विवेक
भ्रष्ट न यवुं. केमके केवळी कोहे छे के तेम यतां शांतिभंग यवारी धर्मभ्रष्ट यवाय
छे. [१०७६]

स्पर्शोद्विये स्पर्श आवे, अटकावाय ना कदि;

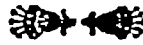
किंतु त्यां रागद्वेषोने, परिहार करे यति. [१०७७]

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेति० पंचमा
भावणा । [१०७८]

एत्तावयाव महव्वते सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए
अहिट्टिते आणाए आराहिये यावि भवति । पंचमं भंते महव्वर्य ।
[१०७९]

इच्चेतेसिं महव्वतेसिं पणवीसाहिं य भावणाहिं संपण्णे अणगारे
अहासुयं अहाकर्णं अहामगं सम्मं काएण फ.सित्ता पालित्ता तीरित्ता
किट्टित्ता आणाए आराहियावि भवति । [१०८०]

(भावना समाप्ता)



एम स्पर्शयी जीवे भल्लभूंडा स्पर्श अनुभवी रागद्वेष न करवो ए पांचमी
भावना. [१०७८]

ए रीते महाव्रत रुडी रीते कायायी स्पर्शित, पाळीत, पारपहोंचाडेल, की-
चित्त, अवस्थित, अने आज्ञायी आराधित पण थाय. ए पांचमुं महाव्रत. [१०७९]

ए महाव्रतोनी पचीश भावना वडे संपन्न अणगार सूत्र, कलय, तथा मा
गेने यथार्थपणे रुडी रीते कायायी स्पर्शी, पाळी, पारपहोंचाडी, कीचित्त करी आ-
ज्ञानो आराधक पण थाय छे. [१०८०]

णो सक्कं रस मणासातुं, जीहाविसय मागयं;

रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खु परिवज्जए. १ (१०७४)

जीहाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेति. चउत्था
भावणा । (१०७५)

अहावरा पंचमा भावणाः—मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेति,
मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा,
णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोवज्जेज्जा, णो विणिग्घाय मावज्जेज्जा; केवली-
चूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं सज्जमाणे जाव विणिग्घाय
मावज्जमाणे संतिभेदा संतिविभंगा, संतिकेवल्लिपण्णत्ताओ घम्माओ
भंसेज्जा । (१०७६)

णो सक्का फासं ण वेदेतुं, फासं विसय मागयं

रागदोसाउ जे तत्थ, ते भिक्खु परिवज्जए. १ (१०७७)

जीभे रस चढतां तो, अट्कावाय ना कदि;

किंतु त्यां रागद्वेष, परिहार करे यति ? [१०७४]

एम जीभयी जीवे भला भूंडा रस चाखी राग द्वेष न करवो. ए चे.यी
भावना. [१०७५]

पांचमी भावना ए के भन्नाभूंडा स्पश अनुभवतां तेमां आसक्त के विवेक
भ्रष्ट न यवुं. केपके केवली कहे छे के तेम यतां शांतिभंग यवायी धर्मभ्रष्ट धवाय
छे. [१०७६]

स्पर्शेन्द्रिये स्पर्श आवे, अटकावाय ना कदि;

किंतु त्यां रागद्वेषोने, परिहार करे यति. [१०७७]

तुदंति बायाहिं अभिद्वं^१ णरा
सरोहि संगामेगयं व कुंजरं २ (१०८२)

तहप्पगारेहिं जणहिं हील्लिए,
म्मसद्धंफासा फरुसा उदीरिया
तितिकखए णाणि अदुद्धचेतसा,
गिरिव्व वातेण ण संपवेवए. ३ (१०८३)

(रूप्यदृष्टाताधिकार)

उवेहंमाणे कुसलेहिं^२ संवसे,
अक्कंत^३ दुक्खा तस थावरा दुही
अलूसए संव्वसहे महामुणी ।
तहाहि से सुस्समणे समाहिए^४ ४ (१०८४)

१ अभिद्ववंति लेपटुग्रहारादिभिः २ गीतार्थैः सह ३ अक्रांतदुःखा अनभिप्रेतदुःखाः ४ समाख्यातः

तेने नरो वाणी तथा प्रहारे
संग्रामेना हायीपरे ज मारे. २ [१०८२]

तेवा जनो जो अपकीर्त्ति बोले,
कठोर शब्दादिकधी उखोले
ज्ञानी अदुष्टाशयधी सह ते,
धुजे नहि पर्वत जेम वाते. ३ [१०८३]

इत्याधिकार

मध्यस्थभावे रहि विज्ञसाथे
हणे न दुःखी तस थावरा जे,
दुःखोधी बीता गणि, ते महामुनि
क्षमानिधि उत्तम साधु भाख्यो. ४ [१०८४]

चतुर्थी चूला

विमुक्ति नामकं पंचविंश मध्ययनम्.

(अनित्यत्वाधिकारः) अणिव्च मावासं मुवेति जंतुणो,

पलोयए^१ सुच्च^२ मिदं अणुत्तरं^३;विजसिरे^४ विन्नु^५ अगार बंधणं

अभीरु आरंभपरिगहं चए

१ (१०८१)

(पर्वताधिकारः)

तहागहं भिक्खु मणंतं^६ संजयंअणेळिसं विन्नु^७ चरंत भेसणं

१ प्रलोकयेत् २ श्रुत्वा ३ प्रवचनं ४ व्युत्सृजेत् ५ विज्ञः ६ अनन्तेषु एकेंद्रियादिपुंसयतं ७ विज्ञं

अध्ययन पचीशमं.

विमुक्ति.

(उपजाति छंद)

अनित्यत्वा०

अनित्य आवास^१ फरेज जंतुओ

सिद्धांत ए सांभळिने विचारो;

अगारनुं^२ बंधन छोडी विज्ञो,

परिग्रहारंभ (सदा) निवारो.

१ [१०८१]

पर्वताधिकार

खरा अनं जीवदपाळु भिद्दुओ

उत्कृष्ट ने विन्न फरे नपाणी;

१ अनित्य एकेंद्रियादि गतिओपां. २ घर. (family)

तुदंति वायाहिं अभिद्वं^१ णरा

सरोहि संगामगर्थं व कुंजरं २ (१०८२)

तहप्पंगारेहिं जर्णहिं हील्लिए,

म्सद्वफासा फरुसा उदीरिया

तितिकखए णाणि अदुड्ढचेतसा,

गिरिव्व वातेण ण संपवेवए. ३ (१०८३)

(रूप्यदृष्टाताधिकार)

उवेहमाणे कुसलेहिं^२ संवसे,

अक्कंत^३ दुक्खा तस थावरा दुही

अलूसए सव्वसहे महामुणी ।

तहाहि से सुस्समणे समाहिण^४ ४ (१०८४)

१ अभिद्वंति लेणुप्रहारादिभिः २ गीतार्थैः सह ३ अक्रांतदुः

खा अनभिप्रेतदुःखाः ४ समाख्यातः

तेने नरो वाणी तथा प्रहारे

संग्रामिना हायीपरे ज मारे. २ [१०८२]

तेवा जनो जो अपकीर्त्ति बोले,

कठोर शब्दादिकधी उखोले

ज्ञानी अदुष्टाशयधी सहे ते,

धुजे नहि पर्वत जेम वाते. ३ [१०८३]

रूप्याधिकार

मध्यस्थभावे रहि विज्ञसाये

हणे न दुःखी तस थावरा जे,

दुःखोधी वीता गणि, ते महामुनि

क्षमानिधि उत्तम साधु भाख्यो. ४ [१०८४]

विदू^१ णते^२ घम्मपयं अणुत्तरं
 विणीयतहण्हस्स मुणिस्स ज्ञायओ
 समाहियस्स गिसिहा व तेयसा
 तवो य पण्णा य जसो य वड्ढति ५ (१०८५)
 दिसोदिसि णंतजिणे ण ताइणा
 महव्वया खेमपदा पवेदिता
 महागुरू णिस्सयरा^३ उदीरिता
 तमं व तेऊ तिदिसं पगासया ६ (१०८६)
 सितेहिं भिक्खू असितो परिव्वए,
 असज्ज मित्थीसु चएज्ज पूअणं

१ विद्वान्-२ नतः ३ निःस्वकराः—कर्मापनयनकराः

विद्वान् ने धर्मपदानुचारी
 वृष्णा तजी निर्मळ ध्यानधारी
 समाधिवाळा मुनिना तपादि^१
 अभिस्त्रिवा जेम वधे प्रकाशी. ५ [१०९६]
 प्राता अनंता जिनदेव भाखे
 महाप्रतो क्षेम करे मधाने;
 महागुरू कर्म हरू प्रकाशे,
 यथा वधे^२ तेजयी आध्य^३ नाशे. ६ [१०८६]
 बद्धो^४ विषे भिक्षु अबद्ध चाले
 स्त्रीमा असंगी रहि मान वाले;

१ तप, प्रज्ञा, अने यज्ञ. २ वधी दिशाओमां. ३ अंधारं. ४ धनवास्त्रां
बंधाय.

अणिसिअओ लोण मिणं तहा परं
ण मज्जती कामगुणेहिं पंडिणं ७ (१०८७)

तिहा विमुक्करस परिणचारिणो
धितीमतो दुक्खखमरस भिक्खुणो
विसुज्झए जं सि मलं पुरेकडं
समीरियं रप्पमलं, व जोइणा^१ ८ (१०८८)

(भुजगत्वाधिकार) से हुं प्परिण्णासमयंमि वट्टइ
णिराससे उवरयमेहुणे चरे;
भुजंगमे जुण्णतयं जहा जहे
विमुच्चती से दुहसेज्ज माहणे. ९ (१०८९)

१ ज्योतिषा—अग्निना.

निश्रा निवारी इह अन्य लोकनी,
न स्वीकरे^१ कामगुणो (ज) ज्ञानी. ७ [१०८७]

धरी परिज्ञा^२ त्रिविधे विमुक्त
दुःखो सहे छे यति धैर्ययुक्त
तेना टळे कर्म मळो करेल
अग्निधी रूपातणुं जेम मेल. ८ [१०८८]

भुजगाधि

ते तो परिज्ञाक्रमयांज चाले
आशंस^३ ने मैथुन दूर टाले;
भुजंग मेले जिम जीर्ण कांचली
तथा मुनि दूर करे दुःखावळी ९ [१०८९]

(समुद्राधिकारः)

ज माहु ओहं सलिलं अपारगं^१

महासमुद्रं वं भुयार्हिं दुत्तरं

अहेदणं परिजाणाहि पंडिए

से हू मुणी अंतकडे ति वुच्चइ. १०

[१०९०]

जहाहि बद्धं इह माणवेहिं,

जहाय तेसिं तु विमोक्ख आहिओ,

अहातहाबंधविमोक्ख जे विऊ .

से हु मुणी अंतकडे ति वुच्चइ ११

[१०९१]

इमंमि लोए परते य दोसुवि

ण विज्जइ बंधणं जस्स किंचिवि

१ अपारसलिलं

समुद्राधिकार

अपारपानीयप्रवाहयोगे^१दुस्तार महासागर^२ जेम लोणे

तेवोज संसार विचारी एह

खरे मु.नि अंत करेज तेह.

१० [१८९०]

यथा इहां मानव बद्ध थाय,

यथ. बळी बंध थकी मुक्काय;

खरे खरे बंध विमोक्ष एह.

जे ओलखे अंत करेज तेह.

११ [१०९१]

आ लोड मानं परलोक माने

जेने नहि बंधन हाय कांइ

से हु णिरालंबणे अप्पतिट्टे

कलंकली भावपहं^१ विमुच्चइ. १२

त्ति बेसि । [१०९२]

इत्याचारसूत्रं नाम प्रथमांगं समाप्तं.

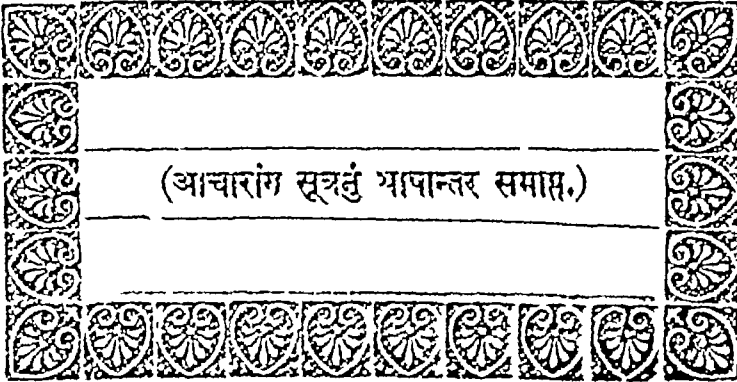
[ग्रंथाग्रं. २५००]

१ सांसारपर्यटनात्.

निराश ने अग्रलिबद्धे हेह

संसार भागं भट्टके न तेह.

१२ [१०९२]



मूल पाठस्य शुद्धि पत्रम्.

[प्रथम श्रुत स्कंध]

कलम	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्ध
१५	३	अप्पगे	अप्पगे
"	"	ऊरु	उरु
२२	४	शे	से
३०	१	वीरे हिं	वीरेहि
३२	१	लज्जमाणा	लज्जमाणा
३५	२	कयवर	कयवर
४१	१	एग	एगे
५२	६	मत्ति	मेत्ति
५८	३	लाए	लेए
६९	१	सपेहाए	संपेहाए
७४	१	जाणि—तु	जाणित्तु
८५	३	खुज्जतं	खुज्जतं
९०	१	परिणाय	परिणाय,
९६	१	कुराइं	कूराइं
९८	१	अ णोहतरा	अणोहतरा
"	"	तीं	तीरं
१०१	२	परियदट्ठति	परियट्ठेत्ति
१०४	१	जाणि—तु	जाणित्तु
१२०	१	थोधं	थोवं

१२३	१	आरिए०	आरिए आरियपणे
१२६	२	विणयण्णे	विणयण्णे
१२९	१	वहुंपी	वहुंपि
"	"	लधुं	लधुं
१३२	१	विपन्सी	विपस्सी
१४३	३	१४६	१४३
१४४	१	मुणी	मुणी
"	"	जस्स,	जस्स
१६१	१	जे	जं
१९२	२	लधुं	लधुं
१९४	१	१९४	१९४ ^३
१९५	१	जमिणं	जमिणं
१९७	१	खुदिएइं	खुदिएहिं
१९८	२	छिज्जइ	छिज्जइ,
२०८	२	उवरयसत्थस्स ^२	उवरयसत्थस्स पलियंतकर स्स
"	"	२०४	२०८
२१२	१	वीर	वीरा
२१८	१	माणंच.	माणंच,
"	२	मरणं चं	मरणंच
"	३	सत्थस्स	सत्थस्स
२२१	१	भगवंतो	अरहंतो भगवंतो
२२२	२-३	सोवाहिएसु ^२	सोवाहिएसु
२२४	१	आइ-तु	आइत्तु
२३०	१	बहिया	बहियापास
२३४	१	अग्घाति	अग्घाति
२४३	१	विन्दु	वि

२४१	१	णिरूद्धाउयं	णिरूद्धाउयं
२५०	२	त्रिष्फंदमाणी	त्रिष्फंदमाणं
२५९	२	दारुणं	दारुणं
२६०	१	पलिच्छिदिय	पलिच्छिदिय
२६१	१	सफलत	सफलत्तं
२६२	१	संघडंदसिणो	संघडदंसिणो
२६३	३	विज्जति	विज्जति
२६६	२	माहेणं	मोहेण
२८२	१	परिग्गाहावंति	परिग्गाहावंति
२९०	१	अरिणुहिं	आरिणुहिं
२९१	२	तारितए	तारिस्मए
३०३	२	वियाहित्त	वियाहिते
३०६	१	तनीवेसणे	बन्नीवेसणे
"	२	पलिबाहिर	पलिबाहिरे
"	३	पडिक्कमाणे	पडिक्कममाणे
३०७	१	कायसं	कायसंफास
"	३	किद्धंति	किद्धति
३१२	३	आरंभोययार	आरंभोवरया
३२०	२	वेयव्वति	वेयव्वंति
३२१	१	ए	जे
३२८	१	एत्थ	एत्थ
३२९	१	विणे-तुं	विणेत्तं
३३१	२	किन्हे	णकिन्हे
३३१	१	३६१	३३१
३३२	१	उयमा	उयमा
३४०	२	उचावए	उच्चवए
३४२	१	लाए	लोए

३४७	३	अणुपुव्वेणं
३४८	३	मणि
"	७	त
३७१	७	अग्घायं
"	२	असंभवेत्ता
"	३	फरूस
३७७	२	उवहइ
३८१	१	णममाणेहिं
३८५	२	लाघवियं
३९४	२	पहिग्गहं
३९६	१	पापपुंछणं
"	२	वियत्तुणवि
३९९	१	णेण
४००	१	इसे
४०२	१	सव्वंतो
४०५	१	दंडंभी
४०६	२	रूक्खमूलंसि
"	६	भूताइं
"	"	समारब्भ
४०८	४	भिव्वु
४१५	२	परिप्पाहा०
"	३	खेयं
४१८	१	मायाण्णे
"	२	कालेणु०
४१९	१	भिव्वु
"	५	उज्जालत्तए
४२४	१	तस्सण

अणुपुव्वेण
मुणी
तं
अग्घायं
असंभवेता
फरूसं
उवेहइ
णममाणेहिं
लाघवियं
पडिग्गहं
पायपुंछणं
वियत्तुणवि
णेव
इसे
सव्वतो
दंडेभी
रूक्खमूलंसिं
भूताइं
समारब्भ
भिव्वु
परिग्गहा०
खेयन्ने
मायण्णे
कालेणु०
भिव्वुं
उज्जालेत्तए
तस्सणं

—	—	णा	णो
४२८	६	तरसं	तस्सं
४२९	२	वत्थ	वत्थं
”	४	लाघवियं	लाघवियं
४३०	४	अभि०	अभि०
४३१	१	इत्तरियं	इत्तरियं
४३६	२	दलइस्समि	दलइस्सामि
”	४	जरसण	जस्सणं
”	९	अघा०	अघा०
४३७	३	भेख	भेरव
”	४	६	
४४२	१	वक्कमे	वक्कमे
४५६	१	उत्तमे	उत्तमे
”	२	विहे चिट्ठ	विहरेचिट्ठ
४५९	१	बहुतरसु	बहुतरेसु
४९१	२	एगति या	एगतिया
४९५	६	दुक्खं	दुक्खं
५०९	१	चाएति	चाएति
५२१	१	सद्वरुवेसु	सद्वरुवेसु
५२२	४	रियंतित्ति	रियंतिते
५२६	१	भिकखूणि	भिकखुणि
५२७	१	ज्ज	ज्जं
५२८	४	गाहेज्जा	गाहेज्जा
५३६	४	जव०	अव०
५३८	१	पविसित्तु क्कमो	पविसित्तुकामे
५४२	१	भोग०	भोग०
५५६	१	पविसिज्जकामे	पविसिउकामे

५६१	३	हीरमाणं	हरिमाणं
५६२	४	णिक्रव	णिक्रव
५६३	१	ण	पुण
५६५	४	पुवामेव	पुवामेव
५६९	३	पितेणवा	पित्तेणवा
॥	९	सक्कर	सक्करं
५७०	३	वग्धं	वग्धं
५७३	३	केवळी	केवळी
५७४	१	दलएज्ज	दलएज्जा
॥	२	पुव्वावा०	पुव्वाव०
५७५	११	वज्जणे	वज्जणे
५७६	१	परिमा०	परिभा०
५७९	३	अग्गापडासिं	अग्गापिडंसि
५८०	१०	णा	णो
५८२	२	असंण	असणं
॥	३	तहप्पगरेण	तहप्पगारेण
५८३	१	भिकखु	भिकखू
॥	॥	सज्जं	सेज्जं
॥	२	चित्तमंताए	चित्तमंताए
॥	३	कोट्ठिति	कोट्ठिति
॥	४	चाउलप०	चाउपल०
॥	॥	५८४	५८३
५८६	१	एवं	एयं
५९९	७	आहट्टु	आहट्टु
६००	३	सरभिगघाणि	सुरभिगंघाणि
६०२	२	पिप्पलि०	पिप्पलि०
६०६	४	त्रोय	वीयं

६०९	२	विभंग	विभंग
६१२	१	जाणेजा	जाणेजा
"	२	चोय	चोयं
६१७	७	रो	परो
६२७	२	बिबन्नं	बिबन्नं
६२८	२	व	वा
६३०	३	अट्टि०	अट्टि०
६३७	०	६३३	६३७
"	२	चाउपलंयं	चाउपलंयं
६४७	३	सजयोमेव	संजयामव
६५०	२	कट्टिए	कट्टिए
६५१	२	पडियए	पडियाए
६६०	२	सुण्हाओ	सुण्हाओ
"	४	भवति	भवन्ति
६६२	२	पडिलोमे	पडिलोमे
६६६	१	भिकखूणि	भिकखूणि
६६९	२	मुज्जो	भुज्जो
६७१	१	दाहिण	दाहिणं
६७३	८	णिग्घोसं	णिग्घोसं
६८५	२	गंतु	गंतुं
६८९	१	पण	पुण
"	४	पणस्स	पण्णस्स
६९०	३	विण०	विण्ण०
६९६	२	अप्पडं	अप्पंडं
"	३	सते	संते
७०१	१	अहा	अहासं
६	२	जाणज्जा	जाण्ज्जा

७०५	१	भि खुणि	भिकखुणि
७१८	३	ददुदु	उदुदु
७१९	३	उज्जुय	उज्जुयं
७३८	४	ससिणि०	ससिणि०
७४५	२	विक्कुज्जि	विक्कुज्जियं
७४७	२	लया	लयाओ
७४९	२	आगसाह	आगसह
७६२	१	भिकखणी	भिकखुणि
७६३	२	वियाल	वियालं
७७१	१	चत्तारि	चत्तारि
७७५	३	सकिरिय	सकिरियं
७७५	१	आमंतमाणे	आमंतेमाणे
७७६	४	घातियं	घातियं
७८०	१	अतीलक्खे	अंतलिक्खे
७८३	६	एयप्पगाराहि	एयप्पगाराहिं
"	६	मा णवा	माणवा
७८६	१	असण	असणं
७९४	१	भिकखुणि	भिकखुणि वा
७९७	२	रूडा	रूडा
७९८	१	क्खू	भिकखू
८०७	२	भिकखू०	भिकखू०
"	"	घट्टं	घट्टं
८०९	५	वग्घा	वग्घा
८२३	१	अप्पंड	अप्पंडं
८६८	२	भोगी	भोगा
८८०	४	उ गह०	उगह०
८८५	१	उवागाछि०	उवागच्छि०

८८६	२	संसताण	ससंताणं
९०४	३	पडिमा	पडिमा
९३२	२	अण्णयरंसिं	अण्णयरंसि
९३६	१	भिकखु	भिकखू
९३९	३	थंडिलंसिं	थंडिलंसि
९४२	१	डाहेसु	डाहेसु
९४४	१	थंडिलं	थंडिलं
९४६	२	वणंसि	वणंसि
९५१	४	सदाइं	सदाइं
९५६	३	अण्णयरइं	अण्णयराइं
९६४	३	णिणिज्जमाण	णिणिज्जमाणे
"	"	अभिसं०	अभिसं०
९६७	२	सदेहिं	सदेहिं
९७२	१०	व	वा
९७३	४	अब्भंगे ज	अब्भंगेज्ज
९७५	५	घा	वा
"	१२	अण्णयरेण	अण्णयरेणं
९८०	२	पमज्जज्ज	पमजेज्ज
९९९	७	वणमिग	वणीमग
१०००	४	पुव्वीएं	पुव्वीए
१००२	२	वद्धमाणै	वद्धमाणे
१०१५	१६	गोसीसरत्त०	गोसिसरत्त०
१०१६	८	लेपाहि	लेसाहि
१०१६	११	मेरी	भेरी
१०१८	३	भूत	भूत
"	४	लोम	लोम
१०२२	२	संजमेण	संजमेणं

१०४२	१	भ वणा	भावणा
१०४५	१	आ ए	आणाए
१०४६	२	थूल	थूलं
१०४८	१	जाती	जाई
१०६२	३	गिण्हज्जा	गिण्हेज्जा
१०६८	२	राम	राम

न्याय शुद्धिगान्त्रम्

(फुटनोट)

(प्र० श्रु०)

पृष्ठ	न्यासनं	अशुद्धं	शुद्धं
६	१	अभिध्यात्	आभघात्
१०	३	इत्युक्त्वा	इत्युक्त्वा
३७	१	शांतिर्मरणं	शांतिमरणं
७७	२	जिनमते.	
७९	६	अवग्रहाद्	अवग्रहाद्
८२	३	बद्ध	बद्धा
९५	६	प्रतिकूलान	प्रतिकूलान
१०१	२	विद्वासो	विद्वांसो
१०४	४	अनतिक्राम्य	अनतिक्राम्य
११६	४	सयमस्य	सयमस्य
१२९	५	कुर्या	कुर्याः
१४०	५	पाकस्थानं	पाकस्थानं
१४२	५	तद्	तदधः

(द्वि० श्रु०)

१७८	१	लोभटकं	लोभटकं
१९३	४	कंदल्यदि	कंदल्यादि
११	५	आद्रक	आद्रकं
२१६	१	कायेत्सर्ग	कार्योत्सर्ग
२१८	२	काष्ठादिभिः	काष्ठादिभिः
२४०	२	चित्राक	चित्राकीर्ण
२६७	४	व्यतरा०	व्यंतरा०
२९६	१	आहरस्वैत्	आहरस्वैतत्

भाषांतरनुं शुद्धि पत्र.

श्रुत स्कंध पहलो.

कलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	कलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	५	छ	छे	३२४	२	जिनप्रवाद	जिनप्रवाद
१४	२	तीर्थकर	तीर्थकर	३३६	१	रहेता	रहेतो
७३	३	तेमने	तमने	३३९	६	श्रीपदेराग	श्रीपदरोग
९६	१	क्रूर	क्रूर	"	९	थरण	मरण
१८६	२	करवा	करवा	३४८	२	वत्तनारा	वर्तनारा
१९७	१	सगळा	सघळा	३५८	२	निदाप	निर्दोष
२००	२	आचारवा-	आचारवा-	३९५	४	घ	घर
		णा	ळा	४०१	१	नि त	निवृत्त
२०१	२	आसंयम	असंयम	४१५	२	धारत	धारता
२३८	२	केवाळी	केवळी	४२२	७	हितपणामां	रहितपणामां
२३९	१	वकवाधे	वकवाद	४२७	५	तेवा	तेवा
२४४	१	त्याग	त्याग	४२८	४	हाये	होय
२५६	१	दंद्रियो	इंद्रियो	४३१	११	मखु	कखुं
२५९	२	मा	माटे	४३५	८	प्रतिमा	प्रतिज्ञा
२६२	१	सत्म	सत्य	४४०	१	गटावी	घटावी
२६४	१	निष्पजन	निष्पयोजन	४४४	४	आर्तव्यान	आर्तव्यान
२८९	२	वजन	वचन	४७२	२	भावना	भावना
२९०	३	मुमुक्षाओ	मुमुक्षुओ	४७३	२	सजवि	सजीव
२९१	२	शाक्ता	शाक्या	५०९	१	रागा	रोगो
६०२	१	मायावा	मायावा				
३०५	१	सूत्रार्थमां	सूत्रार्थमां				
३२०	१	कटलाएक	कटलाएक				

(द्वि० श्रु०)

५३०	१	अन्यताथि-	अन्यतीर्थि	७४१	९	जंघा	जंघा
		क	क	७५७	१	आयाए	आर्याए
५३३	३	राख्या	राख्यो	७५९	१	वटमागु	वेटमारु
५३५	३	वहोरखुं	वहोरखुं	७९२	३	घना	घरना
५५२	२	त्या	त्यां	"	"	अगला	अर्गला
५६१	५	क	के	८०८	३	वकरी	वकरी
५६२	४	होथ	होय	८२२	२	व	वरनु
५६७	२	चडाववा	चडाववा	८२८	१	पाषणो	पाषाणो
५७४	३	वूर्वे	पूर्वे	८३२		संबंधी	संबंधी
५७६	१	श्रमणं	श्रमण	"	३	वस्त्राधारी	वस्त्रधारी
५७९	१	भिक्षे	भिक्षार्थेज-	८३३	३	जणाय	जणायतो
			तां	८३९	२	आयुष्मन्	आयुष्मन्
"	"	राथ	रस	८४६	१	चामड	चामडा
"	"	जातसेल्लु-	लोलुपी	८४७	३	पत्र	पात्र
		पा		८५१	२	उत्कर्ष	उत्कर्ष
५८७	१	ज	जे	८५३	२	चरवी	चरवी
५९०	२	फरवो	करवो	८५८	३	वावतो	वावतो
६२३	२	माडे	मांडे	८८९	१	आवा	आंवा
६२९	२	वनपति	वनस्पति	८९०	१	कटवा	कटका
६३१	२	वीड	वीड	९००	१	वाद	वाद
"	१०	हाय	होय	९११	१	वावतम	वावतमां
६३३	६	छु	छे	९१२	२	जणाय	जणाय
६३५	२	ओ	ए	९२६	१	निर्वीज	निर्वीज
६५५	२	तथ	तथा	९३६	३	गुफाआमा	गुफाओमां
६५६	१	मकांन	मकान	९४६	४	स्थळामां	स्थळोमां
६५९	४	वित्तक	वित्तक	"	"	पाणी	पाणी
६६४	१	गृह थो	गृहस्थो	९५३	९	तळाव	तळाव
६७०	१	तेवो	तेवा	९८५	१	सपूर्णता	संपूर्णता
७०८	१	प्रमाजा	प्रमार्जी	१०००	३	धात्रीओ	धात्रीओधी
७१८	३	र तो	रस्तो	१०१७	१०	शकु	शक्र
७१९	१	रस्ताम	रस्तामां	१०२०	१	संबंधी	संबंधि
"	२	आपवी	आवी	१०२४	३	न रोमे	नायोगे
७२०	४	केवण	केवळ	१०२९	३	त्रिविधे	त्रिविधे
७२३	३	यमी	संयमी	१०७१	२	देशो	देशो

